"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૨૦૧

મગ્ગાનુસારિઆ

: દ્રવ્ય સહાયક :

શેઠ શ્રી જીવરાજજી ચુનીલાલજી
નૈનાવાવાળા પરિવાર, અમદાવાદ
હ. સુપુત્રો-દીનેશકુમાર, હરિશકુમાર, પ્રવીણકુમાર
તરફથી શ્રુતભક્તિથી પ્રેરાઈને

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૭૧ ઈ. ૨૦૧૫

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્વાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची।
यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
200	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

मग्गानुसारीया

● માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણ ●

(35 pre-requisites of a follower of preachings of Lord Mahavir)

પ્રકાશક :

જ્ઞાતપુત્ર ભગવાન મહાવીર ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ

બ્લોક નં. ૧૦, ૪થે માળે, જોલી સેન્ટર, તિલક રોડ,
સાન્તાક્રુઝ (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦ ૦૫૪.

—: मग्गानुसारीया :—

—: માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણ :—

—: PREFACE :—

मग्गानुसारिया :- માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણ (35 Pre-requisites of a follower of preachings of Lord Mahavir) નામની આ પુસ્તિકા છપાવતાં મને ઘણો આનંદ થાય છે. ભગવાન મહાવીરના ઉપદેશને સમજવા માટે પ્રવેશદ્વાર સમા આ ૩૫ ગુણો મુમુક્ષુ જીવને હોવા પરમ આવશ્યક છે. આજથી લગભગ ૯૦૦ વર્ષ પહેલાં જૈન શ્વેતાંબર પંથમાં ખુબજ લોકપ્રિય અને બહુશ્રુત મુનિવર્ય હેમચંદ્રાચાર્યજીએ લખેલ એક કૃતિ (પદ્ય)માં શ્લોક ૫૬ થી ૬૫માં આ ૩૫ ગુણોનો ઉલ્લેખ છે. અનેક પેઢીઓ વીતી ગયા બાદ આજપણ એનું મહત્ત્વ એટલું જ છે જે તે જમાનામાં હતું.

આ પુસ્તિકા 'જ્ઞાતપુત્ર ભગવાન મહાવીર ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ' સાંતાક્રુઝ (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦ ૦૫૪. (જેનો હું મેનેજીંગ ટ્રસ્ટી છું) તરફથી પ્રકાશિત કરવામાં આવેલ છે અને તેનું લખાણ / સંપાદન પણ મેંજ કરેલ છે.

The objects of above Trust are amongst other things (1) Spread of cult of non-violence (2) Prevention of cruelty to animals (3) Universal Brotherhood (4) Promotion of world peace and (5) Monetary and other help to poor, down trodden and weaker sections of our Society without discrimination of caste of creed.

મારા મર્હુમ માતા-પિતા જેમણે મારામાં બચપણથી પ્રમાણિકતા અને જીવદયાના સંસ્કાર રેડેલા અને મારા કુટુંબીજનો જેમના સહકારથી દેવલાલી (જ્યાં મેં આ પુસ્તિકા લખેલ / સંપાદન કરેલ છે)માં અવારનવાર પણ નિયમિતપણે રહેવાનું શક્ય બન્યું છે. તે સર્વને યાદ કરૂં છું. તેમજ આ પુસ્તિકામાં યોગદાન દઈ મને પ્રોત્સાહન આપનાર સર્વ ભાઈ / બહેનોનો આભાર માનું છું.

જે કોઈ ભાઈ / બહેન આ પુસ્તિકા વાંચે અને તેમાં કોઈ ત્રુટી જણાય (ખાસ કરીને spelling mistakes) તેમજ કંઈપણ ઉમેરવા-ફેરફાર કરવા તેમજ પડતું મૂકવા જેવું જણાય તો મારી તેમને નમ્ર વિનંતી છે કે મને લખી જણાવે જેનો બીજી આવૃત્તિમાં સમાવેશ કરવાથી આ પુસ્તિકા વધુ સમૃદ્ધ-ભાવવાહી અને હૃદયંગમ (more rich, more educative and more instructive) બને. કારણકે તે ઘણા ગુણાનુરાગી ભાઈ/બહેનોના સંયુક્ત પ્રયાસરૂપ હશે. છેલ્લે આ પુસ્તિકામાં વિવેચન કરવામાં આવેલા ૩૫ માર્ગાનુસારીના ગુણો આપ સૌના જીવનમાં ઉતરે અને આગામી વર્ષોમાં તમો વીતરાગ માર્ગમાં એક એક કદમ આગળ વધી અંતીમ ધ્યેય જે નિર્વાણ-મોક્ષને પાત્ર બની આ મનુષ્યભવને સફળ કરો એજ ભાવના.

'જ્યારે ત્યારે આ કર્યે જ છૂટકો છે' — શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર

'જિનેશ્વર પ્રભુના અનુયાયી' કહેવા જેવું કોઈ બહુમાન નથી'.

અને 'ભેદવિજ્ઞાન જગ્યો જિનકે ઘટ, શીતલ ચિત્ત ભયો જિમ ચંદન

કેલી કરે શીવમારગમે, જગમાંહી જિનેશ્વર કે લઘુનંદન'

જિનેશ્વર ભગવનના 'લઘુનંદન' સમાન ત્રણ જગતમાં કોઈ બિરૂદ કે અહોભાગ્ય નથી.

ભગવાન મહાવીરનો ઉપદેશ અને તેમણે ચીંધિલ

અહિંસા ધર્મ જગતનું કલ્યાણ કરો !

✍ ***D. S. SHAH***

—: જિનમંદિરમાં ભગવાનની સ્તુતિ :—

દર્શનં દેવદેવસ્ય, દર્શનં પાપનાશનમ્।
દર્શનં સ્વર્ગસોપાનં, દર્શનં મોક્ષસાધનમ્॥

દર્શનેન જિનેન્દ્રાણાં સાધુનાં વંદનેન ચ।
ન ચિરં તિષ્ઠતે પાપં, છિદ્રહસ્તે યથોદકમ્॥

વીતરાગ મુખં દૃષ્ટ્વા, પદ્મરાગ સમં પ્રભ।
અનેક જન્મકૃતં પાપં, દર્શનેન વિનશ્યતિ॥

દર્શનં જિનચંદ્રસ્ય, સદ્ધર્મામૃત વર્ષણમ્।
જન્મદાહ વિનાશાય, સુખવારિધિ વર્ધનમ્॥

દર્શનં જિનસૂર્યસ્ય, સંસારધ્વાન્તનાશનમ્।
બોધનં ચિત્તપદ્મસ્ય, સમસ્તાર્થ પ્રકાશનમ્॥

જિવાદિ તત્ત્વ પ્રતિપાદકાય, સમ્યક્ત્વ મુખ્યાષ્ઠ ગુણાશ્રયાય।
પ્રશાંતરૂપાય દીગંબરાય, દેવાધિદેવાય નમોનમ:॥

ચિદાનંદૈક રૂપાય જિનાય પરમાત્મનં।
પરમાત્મ પ્રકાશાય, નિત્યં સિદ્ધાત્મને નમ:॥
જિનધર્મો વિનિર્મુક્ત્વા મા ભવેત્ ચક્રવર્ત્યપિ।
સ્યાચ્ચેત્ દરિદ્રોડપિ જિનધર્માનુવાસિતો॥

જન્મ જન્મ કૃતં પાપં જન્મકોટિમુપાર્જિતમ્।
જન્મ મૃત્યુ જરા રોગં હન્યતે જિનદર્શનાત્॥

અદ્યાભવ સફલતા નયનદ્વયસ્ય
દેવ ત્વદીય ચરણાંબુજ વિક્ષણેન।
અદ્યા ત્રિલોક તિલક પ્રતિભાસતે મે,
સંસાર વારિધડયં ચૂલુક પ્રમાણં॥

અનંતાનંત સંસાર સંતતિ છેદ કારણમ્।
જિનરાજ પદામ્ભોજ સ્મરણં શરણં મમ॥

અન્યથા શરણં નાસ્તિ, ત્વમેવ શરણં મમ।
તસ્માત્કારૂણ્યભાવેન રક્ષ રક્ષ જિનેશ્વર!॥

ન હિ ત્રાતા ન હિ ત્રાતા ન હિ ત્રાતા જગત્રયે।
વીતરાગાત્ પરોદેવો ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ॥

જિને ભકિત જિને ભક્તિ જિને ભક્તિ દિને દિને।
સદામેડસ્તુ સદામેડસ્તુ સદામેડસ્તુ ભવે ભવે॥
યાચેડહં યાચેડહં જિન તવ ચરણાર્વિદયોર્ભક્તિમ્।
યાચેડહં યાચેડહં પુનરપિ તામેવ તામેવ ચ॥

— અસ્તુ.

॥ ॐ नमो सिध्धेभ्य : ॥

णमो अरिहंताणं

णमो सिध्धाणं

णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो सव्व पाव पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम्

पणमामि वडढमाणं धम्म तिथ्थस्स कत्तारं

ધર્મતીર્થના કરનાર ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીને પ્રણામ્.

ભગવાન ઋષભદેવ પોતાના પુત્રોને સંબોધીને કહે છે :

तिविहेण वि पाण मा हणे आयहिते अणियाणं संवुडे।
एवं सिध्धा अणंतसो संपइ जे अणागयावरे॥

હે પુત્રો! તમો આત્મહિતની ખાતર એકેન્દ્રિયથી માંડી પંચેન્દ્રિય સુધીના પ્રાણી જીવમાત્રની મન-વચન-કાયા વડે હિંસા કરશો નહિ અને પોતાની ઈન્દ્રિયોને વિષય વાસના તરફ ધુમવા દેશો નહીં. બસ આ પ્રમાણે વ્રતના પાલન કરતા થકા ભૂતકાળમાં અનંત જીવો મોક્ષે ગયા છે. વર્તમાનમાં જઈ રહ્યા છે અને આની માફક ભવિષ્યકાળમાં પણ જશે.

— *નિર્ગંથ પ્રવચન પાન - ૧૯૫*

તે પુરૂષ જાણ સુમાર્ગશાળી પાપ ઉપરમ જેહને
સમભાવ જ્યાં સૌ ધાર્મિક, ગુણસમુહ સેવન જેહને

— *પ્રવચનસાર ગાથા - ૨૫૯*

શક્રસ્તવ - કૃતજ્ઞતાના ઉદ્‌ગાર

નમોત્થુણં, અરિહંતાણં, ભગવંતાણં, આઈગરાણં, તિથ્યયરાણં, સયંસંબુદ્ધાણં, પુરિસુત્તમાણં, પુરિસસિંહાણં, પુરિસવર-પુંડરિયાણં, પુરિસવરગંધહત્થીણં, લોગુત્તમાણં, લોગનાહાણં, લોગહિયાણં, લોગપઈવાણં, લોગપજ્જોઅગરાણં, અભયદયાણં, ચકખુદયાણં, મગ્ગદયાણં, સરણદયાણં, જીવદયાણં, બોહિદયાણં, ધમ્મદયાણં, ધમ્મદેસિયાણં, ધમ્મનાયગાણં, ધમ્મસારહિણં, ધમ્મવર, ચાઉરંત, ચક્કવટ્ટીણં, દીવો, તાણં, શરણ ગઈ પઈઠાણં, અપ્પડિહય-વર નાણ-દંસણ ધરાણં, વિઅટ્ટછઉમાણં, જીણાણં, જાવયાણં, તિન્નાણં તારિયાણં, બુદ્ધાણં, બોહિયાણં, મુત્તાણં, મોઅગાણં, સવ્વન્નુણં, સવ્વદરિસીણં, શિવમ્ અલયમ્ અરૂયમ્, અણંતમ્, અકખયં, અવ્વાબાહમ્, અપુણરાવિત્તિ સિદ્ધિ ગઈ નામધેયં ઠાણં સંપત્તાણં, નમો જિણાણં, જીઅ-ભયાણં

જે અ અઈઆ સિદ્ધા, જેઅ ભવિસંતિ ણાગએ કાલે
સંપઈ ચ વટ્ટમાણં સવ્વં તિવિહેણ વંદામિ

અરિહંત ભગવાનને મારા પ્રથમ નમસ્કાર. કેવા છે ભગવાન! ધર્મની આદિ કરનાર, ચારતીર્થની સ્થાપના કરનાર, સ્વયં આપબળે બોધ પામેલા, પુરુષોમાં ઉત્તમ, પુરુષોમાં સિંહ સમાન, પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ પુંડરિક કમળ સમાન, પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ ગંધહસ્તી સમાન, ત્રણલોકમાં ઉત્તમ, ત્રણ લોકના નાથ, ત્રણ લોકના હિત કરનાર,

લોકમાં દિપક સમાન, લોકમાં (સૂર્યની પેઠે) ઉદ્યોત કરનાર, અભય દેનાર, જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુ દેનાર, ધર્મ માર્ગના દેનાર, શરણ આપનાર, આત્માને ઓળખાવી આત્માના દાતાર, બોધિબીજના દાતાર, ધર્મના દાતા, ધર્મના ઉપદેશક, ધર્મના નાયક, ધર્મરૂપી રથના સારથી, ધર્મને વિષે પ્રધાન, ચારગતિનો અંત કરવા માટે ચક્રવર્તી સમાન, સંસાર રૂપી સમુદ્રમાં ડુબતા જીવોને દ્વીપ સમાન, દુઃખમાં રક્ષા આપનાર, શરણરૂપ, ચારગતિમય સંસારરૂપ કુવામાં પડતા જીવોને આધારરૂપ, અપ્રતિહત શ્રેષ્ઠ જ્ઞાન-દર્શનના ધારક, છદ્મસ્થ દશા પાર કરી ગયા છે એવા, રાગદ્વેષને જીતનાર, બીજા જીવોને રાગદ્વેષ જીતાડનાર, ભવસમુદ્રને પાર કરનાર અને બીજા જીવોને પાર કરાવનારા, સ્વયં બોધ પામેલા અને બીજા જીવોને બોધ પમાડનારા, સર્વ કર્મોથી મુક્ત અને બીજા જીવોને મુક્ત કરાવનારા, સર્વજ્ઞ-સર્વદર્શી, ઉપદ્રવ રહિત, અચળ, રોગ રહિત, સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરનાર એવા જિનેશ્વર ભગવાનને મારા નમસ્કાર.

ભૂતકાળમાં જે સિદ્ધ ભગવંતો થઈ ગયા, ભવિષ્યમાં સિદ્ધ થશે અને વર્તમાનમાં સિદ્ધ ગતિમાં જઈ રહ્યા છે તે સર્વ સિદ્ધ ભગવંતોને મન-વચન અને કાયાથી હું વંદન કરૂં છું - નમસ્કાર કરૂં છું.

—: લોગસ્સ :—

લોગસ્સ ઉજ્જોઅગરે ધમ્મ તિથ્થયરે જિણે
અરિહંતે કિત્તઈસ્સં ચઉવીસંપી કેવલી
ઉસભમજીયં ચ વંદે સંભવમભિનંદણં ચ સુમઈ ચ
પઉમપ્પહં સુપાસં જિણં ચ.
ચંદપ્પહં વંદે સુવિહિં ચ, સીયલ સિજ્જંસ વાસુપુજ્જં ચ
વિમલમણંતં ચ જિણં ધમ્મં સંતિ ચ વંદામિ.
કુંથું અરં ચ મલ્લિં વંદે, મુનિસુવ્વયં નમિ જિણં ચ
વંદામિ રિઠ્ઠનેમિ પાસં તહ વદ્ધમાણં ચ
એવં મએ અભિથુઆ વિહુય રયમલા પહીણ જરમરણા
ચઉવીસંપિ જિનવરા, તિથ્થયરા મે પસિયંતુ
કિત્તિય વંદિય મહિયા જે એ લોગસ્સ ઉત્તમા સિદ્ધા
આરુગ્ગ બોહિલાભં સમાહિવરં, ઉત્તમં દિંતુ
ચંદેસુ નિમ્મલયરા, આઈચ્ચેસુ અહિયં પયાસયરા
સાગરવર ગંભીરા, સિદ્ધા સિદ્ધિ મમ દિસંતુ

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गोतमोगणी।
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैन धर्मोस्तु मंगलम्॥

चत्तारि मंगलं : अरिहंता मंगलं - सिद्धा मंगलं
साहु मंगलं - केवली पणत्तो धम्मो मंगलं
चत्तारि लोगुत्तमा : अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा
साहु लोगुत्तमा - केवलीपणत्तो धम्मो लोगुत्तमो
चत्तारि शरणं पवज्जामि : अरिहंत शरणं पवज्जामि
सिद्धशरणं पवज्जामि - साहु शरणं पवज्जामि
केवली पणत्तं धम्मं शरणं पवज्जामि

—: જયવિયરાય :—

जय वीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेगो मग्गानुसारिया इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥
लोगविरुद्धचाओ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च।
सुहगुरु जोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइवि नियाणबंधणं वीयराय! तुह समये।
तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुह नाह चलणाणं ॥ ३ ॥
दुकख कखओ कम्मकखओ समाहिमरणं च बोहिलाभो अ।
संपजउ मह एअं तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥
सर्व मंगल मांगल्यं सर्वकल्याण कारणम्
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम्

હે વીતરાગ જગદ્‌ગુરૂ ભગવાન! તમો જયવંત વર્તો, તમારા પ્રભાવથી મને સંસારપ્રત્યે વૈરાગ્ય ભાવ, માર્ગાનુસારીપણું અને ઈષ્ટફળની સિદ્ધિ થાઓ. હું લોકવિરૂદ્ધ આચરણ ન કરૂં, ગુરુજનનું પૂજન અને જીવોની સેવા કરવાની વૃત્તિ, સદ્‌ગુરુનો જોગ અને તારા વચનનું સેવન ભવના અંત સુધી મને પ્રાપ્ત હો! પ્રાપ્ત થાઓ.

હે ભગવાન! તમારા શાસ્ત્રોમાં નિદાન કરવાની - નિયાણું બાંધવાની ના પાડી છે છતાં મને તો ભવોભવ તમારા ચરણ-કમળની સેવા પ્રાપ્ત થાઓ. હે ભગવાન! તમને પ્રણામ કરવાથી મારા દુઃખનો ક્ષય થાઓ! મારા કર્મનો ક્ષય થાઓ! મને બોધિબીજની પ્રાપ્તિ થાઓ! અને સમાધિમરણ થાઓ!

સર્વ મંગલોમાં મંગલસ્વરૂપ, સર્વજીવોના કલ્યાણનું કારણ
સર્વધર્મોમાં પ્રધાન ધર્મ, એવું જિનશાસન જયવંત વર્તો.''

પંડિતવર આશાધરજી વિરચિત સાગારધર્માંમૃત - સટીકમાં ગૃહસ્થધર્મનાં ૧૪ લક્ષણ બતાવ્યાં છે જેમાં માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણોનો સમાવેશ થઈ જાય છે.

न्यायोपात्तधनो यजन् गुणगुरुन् सद्गी :त्रिवर्गभजन्।
अन्योन्यानुगणं तदर्हगृहिणी स्थानालयो ह्रिमय : ॥
युकताहारविहार आर्यसंगति प्राज्ञ : कृतज्ञो वशी।
शृण्वन् धर्मविधिं दयालुरधमी : सागारधर्मं चरेत् ॥

— સાગારધર્માંમૃત - સટીક પાન- ૧૫

૧. ન્યાયપૂર્વક ધનાદિનું ઉપાર્જન કરનાર.
૨. ગુણમાં અધિક તેમજ માતાપિતાદિ વડીલોની અને જ્ઞાનવૃદ્ધજનોની સેવા કરનાર.
૩. પ્રશસ્ત વચન બોલનાર.
૪. પરસ્પર અવિરોધભાવે ધર્મ-અર્થ અને કામનું સેવન કરનાર.
૫. ઉપરના ત્રણે પુરુષાર્થને અનુકુળ સ્ત્રી-ગામ-પડોશ અને ઘર.
૬. લજ્જાશીલ.
૭. યુક્ત આહાર - વિહાર.
૮. આર્ય પુરુષોની સંગતિ.
૯. વિશેષજ્ઞ - પ્રાજ્ઞ.

૧૦. કૃતજ્ઞ.
૧૧. વશી.
૧૨. ધર્મની વિધિને સાંભળનાર.
૧૩. દયાવાન.
૧૪. અઘભી - પાપથી ડરનાર.

માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણ (હેમચંદ્રાચાર્ય)

न्यायसंपन्न विभव : शिष्टाचार प्रशंसक : ।
कुलशीलसमै : सार्द्धं कृतोद्वाहोऽन्यगोत्रजै : ॥ ४७ ॥
पापभीरुः प्रसिद्धं च देशाचारं समाचरन् ।
अवर्णवादी न कवापि राजादिषु विशेषत : ॥ ४८ ॥
अनतिव्यक्तगुप्ते च स्थाने सुप्रातिवेश्मिके ।
अनेक निर्गमद्वारविवर्जित निकेतन : ॥ ४९ ॥
कृतसंग : सदाचारैर्मातापित्रोश्च पूजक : ।
त्यजन्नुपलुप्तं स्थानमप्रवृतश्च गर्हिते ॥ ५० ॥
व्ययमायोचितं कुर्वन् वेषं वित्तानुसारत : ।
अष्टभिर्धीगुणैर्युक्त : शृण्वानो धर्ममन्वहम् ॥ ५१ ॥
अजीर्णे भोजनत्यागी काले भोकता च सात्म्यत : ।
अन्योऽन्याप्रतिबंधेन त्रिवर्गमपि साधयन् ॥ ५२ ॥
यथावदतिथौ साधौ दीने च प्रतिपत्तिकृत् ।
सदानभिनिविष्टश्च पक्षपाती गुणेषु च ॥ ५३ ॥
अदेशाकालयोश्चर्यां त्यजन् जानन् बलाबलम् ।
वृतस्थज्ञानवृद्धानां पूजक : पोष्यपोषक : ॥ ५४ ॥
दीर्घदर्शी विशेषज्ञ : कृतज्ञो लोकवल्लभ : ।
सलज्ज : सदय : सौम्य : परोपकृतिकर्मठ : ॥ ५५ ॥
अंतरंगारिषड्वर्ग परिहारपरायण : ।
वशीकृतेन्द्रियग्रामो गृहिधर्माय कल्पते ॥ ५६ ॥

—: માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણ :—

૧. ન્યાયસંપન્ન વિભવ - નીતિથી ઉપાર્જન દ્રવ્ય .... પાન ૬
૨. શિષ્ટાચારનો પ્રશંસક ૧૩
૩. સમાનકુલ તેમજ શીલવાળી સ્ત્રી સાથે લગ્ન કરવું ૨૬
૪. પાપભીરૂ ૩૦
૫. પ્રસિદ્ધ દેશાચારનું પાલન તથા નં.-૨૫ નિંદનીય કાર્યોનો ત્યાગ ૩૫
૬. કોઈનો અવર્ણવાદ ખાસકરીને રાજા-અમાત્યાદિના ન બોલનાર ૩૬
૭. આદર્શ ઘર ૩૮
૮. સદાચારીનો (સત્પુરુષોનો) સંગ ૪૧
૯. માતાપિતાની સેવા ૪૪
૧૦. ઉપદ્રવવાળા સ્થાનનો ત્યાગ ૪૬
૧૧. નિષેધ કરેલા દેશકાળનો ત્યાગ ૪૬
૧૨. આવકને અનુસાર ખર્ચ ૪૮
૧૩. આર્થિક સ્થિતિયોગ્ય પહેરવેશ ૪૮
૧૪. બુદ્ધિના આઠગુણથી યુક્ત ૫૦
૧૫. ધર્મ અને ધર્મની વિધિને સાંભળનાર ૫૨
૧૬. અજીર્ણે ભોજનનો ત્યાગ ૬૦
૧૭. નિયમીત સમયે શાંતિથી ભોજન કરવું ૬૦
૧૮. ધર્મ-અર્થ અને કામનું અવિરોધપણે સેવન ૬૫
૧૯. ઉત્તરદાયિત્વનો નિભાવ (કુટુંબાદિનું ભરણ પોષણ) ૬૫
૨૦. કોઈપણ વસ્તુનો કદાગ્રહ ન રાખવો ૬૯
૨૧. ગુણીજનોના ગુણમાં પક્ષપાત ૭૦
૨૨. અતિથિ - સાધુજન અને દીન-જનોની યોગ્યતાનુસાર સેવા ૭૦
૨૩. વ્રતિ અને જ્ઞાનવૃદ્ધજનોની સેવા - શુશ્રૂષા ૭૦
૨૪. બલાબલનો વિચાર ૭૩
૨૫. નિંદનીય કાર્યોનો ત્યાગ (જુઓ નં.-૫) ૩૫
૨૬. દીર્ઘદશી ૭૫
૨૭. વિશેષજ્ઞ : ૭૭
૨૮. કૃતજ્ઞી ૯૦
૨૯. લોકપ્રિય ૯૨
૩૦. લજ્જાવાન ૯૬
૩૧. દયાવાન ૯૯
૩૨. સૌમ્ય ૧૦૨
૩૩. પરોપકારી (દાન) ૧૦૫
૩૪. અંતરંગ ષડ્રિપુને જીતનાર ૧૧૧
૩૫. વશી-પાંચ ઈન્દ્રિયોને કાબુમાં રાખનાર ૧૧૬

નં. - ૧

—: ન્યાયસંપન્ન વિભવ - નીતિથી ઉપાર્જિત દ્રવ્ય :—

ગૃહસ્થોની મનની પ્રવૃત્તિ ઘણુંખરૂં અર્થોપાર્જન તરફ રહ્યા કરે છે. તેમાં રાત કે દિવસ પણ જોવામાં આવતો નથી. અનાદિ સંસ્કાર કહેતાં વાસનાના જોરથી શરીર કુટુંબ તેમજ ધનાદિ સામગ્રીરૂપ પરદ્રવ્યોમાં એકત્વબુદ્ધિ તેમજ પાંચ ઈન્દ્રિયોના સુખમાં લુબ્ધતા, આસકતતા તેમજ સુખબુદ્ધિના કારણે અને તે પ્રાપ્ત કરવાના સાધનરૂપ માધ્યમ ધન એટલે કે પૈસો હોવાથી તેના ઉપાર્જનમાં આ જીવ એવો એકમેક થઈ રહ્યો છે કે તેને ભાન પણ નથી કે તે શું કરી રહ્યો છે. તેની સ્થિતિ ધતુરાપાનથી અગર મદિરાપાનથી કેફ ચઢેલા મનુષ્યના જેવી છે.

नि:सारं प्रस्फुरत्येव मिथ्याकर्मैकपाकत:।
जन्तोरुन्मत्तवच्चापि वार्धेर्वातोत्तरंगवत्॥

— પંચાધ્યાયી ઉત્તરાર્ધ ગાથા ૫૫૩

ઉન્મત્ત પુરૂષની માફક તથા વાયુથી તરંગિત સમુદ્રના તરંગોની માફક આ ભોગાભિલાષા જીવોને મિથ્યાત્વ કર્મના ઉદયથી વ્યર્થ જ સ્ફુર્યા કરે છે.

આજુબાજુ પણ તેના જોવામાં-સાંભળવામાં તેમજ અનુભવમાં પણ એજ પૈસા કમાવવા પાછળની ઘેલછા અને ધન-કુટુંબાદિકમાં એકત્વબુદ્ધિ તેમજ સુખ બુદ્ધિ.

શ્રુત, પરિચિત, અનુભૂત સર્વને, કામભોગબંધનની કથા,
પરથી જુદા એકત્વની, ઉપલબ્ધિ કેવળ સુલભ ના.

— શ્રી સમયસાર ગાથાં - ૪

આ પંચમકાળ - કળિયુગમાં સામાન્ય જીવોની માનસિક સ્થિતિ, તેમનું લક્ષ્ય-ધ્યેય, રાત-દિનની પ્રવૃત્તિ અને તેમના અધ્યવસાયનું જરાક બારીકાઈથી અવલોકન કરવામાં આવે તો જણાશે કે પૂર્વભવમાં આ વીતરાગમાર્ગની આરાધના કરી હશે અગર તો સત્સંગના બળે અંતરંગ વિશુદ્ધિને પામેલ હશે તેને જ વિચાર આવશે કે આ બધું શાના માટે છે અને કયાં જઈને અટકશે. સંસાર તેના અસલ વિકરાળ સ્વરૂપમાં નજર સમક્ષ દેખાશે. ધન પાછળ ઘેલાઓની દોટ જોઇ તેમનું રહન-સહન તેમજ માનસિક અધ:પતન જોઈ એક સંકલ્પબળ તેના હૃદયના ઉંડાણમાં મૂળ નાખશે કે જ્યાંસુધી સામાયિક ચારિત્રરૂપ બાહ્ય-અંતરંગ પરિગ્રહના સર્વ પ્રકારે ત્યાગરૂપ સુખદુ:ખમાં, સંયોગ-વિયોગમાં, મિત્ર કે શત્રુમાં, મહેલ કે શ્મશાનમાં પરમ સમભાવ-સામાયિકભાવ રૂપ અંતીમ પુરૂષાર્થ ઉપાડવા યોગ્ય (અંતરંગ વિશુદ્ધિરૂપ) ચારિત્રબળ ન પ્રાપ્ત થાય ત્યાંસુધી ગૃહસ્થદશામાં રહી ધનાદિ સર્વ સામગ્રી ન્યાય તેમજ નીતિની મર્યાદામાં રહી ઉપાર્જન કરૂં અને ભોગવું તેમજ પંચપરમેષ્ટિ તેમજ ચતુર્વિધ સંઘની ભક્તિ તેમજ સુપાત્રદાનમાં વાપરૂં.

સામા જીવને પણ ધનાદિ સામગ્રી મારી માફક પ્રિય છે એવી પરાર્થદ્રષ્ટિ જાગતાં ધનોપાર્જનમાં ન્યાય-નીતિની મર્યાદાનું તે ઉલ્લંઘન કરતો નથી.

प्राणा यथात्मनो मिष्टा भूतानामपि ते यथा।
आत्मौपम्येन भूतानां दयां कुर्वंति मानव॥

જેમ પ્રાણ (પ્રાણ કહેતાં ઉપલક્ષણથી ધનાદિ સામગ્રી) મને પ્રિય છે તેમ જગતના બધા જીવોને પ્રિય છે. સુખ મને પ્રિય છે તેમ જગતના બધા જીવોને (કીડીથી માંડી કુંજર સુધી) પ્રિય છે. એમ સમજી હે જીવ-મનુષ્ય! તું બીજા જીવો પ્રત્યે રહમ કર.

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा: ॥

વ્યવહારકુશળ માણસો મારી નિંદા કરો કે પ્રસંશા, પૈસા મળે કે ના મળે, મરણ આજ આવે કે યુગના અંતે વા ગમે તેમ થાવ તોપણ ધીર પુરુષો ન્યાયના બાંધા પર પગ મૂકતા નથી.

— *જુગલ કિશોર રચિત 'મેરી ભાવના'*

આમાં ધીરા શબ્દ ન્યાય-અન્યાય, નીતિ-અનીતિ ન જોતાં ધનાદિની પ્રાપ્તિ અર્થે આંધળી દોટ મનુષ્યોએ આજકાલ મૂકી છે, તેનાથી વિરામ પામેલા એક ન્યાય અને નીતિવાન માણસની અંતરંગ મનોવેદનાનો સૂચક છે. જે ભાવ-પરિણામથી અનંત સંસારનો અનુબંધ (અનુબંધ એટલે પરંપરા) થાય એવા અનંતાનુબંધી કષાયના ઉદયથી આ જીવ અન્યાય અને અનીતિ ગર્ભિત વિષમ કાર્યો કરે છે. અસંખ્ય ત્રસ-સ્થાવરોની હિંસાયુક્ત કર્માધામી ધંધાઓ, કારખાનાઓ, રાજમહેલો યુક્ત આરંભ-પરિગ્રહ કરે છે અને ઘા ઉપર મીઠું ભભરાવવાની જેમ તેનું અભિમાન કરે છે, ચોરી કરે છે, ધાડ પાડે છે, ગામને ઉજ્જડ કરે છે, કોઈના ઘરમાં ઘૂસી જઈ ચીજવસ્તુઓ ઉપાડી લાવે છે, અને તેમ કરવામાં મરણ સુધીના ભયને પણ ગણકારતો નથી. રાજા કે કોઈ વેપારી-મીલમાલિકને ત્યાં નોકરી કરે છે તેમાં કાગળ પેનસીલ વિ. ચોરી કરી ઘર ભેગું કરે છે, પ્રજા સાથે કે અન્ય વેપારી સાથે ભળી જઈ સસ્તો માલ (શેઠને માટે) બહુમૂલ્ય આપી ખરીદી લાવે છે, શેઠનો બહુમૂલ્ય માલ સેકન્ડસમાં વેચી દે છે, અગર સેકન્ડસમાં સારો માલ (શેઠનો) ભેળવી સામા માણસને આપી દે છે અને તેમાં પોતાનો હિસ્સો રાખે છે. પોતાના થોડા લાભ માટે અનેકગણું નુકસાન પોતાને નોકરીએ રાખનાર શેઠનું અગર તો સરકારનું કરે છે. સરકારી અધિકારીઓની લાંચ રૂશ્વત આજકાલ સર્વસામાન્ય વ્યવહાર બની ગયો છે. રાજ્યના હાંસિલની ચોરી કરે છે. ટિકિટ લીધા વગર અગર તો સેકન્ડ કલાસની ટિકિટ લઈ ઉપરના કલાસમાં રેલ્વેમાં મુસાફરી કરે છે. પકડાઈ જાય તો ટી.સી.ને થોડીક લાંચ આપી પતાવી દે છે. દેશપરદેશમાં ટ્રંકકોલ કરવો હોય (મોટા વેપારીઓનો દરરોજનો વ્યવસાય) તેમાં ટેલીફોન ઓપરેટસ્ને માસિક હપ્તો બાંધી અગર પરદેશના એક કોલ દીઠ એકસો રૂપિયા આપી કલાકો સુધી પરદેશ સાથે વાતચીત કરવી, એ તો આજકાલ કહેવાતા સભ્ય સમાજની દિનચર્યા બની ગઈ છે. મોટરગાડીના સાચાખોટા અકસ્માત, રેલ્વેમાં સાચા અગર ખોટા ચઢાવેલ માલ ઉતારી લઈ ગૂમ થયાના બનાવટી કલેઈમો-તે પાસ કરાવવાવાળાઓની છડેચોક ઓફિસો, ટેકસ-જકાતના અધિકારીઓ, રાજદ્વારી કાર્યકર્તાઓ, કહેવાતા સમાજ સેવકો, પટાવાળાથી માંડી ટોચના અધિકારીઓ, રાજકર્તાઓ થોડાક હજાર અગર લાખ રૂપિયા લઈ સરકારને લાખો-કરોડોનું નુકસાન કરવાના દાખલાઓ ગોતવા જવું પડે તેમ નથી. Security Scam નો છેવટનો કેટલા હજાર કરોડ રૂપિયાની ઉચાપતનો તાજો દાખલો આ યુગની નીતિમત્તાના ધોરણનો તેમજ નૈતિક અધ:પતનનો અને તેના પરિણામ સ્વરૂપ દેશમાં તેમજ પરદેશમાં અનીતિના ધામો, જુગારના અડ્ડા, દાણચોરી, કેફી દ્રવ્યોનું ઉત્પાદન અને તેની હેરફેર વિ. ખુલ્લેઆમ ચાલતાં હોય તેમાં સરકારી અધિકારીઓના આંખમિચામણાં, હપ્તા એ બધું આપણે ત્યાં જ નહિ, પરંતુ આખી દુનિયામાં એક અનોખો વ્યવસાય વ્યવસ્થિતપણે ચાલી રહ્યો છે. ધન-કમાવવામાં રાજદ્રોહ, સ્વામીદ્રોહ, ધર્મદ્રોહ, મિત્રદ્રોહ, કૃતઘ્નતા, વિશ્વાસઘાત વિ. દિવસભરનો વ્યવસાય અને દિવસના અંતે તેમની પ્રવૃત્તિઓ જેને 'Under World' 'અંધારી આલમ' તરીકે ઓળખવામાં આવે છે તેની વાતો જેણે ઓછી જાણી છે તે તેટલો ભાગ્યશાળી સમજવો.

છ ખંડના ધણી ચક્રવતીઓ પણ સઘળા વૈભવ-સમૃદ્ધિ અને સામ્રાજ્યનો સડેલા તરણાની માફક ત્યાગ

કરી પરમ નિર્ગ્રંથ દશાને ધારી આ જગતમાં એક પરમાણુ માત્ર પણ મારૂં નથી, હતું નહિ અને થશે પણ નહિ એવી આકિંચન્ય દશાને પામી નિર્વાણ પામ્યા છે. ત્યાં ઉપર જણાવેલી ભયંકર અનીતિ પૂર્વક કમાયેલ (મેળવેલ) ધનાદિ સામગ્રી તો બાજુએ રહી, જ્યાંસુધી એક દીવાસળીની સળી પણ ગ્રહણ કરવાની (પોતાના હક્ક વગર) દાનત છૂટી નથી ત્યાંસુધી ભગવાન મહાવીરના ઉપદેશેલ વીતરાગ માર્ગની ગંધ આવવી પણ જીવને દુર્લભ છે. ધર્મીજીવના હૃદયના ઉદ્‌ગાર :

जिनधर्मो विनिर्मुकत्वा मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेद् दरिद्रोपि जिन धर्मानुवासितो॥

હે પ્રભુ! જિનધર્મથી રહિત શ્રેષ્ઠ ચક્રવતીપણું પણ મને ખપતું નથી. જિનધર્મના સંસ્કારથી વાસીત ભલે ગરીબાઈ હો તો તે મને કબુલ-માન્ય છે.

"અભક્ષ્ય ભક્ષણ કરનારનાં, અન્યાય-અનીતિથી પ્રાપ્ત થયેલ વિષયભોગ અને ધનાદિ સામગ્રીને ભોગવનારનાં પરિણામ એવાં મલીન હોય છે કે કરોડવાર ધર્મનો ઉપદેશ અને સર્વ સિદ્ધાંતોની વ્યાખ્યા ઘણા વર્ષો સુધી સાંભળે તોપણ કદી તેનો હૃદયમાં પ્રવેશ થતો નથી. પચાસ વર્ષોસુધી શાસ્ત્ર શ્રવણ કર્યું હોય તોપણ ધર્મના સ્વરૂપનું ભાન નથી એવા ઘણા આપણે પ્રત્યક્ષ દેખીયે છીએ તે બધું અન્યાયથી પ્રાપ્ત કરેલા ધનનું અને અભક્ષ્ય ભક્ષણનું ફળ છે. તેથી જે પોતાના આત્માની પવિત્રતા ઈચ્છતા હોય તેમણે અન્યાયથી ધન કમાવું-મેળવવું નહીં, અભક્ષ્ય ભક્ષણ કરવું નહીં અને પરસ્ત્રીની અભિલાષા કરવી નહીં."

— સમાધિ સોપાન પાન ૨૮૯-૨૯૦.

જીવની હરેક પ્રવૃત્તિની પાછળ ચોક્કસ પરિબળો કામ કરી રહ્યાં હોય છે. એ પરિબળોનું નિર્માણ કરનાર પણ જીવ પોતે જ છે. બીજો કોઈ નથી. પોતાના સુખને માટે પ્રયત્ન કરી રહેલા જીવોની પ્રવૃત્તિઓમાં આસમાન જમીન જેટલો તફાવત, વાસ્તવિક સુખ અને સુખના કારણોની સમજ તેમજ મૂલ્યાંકનમાં પૂર્વ-પ્રશ્ચિમ દિશાની જેમ તફાવતને કારણે છે.

એક બાજુ મહત્વાકાંક્ષી બે સામ્રાજ્યો વચ્ચે યુદ્ધમાં હજારો-લાખો માણસોના મૃત્યુ-ઘવાયેલાઓની યાતનાઓ, તેના પરિણામ સ્વરૂપ વિધવાઓ અને અનાથ બાળકોની હૃદયદ્રાવક મનોવેદનાઓ અને બીજી બાજુ રણસગ્રામમાં જાનના જોખમે ઘવાયેલાઓની યાતના દૂર કરવામાં રાત-દિવસ એક કરતા Red-Cross ના માનવ રત્નો-નમ્ર સેવકો. એક બાજુ મહત્વાકાંક્ષી રાજાઓનો કાળો કેર અને બીજી બાજુ મધર ટેરેસાનું લોકસેવામાં સમર્પણ જીવન.

Behind every action of a man or an animal, there is a motivating force arising from an inner conviction that he will be happy in this way or that way. His action is a natural consequence of that inner conviction. The difference between what is ultimately good and conduc ive to happiness or otherwise is in direct proportion to the understanding of the real values of life.

એક બાજુ લાખો રૂપિયાની આવક હોવા છતાં કોઈનું હરામનું અગર મફતનું ખાવાની, ઘરભેગું કરવાની દાનત અને બીજી બાજુ દસ પૈસાના સિક્કાથી માંડી સોસોની નોટો (ધોવા નાખેલા શેઠના કપડામાં મળી આવેલી) અણીશુદ્ધ સોંપી દેનાર ઘરની કામવાળી બાઈ. એકબાજુ સ્વામીવાત્સલ્યમાં જમવાની ઉતાવળના કારણે કલાકસુધી તડકામાં લાઈન લગાવી ઉભા રહેનાર લક્ષાધિપતિઓ અને બીજી બાજુ છોકરાઓને જમાડી વધ્યુંઘટ્યું નિરાંતથી ખાનાર ગરીબ ઘરની વયોવૃદ્ધ બાઈ. આ બધું અનીતિથી ઉપાર્જન દ્રવ્યથી પોષણ પામેલ વિકૃતમાનસની સંસારલીલા સમજવી.

દૂરદર્શનથી પ્રસારણ થતા અનેક પ્રકારના દ્રષ્યો જોવા કરતાં અંતરંગ હૃદયકેન્દ્રમાં હરેક પળે પ્રતિભાસતા આત્માના પરિણામો-ભાવોનું અવલોકન. નિરીક્ષણ, પૃથક્કરણ સમીક્ષા અને આલોચનાદિ કરતો આ જીવ થઈ જાય અને દુન્વયી પદાર્થો પરથી દ્રષ્ટિ ઉઠાવી લઈ અંતરંગ ભાવોને જિનાજ્ઞા પ્રમાણે ઓળખીને હેય-ઉપાદેય ભાવોને જાણીને અંતરંગમાં નિષ્કલંક ચારિત્ર નિર્માણનો સંકલ્પ કરે તો ક્રમેકરીને અસંખ્ય કર્મોની નિર્જરા કરતાં ઉત્તરોત્તર વિશુદ્ધિને પ્રાપ્ત આ જીવ થોડાક ભવોમાં દેવ-માનવ ભવ પામીને અંતિમ પરમ પુરૂષાર્થ આરાધી અનંત, અક્ષય, અવ્યાબાધ, અનુપમ સુખધામ નિર્વાણની પ્રાપ્તિ કરે એવો જિનેશ્વર પ્રભુનો ઉપદેશ છે.

અન્યાય-અનીતિ પૂર્વક ધનાદિ ઉપાર્જનમાં જીવના મનોવ્યાપારમાં એક એવા અનિષ્ટ પરિબળોનું વિષચક્ર પેદા થાય છે કે જેની સંતતિ રૂપે બીજા હજારો સંકલ્પ-વિકલ્પોની જાળમાં પોતે પોતાને ઘેરી લે છે અને તેના ફળસ્વરૂપ પરવશ અને લાચાર બની જીવનનાં બાકીનાં એક પછી એક વર્ષ એજ પરવશ અવસ્થામાં પૂરાં કરી અંતસમયે એવી મનોવ્યથા માનસિક તાણ (Tension) હતાશ વિ. થી ઘેરાઈ જઈ અંતરંગમાં અકથ્ય વેદના-માનસિકતાણ, હતાશા અનુભવતો અને બાહ્યમાં બેશુદ્ધ અવસ્થામાં આ દેહ અને દેહના કારણે સ્ત્રી પુત્રાદિને અસહાયરૂપ અને મકાનાદિ બાહ્ય સાધનોને જેમને તેમ મૂકી દુર્ગતિમાં ચાલ્યો જાય છે. આમાંથી કોઈ શરણરૂપ થતું નથી.

''अणायार भंडसेवी जन्ममरणादि बंधति''

એક અંગ્રેજ લેખકે લખ્યું છે :

Multitudes of men have made money but have lost the capacity for enjoyment in the process.

નીતિથી ધન કમાનારને જીવનમાં સંતોષરૂપ ધનની પ્રાપ્તિ થાય છે. એક અપૂર્વ આત્મવિશ્વાસ-સંકલ્પ બળનું અંતરંગમાં નિર્માણ થાય છે. અને કાલાદિલબ્ધિ પામતાં ભગવાનના પ્રવચનના સારરૂપ નિર્મળબોધને પામે છે. અને ક્રમેકરીને કૃતકૃત્યદશાને પામે છે. પંડિત દીપચંદજી કાસલીવાલ કૃત 'ભાવદીપિકા'માં સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવના ભાવોનું વર્ણન કરતાં લખે છે: ''અનંતાનુબંધી રહિત અપ્રત્યાખ્યાનાદિ ત્રણ કષાયના ઉદયમાં મહાપાપના કારણ અન્યાયરૂપ જે ચંચલ ભાવ તેને છોડી વિમલતા-આત્મશુદ્ધિને પ્રાપ્ત હોય છે ,ન્યાયરૂપ નિશ્ચલભાવમાં રહે છે. અહીં જીવ સમ્યગ્દ્રષ્ટિ હોય છે. અને સમ્યકભાવનું ગ્રહણ હોય છે. ચાર કષાય, ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ તથા નવ નોકષાય-હાસ્ય, રતિ, અરતિ, ભય, શોક, જાુગુપ્સા અને ત્રણ વેદ પુરુષવેદ, સ્ત્રીવેદ અને નપુંસકવેદ ન્યાયરૂપ પ્રવર્તે છે. ચારે કષાયોનાં કાર્ય તો હોય છે પણ ન્યાયરૂપ. પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોનું સેવન તો હોય છે પણ તે ન્યાયરૂપ તેમજ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ ભાવની યોગ્યતાપૂર્વક હોય છે. વિષય-કષાયનાં કાર્યોમાં અતિઆસક્તતા પૂર્વક મૂર્છાભાવને પ્રાપ્ત થતો નથી. અયોગ્ય કાર્ય કદાપિ કરતો નથી. રાજવિરૂદ્ધ, ધર્મવિરૂદ્ધ, લોકવિરૂદ્ધ વિષય કષાયનાં કાર્ય કરતો નથી. સાત વ્યસનમાંથી એક પણ વ્યસન તેને હોતું નથી. અને હંમેશાં જાગૃત-સચોટ ઉપયોગ સહિત હોય છે.

— ભાવદીપિકા પાન-૬૩

આ ઉપરથી સમજાય છે કે જેના જીવનમાં અન્યાય અનીતિનાં કાર્યો છૂટ્યાં નથી તેની બધી કહેવાતી ધાર્મિક ક્રિયાઓ તેમજ લાખો રૂપિયાનાં દાન બાહ્ય આડંબર, દેખાદેખી, અભિમાનની પુષ્ટી કરનારાં જાણવાં. તેમજ આત્મવંચના અને મનમનામણાં (Self deception and wishful thinking) સિવાય બીજું કંઈ નથી.જેને ન્યાય-નીતિપૂર્વકની કમાણી નથી તેને દાનના સાચા ભાવ કદી હોઈ શકે નહીં. અંગ્રેજીમાં એક ખુબજ ભાવવાહી કહેવત છે :

"Be just before generous."

—: મરણોત્તર કારજનો જમણવાર :—

એક ગામમાં એક વયોવૃદ્ધ માણસ ગુજરી ગયા. તેમના બે દિકરાઓ મુંબઇમાં રહેતા હતા. પિતાજીના કારજ માટે ગામમાં આવ્યા. કારજમાં ગામ જમાડવાનો નિર્ણય કર્યો. જુના જમાનામાં પંચની રજા વગર ગામનો જમણવાર કોઈ કરી શકતો નહોતો. પંચની બેઠક થઈ. તેમાં જમણવાર સંબંધી વાતો ચાલતી હતી. બધી સભામાં એક પ્રતિષ્ઠિત વયોવૃદ્ધ સજ્જન બધું સાંભળતા હતા. કંઈ બોલતા ન હતા. સ્વાભાવિક રીતે બધાની નજર તેમના તરફ વળી અને બધાએ પૂછયું, 'મુરબ્બી! આપ કેમ કંઈ બોલતા નથી?' બંને ભાઈઓએ પણ આજ પ્રમાણે પ્રશ્ન કરતાં તેમણે કહ્યું કે પંચની બેઠક આવતી કાલ પર મુલતવી રાખો અને બંને ભાઈઓને રાતના પોતાને ઘેર આવવા જણાવ્યું. બંને ભાઈઓ તેમના ઘેર ગયા. બંને ભાઈઓને મુરબ્બીએ પૂછયું કે ભાઈ! તમોને યાદ તો હશે કે તમારા પિતાશ્રીને દેવું થઈ ગયેલું અને ગામના ઘણા માણસો જેમાં વિધવા બાઈઓ પણ છે તેમના પૈસા ડુબી ગયા છે. તમારે જમણવારમાં જે ખર્ચ થવા જોગ છે તેટલામાં ગામના બધા જુના લેણદારોનું દેવું પતી જશે એટલે મારી તમને સલાહ છે કે તમે જમણવારનો વિચાર માંડીવાળો અને બાપનું જૂનુ દેવું પતાવી દો. મુરબ્બી પાસે લીસ્ટ તૈયાર જ હતું. બંને ભાઈઓએ મુરબ્બીની વાત કબુલ કરી અને લીસ્ટ મુજબ બધાના ઘેર જઈ દેવું પરત કરી દીધું. ગામમાં હર્ષોલ્લાસ થઈ ગયો અને જ્યારે આ બે ભાઈઓ મુંબઇ પાછા આવવા ઘેરથી નીકળ્યા ત્યારે આખું ગામ સ્ટેશન સુધી તેમને વરાવવા ગયેલ.

—: બે મિત્રો વચ્ચે વિખવાદ અને લવાદ :—

અમદાવાદમાં લગભગ ૫૦ વર્ષ ઉપરની બનેલી આ વાત છે. શ્રેણિક અને ગૌરવ નામે બે મિત્રો હતા. શ્રેણિક ગર્ભશ્રીમંત અને ગૌરવ સાધારણ સ્થિતિનો હતો. બંને મિત્રો એટલે જાણે કૃષ્ણ સુદામાની જોડી. દિવસમાં એક વખત ભેગા થઈ વાતચીત ખબરઅંતર પૂછ્યા વગર રાતના ઘેર સૂવા જાય નહીં. સમય જતાં ગૌરવની આર્થિક સ્થિતિ કથળતી ગઈ. ઘરમાંનાં ઘરેણાં વેચી ઘરખર્ચ ચલાવવાનો વખત આવ્યો. ગૌરવે આનો કંઈ પણ અણસાર શ્રેણિકને આવવા દીધેલ નહીં. એક દિવસ શ્રેણિક ગૌરવની ઑફિસ આગળથી પસાર થતો હતો. તેણે ઑફિસ આગળ ગાડી ઉભી રાખી પહેલે માળ ગૌરવની ઑફિસમાં ગયો. ઑફિસમાં પગ મૂકતાં જોયું કે એક માત્ર પટાવાળો બેઠો છે. બધા માણસોને રજા આપી દીધેલ છે અને ગૌરવ ટેબલ પર બંને હાથમાં માથું મૂકી ખુરશીમાં બેઠેલ હતો. કોઈક આવ્યું છે એવો અણસાર થતાં ઊંચું જોયું તો શ્રેણિક હતો. અંતરની મનોવ્યથાને છૂપાવી હસવાનો પ્રયત્ન કર્યો અને વર્તમાન દેશકાળનો વિષય કાઢી ચર્ચા કરવા લાગ્યો અને સાચી પરિસ્થિતિનો ઢાંકપિછોડો કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો. પરંતુ ચબરાક શ્રેણિક એક આંખના પલકારામાં બધું સમજી ગયો. અંગ્રેજીમાં બે કહેવતો છે :

1. "The tonge can lie, the eyes cannot."
2. "The eyes speak in all languages and the eyes understand all languages."

શ્રેણિકના પ્રેમપૂર્વકના દબાણને વશ થઈ અથથી ઈતિ સુધી આપવીતી તેને સંભળાવી દીધી. હવે વાત એમ હતી કે બે ત્રણ દિવસ પર એક ખ્યાતનામ પેઢીની આખા ગુજરાતની માલના વેચાણની એજંસી આપવા માટે શ્રેણિકના ત્યાં ઑફર આવેલી. કામનો બોજો એટલો બધો હતો કે શ્રેણિકે કંઈ જવાબ આપ્યો ન હતો. અને મનમાં ના પાડવાનો વિચાર કરી રાખેલો. શ્રેણિકે ગૌરવને આ એજંસી લેવાનો વિચાર જણાવ્યો. ગૌરવે કબૂલ કર્યું અને તાત્કાલિક જરૂરીયાત માટે રૂા. ૫૦,૦૦૦=૦૦ લોન આપ્યા. ગૌરવનો કારોબાર સારો ચાલ્યો અને ચાર પાંચ વર્ષમાં ગૌરવે તે જમાનામાં બે ત્રણ લાખ કમાઈ લીધા. એક દિવસ ગૌરવે શ્રેણિકને

કહ્યું કે હવે મારે બધી વાતે સારૂં છે અને આપણે હિસાબ સમજી લઇએ. શ્રેણિક કંઈ સમજ્યો નહિ અને ગૌરવને પૂછ્યું ભાઈ! શાના હિસાબની તું વાત કરે છે? ગૌરવે કહ્યું કે મેં તારી પાસેથી એજંસી અને રૂા. ૫૦,૦૦૦/- લીધા ત્યારે મનમાં નક્કી કરેલું કે જે કંઈ નફો થાય તેમાં તારો અડધો હિસ્સો મારે ગણવાનો. શ્રેણિકે કહ્યું કે એજન્સી તો જતી કરવાની હતી તે મેં તને લેવા કહ્યું અને રૂા. ૫૦,૦૦૦=૦૦ પાછા ત્યારે લેવા કે તારે તેની બીલકુલ જરૂર ન હોય અને તે પણ તને મારો દેવાદાર ન રાખવા માટે. પૈસા માટે નહીં. ગૌરવ કહે હું તને ૫૦% ભાગ આપ્યા વગર રહું નહીં અને શ્રેણિક કહે એક પણ પૈસો ભાગનો લેવો મારે હરામ છે. વિખવાદ વધતો ગયો. અને બંનેની મિત્રતામાં ફરક પડવા લાગ્યો. ગામમાં પણ બધે વાતો થવા લાગી. શ્રેણિક અને ગૌરવની પત્નીઓને પણ લાગ્યું કે બંને મિત્રોમાં કંઈક વિખવાદ જાગ્યો છે. બંનેએ મળી ગામના એક મુરબ્બી સજ્જનને બંને મિત્રો વચ્ચે શું વિખવાદ પડ્યો છે તે તેમની પાસેથી જાણી નિવેડો લાવવા સૂચન કર્યું. અને કોઈપણ ભોગે બંનેનું સમાધાન કરી આપવા આગ્રહ કર્યો. મુરબ્બીએ વાત ધ્યાનમાં લઈ મોકો જોઈ બંનેને પૂછ્યું અને બંને મિત્રોએ નિખાલસપણે પોત પોતાની વાત રજુ કરી. ઘણી રકઝક પછી એમણે મુરબ્બીને લવાદ તરીકે નીમ્યા અને તેમનો ચુકાદો માથે ચઢાવવાનું વચન આપ્યું. બંનેના વિચારો તેમજ મક્કમતા જાણી લઈ મુરબ્બીએ ચુકાદો આપ્યો કે ધંધામાં ભાગ આઠ આનીને બદલે ચાર આની રાખવો અને ચાર આની મુજબ જે નફો નીકળે તે બંનેએ મળી ધર્માદામાં વાપરવા-ખર્ચવા. તે પ્રમાણે ચુકાદાનો અમલ થયો અને બંનેની મૈત્રી પાછી હતી તેવી થઈ ગઈ.

ગૃહસ્થને કોઈપણ કાર્યમાં, વ્યવહારમાં કે ધનાર્જનમાં ન્યાય-નીતિ અગ્રસ્થાને તેમજ નિયામક હોવી જોઈએ. પોતાની યોગ્યતા કરતાં કોઈવધુ વિશેષણોથી નવાજે તેપણ સાંખી શકે નહીં. ઘરમાં ચીજવસ્તુની વપરાશ ભોગવટો ઘરના બીજા સભ્યોની જરૂરિયાત લક્ષમાં લઈ બીજાઓને પહેલાં આપી પછી પોતે ભોગવે. આવી ન્યાયસંપન્નતા જ્યાંસુધી જીવનમાં ઓતપ્રોત ન થાય ત્યાંસુધી આ જીવને ભગવાને બાલજીવ કહ્યો છે પછી ઉંમર ભલે તેની ૭૦ વર્ષની હોય.

"This virtue of rectitude must be firmly established in mind and so enter into every detail of a man's life. All dishonesty, deception, trickery and misrepresentation must be for ever put away, and the heart be purged of every vestige of insincerity and Subterfuge. The least swerving from the path of rectitute is a deviation from virtue. There must be no extravagance or exaggeration of speach, but the simple truth must be stated. Engaging in deception, (no matter how apparently insignificant) for glory or with the hope of personal advantage is a state of illusion which one should make effort to dispel. It is demanded of a man of virtue that he shall not only practise the most rigid honesty in thought, word and deed but that he will be exact in his statements, omitting and adding nothing to the actual truth. In thus shaping his mind to the principle of rectitude, he shall gradually come to deal with people and things in the just and impartial spirit, considering equity before himself and viewing all things with freedom from personal bias, passion and prejudice (પૂર્વગ્રહ અને રાગદ્વેષ). When the virtue of rectitude is fully practised, acquired and comprehended,so that all temptation to untruthfulness and insincerity has ceased, then is the heart made pure and noble, then is character strengthened and knowledge enlarged and life takes a meaning and a new power."

— *James Allen*

પરમાત્મદશાને પ્રાપ્ત કરાવનાર આકિંચન્ય ધર્મ જે ભગવાને કહ્યો છે તેનું વર્ણન :- આકિંચન્ય ધર્મ પ્રધાનપણે સાધુજનોને હોય છે. તથાપિ એકદેશધર્મ ધારણ કરનાર ગૃહસ્થ પણ એ ધર્મને (એટલે કે સર્વવિરતિ-સર્વ પરિગ્રહનો બાહ્યાભ્યંતર ત્યાગ, સર્વ ઠેકાણે સમભાવ, પાંચ સ્થાવર અને છઠ્ઠા સર્વ ત્રસજીવો એટલે કે છનિકાય જીવોને અભયદાન રૂપ) ગ્રહણ કરવાની ઈચ્છા નિરંતર સેવે છે અને ત્યાંસુધી ગૃહસ્થદશામાં જે મંદરાગી, અતિ વિરક્ત રહીને પ્રમાણિક પરિગ્રહ રાખે છે, ભવિષ્યની વાંછા કરતો નથી, અલ્પ પરિગ્રહમાં અતિ સંતોષી રહે છે, પરિગ્રહને પાપરૂપ દુ:ખરૂપ (આ ભવ તેમજ પરભવમાં) અને અત્યંત અસ્થિર માને છે અને એ પરિગ્રહને અર્થે થતો આરંભ અને તેનાથી થતી છનિકાય જીવોની હિંસાને કારણે ઘોર નરક-તિર્યંચનાં દુ:ખો અસંખ્યકાળ સુધી ભોગવવાં પડે છે એમ જાણે છે. આવા આકિંચન્ય ધર્મની અને પરમપવિત્ર વીતરાગમાર્ગની જેને સહેજ પણ ઝાંખી-દર્શન થએલ છે તેના જીવનમાં અન્યાય-અનીતિનો સંભવ કેમ હોઈ શકે ? સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિમાં ક્ષયોપશમાદિ પાંચ લબ્ધિના પરિણામો ન્યાયનીતિયુક્ત ઉત્તરોત્તર વિશુદ્ધિનાં પરિણામો છે.

ન્યાયનીતિથી ઉપાર્જન કરેલા દ્રવ્યનું સુપાત્રે દાન કરનાર નંદિષેણ કુમાર (શ્રેણિકરાજાનો પુત્ર) અનેક દિવ્યભોગ ભોગવી ચારિત્ર ગ્રહણ કરી સ્વર્ગમાં જઈને અનુક્રમે મોક્ષપદને પામશે.

ન્યાય-અન્યાય, નીતિ-અનીતિ કોઈપણ પ્રકારે ઉપાર્જિત ધન-વૈભવ તેમજ રાજમહલ જેવા નિવાસસ્થાનોમાં રાચતા અને તેમાં જીવનનું સાફલ્ય સમજતા અને તેથી આગળ વધી તેમાં ભગવાનની કૃપા જોતા જૈન ભાઈ-બહેનોએ જરાક મનને શાંત કરી વિચારવા જેવું છે કે જે પરિગ્રહને ભગવાને પાપ (પતન કરનાર) અને ગૃહવાસને હિંસા તેમજ સર્વ અનર્થોનું મૂળ કહી ગૃહસ્થ-શ્રાવકને પોતાની શક્તિ અનુસાર તેના ત્યાગનો ઉપદેશ આપ્યો છે તેમજ તેના સાચી સમજપૂર્વકના ત્યાગમાં અવિનાશી સુખ સમાયેલું છે એમ કહેલ છે તે પરિગ્રહની વૃદ્ધિમાં ભગવાનની કૃપા જોવી તેના જેવું વીતરાગમાર્ગની અવહેલના સ્વરૂપ બીજું કયું અસત્ય-જૂઠાણું હોઈ શકે ? સમ્યગ્દ્રષ્ટિ ગૃહસ્થ-શ્રાવક-શ્રાવિકા, મુનિ-આર્જિકા જે મોક્ષમાર્ગ-વીતરાગમાર્ગમાં રત છે તેમજ વીતરાગ માર્ગની મન-વચન અને કાયાની અર્પણતાપૂર્વક આરાધના કરનાર જીવને ભગવાનની દેશનામાં આવેલ-ગણધર પ્રભુએ ઝીલેલ અને પરંપરાએ આચાર્ય ભગવંતોથી રચિત જિનાગમો (જે વર્તમાનમાં પણ આપણા સદ્‌ભાગ્યે મોજુદ છે)માં પદે પદે ભગવાનની કૃપા દેખાય છે. ધનવૈભવમાં નહીં.

ભગવાનનો ઉપદેશ જેના હૃદયમાં ઉતર્યો છે એવા જ્ઞાની-ઉપાસક જીવના અંતરના ઉદ્‌ગારો :

जिनधर्मो विनिर्मुक्त्वा मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेत् दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितो ॥

હે ભગવાન! જિનધર્મરહિત ચક્રવર્તીપણું પણ મને ખપતું નથી. જિનધર્મના સંસ્કાર સહિતની ગરીબાઈ પણ મને કબુલ મંજુર છે.

નં.-૨

—: શિષ્ટાચાર પ્રશંસક :—

आचार : प्रथमो धर्म :

ન્યાય-નીતિપૂર્વક ધનાદિનું અર્જન કરી જીવનનિર્વાહ કરવો તેને સદાચાર કહેવામાં આવેલ છે. જ્યારે ન્યાયથી પ્રાપ્ત વિષયો-પરિગ્રહો તેમજ ધનાદિના ઉપાર્જન-રક્ષણાદિમાં આરંભથી થતી હિંસાનો એકદેશ કે સર્વદેશ ત્યાગ તેને વ્રતાચાર કહેવામાં આવેલ છે. હિંસામાં બીજા ચાર પાપ અસત્ય-ચોરી-અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહ ગર્ભિત જાણવાં.

पञ्चेतानि पवित्राणि सर्वेषां धर्मचारिणां।
अहिंसा सत्यमस्तेय त्यागो मैथुन वर्जनं॥

સર્વ ધર્માચરણમાં પાંચ પવિત્ર આચરણો છે અને તે અહિંસા-સત્ય-અચોર્ય-બ્રહ્મચર્ય અને અપરિગ્રહ. પરિગ્રહને ભગવાને પાપ કહેલ છે. **पातयति इति पाप:** જે આત્મામાં કલુષતા ઉત્પન્ન કરે અને બાહ્યમાં નરક-તિર્યંચાદિ ગતિમાં પતનના કારણ જે તે પ્રકારનાં કર્મોનો બંધ કરે તેને પાપ કહેલ છે.

संसारमूलारंभा तेषां हेतु परिग्रह :।
तस्मादुपासक : कुर्यादल्पंमल्पं परिग्रह :॥

સંસારનું મૂળ આરંભ છે અને આરંભનું કારણ પરિગ્રહ છે તેથી આત્માર્થી જીવે (ઉપાસક અગર તો આરાધક જીવે) પરિગ્રહને ધીરે ધીરે ઘટાડતા જવું. અંતરંગ તેના પ્રત્યેની આસક્તિ ઘટાડવી. **'मुर्च्छा परिग्रह :'.**

— *તત્વાર્થ સૂત્રમાં પરિગ્રહની વ્યાખ્યા.*

પરિગ્રહત્યાગમાં પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોની આસક્તિના ત્યાગની વાત છે. પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોની લુબ્ધતા પરિગ્રહનું મૂળ કારણ છે. અને આરંભ (જેમાં હિંસાદિ પાંચ પાપોનો સમાવેશ છે) નું કારણ પરિગ્રહ છે.

પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોની લુબ્ધતાને કારણે કષાય: ક્રોધ-માન-માયા અને લોભની ઉત્પત્તિ હોય છે. અને કષાયની ઉત્પત્તિ થતાં જીવ હિંસાદિ પાંચ પાપોમાં પ્રવર્તન કરે છે. એટલે જિનાગમમાં ઠેરઠેર વિષય વાસનાના ત્યાગનો ઉપદેશ છે. કોઈ ઠેકાણે વિષયની ઈચ્છાને કષાય કહેલ છે.

મનુષ્યના જીવનમાં તેની સુખ-શાંતિ તેમજ ઉન્નતિનો આધાર તેના આચાર-વિચાર પર છે. નહિ કે તેના બાહ્ય ધનાદિ સંપત્તિ-સમૃદ્ધિ કે હકુમત પર. આચાર તે ચારિત્રગુણની પર્યાય છે અને વિચાર જ્ઞાનગુણની પર્યાય છે અને બંનેના સમાયોગથી મોક્ષ છે. **'ज्ञानक्रियाम्यां मोक्ष :'** આચાર વિચારનું સમન્વય :

क्षर्ति मन:शुद्धि विधेरतिक्रमं, व्यतिक्रमं, शीलव्रतेर्विलंधनं।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं, वदन्त्यनाचारमिहातिआसकततताम्॥

મનમાં પાપના વિચાર માત્રને અતિક્રમ, શીલવ્રતના ઉલ્લંઘનને વ્યતિક્રમ, વિષયોમાં પ્રર્વતનને અતિચાર અને વિષયોમાં અત્યંત લુબ્ધતાને અણાચાર કહ્યો.

— *અમિતગતિ આચાર્યકૃત 'સામાયિક પાઠ'માંથી*

ઘોર હિંસાથી ગર્ભિત કર્માધામી ધંધાઓથી ધનાદિ સંપત્તિનું ઉપાર્જન, તેનું અભિમાન, બાહ્યાડંબર 'Ostentation of wealth' અને તેમાં આગળ વધી ભગવાનની કૃપાનું આ બધું ફળ છે એમ જ્યારે જૈન ધર્મના અનુયાયીઓ પાસેથી સાંભળીએ છીએ ત્યારે ભગવાને કહેલ પાંચમા આરાનો ચિતાર સ્પષ્ટપણે દેખાય છે. ધર્મી જીવ ગરીબ હોઈ શકે છે અને અધર્મીજીવ ધનવાન પણ હોઈ શકે છે તેનાં ધર્મની વિફળતા ન સમજવી.

प्रवर्तते पराशांति, धृति संतुलनं क्षमा।
फलान्यमुनि धर्मस्य, फलं तस्यास्ति नो धनम्॥

ધર્મથી પરમ શાંતિ, ધૃતિ, સંતુલન અને ક્ષમાભાવની પ્રાપ્તિ થવી એ ધર્મનું ફળ છે. ધર્મનું ફળ ધનાદિ સામગ્રીની પ્રાપ્તિ નથી.

"Sometimes virtue starves and vice is fed. What then? Is reward of virtue bread?"
— *Pope*

"Those who are earning their livelihood by dishonest and unfair means are the most ardent believers in god and his mercy. It suits their profession. It is wishful thinking and self deception both combined." — *Anonymous*

જીવદયા - Prevention of cruelty to animals ના સંદર્ભમાં કોઈકે લખેલું છે :

"If animals were to sit on judgement over the crimes of human race towards their community, the existing number of gallows with many more times added, working three shifts in a day, would not be able to cope up with the work."
— *Anonymous*

—: સદાચાર - વ્રતાચાર - અણાચાર - ભ્રષ્ટાચાર :—

૧. સદાચાર : ન્યાયનીતિપૂર્વક ધનાર્જન કરી જીવનનિર્વાહ. ક્ષયોપશમલબ્ધિ, વિશુદ્ધિલબ્ધિ, દેશનાલબ્ધિ, પ્રાયોગ્યલબ્ધિ, કરણલબ્ધિ તેની પરાકાષ્ટામાં પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ, ફળ મોક્ષમાર્ગ.

૨. વ્રતાચાર : ન્યાયનીતિથી ઉપાર્જન ધનાદિની પ્રાપ્તિ તેમજ પરિગ્રહ-તેનું રક્ષણ વિ.માં અનિવાર્ય હિંસાદિનો એકદેશ-સર્વદેશત્યાગ. ૧૧ પડીમા ૫ મહાવ્રતાદિનું પાલન-પાંચ સમિતિ, ત્રણ ગુપ્તિ રૂપ અષ્ટ પ્રવચન માતાની આરાધના. ફળ: મનુષ્ય દેવગતિની પ્રાપ્તિસહ ક્રમે કરીને મોક્ષ.

૩. અણાચાર ભ્રષ્ટાચાર : અધમતા-નિર્દયતા-હિંસાનું તાંડવ - આંતકવાદ, નફાખોરી, નશાખોરી, લાંચરૂશ્વત, દાણચોરી તેની પરાકાષ્ટા - સાત વ્યસન (માંસ, મદિરા, ચોરી, પરસ્ત્રીગમન, વેશ્યાગમન, જુગાર અને શિકાર)નું નિ:શંકપણે સેવન, તેનું ફળ અસંખ્ય ભવોમાં (સાંભળતા પણ હાંજા ગગડી જાય એવાં) અસહ્ય દુ:ખોની પ્રાપ્તિ, અનંત સંસાર. જેને આ સાત વ્યસનમાંથી એકપણ વ્યસનનું સેવન છે તે જૈન નામ તરીકે ઓળખાવાને લાયક નથી એમ શાસ્ત્રકારો પોકારી પોકારીને જૈનના આચાર શાસ્ત્રોમાં કરૂણાર્દ્ર હૃદયથી કહી ગયા છે.

"તે તે ભોગ્ય વિશેષનાં સ્થાનક દ્રવ્ય સ્વભાવ
ગહન વાત છે શિષ્ય આ કહી સંક્ષેપે સાવ"

— *શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર*

માણસ જેજે જાતનાં આચરણ કરે છે (મન, વચન, કાય અને કૃત-કારીત અને અનુમોદના એમ નવ પ્રકારે) તેને ભોગવવા યોગ્ય અનુકૂળ સ્થાન ત્રણલોકમાં પડેલું છે. આ વાત કહે છે કે ઘણી ગહન છે. અહીં માત્ર સંક્ષેપમાં-ટૂંકમાં કહેલ છે. જેને વિસ્તારથી જાણવાની ઈચ્છા હોય તેણે તત્ત્વાર્થસૂત્ર તેમજ ગોમટ્ટસારમાં જીવ-અજીવ અધિકારમાં જોઈ લેવું.

चरित्तो खलु धम्मो

શુભને અશુભ અનેકવિધ પૂર્વે કરેલું કર્મ જે;
તેથી નિવર્તે આત્મને, તે આતમા પ્રતિક્રમણ છે. ॥ ૩૮૩ ॥
શુભ ને અશુભ ભાવી કરમ જે ભાવમાં બંધાય છે;
તેથી નિવર્તન જે કરે તે આતમા પચખાણ છે. ॥ ૩૮૪ ॥
શુભ અને અશુભ અનેકવિધ છે વર્તમાને ઉદિત જે;
તે દોષને જે ચેતતો તે જીવ આલોચન ખરે. ॥ ૩૮૫ ॥
પ્રતિક્રમણ નિત્ય કરે અને પચખાણ જે નિત્યે કરે;
નિત્યે કરે આલોચના તે આતમા ચારિત્ર છે. ॥ ૩૮૬ ॥

— *શ્રી સમયસાર*

જૈન શાસનમાં પ્રતિક્રમણ અગ્રસ્થાને અને તેમાં પ્રચલિત શબ્દ **'मिच्छामि दुक्कडं'** છે. મનથી અને કાયાથી નમ્ર બનીને દોષોને દૂર કરવા માટે, હું મારાથી થયેલા દુષ્કૃતને મિથ્યા કરવા પશ્ચાતાપ પૂર્વક નિષ્ફળ કરૂં છું અથવા મારી ભૂલથી (હું ભવિષ્યમાં તેવી ભૂલ ફરીથી નહિ કરૂં એવા અધ્યવસાન પૂર્વક) પાછો ફરૂં છું. પ્રતિક્રમણ માટેનું આ સૂત્ર અને તેનું ઉચ્ચારણ તથા તેના અર્થની ગંભીરતા, જૈનશાસનના પ્રણેતા મહાનુભાવોની પરમ જ્ઞાનસંપન્નતા, પરમ શીલસંપન્નતા અને પરમ કારૂણ્યશીલતા તથા સર્વોત્કૃષ્ટ શાસનની સ્થાપના સૂચવે છે. પૂર્વે કરેલા પાપોનું પ્રાયશ્ચિત ભવિષ્યમાં તેવી ભૂલ નહિ કરવાના નિણર્યપૂર્વક જ હોય અને તે નિર્ણય-પ્રતિજ્ઞાને પચખાણ કહેવામાં આવેલ છે. પચખાણ-વ્રત-પ્રતિજ્ઞા અભિગ્રહ વિ. એ એકજ અર્થના સૂચક છે અને છેવટે વર્તમાનમાં થઈ રહેલા ભાવોનું બારીકાઈપૂર્વક અંતરંગમાં નિરીક્ષણ-પૃથક્કરણ-સમીક્ષા કરી તેમજ સર્વ આપદાઓનું મૂળ અંતરંગ ભાવોમાં રહેલું છે એમ બરાબર સમજી સતત જાગૃતિપૂર્વક વર્તમાન દોષોને જોઈ તેને ટાળવા તે આલોચના છે. આ ત્રણે એટલે કે પ્રતિક્રમણ-પચ્ચખાણ અને આલોચના મળી એક ચારિત્ર નામ પામે છે. ચારિત્રનું આવું આબેહુબ ભાવવાહી વર્ણન જિનશાસન વગર બીજે ક્યાં જોવા મળે? **चरित्तो खलु धम्मो** ચારિત્ર એજ ખરો ધર્મ છે. ચારિત્ર પોતે જ સુખ તેમજ સુખમય છે. આત્માનું સુખ આત્મામાં હોય, આત્માના ગુણમાં હોય તેનો આવિર્ભાવ તે ધર્મ કહો કે મોક્ષમાર્ગ કહો બંને એક જ અર્થને સૂચવે છે.

''પ્રતિક્રમણ આદિ ક્રિયાચરણ નિશ્ચય તણું કરતો રહે;
તેથી શ્રમણ તે વીતરાગ ચરિત્રમાં આરૂઢ છે.''

—: પ્રતિક્રમણ - પશ્ચાતાપ - પ્રાયશ્ચિત :—

ભગવાનની આજ્ઞા-આમ્નાય વિરૂદ્ધ પૂર્વે કરેલ સર્વ દુરાચરણ માટે પશ્ચાતાપરૂપી એવો અગ્નિ પ્રગટ કરે **કે પૂર્વે બાંધેલ સત્તામાં** રહેલ કર્મ (સામાન્ય લોકોને સમજ પડે તેવી ભાષામાં કહીએ તો કુસંસ્કાર) બળીને ભસ્મ થઈ જાય. પ્રાયશ્ચિતને છ અંતરંગ તપમાં પ્રથમ સ્થાન છે (પ્રાયશ્ચિત, વિનય, વૈયાવૃત, સ્વાધ્યાય, વ્યુત્સર્ગ અને ધ્યાન) અને તત્ત્વાર્થસૂત્ર ૯મા અધ્યાયની ૩જી ગાથામાં **'तपसा निर्जरा च'** કહેલ છે. એટલે કે પ્રાયશ્ચિતથી નવા આવતા કર્મોનો સંવર થાય છે (નવાં કર્મ બંધાતાં નથી) અને બાંધેલ સત્તામાં રહેલ કર્મની નિર્જરા થાય છે. જેને શાસ્ત્રમાં સ્થિતિકાંડઘાત અને અનુભાગકાંડઘાત કહેલ છે. અને સંવર-નિર્જરા એ મોક્ષમાર્ગ છે એવું કથન માળાના મણકાઓ વચ્ચે પસાર થતી દોરીની માફક હરેક શાસ્ત્રમાં ઓતપ્રોત રહેલ છે.

પસ્તાવું એ પુનિત ઝરણું, સ્વર્ગથી ઉતર્યું છે;
પાપી તેમાં પુનિત થઈને પુણ્યશાળી બને છે. — *કલાપિ*

"પંચમકાળમાં પ્રતિક્રમણને જ પરમાગમમાં ધર્મ કહેલ છે. આત્માના હિત, અહિતના વિચારમાં નિરંતર ઉદ્યમી રહેવા યોગ્ય છે. પ્રતિક્રમણ આત્માની ભારે સાવધાની (જાગૃતિ) રખાવનાર છે અને પૂર્વે (આ ભવ તેમજ પરભવમાં) કરેલા પાપની તેનાથી નિર્જરા થાય છે."

— સમાધિ સોપાન પાન-૨૪૫

—: સામાયિક :—

જૈનધર્મની ભવ્ય ઈમારત સામાયિકના દૃઢ પાયા પર ખડી છે. અને સાચા અર્થમાં સામાયિકનું પુરોગામી સમ્યગ્દર્શન છે.

જીવના સુખદુ:ખનું કારણ અંતરંગ ભાવો પર નિર્ભર છે, બાહ્ય પદાર્થો કે સંયોગો કે પ્રસંગો પર નહીં, એમ જ્યારે પ્રથમ ઓઘસંજ્ઞાએ પણ જણાશે ત્યારે તે બાહ્ય સંજોગો પરથી લક્ષ છોડી અંતરંગ ભાવો તરફ તેમજ તેને સુધારવા તરફ કેન્દ્રિત કરશે. આ બધું પણ ભગવાનની આજ્ઞા-શાસ્ત્રની આમ્નાય અનુસાર, શાસ્ત્રમાં બતાવેલ વિધિ અને ક્રમપૂર્વક હોવું જોઈએ. સ્વચ્છંદપણે પોતાના અભિપ્રાયપણે નહીં.

"જે થાય અધ્યવસાન જીવને વસ્તુ આશ્રિત તે બને;
પણ વસ્તુથી નથી બંધ, અધ્યવસાન માત્રથી બંધ છે."

સુખદુ:ખનું કારણ સમભાવ કે વિષમભાવ છે. સમભાવ અને તેની આરાધના મોક્ષમાર્ગ છે. વિષમભાવ અને તેમાં રક્તતા સંસારમાર્ગ છે. ભગવાન કહે છે કે હે જીવ! તારૂં કલ્યાણ (પવિત્રતા, સુખ, શાંતિ) શામાં રહેલ છે તે તું વિચારી જો અને પછી તને જે રૂચે તે કર.

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा जं सेयं तं समाचरे॥

— દશવૈશાલિક ૪/૫

—: નિત્યક્રમ :—

सद्य: प्रातः समुत्थाय, स्मृत्वा च परमेष्ठिनम्।
प्रात: कृत्यान्निवृत: सन्, कुर्यादात्मनिरीक्षणं॥
सामायिकं प्रकुर्वीत, समभावस्य लब्धये।
भावना भावयेत् पुण्या:, सत्संकल्पान् समासृजेत्॥

સવારમાં વહેલા ઉઠી, પંચ પરમેષ્ટિનું સ્મરણ કરી સવારનાં સ્નાન-શૌચાદિ ક્રિયાથી પરવારી તુરતજ આત્મ નિરીક્ષણ કરવું. સમભાવની પ્રાપ્તિ માટે સામાયિક કરવું, પવિત્ર ભાવનાઓ ભાવવી અને દરરોજ નવા નવા ઉદ્દાત સંકલ્પો કરવા.

साम्यं स्यात् निर्ममत्वेन तत्कृते भावनाश्रयेत्

નિર્મમભાવથી સમતાભાવ પ્રગટે છે અને તેને માટે ભાવનાઓ ભાવવી જોઈએ. તેનો આશ્રય કરવો જોઈએ અને તે છે : અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓ, મૈત્રિ આદિ ચાર ભાવનાઓ, અહિંસાદિ પાંચ મહાવ્રતની દરેકની પાંચ પાંચ મળી, ૨૫ ભાવનાઓ.

संसार देह स्वरुपं संवेग वैराग्यार्थम्

સંસાર અને દેહનું સ્વરૂપ સંવેગ અને વૈરાગ્યને અર્થ વિચારવું જોઈએ. આ સઘળી ભાવનાઓ વ્રતોમાં

સ્થિરતા તેમજ દઢતાને માટે છે. તીર્થંકર ભગવંતો નિરંતર બાર ભાવનાઓ ભાવતા હતા. જેનાથી વ્રતોમાં દઢતા, વૈરાગ્ય તેમજ સંવર-નિર્જરાપૂર્વક સત્તામાં રહેલા કર્મોની અનુભાગ શક્તિ તેમજ સ્થિતિની હીનતા અને ક્રમે કરીને કર્મનો ક્ષય કરી નિર્વાણને પ્રાપ્ત થયા.

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना।
आर्तरौद्र परित्याग : तद्धि सामायिकं व्रतम्॥

સર્વ પ્રાણીઓ-જીવો પ્રત્યે સમભાવ-આત્મતુલ્ય વૃત્તિ, સંયમ (ઈન્દ્રિય સંયમ અને પ્રાણ સંયમ) માં નિર્મળ વૃત્તિ, આર્તધ્યાન અને રૌદ્રધ્યાનનો ત્યાગ તેને સામાયિક વ્રત કહેલ છે.

શિષ્ટાચાર પ્રશંસકના આ પ્રકરણમાં એક અતિગંભીર, વિચારણીય, માર્મિક વાત તેમજ જૈનધર્મનો મર્મ અને તેની અદ્વિતીયતા સમાયેલ છે તેનો વિચાર :

ભગવાનની આજ્ઞા, અહિંસા વ્રત, સામાયિક, ચારિત્ર આ એક જ અર્થના દ્યોતક છે. તેનું હાર્દ સમજાય તે માટે, ભાવભાસનને અર્થે શાસ્ત્રોમાં તેનું અલૌકિક રીતે પ્રતિપાદન કરેલ છે.

મુનિના આચરણને સામાયિક ચારિત્ર કહેલ છે. તેમાં અહિંસાદિ પાંચ મહાવ્રતોનું અતિચાર રહિત પાલન છે. વ્રતની વ્યાખ્યા : **सर्व सावद्ययोगस्य निवृत्तिर्व्रतमुच्यते** સર્વ સાવદ્યયોગની વિરતિને વ્રત કહેલ છે.

ભગવાનની આજ્ઞા :

अहिंसाऽऽराधिता येन ममाज्ञा तेन साधिता।
आराधितोऽस्मि तेनाहं धर्मस्तेनात्मसात्कृत :॥

જેણે અહિંસાની આરાધના કરી તેણે મારી આજ્ઞા સાધ્ય કરી, તેણે મારી આરાધના પણ કરી અને તેણે જ ધર્મ આત્મસાત કર્યો એટલે કે જીવનમાં ઉતાર્યો.

अहिंसा विद्यते यत्र ममाज्ञा तत्र विद्यते।
ममाज्ञायामहिंसायां न विशेषोऽस्ति कश्चन॥

જ્યાં અહિંસા છે ત્યાં મારી આજ્ઞા પ્રવર્તે છે. મારી આજ્ઞામાં અને અહિંસામાં કોઈ ભેદ નથી.

— *સંબોધિ પાન-૧૪૯*

ધર્મનું મૂળ દયા છે અને દયાનું મૂળ કોમળ પરિણામ છે.

— *પદ્મપુરાણ પાન-૩૦*

—: સામાયિક ચારિત્ર :—

करेमि भंते सामाइयं, सव्व सावज्ज जोगं
पच्चकरवामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण
मणेण वायाए कायेण न करेमि न कारवेमि,
करंतंऽपि अण्णं न समणुजाणामि, तस्स भंते
पडिक्कमामि, निंदामि, गर्हामि अप्पाणं वोसरामि.

આમાં જાવજીવ હિંસાનો ત્યાગ, વ્રત, સામાયિક અને ચારિત્ર ચાર વાત આવી અને ભગવાનની આજ્ઞા પ્રવચનનો સાર પાંચે વાતો આવી.

हिंसैव विषमावृत्तिर्दुष्प्रवृत्तिस्तथोच्यते।
अहिंसा साम्यमेतद्धि चारित्रं बहुभूकिकम्॥

હિંસા એજ વિષમવૃત્તિ છે જેને દુષ્પ્રવૃત્તિ કહેવામાં આવેલ છે. અહિંસા એજ સામ્યભાવ અને તેજ ચારિત્ર છે જેની અનેક ભૂમિકાઓ છે. (ચરણાનુયોગમાં જેનું લાખો-કરોડો શ્લોકોમાં વર્ણન કરેલ છે.)

सावद्य योगस्य विरतेरभ्यासो जायते यतः।
समभाव विकासः स्यात्, तच्च सामायिकं व्रतम्॥

જેમ જેમ સાવદ્ય યોગ (હિંસાદિ પાંચ પાપ)ની વિરતિનો અભ્યાસ થતો જાય છે તેમ તેમ સમભાવની વૃદ્ધિ થતી જાય છે અને તેજ સામાયિક વ્રત છે.

सामायिकं च मोक्षांगं परं सर्वज्ञभाषितम्।
वासीचंदनकल्पानामकमेतन्महात्मानाम्॥

વાંસલા (કુહાડીની ધાર) પ્રત્યે (સુગંધ છોડનાર) ચંદનવૃક્ષ સમાન મહાત્મા પુરુષોનું સામાયિક નામનું ચારિત્ર જ મોક્ષનું પરમ અંગ છે એમ સર્વજ્ઞદેવે કહેલ છે.

ચંડકૌશિક નાગે ભગવાન મહાવીરના પગના અંગુઠામાં દંશ દીધો. અંગુઠામાંથી સફેદ લોહીની ધાર વહેવા લાગી ત્યારે ભગવાન મહાવીર ચંડકૌશિક નાગને સંબોધતાં-પ્રતિબોધ કરતાં ચંડકૌશિક નાગને પરિણામની નિર્મળતા થતાં પૂર્વભવનું જાતિસ્મરણ જ્ઞાન થયું. તેને આ જીવનનો તેમજ સારાંયે આભવનાં દુષ્કૃત્યોનો એટલો બધો પશ્ચાતાપ થયો કે કીડીઓના નગરામાં મોં ઘાલી આમરણ ઉપવાસની પ્રતિજ્ઞાપૂર્વક દેહ છોડ્યો. તે દરમ્યાન કીડીઓએ તેના શરીરમાં ચટકાઓ ભરી ભરીને તેમજ શરીરના અંગોને ખાઈ જઈ આખું શરીર ચારણીની માફક કરી નાખ્યું હતું. બીજી બાજુ ભગવાનની આંખમાં આંસુની ધાર વહેવાલાગી. પોતાના પગમાં લોહીની ધાર નીકળવાથી નહીં પરંતુ ચંડકૌશિક નાગની પાપવૃત્તિ પર દયા આવતાં. સંગમદેવ છ મહિના સુધી ઉપસર્ગ કરી દેવલોકમાં પાછો ગયો ત્યારે પણ આમજ બનેલ.

कृतापराधेऽपि जने कृपामनन्यतारयोः।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं श्री 'वीरजिननेत्रयोः॥

Jesus wept (shortest sentence in the Bible) — John XI-35

જેલના દરવાજાના સળીયા તોડી પોતાના પિતા શ્રેણિક રાજાને જેલમાંથી મુક્ત કરવા કુહાડા સાથે જેલ તરફ કોણિકને દોડતો આવતો જોઈ શ્રેણિક રાજાના મનમાં શંકા ઉપજી કે કોણિક મને મારી નાખવા દોડતો આવે છે. પોતાના પુત્રને ઘોર પિતૃહત્યાનું પાપ ન લાગે તે હેતુથી તેના પહોંચવા પૂર્વેજ બે દાઢ વચ્ચે જીભને કચરીને શ્રેણિક રાજાએ આત્મહત્યા કરી. મહાનપુરુષોના ચારિત્રનો આવો જ કોઈ અપૂર્વ અચિંત્ય મહિમા છે. આવા હજારો દૃષ્ટાંતો ભગવાન મહાવીરના કથાનુયોગમાં મળે છે. આ પાંચમા આરામાં કોને ફુરસદ છે એ જોવાની કે જીવનમાં ઉતારવાની!

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना।
आर्तरौद्र परित्यागः तद्धि सामायिकं व्रतम्॥

—: રૌદ્રધ્યાન :—

૧. હિંસાનંદ, ૨. મૃષાનંદ, ૩. સ્તેયાનંદ, ૪. પરિગ્રહાનંદ

अभिलषति नितान्तं यत्परस्यापकारं
व्यसनविशिखभिन्नं वीक्ष्य यत्तोषमेति।
यदिह गुणगरिष्ठं द्वेष्टि दृष्टवान्यमूर्तिं
भवति हृदि सशल्यस्तद्धि रौद्रस्य लिंगम्॥

જે બીજાઓનું બુરૂં ચાહે છે તથા બીજાઓને કષ્ટ આપદારૂપ બાણોથી વિંધાયેલો અને દુઃખી જોઈને સંતોષની

લાગણી અનુભવે છે તથા બીજાઓને ગુણમાં ચઢિયાતા અગર તો બીજાઓની સંપદા-ધન-વિભુતિ-ઐશ્વર્યાદિ જોઈને દ્વેષરૂપ થઈ હૃદયમાં શલ્યસહિત થઈ જાય છે તેને નિશ્ચયથી એટલે કે ખરેખર રૌદ્રધ્યાનનું ચિન્હ-લક્ષણ ગણવું.

श्रुते दृष्टे स्मृते जन्तुवधाद्यरुपराभवे।
यो हर्षस्त ध्धि विज्ञेयं रौद्र दुखानलेन्धनम्॥

જીવોને વધ-બંધન વિ. તીવ્ર દુ:ખ અગર પરાભવ, અપમાન, ઉતારી પાડવા વિ. પ્રસંગ સાંભળવામાં આવતાં, દેખવામાં આવતાં, પેપરમાં વાંચવામાં આવતાં અગર તેને સ્મરણ કરવામાં જે હર્ષ-આનંદ ઉપજે છે તે રૌદ્રધ્યાન જાણવું જે પોતાના દુ:ખરૂપી અગ્નિને વધારવામાં ઈંધન-બળતણ પૂરૂં પાડવા બરાબર સમજવું.

આજકાલ દરરોજ ટી.વી.માં સ્ત્રી-પુરુષની કામચેષ્ટાનાં બિભત્સ તેમજ કામવૃત્તિને ઉત્તેજિત કરનારાં અને વાતવાતમાં મારામારી અને રીવોલ્વર કાઢવાના દશ્યો જોઈ મઝા માણનારા કુસંસ્કાર અને તેના ફળસ્વરૂપ દુર્ગતિ (જેનાં દુ:ખો સાંભળતાં હાંજા ગગડી જાય તો ભોગવનારની તો વાત જ શી?)નો કર્મબંધ કરે છે. આ વાત વીર પ્રભુના જૈનશાસન સિવાય બીજે જોવા પ્રાય: નહિ મળે.

बहवारंभ परिग्रहेषु नियतं रक्षार्थमम्युद्यतो
यत्संकल्पपरंपरां वितनुते प्राणीह रौद्राशय:।
यच्चालम्ब्य महत्वमुन्नतमना राजेत्यहं मन्यते
तस्तुर्यं प्रवदन्ति निर्मलधियो रौद्रं भवाशंसिनाम्॥

— જ્ઞાનાર્ણવ ગાથા ૧૨૫૧ પાન-૪૩૭

જે જીવ ઘોર આરંભ (અસંખ્ય ત્રસજીવોની હિંસાયુક્ત) અને પરિગ્રહના વિષયમાં તેના રક્ષણ માટે સદાય પ્રયત્નશીલ રહે છે અને તેને વધારવા આદિ માટે અનેક સંકલ્પ-વિકલ્પોની પરંપરાને વિસ્તારે છે તથા આપવડાઈનો આશ્રય લઈ મનમાં ફૂલ્યોફાલ્યો થકો હું રાજા, કારખાનાનો માલિક, અબજપતિ, વિશાળ ભવન, મહેલનો માલિક (જેમાં બાગબગીચા, સ્વીમીંગ પુલ ઘાસના (Lawn) ઈત્યાદિક) પોતાને સમજે છે અને બીજાઓને બતાવી તેનાં બણગાં ફૂંકી ગાલમાં હસે છે અને તેમાં અભિમાન કરે છે એને નિર્મલ બુદ્ધિના ધારક ગણધરદેવ ચોથું વિષય-સંરક્ષણાનંદ રૌદ્રધ્યાન કહે છે જે સંસાર પરિભ્રમણ અને તેના હેતુઓમાં ડુબાડુબ ભવાનંદી જીવોને હોય છે. આવા જીવોને ભગવાને બાલજીવ કહ્યા છે ભલે તેની ઉંમર ૭૦-૭૫ વર્ષની હોય.

—: આલોચના :—

અંતરંગમાં સમયે સમયે થતા દોષોને જોતો રહે. તેનું ફળ જુએ અને તેના નિવારણ માટે સદાય પ્રયત્નશીલ રહે અને પોતાની નિંદા તેમજ ગર્હા કરતો રહે. એ રીતે જીવ આત્મવિકાસ સાધી શકે છે.

—: શુદ્ધોપયોગ :—

साम्यं स्वास्थ्यं समाधिश्च योगाश्चेतो निरोधनम्।
शुद्धोपयोग इत्येस्ते भवन्त्येकार्थ वाचका:॥

સામ્ય, સ્વાસ્થ્ય, સમાધિ, યોગ, ચિત્તનો નિરોધ અને શુદ્ધોપયોગ એ બધા એકાર્થ વાચક શબ્દો છે.

જો ધર્મપરિણતસ્વરૂપ જીવ શુધ્ધોપયોગી હોય તો;
તે પામતો નિર્વાણસુખ, ને સ્વર્ગસુખ શુભયુક્ત જો. ॥ ૧૧ ॥

અશુભોદયે આત્મા કુનર, તિર્યંચ ને નારકપણે;
નિત્યે સહસ્ત્ર દુ:ખે પીડિત, સંસારમાં અતિ અતિ ભમે. ॥ ૧૨ ॥

અત્યંત, આત્મોપન્ન, વિષયાતીત, અનુપ, અનંત ને;
વિચ્છેદહીન છે સુખ અહો શુદ્ધોપયોગ પ્રસિદ્ધને ॥ ૧૩ ॥

—: હવે શુદ્ધોપયોગની વ્યાખ્યા :—

સુવિદિતસૂત્ર પદાર્થ, સંયમ તપ સહિત વીતરાગને;
સુખદુઃખમાં સમ શ્રમણને શુદ્ધોપયોગ જિનો કહે. ॥ ૧૪ ॥

— *શ્રી પ્રવચનસાર.*

—: ગૃહસ્થધર્મ :—

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्याय संयमस्तपः।
दानश्चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने॥

दमोदेवगुरुपास्तिर्दानमध्ययनं तप:।
सर्वमप्येतदफलं हिंसा येन्न परित्यजेत्॥

દેવપૂજા, ગુરુની વૈયાવચ્ચ, સ્વાધ્યાય, સંયમ, (ઈન્દ્રિય, સંયમ અને પ્રાણ સંયમ) તપ અને દાન એ ગૃહસ્થનાં નિત્યપ્રતિ ષટકર્મ કહ્યાં છે. આગળ કહે છે કે તે સર્વમાં જો હિંસાનો પરિત્યાગ ન કરવામાં આવે તો બધાં અફળ છે.

'गृहकार्याणि सर्वाणि दृष्टिपुतानि कारयेत्'

ઘરનાં સઘળાં કાર્યો દેખભાલ કરીને કરવાં જોઈએ જેથી નાનામાં નાના ત્રસજીવને પીડા ન પહોંચે, હિંસા ન થાય.

आसनं शयनं यानं मार्गगमन्यश्च वस्तुयत्।
अदृष्टं तन्न सेवेत यथाकालं भजन्नपि॥

સમયે સમયે ખપ પડતા આસન એટલે ખુરશી, ચટાઈ, શયન એટલે પથારી, યાન કહેતાં ઘોડાગાડી, મોટર, સાયકલ વિ. અને માર્ગ કહેતાં રસ્તે ચાલતાં જતાં, પસાર થતાં તેમજ બીજી વસ્તુઓનો ઉપયોગ કરતાં વપરાશ કરતાં દેખ્યા શોધ્યા વગર કંઈપણ નહિ કરવું જોઈએ.

— *સાગારધર્મામૃત - સટીકપાન-૧૨૦*

—: અપુનર્બંધક જીવનાં લક્ષણ :—

જે જીવ મિથ્યાત્વ છોડવા માટે તત્પર તથા સમ્યકત્વની પ્રાપ્તિની અભિમુખ હોય છે તેને અપુનર્બંધક કહેલ છે. અપુનર્બંધક જીવમાં કૃપણતા, લોભ, યાંચા, દીનતા, માત્સર્ય, ભય, માયા અને મૂર્ખતા એ ભવાનંદી દોષોનો અભાવ થતાં શુકલ પક્ષના ચંદ્રમાની માફક ઔદાર્ય, દાક્ષિણ્યતાદિ ગુણોની વૃદ્ધિ થતી જાય છે. અપુનર્બંધક જીવમાં દેવ-ગુરૂનું પૂજન, સદાચાર, તપ અને મુક્તિથી અદ્વેષરૂપ પૂર્વસેવા મુખ્યપણે હોય છે.

—: ભગવાન મહાવીરના ઉપદેશને યોગ્ય વ્યક્તિનાં લક્ષણ :—

૧. નમ્રતા, ૨. સહિષ્ણુતા, ૩. દમિતેન્દ્રિયતા, ૪. અનાગ્રહભાવ, ૫. ક્ષમા, ૬. સત્યરતતા, ૭. ક્રોધોપશાંતિ, ૮. સદ્ભાવ અને ૯. વાક્સંયમ.

—: સમ્યગ્દ્રષ્ટિને નીચેના ૮ ગુણો પ્રગટે છે :—

૧. કરૂણા, ૨. વાત્સલ્ય, ૩. સજ્જનતા, ૪. આત્મનિંદા, ૫. સમતા, ૬. ભક્તિ, ૭. વિરાગતા, ૮. ધર્માનુરાગ.

— *ભાવદીપિકા પાન-૧૩૫.*

—: સંવેગાદિ ૮ ગુણો :—

૧. સંવેગ, ૨. નિર્વેદ, ૩. નિંદા, ૪. ગર્હા, ૫. ઉપશમ, ૬. ભક્તિ, ૭. વાત્સલ્ય અને ૮. પ્રભાવના.

પ્રશમ, સંવેગ, નિર્વેદ, અનુકંપા અને આસ્તિક્યતામાં આ આઠ ગુણનો સમાવેશ થઈ જાય છે.

સંવેગગુણના લક્ષણમાં ઉપલક્ષણ ભક્તિ અને વાત્સલ્ય છે. પ્રશમગુણના દ્યોતક આત્મનિંદા અને આત્મગર્હા છે. એટલે કે સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવ નિરંતર પોતાના દોષોને જોતો થકો પોતાની નિંદા-ગર્હા કરતો રહે છે. કોઈપણ દોષ થતાં **निंदामि गर्हामि अप्पाणं वोसरामि** એમ મનોમન દિવસમાં સેંકડો વખત બોલતી રહે છે.

—: સમ્યક્ત્વનાં ૮ અંગ :—

૧. નિ:શંકતા, ૨. નિ:કાંક્ષતા, ૩. નિર્વિચિકિત્સા, ૪. અમૂઢદષ્ટિ, ૫. ઉપબૃંહણ, ૬. સ્થિતિકરણ, ૭. વાત્સલ્ય અને ૮. પ્રભાવના.

—: સમ્યક્ત્વના ૨૫ દોષ :—

ઉપર ક્હયા તે નિ:શંકતાના પ્રતિપક્ષી શંકાદિ ૮ દોષ ૮ મદ ૬ અનાયતન અને ૩ મૂઢતા.

પંચાધ્યાયી ઉત્તરાર્ધમાં શ્લોક ૪૨૫ થી માંડી ૮૧૮ સુધી પાન ૧૮૫ થી ૩૨૨ અવશ્ય વારંવાર અધ્યયન કરવા જેવા છે.

—: સમ્યગ્દર્શનના ૫ અતિચાર :—

૧. શંકા, ૨. કાંક્ષા, ૩. વિચિકિત્સા, ૪. અન્યદ્રષ્ટિ સંસ્તવ અને ૫. અન્યદ્રષ્ટિ પ્રશંસા.

સમ્યગ્દર્શનની પણ ચારિત્રની માફક આરાધના હોય છે માત્ર સ્વીકૃતિ નહીં.

''વાત્સલ્ય વિનય થકી સુદાને દક્ષ અનુકંપા થકી
વળી માર્ગ ગુણસ્તવના થકી ઉપગૂહન ને સ્થિતિકરણથી.
આ લક્ષણોથી તેમ આર્જવભાવથી લક્ષાય છે;
વણમોહ જિનસમ્યક્ત્વને આરાધનારો જીવ જે.''

અષ્ટપાહુડમાં ચારિત્રપાહુડ ગાથા ૧૧-૧૨.

लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वं वर्णप्रसादं स्वरसौष्ठवं च।
गंध : शुभो मूत्रपुरीषमल्पं योगप्रवृत्तिं प्रथमा वदन्ति॥

૧. શરીરનું હલકાપણું, ૨. નિરોગીપણું, ૩. લોલુપતાનો અભાવ, ૪. શારીરિક કાંતિની ઉજ્જવળતા, ૫. સ્વરની મધુરતા, ૬. સુગંધ અને ૭. મળમૂત્રની ન્યૂનતા આ સર્વ લક્ષણો યોગની પ્રથમ સિદ્ધિનાં બાહ્ય ચિન્હો જણાવેલ છે.

આજ વાત બીજે ઠેકાણે નીચે પ્રમાણે બતાવેલ છે :

अलोल्यमारोग्यमनिष्ठुरत्वं गंध:शुभो मूत्र-पुरीषमल्पम्।
कान्ति : प्रसाद : स्वरसौम्यता च योगप्रवृत्ते : प्रथमं चिन्हम्॥

—: ધર્મધ્યાનનાં લક્ષણ :—

धम्मस्स लकरवणं से अज्जवलहुगत्तमद्दवुवदेसा।
उवदेसणा य सूत्ते णिसग्गजाओ रुचीओदे॥

આર્જવ એટલે સરળતા, લઘુતા એટલે હળવાપણું માર્દવ એટલે નમ્રતા, ઉપશમભાવ, જિનસૂત્રમાં આત્મહિતની બુદ્ધિ અને અસંગતાની રૂચિ એ ધર્મધ્યાનનાં લક્ષણ છે.

—: ધર્મધ્યાનનાં આલંબન :—

आलंबणं च वायणं पुच्छणं परिवट्टणाणुपेहाओ।
धम्मस्स तेण अविरुद्धाओ सव्वाणुपेहाओ॥

વાંચન, પૂછવું, પરિવર્તન (ફરી ફરી યાદ કરી જવું), અનુપ્રેક્ષણ (અર્થોનો તેના ઉંડાણ અને રહસ્યોનો એકાગ્રતાપૂર્વક બારીકાઈથી વિચાર કરવો) અને તેને પોષણ રૂપ બાર ભાવનાઓ એ ધર્મધ્યાનનાં આલંબન છે.

—: ધર્મધ્યાનના ૪ પ્રકાર :—

૧. આજ્ઞાવિચય ધર્મધ્યાન, ૨. અપાયવિચય ધર્મધ્યાન, ૩. વિપાકવિચય ધર્મધ્યાન અને ૪. સંસ્થાન વિચય ધર્મધ્યાન.

—: ધર્મધ્યાનની ૪ અનુપ્રેક્ષાઓ :—

૧. એકત્વ અનુપ્રેક્ષા, ૨. અનિત્ય અનુપ્રેક્ષા, ૩. અશરણ અનુપ્રેક્ષા અને ૪. સંસાર અનુપ્રેક્ષા.

—: શુકલધ્યાનની ૪ અનુપ્રેક્ષાઓ :—

૧. **अनंतवर्तित अनुप्रेक्षा :** અનંત-પદાર્થ, ભવભ્રમણ, કાળ, લોકાદિનું ચિંતવન (અનંત પદાર્થ, અનંત ભવભ્રમણ, અનંતકાળ અને અનંતલોક.)

૨. **विपरिणाम अनुप्रेक्षा :** સમયે સમયે પદાર્થોની પરિણમનશીલતા, પલટન પર ચિંતવન.

૩. **अशुभ अनुप्रेक्षा :** બાહ્ય સંયોગોમાં અશુભ, અકલ્યાણ સ્વરૂપનું ચિંતવન.

૪. **अपाय अनुप्रेक्षा :** બંધના હેતુ આશ્રવાદિના કટુવિપાક પર ચિંતવન.

—: આસન્ન ભવ્યજીવનનાં લક્ષણો :—

संसारचारए चारएव्व आवीलियस्स बंधेहि।
उव्विग्गो जस्स मणो सो किर आसन्नसिद्धि परो॥

કારાગૃહ જેવા આ ચારગતિવાળા સંસાર પરિભ્રમણથી બંધનવડે કરીને પીડા પામેલા જે પુરુષનું મન ઉદ્વેગ પામેલું છે તે ખરેખર આસન્નભવ્ય જીવ જાણવો.

आसन्नकालभवसिद्धि यस्य जीवस्य लकखणइमो।
विसयसुहेसु न रजइ, सव्वत्थामेसु उज्जमइ॥

આસન્નભવ્ય જીવ (જેની અલ્પકાળમાં સિદ્ધિ થવાની છે)નું લક્ષણ એ છે કે તે પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં રાચતો નથી અને સર્વ અવસ્થાઓમાં પોતાની સર્વ શક્તિથી ઉદ્યમ કરે છે. શક્તિને ગોપવતો નથી.

तस्मादासन्नभव्यस्य प्रकृत्या शुद्धचेतसः।
स्थानमानान्तरज्ञस्य गुणवद्बहुमानिनः॥
औचित्येन प्रवृतस्य कुग्रहत्यागतोभृशम्।
सर्वत्रागमनिष्ठस्य भावशुद्धियथोदितो॥

આસન્નભવ્યજીવને સહજ-સ્વાભાવિક વિચારશુદ્ધિ એટલે પવિત્ર વિચારો, સ્થાન તેમજ માન મર્યાદાના ભેદનું જાણપણું, ગુણીજનોનું બહુમાન, કદાગ્રહનો ત્યાગ, યથોચિત પ્રવૃત્તિ અને સર્વત્ર આગમાનુસારીણિ બુદ્ધિ આવી યથાયોગ્ય ભાવશુદ્ધિ હોય છે.

—: સજ્જન તેમજ વિનયયુક્ત પુરુષને જ્ઞાન થાય છે :—

ज्ञानं पुरुषस्य भवति लभते सुपुरुषोऽपि विनयसंयुकतम्।
ज्ञानेन लभते लक्ष्यं लक्षयन् मोक्षमार्गस्य॥

જે પુરુષ સજ્જન તેમજ વિનયયુક્ત છે તેને જ્ઞાન થાય છે. જે જ્ઞાને કરીને મોક્ષમાર્ગને દેખતો થકો અંતિમ ધ્યેય જે નિર્વાણ તેને પ્રાપ્ત કરે છે.

—: સજ્જનતા (શ્રાવકના ૨૧ ગુણ ગર્ભિત) :—

લજ્જા, દયા, પ્રશાંસતા, જિનમારગ પરતીતિ;
પર ઔગુણકો ઢાંકિવો, પર ઉપગાર સુપ્રીતિ. ॥ ૧ ॥
સોમદ્રષ્ટિ, ગુણગ્રહણતા, અર ગરિષ્ટતા જાની;
સબકો મિત્રાઈ સદા, વૈરભાવ નહિં માની. ॥ ૨ ॥
પક્ષપુનિત પુમાનકી, દીરઘદર્શી હોય;
મિષ્ટવચન બોલે સદા, અર બહુ જ્ઞાતા હોય. ॥ ૩ ॥
અતિરસજ્ઞ, ધર્મજ્ઞ જો, હૈ કૃતજ્ઞ પુનિ તજ્ઞ;
કહે તજ્ઞ તાંકુ બુધા, જો હોવે તત્વજ્ઞ. ॥ ૪ ॥
નહિ દીનતા ભાવ કછું, નહિ અભિમાન ધરેય;
સબસો સમતાભાવ હૈ, ગુણકો વિનય કરેય. ॥ ૫ ॥
પાપક્રિયા સબ પરિહરો, એ ગુણ હોય એકિસ;
ઇનકો ધારે જે સુધી, લહે ધર્મ જગદીશ. ॥ ૬ ॥

—: સુવિનીતનાં ૧૫ લક્ષણો :—

કોઈને ન ધિક્કારે, ન કરે કલેશની કથા;
મિત્રતા સર્વથી રાખે, જ્ઞાનનો મદ ના કરે.
અચપલ અને નમ્ર, નિર્માયી અકુતૂહલી;
છુપાવી પાપ ના રાખે, ન કોપે મિત્ર સૌ ગણી.
અપ્રિય મિત્રનું શ્રેય, ગુપ્તરીતે સમાચરે;
ક્રીડા ને કલેશનો ત્યાગી, બુદ્ધિમાન કુલીન તે.
લજ્જાયુક્ત અને શ્રેષ્ઠ, જિતેન્દ્રિય સદા રહે;
પંદર લક્ષણોથી જે યુક્ત તે વિનીત છે.

—: શ્રાવકના ૨૧ ગુણ :—

૧. અક્ષુદ્રતા : ગંભીરતા, ઉર હોય વિશાળ.
૨. સૌમ્યતા : સૌમ્યભાવ, ચેહરા ઉપર નરમાસ.
૩. સ્વસ્થતા : સ્વસ્થકાય, શાંતચિત્ત અને અંતરંગ હર્ષ.
૪. લોકપ્રિયતા : સેવાભાવથી અને કોઈની નિંદા ન કરવાથી.
૫. અક્રુરતા : ક્રુરતાનો અભાવ, પ્રેમ અને શુરવીરપણું.
૬. ભીરૂતા : ભવભ્રમણનો ભય-પાપનો ભય, ૧૮ પાપનો ત્યાગ.
૭. અશઠતા : સજ્જનતાપૂર્વક સરળ વ્યવહાર.

૮. સુદાક્ષિણ્યતા	:	સૌનું ભલુ કરનાર, બૌધિક વિવેક.
૯. લજ્જા	:	લોકવિરૂદ્ધ નિંદીત કાર્યોનો ત્યાગ, આબરૂમાં વધારો.
૧૦. દયાળુતા	:	દુ:ખીજીવોને જોઈ હૃદયનું કંપાયમાન થવું.
૧૧. ગુણાનુરાગી	:	ગુણ અને ગુણીજનો તરફ પક્ષપાત.
૧૨. સત્કથા	:	વિનયયુક્ત ધર્મયુક્ત કથા કરનાર તથા સાંભળનાર.
૧૩. સુપક્ષતા	:	ન્યાયપ્રિયતા તેમજ ધર્મીકુટુંબ.
૧૪. દીર્ઘદ્રષ્ટી	:	પ્રેયનો ત્યાગ – શ્રેયનું ગ્રહણ.
૧૫. દાની	:	ઉદાર-વિશાળ હૃદય.
૧૬. વિનય	:	ધર્મનું મૂળ વિનય, અત્યંત નમ્ર સ્વભાવ.
૧૭. પરઉપકારીતા	:	બીજાના શ્રેયમાં રાજી અને શક્તિ પ્રમાણે યોગદાન.
૧૮. કૃતજ્ઞતા	:	કરેલા ઉપકારને કદાપિ ભૂલે નહીં.
૧૯. વૃધ્ધાનુગામી	:	જ્ઞાનવૃદ્ધ પુરુષોનો અનુગામી-અનુકુળ વર્તન કરનાર.
૨૦. વિશેષજ્ઞાની	:	સુક્ષ્મજ્ઞાનનો નિરંતર અભ્યાસ.
૨૧. લબ્ધલક્ષિતા	:	ધ્યેયની સિદ્ધિનું સતત ધ્યાન, શ્રેય પ્રાપ્તિનું ધ્યેય તેમજ જાણપણું.

लोकापवादभीरुत्वं दीनाभ्युद्धरणादर:।
कृतज्ञता सुदाक्षिण्यं सदाचार: प्रकीर्तित:॥

લોકોના અપવાદથી ભય રાખવો, દીનજનોના ઉદ્ધારમાં આદર રાખવો, કરેલા ઉપકારને ભૂલવો નહીં અને દાક્ષિણ્યતા આ ચારને સદાચાર કહેવામાં આવેલ છે.

'તે પુરુષ જાણ સુમાર્ગશાળી, પાપ ઉપરમ જેહને
સમભાવ જ્યાં સૌ ધાર્મિકે, ગુણસમુહ સેવન જેહને' — *પ્રવચન સાર ગાથા-૨૫૯.*

सर्वत्र निंदा सन्त्यागी, वर्णवादस्तु साधुषु।
आपदि अदैन्यमत्यन्तं तद्वत्सम्पदि नम्रता॥

સર્વ ઠેકાણે નિંદાનો સર્વથા ત્યાગ, સત્પુરુષોની પ્રશંસા, અત્યંત આપત્તિમાં પણ અદીનપણું અને સંપત્તિમાં નમ્રતા એ સદાચારનાં ચાર લક્ષણો જાણવાં.

प्रस्तावे मितभाषित्वमविसंवादनं तथा।
प्रतिपन्न क्रिया चेति, कुलधर्मानुपालनम्॥

પ્રસંગ પુરતું થોડું બોલવું, કોઈની સાથે વિરોધમાં પડવું નહીં, ધર્માનુષ્ટાન-ક્રિયા અંગીકાર કરવી અને કુલધર્મનું પાલન કરવું.

विपद्युच्चे: स्थेयं पदमनुविधेयं च महतां
प्रिया न्याया वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेप्यसुकरम्।
असन्तो नाभ्यर्थ्या: सुहृदपि न याच्य: कृशधन:
सतां केनोदिष्टं विषमसिधारा व्रतमिदम्॥

આપત્તિકાળમાં પણ પોતાના સ્થાન-માન મર્યાદામાં સ્થિર રહેવું, મહાપુરુષોના પગલે ચાલવું, ન્યાયવૃત્તિમાં પ્રીતિયુક્ત રહેવું, પ્રાણનો નાશ થતાં પણ દુષ્કૃત સેવન ન કરવું, દુર્જન પાસે કોઈ પ્રાર્થના ન કરવી, નિર્ધનતામાં પણ મિત્રની પાસે ધનની યાચના ન કરવી, આવું વિષમ અને તલવારની ધાર પર ચાલવા જેવું વ્રત સત્પુરુષોને કોણે બતાવ્યું હશે ?

यत्र धर्मो हि साधुनां तत्रैव गृहमेधिनाम्

ધર્મ તો જે સાધુઓનો છે તેજ ગૃહસ્થ તેમજ શ્રાવકોનો છે. સાધુઓ ધર્મનું પૂર્ણપણે પાલન કરે છે જ્યારે ગૃહસ્થ-શ્રાવકો તેનું યથાશક્તિ પાલન કરે છે ધર્મમાં ફરક હોઈ શકે નહીં. ફરક તેના પાલનમાં-તેની માત્રામાં હોય.

जिनपुङ्गप्रवचने मुनीश्वराणां यदुकतमाचरणम्।
सुनिरुप्य निजां पदवीं शकितं च निसेव्यमेतदपि।।

જિનેશ્વર પ્રભુના સિદ્ધાંત પ્રવચનમાં મુનીશ્વરોનું જે આચરણ (આચાર) કહેલ છે તે પણ ગૃહસ્થોએ પોતાના પદ અને શક્તિ પ્રમાણે સેવન કરવું જોઈએ.

मुर्च्छां परिग्रहे त्यकत्वा गृहेऽपि सुविधिनृप:।
भूत्वाऽच्युतेन्द्रस्तुर्येऽभूद् भवे प्रथमतीर्थकृत्।।

સુવિધિરાજા ઘરમાં રહેવા છતાં પરિગ્રહમાં મુર્છાના ત્યાગથી અચ્યુત સ્વર્ગમાં ઈન્દ્ર થઈ ચોથા ભવમાં આ ચોવિસીના પ્રથમ તીર્થંકર થયા.

— *શ્રાવકાચાર સંગ્રહ ભાગ-૩ પાન-૫૧૦*

નં.-૩

—: સમાનકુલ તેમજ શીલવાળી અને અન્યગોત્રની સ્ત્રી સાથે લગ્ન કરવું :—

ગૃહસ્થના બે મુખ્ય કાર્યો ભક્તિ અને દાન તેને યોગ્ય પરિબળોનું નિર્માણ કરવા માટે એકબીજાને પૂરક **થવા તેમજ** શરીરના નિર્વાહ માટે અને કામભોગની વૃત્તિને રોગના ઈલાજ માત્ર જાણી સંતોષવા બહારના **સમસ્ત** જગત પરથી વૃત્તિ ખેંચી લઈ એકમાત્ર પોતાની વિવાહીત સ્ત્રી તેમજ તેની સાથે વસાવેલ ઘરમાં સીમિત કરી આગામી કાળમાં સર્વસંગપરિત્યાગના લક્ષપૂર્વક વર્તમાન પવિત્ર જોડાણ એ લગ્નની પ્રથા છે.

હિંસા, જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહ એ પાંચ પાપોમાં અબ્રહ્મચર્યને ભગવાન મહાવીરે પાપ **(पातयति इति पापं)** પતન કરનાર કહેલ છે અને એજ ભગવાનના ઉપદેશમાં લગ્નની પ્રથા જેમાં અસંયમ ગર્ભિત છે એવા ગૃહસ્થ જીવનનું વર્ણન કરેલ છે. તેનો ખુલાસો કરતાં શાસ્ત્રોમાં કહેલ છે કે લગ્નની પ્રથાનું વર્ણન કરતાં ભગવાને અસંયમની નહિ પણ સંયમની જ પુષ્ટિ કરેલ છે. વિષયભોગની વાસના પર જય મેળવી ઉદ્દાત જીવન ગાળવા જે અસમર્થ છે તેવા જીવો માટે આ લગ્નની પ્રથા છે. પોતાની વિવાહીત સ્ત્રી સિવાય જગતની અન્ય સ્ત્રી સાથેના પ્રસંગમાં અતિરેક અને બિભત્સતા ઉપરાંત તન-મન-ધનનો દુર્વ્યય, બળ-બુદ્ધિ-ચાતુર્ય અને આયુષ્યની હાનિ વિ. અનેક દૂષણો રહેલ છે. પરસ્ત્રીગમન તેમજ વેશ્યાગમન એ સાત વ્યસનમાંના બે મહા-પાપો ભગવાને કહેલ છે. તે જીવનની બરબાદીનાં ભયસ્થાનો છે. આવું જ બહાર હોટલમાં, કલબોમાં રસ્તા ઉપર લોરીયો આગળ ખોરાક ખાવામાં જીભની લોલુપતા, ગૃદ્ધીપણું,અતિરેક અને લંપટપણું વિ. અનેક દોષો-દૂષણો જનક ભયસ્થાન સમજવાં. પોતાની વિવાહીત સ્ત્રી તેમજ તેની સાથે વસાવેલ ઘરમાં બધું માફકસર તેમજ દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાળ-ભાવની યોગ્યતા અનુસાર તેમજ પોતાના સ્થાન-માનને અનુરૂપ હોય છે. ટૂંકમાં ઘણા અસંયમ અને ભયસ્થાનકોમાંથી છોડાવી થોડાક અને મર્યાદિત અસંયમમાં લાવતી આ લગ્નની પ્રથામાં સંયમનોજ બોધ છે.

भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया
धम्माणुरागरत्ता समसुखदु:ख सहाइया — ઉ.પા. ૭/૨૨૭

પત્ની ધર્મમાં સહાયતા કરવાવાળી, ધર્મની સાથી, ધર્મમાં અનુરાગવાળી તથા સુખદુ:ખમાં એક સરખી રીતે સાથ આપનારી.

The hand that rocks the cradle rules the world....

"There is little less trouble in governing a private family than a whole kingdom"

— *Montaigne*

ગૃહસ્થના જીવનમાં તેમજ આખી સૃષ્ટી ઉપર સ્ત્રીઓનો પ્રભાવ અદ્વિતીય છે. સ્વ. ગોવર્ધનદાસ ત્રિપાઠીએ લખેલ (ગુજરાતી સાહિત્યમાં કદાચ સર્વશ્રેષ્ઠ પુસ્તક) 'સરસ્વતીચંદ્રના ભાગ-૨ તથા ભાગ-૩ માં 'બુદ્ધિધનનો રાજ્ય કારભાર' અને 'ગુણસુંદરીની કુટુંબજાળ'માં એક રાજ્યના પ્રધાનને સફળ રીતે રાજકારોબાર ચલાવવામાં જેટલી આવડત, દુરંદેશીપણું, સહનશીલતા, ધૈર્ય, ક્ષમા, કુનેહ, નિપુણતા, ગુણદોષની પરીક્ષા, ન્યાયબુદ્ધિ, સમયોચિત કાર્યકુશળતા, ગંભીરતા, નિષ્પક્ષપાતપણું વિ. અનેક ગુણોની જેટલી આવશ્યકતા છે તેટલીજ કદાચ **તેથીય** વધારે ઘરની આધેડવયની સ્ત્રીને પોતાના કુટુંબના સભ્યો, દીકરા, દીકરીઓ ભિન્ન ભિન્ન દિશામાંથી **આવેલી દીકરાની** વહુઓ, દરેકની ભિન્ન ભિન્ન પ્રકૃતિઓ, સંસ્કાર, કોઈના કાચા કાન વિ. જાણી કુશળપણે **ગૃહસંસાર ચલાવવા**માં પડે છે.

મહાત્મા ગાંધીજીના જીવનપર કસ્તુરબાનો, આચાર્ય ક્રિપલાનીજીના જીવનપર સુચેતા ક્રિપલાનીનો પ્રભાવ **વર્તમાન યુગનાં જ્વલંત** આદર્શ દ્રષ્ટાંતો છે. અગ્નિપરિક્ષામાંથી સફળ બહાર આવનાર સિતાજીનો શ્રીરામ સાથે

સંવાદ અને લગ્નમંડપથી પાછા ફરનાર નેમિરાજ સાથે રાજમતિનો સંવાદ અને બંનેએ પરિણામ સ્વરૂપ આર્જિકાપદરૂપ દીક્ષા ગ્રહણ, સ્ત્રીની પતિપરાયણતા ઉપરાંત અદમ્ય સ્વતંત્રપરાયણતાનાં યુગોસુધી સ્મરણપટ રહેનારાં જ્વલંત દ્રષ્ટાંતો છે.

All other gifts (goods) by Fortune's hand are given,
The wife is the peculiar gift of heaven — *Pope*

મનુષ્યના જીવનમાં અનેક અનુકુળ સામગ્રીની પ્રાપ્તિમાં સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રાપ્તિ અનુકુળ સ્ત્રીને કહેલ છે.

"A man travels the world over in search of what he needs (peace) and returns home to find it."

ઘરની શોભા, સમૃદ્ધિ, યશ, સુખ, શાંતિ અને ધર્મ એ સર્વમાં કુલીન સ્ત્રીનું યોગદાન પુરુષ કરતાં જરાય ઓછું નથી, કદાચ્ વધારે કહીયે તો પણ અતિશયોક્તિ નથી. પૈસા કમાવા કરતાં તેનો અવેર અને દુર્વ્યયના અભાવનું મૂલ્યાંકન અનેકગણું વધારે છે અને તેમાં સ્ત્રીનું યોગદાન મહદ્ અંશે હોય છે. વર્તમાન યુગમાં દિન-પ્રતિદિન વધતી જતી મોંઘવારીમાં કુટુંબના ખર્ચને નિભાવવાનો અત્યંત વિકટ બોજો માથે ઉપાડી, 'સાત સાંધે ત્યાં તેર તૂટે' એવી પરિસ્થિતિનો મુકાબલો કરી દિવસના અંતે પુરુષનું અંત:કરણ 'ચાલો હવે દુકાન-ઑફિસ બંધ કરી ઘેર જઈએ' એમ મનોમન બોલે છે ત્યારે દિવસનો થાક ઘેર જઈ ઉતારી શાંતિની ઝંખના કરતું હોય છે. ઘેર આવી સોફાસેટ અગર હીંચકાપર બેસી પગ લંબાવી નિરાંતનો દમ લે છે તે વખતે ઘરની સજાવટ ઉષ્માભર્યું વાતાવરણ અને તે બધા કરતાં પોતાના ઘેર પાછા ફરવાની પ્રતીક્ષા કરતી પોતાની સ્ત્રીની આંખમાં તેની કદર કરતું પ્રતિબિંબ જ્યારે તે જુએ છે ત્યારે આખા દિવસનો થાક એક ક્ષણમાં ઉતરી જાય છે અને બીજે દિવસે ફરી પાછા ધંધા-નોકરી પર જવાની શક્તિ-પ્રેરણા મેળવી લે છે.

Peace and rest at length have come
All the day's long toil is past;
And each heart is whispering 'Home'
'Home at last'... *Hood 'Home at last'*

Most men who run down women are
running down one woman only — *Remy De Gouroat*

दक्षा तुष्टा प्रियाभाषा, पतिचित्तानुवर्तिनी।
कुलौचित्याद्व्ययकरी सा लक्ष्मीरिव चापरा।।

શાણી, સંતુષ્ટ, પ્રિયભાષી, પતિના ચિત્તને અનુસરનારી, કુલને ઉચિત ખર્ચ કરનારી સ્ત્રી જાણે ઘરમાં બીજી લક્ષ્મી ન હોય તેવી હોય છે.

મદનસુંદરીની માફક મધુર, પરિમીત અને સમયોચિત વચન બોલનારી, રૂખમણી (શ્રી કૃષ્ણની પટરાણી) તેમજ દ્રોપદી (અર્જુનની ધર્મપત્ની)ની માફક પતિના અભિપ્રાયને તેમના રહન-સહનથી સહજમાં, આંખના પલકારા માત્રમાં જાણી લઈ તેમના કંઈપણ કહેવા પૂર્વેજ પ્રસંગને અનુકૂળ વર્તન કરનારી અને તેજપાલ મંત્રીની પત્ની અનુપમાદેવીની માફક ઘરકાર્યમાં કુશળ અને ઘરના સ્થાન-માનને અનુકુળ માફકસર ખર્ચ કરનારી, ઘરની શોભા, શાંતિ અને સ્વાસ્થ્યને વધારનારી.

કુલીનતા, આચારની વિશુદ્ધિ, ઉત્તમ કુલાચાર અને દેવ-અતિથિ તેમજ બાંધવોનો સત્કાર કરવામાં નિર્દોષ મનોવ્યાપાર ઉત્તમ કુળવધુનાં લક્ષણ છે.

गृहचिन्ताभारहरणं मतिवितरणमखिल पात्रसत्कारणम्।
किं किं न फलति गृहिणां गृहिणी गृहकल्पवल्लीव॥

ઘરની ચિંતાના સમુહને દૂર કરનારી, સારી બુદ્ધિ સુઝાડનારી, અને સમગ્ર પાત્રોનો ઉચિત સત્કાર કરનારી સ્ત્રી જાણે ઘરની કલ્પલતાજ હોય નહિ તેમ શું શું ફળ આપતી નથી?

'ઘરકાર્ય સંબંધીની બધી વ્યવસ્થા કરવાની મારી ફરજ છે' એમ કહી પતિને ગૃહસંબંધી કાર્ય કરતા દેખી તેમની પાસેથી લઈ લઈને પતિને ઘરની ચિંતામાંથી મુક્ત કરનાર અને ઘરમાં આવનાર મહેમાનોની ઉચિત સાર સંભાળ રાખનાર સ્ત્રી તેના પતિને ધંધા નોકરીમાં આગળ વધવા પાર્શ્વગાયકની માફક અદશ્યપણે પ્રેરણા આપનારી નીવડે છે.

"She who never answers till the husband cools or, if she rules him, never shows she rules; charms by accepting, by submitting sways, yet has her humour most when she obeys." — *Pope*

"Women are perfectly well aware that the more they seem to obey, the more they rule." — *michelet*

"The life of a couple is lived on the mental level of the more mediocre of the two beings who compose it."

" गोष्ठेषु मंत्री, भोज्येषु माता।
शयनेषु रंभा, कार्येषु दासी" ॥

મહત્વના નિર્ણય લેવામાં મંત્રીની ગરજ સારનાર, ખાનપાનમાં માતાની ગરજ સારનાર, શયનમાં રંભાની ગરજ સારનાર અને ઘરકાર્યમાં દાસીની માફક કામ કરનાર. આ ઉત્તમ સ્ત્રીનાં લક્ષણો લાક્ષણિક ઢબથી કરેલાં છે.

લગ્નબાદ સાસરે જતી વખત સિતાજીને તેમના પિતા જનકરાજાએ નીચે પ્રમાણે શિખામણ આપી હતી. જેના ઉપરથી લગ્નની પ્રથા અને તેની પવિત્રતા જાળવી રાખવા કન્યાના પિતાના ભાવ કેવા હોય છે તેનો ખ્યાલ આવી શકે.

अभ्युत्थानमुपागते गृहपतौ, तद्भाषणे नम्रता।
तत्पादार्पितदृष्टिरासनविधौ, तस्योपचर्या स्वयं॥
सुप्ते तत्र शयीत तत्प्रथमतो जह्याश्च शय्यामिति।
पाज्ञैः पुत्रि निवेदितः कुलवधुसिध्धान्तधर्मा इमे॥

લગ્ન સમારંભ પતી ગયા પછી સિતાજી પોતાના પતિ શ્રી રામચંદ્રની સાથે તેમના ઘેર જવા તૈયાર થઈ રથમાં બેસવાની તૈયારી કરે છે ત્યાં જનકરાજાએ આવીને પોતાની વહાલસોયી પુત્રીને છાતી સરસી ચાંપી અશ્રુભરી આંખે ગદ્‌ગદ્ કંઠે નીચે પ્રમાણે શિખામણ આપી વિદાય કરી.

"હે પુત્રી! પતિના ઘેર આવવા પર તેમના સત્કાર કરવા ઉભા થઈ તૈયાર રહેવું. જે કંઈ કહે તે અત્યંત નમ્રતાપૂર્વક સાંભળવું. એટલે કે અત્યંત મૃદુસ્વરે વિનયપૂર્વક તેમની સાથે વાતચીત કરવી. તેમની સાથે બેસવા ઉઠવામાં તેમના ચરણકમળ તરફ દ્રષ્ટિ રાખવી. તેમના બધાં કાર્યો જાતે કરવાં. તેમના સૂવા બાદ સૂવું અને તેમના પહેલાં પથારીમાંથી ઉઠી જવું." આ કુલીન સ્ત્રીઓની ચર્યા-સિદ્ધાંત ધર્મ પ્રાજ્ઞ પુરુષોએ કહેલ છે.

"હે કમલનયની સ્ત્રી! તું તારા પતિ તરફ નિષ્કપટી, નણંદો તરફ નમ્ર, સાસુ તરફ ભક્તિવાળી, સ્વજનો

પ્રત્યે સ્નેહવાળી, પરિવાર તરફ હેતવાળી, શોક્યો તરફ હસમુખી, પતિના મિત્રો સાથે (નિર્દોષ) હાસ્ય વચન બોલનારી અને તેમના દુશ્મનો તરફ ખેદ ધારનારી થજે!''

સ્ત્રીઓએ ઘરમાં વડીલને પોતે ક્યાં જાય છે તે કહીને બહાર જવું અને ઉચિત સમયે ઘેર આવી જવું. પોતાની સ્ત્રીને અંગત વાપરવા પોતાની આવકની તેમજ સ્થાન-માનની મર્યાદા અને દેશકાળ અનુસાર વાપરવા પૈસા જરૂર આપવા પણ તેનો હિસાબ જરૂર માગવો. વાપરવા આપવાના રહી જશે તો કદાચ વાંધો નહિ આવે પણ નિરંકુશ વાપરવા આપવાથી એટલે કે તેનો હિસાબ જોવાનું ટાળવાથી ઘણા દુષણો ઘર ઘાલી જવાનો સંભવ છે.

ઉત્તમ કુળની સ્ત્રીઓને નિરંતર ઘરના દ્વારમાં-બારીમાં બેસવું, નાટક વિ.નું જોવું નિષેધ છે. બીજું પોતાના શરીરના અંગોને પ્રગટ કરતો પહેરવેશ, ક્રીડા કરવી, કુતુહલ કરવું, પરપુરુષની સાથે મર્યાદાથી અધિક બોલવું, કામણ કરવું, ઉતાવળુ ચાલવું એ કુલીન સ્ત્રીઓને યોગ્ય નથી. પરિવ્રાજિકા, દાસી, વ્યભિચારિણી સ્ત્રીઓની સાથે કદીપણ સંસર્ગ રાખવો યોગ્ય નથી. એકાકી જવું, દૂરથી જળ લાવવું, માતાને ઘેર વારંવાર જઈને ઘણો વખત રહેવું, દૂતિની સાથે મેળ રાખવો, સખીના વિવાહમાં એકલા જવું અને પતિએ વારંવાર પરદેશ જવું વિ. વ્યાપારો કોઈક વખત અનર્થકારી થઈ પડે છે. તાંબુલ, શ્રૃંગાર, મર્મકારી વચન, ક્રીડા, અત્તર, ઉદ્‌ભટ વેશ, હાસ્ય, ગીત, કૌતુક, કામક્રીડા, શય્યા, કુસુંબી વસ્ત્ર, રસાળ અન્ન, પુષ્પ, કેસર, તથા રાત્રીની વેળાએ ઘરની બહાર જવું આ સર્વનો કુલીન તેમજ સુશીલ એવી વિધવા સ્ત્રીઓએ નિરંતર ત્યાગ કરવો. જે કાંઈ સ્ત્રીઓ માટે કહેવામાં આવેલ છે તે યોગ્ય રીતે પુરુષે પણ પોતાના વર્તન સંબંધી સમજવું. પોતાના પતિનો પોતાના પ્રત્યે અનાદર ભાવ જોવું સ્ત્રીને માટે તેથી અધિક બીજું દુઃખ નથી અને તેને સ્વેચ્છાચારી બનવાનું કારણ ઘણા કિસ્સાઓમાં જોવામાં આવે છે. ટૂંકમાં એકબીજા પ્રત્યે વફાદારી અને સ્નેહભર્યું વર્તન ઘરના સુખને નિર્માણ કરવામાં મુખ્ય કારણ છે બાકી ખુબ પૈસો, સમૃદ્ધિ, એશ વિ. તો બેધારી તલવાર છે. મોટે ભાગે ઘર સંસારને છિન્ન-ભિન્ન કરવાનું વર્તમાન યુગમાં કારણ બને છે.

નં.-૪

—: પાપભીરૂ - અઘભી :—

द्वारपालीव यस्योच्चैर्विचार चतुरा मति: ।
हृदि स्फुरति तस्य अधसूतिः स्वप्नेऽपि दुर्लभा ॥

જેના હૃદયમાં ઉદ્દાત ભાવનાથી પ્રેરિત વિચક્ષણ બુદ્ધિ દ્વારપાલની માફક સદાય સ્ફુરાયમાન એટલે કે જાગૃત રહે છે તેને પાપબુદ્ધિ સ્વપ્નમાં પણ ઉપજતી નથી. જૈનધર્મની અનેક વિશિષ્ટતાઓમાં એક ખુબજ માર્મિક અને વેધક વિશિષ્ટતા 'પાપથી ડરવું' એ છે. જૈન ધર્મમાં ભગવાનથી ડર રાખવાનો ઉપદેશ નથી. મરણાદિક પ્રસંગમાં 'પ્રભુને ગમ્યું તે ખરૂં તેમાં આપણો કંઈ ઈલાજ નથી.' તથા 'સદ્દગતના આત્માને પરમાત્મા શાંતિ અર્પો' એ બધું બોલવાનો તેમજ છપાવવાનો રિવાજ જૈનોમાં પણ ભલે હોય છતાં જૈનધર્મમાં ભગવાન તો સર્વજ્ઞ અને વીતરાગ છે. ત્રણ જગતમાં સ્થિત અનંતાનંત પદાર્થોમાં એક પરમાણુ માત્રના કર્તા જિનેશ્વર પ્રભુ નથી. પોતાના કર્મોનો તેમજ સુખદુ:ખનો કર્તા તેમજ ભોક્તા જીવ પોતે જ છે.

જીવનનિર્વાહ માટે ધનાદિક ઉપાર્જન કરવામાં પાપાચરણ કરવા છતાં ધનાદિની પ્રાપ્તિ થતી જોઈ તેમાં માણસને ભગવાનની કૃપાદ્રષ્ટિ જણાય છે જે મન-મનામણાં અને આત્મવંચના સિવાય બીજું કંઈ નથી. દેશનો રાજા પણ પાપાચરણ-અનીતિ આદિથી ધન કમાનાર પર કૃપાદ્રષ્ટિ રાખતો નથી. જેલના સળીયા પાછળ ધકેલી દે છે અને બીજો પણ યોગ્ય દંડ કરે છે તો ભગવાન કૃપાદ્રષ્ટિ રાખે એ વાત કેમ બની શકે? અનીતિ અને અન્યાયથી ધન કમાનાર તેમાં ભગવાનની કૃપા જોતાં હોય તો આ પાપાચરણથી છૂટી જીવનને પવિત્ર બનાવવા તરફ ક્યારે વળશે? જ્યારે પાપથી ડરનાર પાપનું સ્વરૂપ અને તેનું ફળ આ ભવ તેમજ પરભવમાં દુ:ખ અને દુર્ગતિ જાણી પાપથી પાછો ફરશે. અને ઉદ્દાત જીવન જીવવા તરફ વળશે. જીવનમાં પવિત્રતા લાવી વાસ્તવિક આત્મોન્નતિના માર્ગમાં આગળ વધતો જશે.

"The Sinners and especially those who are earning their livelihood by dishonest and unfair means are the most ardent believers in 'God and his mercy.' It suits their profession. It is wishful thinking and self-deception both combined."

— *Annonymous*

Alexander Pope in his 'An Essay on Man' Episode IV writes : "But sometimes virtue starves and vice is fed, What then? Is reward of virtue bread?

કોઈકોઈ વખત ગુણવાન મનુષ્યને બે ટંક પેટ ભરવા પુરતું ખાવાનું પણ મળતું નથી અને દુર્જન, દાણચોર, કાળા બજારીયા, અનીતિના ધામો ચલાવનાર અઢળક ધન પેદા કરતા જોવામાં આવે છે. અલેકઝાન્ડર પોપ કહે છે કે તેથી શું થઈ ગયું! ગુણ, સદાચરણનું ફળ શું રોટી કમાવી તે છે?

धार्मिको न अर्थसंपन्न : धनाढय : स्वादधार्मिक : ।
नेति धर्मस्य वैफल्यं, फलं तस्यात्मनि स्थितम् ॥ ४६ ॥

ધાર્મિક વૃત્તિવાળો જીવ દરિદ્ર હોઈ શકે છે અને અધાર્મિક-પાપી જીવ ધનાઢ્ય હોઈ શકે છે તેથી કંઈ ધર્મની વિફળતા ન સમજવી. ધર્મનું ફળ આત્મામાં-આત્મિક ભાવોમાં-આત્માની પવિત્રતામાં રહેલું છે.

બીજી વાત દુર્જન ધનાઢ્યો સુખી છે અને ગરીબ-સજ્જન દુ:ખી છે એ કોણે કહ્યું? એક મા ઘરમાં કોઈના ત્યાંથી બે પેંડા આવ્યા હોય તે બે બાળકોને સ્કુલમાંથી ઘેર આવે તે પહેલાં પોતે ખાઈ જાય અને બીજી મા બાળકોના ઘેર આવવાની વાટ જોતી જ્યારે ઘેર આવે ત્યારે તેમને આપી રાજી થાય. સુખી કોણ?

પેંડા ખાઈ જનાર મા કે બાળકોને આપી તેને ખાતા જોઈ સંતોષ અનુભવનાર? **"तेन त्यकतेन भूंजीथा"** તેને ત્યાગીને તું ભોગવ. આવું જ ઈમાનદારી અને બેઈમાનદારીનું સમજવું. આત્માનું સુખ આત્મામાં-આત્મિક ભાવોમાં હોય. ધનાદિ સંપત્તિમાં ન સુખ છે ન સુખ આપવાનો કોઈ ગુણ છે. ગ્રંથકાર આગળ કહે છે :

अनावृतं भवेद् ज्ञानं, दर्शनं स्यादनावृतम्।
प्रस्फुरेत् सहजानंद :, वीर्यं स्यादपराजितम्॥ ४७ ॥

ધર્મથી જ્ઞાન-દર્શનનો ક્ષપોપશમ-ઉઘાડ થાય છે. ચારિત્ર, સહજ-સ્વાભાવિક સુખનો આવિર્ભાવ થાય છે અને અદમ્ય ઉત્સાહ ઉપલબ્ધ થાય છે.

प्रवर्तते परा शान्ति :, धृति, संतुलनं क्षमा।
फलान्यमूनि धर्मस्य, फलं तस्यास्ति नो धनम्॥ ४८ ॥

ધર્મથી ઉત્કૃષ્ટ શાંતિ, ધૃતિ, સંતુલન અને ક્ષમા વધતાં જાય છે. આ બધાં ધર્મનાં ફળ છે. ધનની પ્રાપ્તિ થવી એ ધર્મનું ફળ નથી. *— સંબોધિ પાન-૪૪.*

કર્મની મૂળ ૮ પ્રકૃતિ અને ૧૪૮ ઉત્તર પ્રકૃતિઓમાં ૮૩ પ્રકૃતિઓ જીવવિપાકી છે અને ૬૫ પ્રકૃતિઓ પુદ્ગલ વિપાકી છે. જીવવિપાકી પ્રકૃતિઓનો વિપાક-ફળદાન આત્મામાં-જીવમાં હોય છે અને પુદ્ગલ વિપાકી પ્રકૃતિઓનો વિપાક શરીરમાં હોય છે. શરીરથી બહાર એટલે કે સ્ત્રી, પુત્ર, ધનાદિની પ્રાપ્તિ કોઈ કર્મપ્રકૃતિના ઉદયથી હોતી નથી. મોટાભાગના જીવોમાં આ ગેરસમજ ઘર કરી રહેલી છે. છૂટવી ખુબજ મુશ્કેલ છે. શાતાવેદનીયનો ઉદય અને અંતરાય કર્મના ક્ષયોપશમથી સ્ત્રી-પુત્ર-ધનાદિની પ્રાપ્તિ કયાંક શાસ્ત્રમાં જણાવેલ છે તે ઉપચરિતોપચાર એકમાત્ર લૌકિક વ્યવહારનું કથન છે. નિશ્ચયનય તેમજ વ્યવહારનયની સમજવગર ખાસ કરીને અધ્યાત્મશાસ્ત્રોનું અર્થઘટન કોઈ એકાંત ભાવમાં પરિણમે છે.

हिंसादिषु इहामुत्र अपाय अवद्य दर्शनम्॥ ९ ॥
दु:खमेव वा॥ १० ॥

— તત્ત્વાર્થસૂત્રની ટીકા સર્વાર્થસિદ્ધિ પાન-૨૬૧

હિંસા, જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહમાં ઐહિક આપત્તિ અને પરલોકમાં દુર્ગતિ આદિ અનિષ્ટનું ચિંતવન કરવું, તેમાં દુઃખ, દુઃખ અને દુઃખ જ છે. (આત્માનું તેમાં કોઈ હિત નથી.)

પાપભાવ, પાપપ્રકૃતિ અને પાપનો ઉદય અને તેવીજ રીતે પુણ્યભાવ, પુણ્યપ્રકૃતિ અને પુણ્યનો ઉદય એ જુદા જુદા અર્થમાં શાસ્ત્રમાં બતાવેલ છે. તત્ત્વાર્થસૂત્રની ટીકા સર્વાર્થસિદ્ધિ પાન-૨૯૧ લાઈન ૨૫ થી **૩૦**, પાન-૨૯૯ લાઈન ૨૦ થી ૨૫ તેમજ મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક અધિકાર ત્રીજો પાન-૭૪-૭૫ પ્રકરણ 'સર્વ **દુઃખોનું** સામાન્ય સ્વરૂપ'માં ચાર પ્રકારની ઈચ્છાનું વર્ણન છે. ૧. વિષયેચ્છા, ૨. કષાયેચ્છા, ૩. પુણ્યનો **ઉદય અને ૪. પાપનો ઉદય**. પુણ્યના ઉદય અને પાપના ઉદયને ઈચ્છા સાથે જોડીને પ્રાત: સ્મરણીય ટોડરમલજીએ ખુબજ માર્મિક **વિષયને સ્પષ્ટ** રીતે સમજાવેલ છે.

સમયસારાદિ આચાર્ય કુંદકુંદદેવની કૃતિઓ તેની બાદ રચાયેલ તત્ત્વાર્થસૂત્રના અભ્યાસ વગર નિશ્ચયાભાસમાં પરિણમશે એવા વિચારથી તેની રચના કરવામાં આવેલ છે એમ શાસ્ત્રકારોનું કહેવું છે. બાકી સમયસાર અને તત્ત્વાર્થસૂત્રમાં જીવ-અજીવ, પુણ્ય-પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા-બંધ અને મોક્ષનાંજ પ્રકરણો છે.

અન્યાય-**અનીતિ, અભક્ષ્ય** અને **મિથ્યાત્વ** અને તેમાં ગર્ભિત સાત વ્યસન, બાવીસ અભક્ષ્ય, કર્માદાનમી ધંધાઓ **અને ઘોર** આરંભ-પરિગ્રહ આ બધાને ભગવાને તીવ્ર પાપ, ઘોર કર્મબંધનાં કારણ, વર્તમાન દુઃખરૂપ અને ભાવી **અનંતસંસાર, તિર્યંચ અને નરકગતિનાં** અસંખ્ય દુઃખોને નિમંત્રણરૂપ કહેલ છે. તેનાથી ડરીને સર્વ

સાવદ્યયોગની નિવૃત્તિરૂપ વ્રત, ચારિત્ર, સામાયિકની ભાવના જેના હૃદયમાં વસેલ છે એવો જીવ અલ્પ પાપમાં (ક્ષોભ સહિત) પ્રવૃત્તિ કરતો હોવા છતાં તેની સતત નિંદા-ગર્હા કરતો રહે છે અને મનોમન 'મિચ્છામિ દુક્કડમ્' બોલતો રહે છે. ઘર તેમજ બહારનાં બધાં કાર્યો સંભાળપૂર્વક ત્રસ-સ્થાવર જીવોની હિંસા ટાળીને કરે છે. **''गृहकार्याणि सर्वाणि द्रष्टिपूतं च कारयेत्''**

—: પાપાશ્રવ :—

ચર્યા પ્રમાદભરી, કુલષતા, લુબ્ધતા વિષયો વિષે;
પરિતાપ ને અપવાદ પરના, પાપ આશ્રવને કરે. ॥ ૧૩૯ ॥
સંજ્ઞા, ત્રિલેશ્યા, ઈન્દ્રિયવશતા, આર્તરૌદ્ર ધ્યાન બે;
વળી મોહ ને દુર્યુક્ત જ્ઞાન, પ્રદાન પાપતણું કરે. ॥ ૧૪૦ ॥

— *પંચાસ્તિકાય સંગ્રહ*

ચર્યા પ્રમાદભરી :- યત્ના-સાવધાની (ત્રસ-સ્થાવર જીવોની હિંસા ટાળવી) રહિત ચર્યા કહેતાં ચાલવું, બેસવું, ઉઠવું વિ. બધી દિનચર્યા.
કલુષતા :- ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ પૂર્વકના મનના કલુષિત ભાવોને કલુષતા કહેલ છે. આનું વર્ણન આગળની ૧૩૮ ગાથામાં કરેલ છે.
વિષયોમાં લુબ્ધતા :- પાંચ ઈન્દ્રિયના વિષયોમાં લોલુપતા, ગૃદ્ધિભાવ, વિષય લંપટતા.
પરિતાપ :- બીજા જીવોને દુ:ખ થાય એવી કર્કશ ભાષા તેમજ શારીરિક પ્રવૃત્તિ.
અપવાદ :- બીજા જીવોનો અવર્ણવાદ, નિંદા, ચુગલી, પરપરિવાદ, ઉતારીપાડવાના ભાવ.
સંજ્ઞા :- ૪ સંજ્ઞા, આહાર, નિદ્રા, ભય અને મૈથુન.
ત્રિલેશ્યા :- ૩ અશુભ લેશ્યાઓ : કૃષ્ણ, નીલ અને કાપોત.
ઈન્દ્રિયવશતા :- આગળ આવી ગયેલ છે.
આર્તધ્યાન અને રૌદ્રધ્યાન :- ચાર આર્તધ્યાન : ઈષ્ટ વિયોગજ, અનિષ્ટ સંયોગજ, રોગ જનિત અને નિદાન આર્તધ્યાન.
ચાર રૌદ્રધ્યાન : હિંસાનંદ, મૃષાનંદ, સ્તેયાનંદ અને પરિગ્રહાનંદ (વિષય સંરક્ષણાનંદ)
મોહ :- પરદ્રવ્યમાં મમત્વ (મારાપણાનો) ભાવ, તેમાં સુખબુદ્ધિનો ભાવ.
દુર્યુક્ત જ્ઞાન :- પાપબુદ્ધિપૂર્વકનાં મન, વચન, કાયાનાં કાર્યો.

આ રીતે પાપભાવો, તેનાથી થતો કર્મબંધ અને તેના ફલસ્વરૂપ દુર્ગતિ અને દુ:ખોની પરંપરા જાણી તેનાથી ડરવું તેને પણ એક ગુણ કહ્યો.

सिंहं यथा क्षुद्रमृगाश्चरन्तश्चरन्ति दूरं परिशङ्कमानाः ।
समीक्ष्य धर्मं मतिमान् मनुष्यो दुरेण पापं परिवर्जयेच्च ॥

ઘાસ ચરવાવાળા ક્ષુદ્ર હરણો સિંહથી ડરીને તેનાથી દૂર રહે છે તેમ ધર્મનું સ્વરૂપ જેણે જાણ્યું છે એવા બુદ્ધિમાન મનુષ્યો પાપને દૂરથી તજે છે.

जातिं च बुडढिं इहज्ज पास भूतेहिं जाणे पडिलेह सायं
तम्हाऽतिविज्जो परमंतिणच्चा सम्मतदंसी ण करेति पावं ॥ १२ ॥

— *નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ગુટિકા પાન-૮૪.*

આ સંસાર જન્મ-મરણના દુ:ખોથી ભરેલો છે. દરેક જીવને સુખ પ્રિય છે અને દુ:ખ અપ્રિય છે તેનું જેને સંપૂર્ણ ભાન છે અને દુ:ખથી છુટકારાનો એક માત્ર ઉપાય હિંસાદિ પાંચ પાપોથી વિરક્તિરૂપ વ્રતાચરણ, સામાયિક ચારિત્ર છે એમ જાણીને સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવો પાપાચરણ કરતા નથી.

ण कम्मुणा कम्म खवेंति बाला, अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा।
मेधाविणो लोभमयावतित्ता संतोषिणो ण प्रकरेंति पावं।।

પાપાશ્રવો ખુલાસા રાખી ગમે તેટલા અનુષ્ઠાનો કરે તો પણ તે જીવો કર્મનો ક્ષય કરી શકતા નથી. જ્યારે સંવર-નિર્જરારૂપ પોતાના મન, વચન અને કાયાના યોગમાં, કાર્યમાં પ્રવર્તમાન ધીર પુરુષ કર્મોને ખપાવી દુ:ખનો અંત કરે છે. લોભ અને મદ (ધનાદિ સામગ્રી પ્રાપ્ત કરવાનો લોભ અને પ્રાપ્ત વસ્તુઓનું અભિમાન)નો ત્યાગ કરી સંતોષી જીવો પાપાચરણ કરતા નથી.

आयंकदंसी ण करेइ पावं

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભવ અને ભાવરૂપ - પંચપરાર્વતન રૂપ સંસારનું ભયંકર સ્વરૂપ, નરક તિર્યંચાદિનાં ક્ષેત્ર-જનિત અને ભાવજનિત તીવ્ર દુ:ખોનું સ્વરૂપ જેણે જાણ્યું છે અને તે બધું કૃષ્ણાદિ પાપરૂપ લેશ્યાનાં તેમજ તેનાથી બંધાયેલ પાપકર્મોનું પરિણામ છે એમ જેણે સારી રીતે જાણ્યું છે એ જીવ પાપાચરણ કરતો નથી.

કર્મપ્રકૃતિ અને તેનાં મુખ્યપણે કારણો (ભાવો) :
તત્પ્રદોશ, નિહનવ, મત્સર, અંતરાય, અસાદન અને ઉપઘાત એ જ્ઞાનાવરણીય તેમજ દર્શનાવરણીય કર્મબંધના હેતુઓ છે.

સામાન્ય જીવો તેમજ વ્રતધારી જીવો પ્રત્યે અનુકંપા, દાન, સરાગ સંયમાદિ યોગ, ક્ષાન્તિ (ક્ષમાદિભાવ) અને શૌચ (લોભનો ત્યાગ, બાહ્યાભ્યાંતર પવિત્રતા) સાતાવેદનીય બંધના કારણો છે. પોતાને-બીજાને તેમજ સ્વપરને દુ:ખ, શોક, આતાપ, આક્રંદન, વધ તેમજ પરિવેદન કરવારૂપ પરિણામ અસાતાવેદનીય કર્મબંધનાં હેતુઓ છે.

કેવળજ્ઞાની, શ્રુત, સંઘ, ધર્મ અને દેવનો અવર્ણવાદ, દર્શન મોહનીય કર્મબંધના હેતુઓ છે. કષાયના ઉદયથી થતા તીવ્ર ક્રોધાદિરૂપ પરિણામ ચારિત્ર મોહનીય કર્મબંધના હેતુઓ છે. બહુ આરંભ અને બહુ પરિગ્રહ એ નરકાયુના બંધના હેતુઓ છે. માયા તિર્યંચ આયુ-ગતિની બંધ હેતુ છે. અલ્પ આરંભ, અલ્પ પરિગ્રહ, સ્વભાવથીજ મૃદુતા (કોમળ પરિણામ) તેમજ સરળતા એ મનુષ્ય આયુષ્યના બંધ હેતુઓ છે.

શીલરહિતપણુ, વ્રતરહિતપણું અને પુર્વોક્ત અલ્પઆરંભ, અલ્પ પરિગ્રહાદિ પરિણામ તેમની તારતમ્યતા પ્રમાણે બધા આયુષ્યોના બંધ હેતુઓ છે.

સરાગસંયમ, સંયમાસંયમ, અકામ નિર્જરા અને બાલતપ એ દેવાયુષ્યના બંધ હેતુઓ છે. યોગની વક્રતા અને વિસંવાદ અશુભ નામકર્મના બંધહેતુઓ છે. તેનાથી ઉલટું યોગની અવક્રતા (સરળતા) અને અવિસંવાદ શુભનામકર્મના બંધ હેતુઓ છે.

—: તીર્થંકર નામપ્રકૃતિનાં બંધના કારણો :—
(ષોડષ કારણભાવના)

૧. દર્શનવિશુદ્ધિ, ૨. વિનય સંપન્નતા, ૩. શીલ તેમજ વ્રતોમાં અતિચાર રહિતપણું, ૪. અભીક્ષ્ણ (અતુટધારા-સતત) જ્ઞાનોપયોગ, ૫. સંવેગ, ૬. શકિત પ્રમાણે ત્યાગ, ૭. શક્તિ પ્રમાણે તપ, ૮. સંઘ તેમજ સાધુજનો પર

વિઘ્ન આવતાં તેનું નિવારણ કરવું તેમજ ૯. વૈયાવચ્ચ કરવી, ૧૦. અરિહંત ભક્તિ, ૧૧. આચાર્ય ભક્તિ, ૧૨. બહુશ્રુત ભક્તિ, ૧૩. પ્રવચન ભક્તિ, ૧૪. આવશ્યક ક્રિયાઓનું પરિપૂર્ણ પાલન કરવું, ૧૫. મોક્ષમાર્ગની પ્રભાવના, ૧૬. પ્રવચન વાત્સલ્ય.

પરનિંદા, આત્મ પ્રશંસા, બીજાના છતા ગુણોનું આચ્છાદન કરવું, ઢાંકવા અને પોતાના અછતા ગુણોને પ્રકાશવા (કોઈને કહેવા વિ.) નીચગોત્રના બંધ હેતુઓ છે. તેથી ઉલટું પર પ્રશંસા, આત્મનિંદા, બીજાના અલ્પગુણને પણ પ્રકાશવા, પોતાના ગુણને ઢાંકવા, દોષને કબુલ કરવા. તેમજ નમ્રવૃત્તિ અને નિર્માનતા (અનુત્સેક ભાવ) ઉચ્ચગોત્રના બંધહેતુઓ છે, દાનાદિમાં વિઘ્ન કરવું તે અંતરાયકર્મના બંધહેતુઓ છે. (દાનાદિ:- દાન, લાભ, ભોગ, ઉપભોગ, વીર્ય-ઉત્સાહ).

Self Praise and denouncing others is the sign of inferiority complex.
Inferiority Complex = નીચ ગોત્ર અને Self respect = ઉચ્ચગોત્ર

जल्लसे मरइ तल्लसे उवज्जइ જીવ જે લેશ્યાસહિત મરણ કરે છે તેવી ગતિમાં ઉપજે છે. લેશ્યાના છ પ્રકારમાંથી ત્રણ અશુભ લેશ્યાઓ: કૃષ્ણ, નીલ અને કાપોતના ભાવોનું સ્વરૂપ જાણી તેનો પ્રયત્નપૂર્વક ત્યાગ કર્યા સિવાય જીવનો ઉદ્ધાર નથી. પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વ વખતે ત્રણ શુભ લેશ્યા: પીત-પદ્મ અને શુક્લ તેમાંની કોઈએક લેશ્યા હોય. નરકગતિમાં અપવાદ છે ઉત્કૃષ્ટ કૃષ્ણલેશ્યા સહિત મરણ કરે તો નિયમથી સાતમી નરકમાં ઉત્પન્ન થાય અને ઉત્કૃષ્ટ શુક્લલેશ્યાસહિત મરણ કરે તો મિથ્યાદ્રષ્ટિજીવ પણ નવમી ગ્રૈવેક સુધી દેવપણે ઉત્પન્ન થાય અને સમ્યગ્દષ્ટિ હોય તો પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાં સર્વાર્થસિદ્ધિ સુધીમાં દેવપણે ઉત્પન્ન થાય. પાંચ અનુત્તર વિમાનમાં ઉપજેલા બધા દેવો એકાવતારી હોય છે.

संबुज्जमाणे उणरेमतीतं पावाउ अप्पाणं निवट्टएज्जा
हिंसाप्पसूयाई दुहाइ मत्ता, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि

હે આર્ય! બુદ્ધિમાન માણસ એ છે કે જે સમ્યક્જ્ઞાનને પ્રાપ્ત થયો થકો, હિંસાને કર્મબંધનો હેતુ અને ભયંકર વેરની પરંપરાને વધારનાર અને દુ:ખના મૂળભૂત કારણ જાણીને પાપથી ડરીને ચાલે છે. આ રીતે ભવભીરૂતાને કારણે શાસ્ત્રોના અર્થને યથાવત શ્રવણ તેમજ અવધારણ કરે છે.

શ્રવણ અને અવધારણ ક્રિયાનું પ્રધાન કારણ ભવભીરૂતા છે આ સિવાય શ્રોતાપણું સંભવતું નથી.

— *અણગાર ધર્મામૃત અધ્યાય ૧લો શ્લોક ૧૯.*

નં.-૫

—: પ્રસિદ્ધ દેશાચારનું પાલન :—

'In Rome be a Roman' 'દેશ તેવો વેશ' Cut your coat according to your cloth.

આ દુનિયામાં વિવિધ જાતના પરિબળો (જેમાંનો એક અંશ પણ આપણી ધ્યાનમાં નથી) કામ કરી રહ્યાં છે. આ બધું ભગવાને બાર ભાવનાઓમાં 'સંસાર ભાવના' અને ચાર ધર્મધ્યાનમાં 'સંસ્થાનવિચય ધર્મધ્યાન'માં કહેલ છે. આ બધા પરિબળો વચ્ચે રહેલ આપણો આત્મા બસ એકજ છે. ભગવાને ત્રણ પ્રકારે ચેતના (જીવ)નું વર્ણન કર્યું: જ્ઞાન ચેતના, કર્મ ચેતના અને કર્મફળ ચેતના. કર્મફળ ચેતનામાં પરવશ, અસહાય દુ:ખનો જ ભોગવટો છે. કોઈ દાદ ફરિયાદ છે નહીં. કર્મ ચેતના મુખ્યત્વે સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોને હોય છે (બાકી બધા ત્રસ જીવોને ઓછાવત્તા પ્રમાણમાં હોય છે.) તેમના માટે આ 'પ્રસિદ્ધ દેશાચારનું પાલન' નામના ગુણનું વર્ણન છે. આ બધાની વચ્ચે પોતાની જાતને adjust કરી જીવન-નિર્વાહ તેમજ ધર્મમાં પ્રવૃત્તિ કરવાની છે. પ્રસિદ્ધ દેશાચાર જેના ઉપલક્ષણમાં લોકાચાર પણ આવી જાય તેના પાલનથી વિરોધના પરિબળોનો હ્રાસ થાય છે. તથા મોટે ભાગે ઉદ્‌ભવ પણ થતાં નથી. આજકાલ 'આંખમાં અમીવાળા' સજ્જનો બહુ ઓછા જોવા મળે છે માટે કોઈને પોતાના દુશ્મન કે વિરોધી બનવાનું કારણ ન આપવું.

पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मणा।
आवी वा जइ वा रहस्से, णेव कुज्जा कयाइ वि।।

હે ગૌતમ! તત્વજ્ઞ હોય કે સાધારણ માણસ હોય, કોઈએ કોઈની સાથે કટુવચન કે શારીરિક ચેષ્ટાદ્વારા પ્રત્યક્ષ કે અપ્રત્યક્ષરૂપથી શત્રુતા કરવામાં બુદ્ધિમતા નથી.

लोक: खल्वाधार: सर्वेषां धर्मचारिणां यस्मात्।
तस्माल्लोकविरुद्धं धर्मविरुद्धं च संताज्यम्।।

ખરેખર સર્વ ધાર્મિક જનોનો આધાર લોક છે. તેથી લોકવિરૂદ્ધ, ધર્મવિરૂદ્ધ ઉપલક્ષણથી દેશવિરૂદ્ધ કામ ન કરવું. તેવું કામ કરતા જીવોને આશરો ન આપવો.

'જયવીયરાય'માં પણ

लोगविरुद्धचाओ गुरुजणपूजा परत्थकरणं च।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा।।

અહીં લોકવિરૂદ્ધ આચરણના ત્યાગ કરવાની વાત કરી.

મુનિજનો પણ નિરપેક્ષ અને નિરાલંબન હોવા છતાં પ્રસિદ્ધ દેશાચારનું પાલન કરે છે. એટલે કે અપવાદ ઉભો થાય એવા વચનો બોલતા નથી, જેથી રાજાદિ તરફથી ઉપદ્રવ થાય.

—: કોઈના અવર્ણવાદ ખાસ કરીને રાજા-અમાત્યાદિના ન બોલનાર :—

ભગવાને ૧૮ પાપસ્થાનકો કહ્યાં તેમાં ૧/૬ ભાગ એટલે કે ૩ પાપસ્થાનોમાં ૧) પૈશુન્ય, ૨) અભ્યાખ્યાન અને ૩) પરપરિવાદ કહ્યા. આ ત્રણે અવર્ણવાદનાં અંગો છે. એનાથી મનુષ્યના ધર્મ-અર્થ અને કામ (મોક્ષનો પુરુષાર્થ મુનિને હોય છે. અહીં સામાન્ય ગૃહસ્થની વાત છે તેથી લીધેલ નથી) એ ત્રણમાંથી કોઈ પુરુષાર્થની સિદ્ધિ ન હોવા છતાં એનાથી કોણ બચવા પામેલ છે ?

આ ત્રણ પાપસ્થાનોનો ત્યાગ કરતાં ૧ / ૬ કર્મબંધ ટળી જાય છે. તેમાં એક પૈસાનો ખર્ચ નથી કે એક ટંક ખાવાનું છોડવાનું નથી. છતાં જેના જીવનમાંથી આ ત્રણ પાપ છૂટ્યાં નથી તેનામાં સજ્જનતા નથી તો ધર્મ તો ક્યાંય દૂર રહ્યો.

"રે ! જ્ઞાન નરને થાય છે; જે સુજન તેમ વિનીત ને;
તે જ્ઞાનથી કરી લક્ષ, પામે મોક્ષપથના લક્ષ્યને" ॥ ૨૨ ॥ — *બોધપ્રાભૃત*

કોઈપણ જીવનો અવર્ણવાદ બોલનાર નીચગોત્રનો બંધ કરે છે અને લઘુત્વ ગ્રંથિથી પીડાતો હોય છે. તેને જીવનમાં કોઈ ખાસ ધ્યેય નથી. મનુષ્ય જીવનની એક એક પળ એટલી કિંમતી છે કે ભગવાન મહાવીર ગૌતમપ્રભુને સંબોધીને કહે છે **'समय गोयम् मा पमाए'** હે ગૌતમ ! એક સમયમાત્રનો પ્રમાદ ન કર. આનાથી ઉલટું ખાસ કરીને પાંછલી ઉંમરમાં સમય કેમ પસાર કરવો એ એક Problem છે ! આખા જીવનમાં સઢ વગરના વહાણ જેવી ધ્યેય વગરની જીંદગી પસાર કરી તેનું આ પરિણામ છે. અને અવર્ણવાદનું દુષણ અહીં ઘર કરે છે.

Idle mind is the devil's workshop.

આ દુષણમાં ખાસ કરીને અદેખસકોભાવ બીજાનો ઉત્કર્ષ-લૌકિક સ્ત્રી, ધન, મકાન, ધંધા રોજગારમાં પ્રગતિ ન જોઈ શકવાના કારણે સામાની નિંદામાં તેને રસ પડે છે. આધ્યાત્મિક-ધર્મમાં બાહ્ય પ્રવૃત્તિ કરનાર લોકસમુહમાં તેમજ સાધુઓમાં, પંડિતોમાં પણ આ દુષણ ઓછું નથી. નિંદા કરનાર અને રસપૂર્વક સાંભળનાર બંનેમાં રસપૂર્વક સાંભળનાર વધુ અધમ કક્ષાનો છે કેમકે નિંદા કરનારને તો કંઈપણ પ્રયોજન હશે જ્યારે આને તો કંઇ નથી.

પુરુષો કરતાં સ્ત્રીઓમાં આ દુષણ વધુ પ્રમાણમાં અને સ્વભાવગત જોવામાં આવે છે. તેનું મુખ્ય કારણ નવરાપણું અને જીવનમાં કોઈ ઉદ્દાત ધ્યેય હાંસલ કરવાના નિર્ણયનો અભાવ. કોઈ અંગ્રેજ લેખકે લખ્યું છે :

There are three modes of communication: 1) Telephone, 2) Telegram, 3) Tell-a-woman. પહેલાની કહેવત છે.

અનેક ભવોની આરાધનાના ફળસ્વરૂપ કોઈક જીવમાં ઉદારતા અને સરળતા જોવામાં આવે છે. કોઈના પણ અવર્ણવાદ બોલનારને આમાંનો કોઈ ગુણ હોવાનો સંભવ નથી એટલું જ નહિ તેની ગંધ પણ તેનામાં નથી. આ દુષણ ઐહિક આપત્તિને વખત જતાં આમંત્રણ કરનાર અને લઘુત્વગ્રંથિને પોષણ આપનાર નીવડે છે.

એમ કહેવાય છે કે સ્ત્રીઓને ત્રણ વસ્તુ ખુબ પ્રિય હોય છે ૧) મલાઈ ૨) જમાઈ ૩) નિંદા. શૌર્યરસ, કરૂણ રસ, અધ્યાત્મિક રસ વિ. માં નિંદાને પણ નિંદારસ કહી વર્ણવ્યો છે.

બીજાના અવર્ણવાદ કોઈની આગળ કરવાથી એક પોતે હલકો પડે છે એ વાત બાજુએ રહી, વધારામાં જેની આગળ આ વાત કરી છે તેનાથી તે કાયમ બીતો રહે છે. રખેને તેને કહી દેશે એવો ભય તેને કાયમ રહે છે.

બીજાનો અવર્ણવાદ બોલનારના સમગ્ર વ્યવહારમાં કૃત્રિમતા, દંભ, માયાચાર અને લઘુત્વગ્રંથિનો સમન્વય જોવામાં આવે છે. આમાં પણ જ્યારે રાજા-અમાત્યાદિનો અવર્ણવાદ બોલવામાં આવે છે ત્યારે અણધારી આફતને નોતરનાર નીવડે છે. કુટુંબનિર્વાહ, ધંધોરોજગાર, સમાજમાં સ્થાન વિ. ને ખુબજ હાની પહોંચાડનાર નીવડે છે.

When you point one finger at some one, you are pointing three fingers against your self... — *Louis Nizer.*

Unjust criticism is often a disguised compliment. It often means that you have aroused jealousy and envy. — *Dale Carnagie.*

Jealousy is an awkward image which inferiority renders to virtue...

— *Anonymous*

Envy and jealousy are cancers of the soul with innumerable side effects.

— *Anonymous.*

ગામડામાં નિંદાખોર ભાઈ અગર બહેનને 'ગામની ફોઈ' તરીકે નવાજવામાં આવે છે.

કોઈ લેખકે નિંદા કરનારના મોંને ગામની ગટરના નાળા સાથે સરખાવેલ છે. જેમ આખા ગામનું મેલું ગટરના નાળામાંથી વહેતું રહે છે તેમ નિંદાખોરના મોંમાંથી આખા ગામના દુષણોરૂપી મેલું પાણી વહ્યા કરે છે.

"પાપ નહીં પરદ્રોહસો ત્યાગે સજ્જન સંત" — *દોલતરામ.*

બીજે ઠેકાણે એક કવિએ કહ્યું છે કે :

"નિંદા કરો નહિ કોઈની પાપી મહા હો પાપમાં;
ભવસ્થિતિનું ચિંતન કરી, વિચાર વાળો આપમાં."

અસત્ય વચનમાં પૈશુન્ય અને ગર્હિત વચનને અસત્યનો પ્રકાર કહેલ છે.

परपरिभवपरिवादादात्मोकर्षाच्च बध्यते कर्म : ।
निचैर्गोत्रं प्रतिभवमनेक भवकोटिदुर्मोचम् ।।

કોઈપણ પ્રાણીના અવર્ણવાદ બોલવાથી અને આત્મપ્રશંસા કરવાથી નીચગોત્ર બંધાય છે કે જે કરોડોભવે પણ મૂકાવું મુશ્કેલ છે. અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય, એકેન્દ્રિયથી માંડી ચતુરેન્દ્રિય સુધીના બધા જીવો તેમજ નરક અને નિગોદના તમામ જીવોને નીચ ગોત્રનો ઉદય છે.

છેવટે હૃદયપટ પર સોનાના અક્ષરે લખી રાખવા જેવું સૂત્ર: કેવળજ્ઞાની, શ્રુત, સંઘ, ધર્મ અને દેવોનો અવર્ણવાદ દર્શનમોહનીય કર્મના બંધ હેતુ છે. — *તત્ત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય - ૬ સૂત્ર - ૧૪.*

To praise oneself and to denounce others is a sign of inferiority complex.

નં. ૭

—: આદર્શ ઘર :—

You have your selection of the quality, type and nature of the seed, but the fruitage is its consequence over which you have no control. so is the case with selection of a good house.

ખેતરમાં બીજ વાવતા પહેલાં તેની જાત, ગુણવત્તા વિ. જોઈ તપાસી પસંદગી કરવાનું તમારા હાથમાં છે, પણ વાવ્યા બાદ તેના ફળની જાત વિ. ઉપર તમારો અધિકાર નથી. આવું જ કાંઈ ઘરની પસંદગીમાં અને તેની પોતાના કુટુંબીજનોના જીવનપર પડતી (જાણ-અજાણમાં) અસરોમાં છે.

Consequences are of two kinds 1) Immediate-Short term and 2) Far reaching-Long term. Also 1) perceptible-one can make out 2) Imperceptible-one never knows what.

ઘરની પસંદગી કરતા પહેલાં સ્થળ, પડોશ, પાણી, બળતણ વિ. ની સુવિધા, ધંધાના સ્થળથી ઘરનું નજદીકપણું. ટ્રાન્સપોર્ટની ઉપલબ્ધિ, જીવન જરૂરિયાતની ચીજો સવારના દુધથી માંડી સાંજના શાકભાજી વિ. ખરીદીની સુવિધા, છોકરાઓને ભણવા માટે શાળા-કોલજની ગુણવત્તા અને જવા-આવવા માટે વાહનની ઉપલબ્ધિ અને સૌથી અગત્યની વાત પર્યાવરણ-દુષણ (air pollution and noise pollution) નો અભાવ અગર અલ્પતા વિ. જોઈને નિર્ણય લેવામાં બુદ્ધિમતા રહેલી છે માટે તેને ગુણ કહ્યો,

सगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या यलत: पंडितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते :
भवतिहृदयदाहीशल्यतुल्यो विपाक : ॥

સારૂ અગર નરસુ કામ કરતા પહેલાં બુદ્ધિમાન પુરુષે તેના પરિણામનો વિચાર કરવો જોઈએ. પૂર્વાપર વિચાર કર્યા વગર ઘણી ઉતાવળથી કરેલા કામથી કોઈ વખત એવી આપદા આવી પડે છે કે તેના વિપાકો હૃદયમાં શલ્ય (કાંટા)ની માફક દાહ કરનારા નીવડે છે. ઘરનો પાડોશ આજુબાજુમાં રહેતા ગૃહસ્થોને પૂછી ખાતરી કરી ઘર લેવાનો નિર્ણય કરવો. ખરાબ પડોશી વડે કુટુંબ-જીવનની બરબાદી કર્યાના દાખલાઓ મુંબઇ શહેરમાં ગલીએ ગલીએ મળી આવશે. બીજી બાજુ સારો પડોશ એક પ્રકારની Sense of Security નો ભાગ ભજવે છે અને અણીના પ્રસંગે મોટી આફતમાંથી બચી જવાય છે.

Locality : આજુબાજુનાં નિવાસસ્થાનો :

જ્યાં આજુબાજુમાં જુગારના અડ્ડા, દાણચોરો, સ્ત્રી-પુરુષનાં સંકેત સ્થાનો, દારૂ ગાળવાની ભઠ્ઠીઓ, પશુ-પંખીઓની હત્યા, વેશ્યાવાડો, વાતાવરણમાં હવા તેમજ ઘોંઘાટનું દુષણ ફેલાવતા કારખાનાં હોય તેવી Locality છોડી શાંત, સ્ફુર્તિદાયક અને સારા આચાર-વિચારવાળા ગૃહસ્થો રહેતા હોય તેવી જગ્યા પસંદ કરવી.

ઘર પણ પોતાની આવક, આર્થિક સ્થિતિ તેમજ માન સ્થાનને લક્ષમાં રાખી બને ત્યાંસુધી પોતાના જેટલી અગર થોડીક ઓછી આવકવાળા સમુહમાં લેવું. ધંધાનું સ્થળ પોતાનાથી વધુ આવક ધરાવતા સમુહમાં લેવું અગર પસંદ કરવું. ઘર બનતાસુધી પોતાની નાતજાતનો સમુહવર્ગ રહેતો હોય ત્યાં લેવું જેથી માન, મર્યાદા, લજ્જાને કારણે દુષણથી અટકી જવાય તેમજ આડકતરો પ્રભાવ પડે. કાયદો અને વ્યવસ્થા (Law and Order) જ્યાં બરાબર બની રહેલ હોય, પરધન-પરસ્ત્રી પર બૂરી નજર નાખનાર ન હોય અને કાયદાથી

ડરીને ચાલનારો સભ્ય સમાજ હોય. કાયદાના બાંધાપર પગ મૂકીને ચાલનારને જ્યાં ત્વરીત કડક શિક્ષા થતી હોય, લાંચ-રૂશ્વતનું જોર ન હોય. એવા રાજ્યમાં જ્યાં રાજા અને પ્રધાન ન્યાય-નીતિ પર રાજ્ય કારોબાર ચલાવતા હોય ત્યાં વસવાટ માટે ઘર લેવું.

ઉનાળો-ચોમાસુ તથા શિયાળો એ ત્રણે ઋતુમાં શારીરિક બાધા ન પહોંચે એવા સ્થળ પર ઘર વસાવવું જોઈએ. બહુ નીચાણવાળા ભાગપર ઘર ન લેવું. બહુમાળીય મકાનમાં છેક ભોંયતળીયામાં ફ્લેટ ન લેવો. જેથી ચોરી, કોઈની બૂરી નજર, માંખ મચ્છરના ત્રાસ તેમજ દુષણયુક્ત પર્યાવરણથી બચી જવાય. ઘરમાં દાખલ થવા માટે તેમજ ઘરમાંથી બહાર નીકળવા માટે એકમાત્ર મુખ્ય દરવાજો અને જેના પર અનેક સ્થાનો પરથી નજર પડી શકે એવું ઘર ઉત્તમ ગણાય. એકથી વધારે ઘરમાં આવવા જવાના દરવાજા ચોરી-જારીને આમંત્રણ આપનારા નીવડે છે. Sense of Security ને મહદ્ અંશે બાધા પહોંચે છે.

A Man's house is his own castle. The first and foremost duty of any nation is to maintain Law and order so as to instill a sense of security in the minds of her citizens. Everybody should feel secured in his dwelling house and also feel secured that he will enjoy the fruits of his labour, well earned wealth without let or hindrance from any outsider.

બીજું જ્યાં ન્યાયપૂર્વક અર્થોપાર્જનની સુવિધા હોય. ધર્મસાધન માટે અનુકૂળ ચૈત્યાલય તેમજ બીજાં ધર્મસ્થાનક હોય. સાધર્મીઓનો વસવાટ હોય. સત્સમાગમમાં સુશ્રાવકોની બાહુલ્યતા હોય ત્યાં ઘર લેવું.

ઘરમાં ઝાગ-ઝમગ વગરનું અને ઉપયોગિતાના લક્ષપૂર્વક જરૂર પૂરતું ફર્નીચર, આસન, શયનાદિની સજાવટ કરવી. જોઈતી વસ્તુઓ જેની તેની મુકરર જગ્યાપર મૂકવી જેથી જરૂર પડતાં તુરતજ મળી આવે. A place for everything and everything in its place. ઘરના ડૉક્ટરનો તેમજ બીજા સ્પેશીયાલીસ્ટ ડૉક્ટરો, હોસ્પિટલ, પોલીસ સ્ટેશન, ફાયરબ્રીગેડ, સગાસંબંધી, કારીગરો વિ.ના ટેલીફોન નંબરો ડાયરીના પહેલા પાના પર લખી રાખવા તેમજ ડાયરી મુકરર જગ્યાએ ટેલીફોનની નજીકમાં મૂકી રાખવી. ટેલીફોન પાસે જ લખવાની નોંધબુક તથા પેનસીલ કાયમ રાખવાં. ઘરની વાત કરીયે ત્યારે તેમાં ઘરની નાયિકા સ્ત્રીની વાત આવીજ જાય. જેના પર ઘરની સજાવટ અને ઉષ્માભર્યા વાતાવરણનો મુખ્ય આધાર છે. અને તેવા ઘરમાંજ ચારિત્ર નિર્માણનો પાયો નંખાય છે અને ધાર્મિક અનુષ્ઠાનો નિર્વિઘ્ને પાર પડે છે.

"A man's dignity may be enhanced by the house he lives in but not wholly secured by it. The owner should bring honour to the house and not the house to its owner."

"A man travels the world over in search of what he needs and returns home to find it."ગુજરાતીમાં કહેવત છે : 'ધરતીનો છેડો ઘર'

"It is not wealth I seek, nor fame. I crave for a home"

— *Ravindranath Tagore*
in 'Home Sweet home at last'

ઘર માટી, ચુનો અને પત્થરની સજાવટ છે તેનો આત્મા તેમાં રહેતા કુટુંબીજનો છે. સ્નેહ અને સમર્પણ વિનાનું કૌટુંબિક-જીવન કડવાશભર્યું બની જાય છે તેને પાછું હળવાશભર્યું બનાવવા માટે સમજપૂર્વક સહન કરતાં અને સહુના સુખમાટે સ્નેહપૂર્વક સમર્પણ કરતાં શીખો. કૌટુંબિક સુખ માટે આ સિવાય બીજો કોઈ ઉપાય નથી.

ઘરના વડાએ પોતાના કુટુંબપ્રત્યે આધાર, આલંબન અને ચક્ષુરૂપ બનવું જોઈએ.

આધાર : સ્તંભની માફક ઉત્તરદાયિત્વ વહન કરવાવાળા.

આલંબન : કુટુંબના સર્વ સભ્યો માટે આલંબનરૂપ જેનું રહન-સહન હોય.

ચક્ષુ : કુટુંબીજનોના જીવનના દરેક પાસાઓમાં માર્ગદર્શક.

न गृहं गृहमित्याहु - गृहिणी गृहमुच्यते

ઘરને ઘર કહેવામાં આવતું નથી, ગૃહિણીને ઘર કહેવામાં આવેલ છે.

House is built of stones and walls but home by the persons who live in it.

છેવટમાં એકવાર ફરી રવિંદ્રનાથ ટાગોરના સુવાક્યને યાદ કરીએ.

"It is not wealth I seek nor fame, I crave for a home"

— *'Home Sweet home at last.'*

—: સદાચારીનો (સત્પુરુષોનો) સંગ :—

''તેથી શ્રમણને હોય જો દુ:ખમુક્તિ કેરી ભાવના
તો નિત્ય વસવું સમાન અગર વિશેષગુણીના સંગમાં''

— પ્રવચનસારગાથા - ૨૭૦

પ્રાત: સ્મરણીય પરમપૂજ્ય સદ્ગુરૂદેવ શ્રી કુંદકુંદાચાર્ય શ્રમણ-મુનિને ઉપદેશ આપતાં લખે છે કે હે મુનિરાજ! તમને દુ:ખથી મુક્ત થવાની ભાવના હોય તો નિત્ય પોતાથી અધિક' અગર સમાન ગુણીજન સાધુના સંગમાં રહેવું. મુનિજનોને જો આવી શિખામણ આપી છે તો ગૃહસ્થ, શ્રાવકે તો કોઈનો સંગ કરતા પહેલાં કેટલો વિચાર કરવો જોઈએ ?.

नवा लभेज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो, विरज्ज कामेसु असज्जमाणो।।

— ઉત્તરાધ્યયન ૩૨ / ૫.

જો પોતાનાથી અધિક અથવા સમાન ગુણવાળા સાથી ન મલે તો હિંસાદિ પાંચ પાપોના ત્યાગપૂર્વક કામ-ભોગોથી અનાસક્ત રહી સાધુએ એકલા વિચરવું.

दुर्जनेन समं सख्यं, प्रीति चापि न कारयेत्।
उष्णों दहति अंगार:, शीत: कृष्णायते करम्।।

દુર્જનની સાથે દોસ્તી કે તેનો સહવાસ કરવો નહીં. કોલસો ગરમ (અગ્નિ) હોય તો દઝાડે છે, બાળે છે અને ઠંડો હોય તો હાથ કાળા કરે છે.

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरै: सह।
न मुर्खजन संपर्क: सुरेन्द्रभवनेष्वपि।।

પર્વતોની ગુફાઓમાં વનચર પશુઓની વસ્તીમાં વિચરવું સારૂં પણ મુર્ખજનની સાથે રહેવું અગર તેની સંગતિ કરવી સારી નથી.

लूणह घूणह कुमाणसह ए त्रिहुं इक्क सहाओ।
जिहां जिहां करे निवासडो, तिहां तिहां फेडे गओ।।

લુણો, ધુણો અને દુર્જન માણસ ત્રણેય એક સરખા છે. તેમને જે આશ્રય આપે છે તેને જ તે કોરી ખાય છે. લુણો ભીંતને, ધુણો લાકડાને અને દુર્જનને જે ઘરમાં આશરો આપવામાં આવે છે તે ઘરનું વખત જતાં નિકંદન કાઢી નાખે છે.

સારો અગર નરસો માણસ પોતાનો ભાવ ભજવ્યા વગર રહેતો નથી. ગુજરાતીમાં એક કહેવત છે કે 'પ્રાણ અને પ્રકૃતિ સાથે જાય.'

''सादृशं चेष्टते स्वस्या: प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहो किं करिष्यति।।''

''જેવી પ્રકૃતિ પોતાની જ્ઞાનીએ તેમ વર્તતો.
સ્વભાવે જાય પ્રાણીઓ, કરે નિગ્રહ કેટલું ?''

માનનીય કિશોર મશરૂવાળાએ કરેલ ગીતાના ગુજરાતી પદ્યાનુવાદમાંથી

સત્સંગના મહાત્મ્યનું કોઈ વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી. કેમકે સત્સંગથી જાણે-અજાણે અને અનાયાસે એટલે કે વગર પ્રયત્ને માત્ર તેમના સહવાસથી માણસના જીવનમાં અનેક સદ્‌ગુણોનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. જીવનની દિશા બદલાઈ જાય છે. માણસની વાત બાજુએ રાખો અરે પશુઓ પણ સત્પુરુષના સાનિધ્યમાં જન્મજાત વેરને ભૂલી જઈ એકબીજા પ્રત્યે પ્યાર કરવા લાગી જાય છે. વાઘણનું બચ્ચુ ગાયના આંચળ ધાવવા લાગી જાય છે.

अहिंसा तत्प्रतिष्ठायां तन्सन्निधौ वैरत्याग :

અહિંસક ભાવ જીવનમાં ઓતપ્રોત થતાં તેની સમીપમાં જન્મજાત વેર ધારણ કરનાર પ્રાણીઓ (બિલાડી અને ઉંદર) પણ વેરને ભૂલી એકબીજા પ્રત્યે પ્યાર-સ્નેહ કરતા થઈ જાય છે.

સાક્ષાત્ તીર્થંકર વિચરતા ન હોય એવા કાળ-ક્ષેત્રમાં તેમની પ્રતિમાજીનું સ્થાપન કરી તેનાં નિત્ય દર્શન, પૂજા, સ્તવન, તેમણે પ્રરૂપેલા મોક્ષમાર્ગમાં વિચરતા નિર્ગંથસાધુનાં દર્શન, તેમના પ્રવચનનું શ્રવણ, પૂજાભક્તિ અને તેજ મોક્ષમાર્ગને પ્રગટપણે દર્શાવતા શાસ્ત્રોનું અવલોકન, વાંચન, નિદિધ્યાસન એ બધાં સત્સંગનાંજ અવિભાજ્ય અંગો છે.

ભગવાનની ભક્તિ, તેમનાં સ્તવન, કિર્તનમાં તેમના ગુણનો અનુરાગજ મૂળમાં છે. 'કેવળીગુણને સ્તવે પરમાર્થ કેવળી તે સ્તવે' દર્શનમોહની ક્ષપણાનો પ્રારંભ તેમજ તીર્થંકરગોત્ર નામકર્મની પ્રકૃતિનો બંધ કેવળી અગર તો શ્રુતકેવળીના પાદમૂળમાંજ થાય છે. આનાથી બળવત્તર સત્સંગના મહિમાનો દૃષ્ટાંત બીજો કયો હોઈ શકે ?

'अवाग् विसर्ग वपुषा मोक्षमार्गं निरुपयन्तम्'

વચનથી કંઈપણ નહિ કહેવા છતાં પોતાના દેહના સઘળા અંગોથી, ઉઠબેસથી, રહેણી કરણીથી મોક્ષમાર્ગનું નિરૂપણ કરતા હોય છે. સત્શાસ્ત્રોનું વાંચન, શ્રવણ, મનન, નિદિધ્યાસન અને એકાગ્રપણે તેના અર્થની વિચારણારૂપ ધ્યાનથી તે સત્પુરુષોની વિચારધારાનું આપણી વિચારધારા સાથે અનુસંધાન (Communion-meeting of minds) થાય છે. તે અનુસંધાન અને સ્વરૂપ અનુસંધાનમાં નામભેદ છે અર્થભેદ નથી. સત્પુરુષોના પરોક્ષપણામાં તેમણે રચેલા શાસ્ત્રોનાં વાંચન, મનનથી જો જીવને આવા પરમ લાભની પ્રાપ્તિ થતી હોય તો તેમના પ્રત્યક્ષપણામાં અને તેમની આજ્ઞાનુસાર વર્તન આચરણ કરનાર જીવને શું પ્રાપ્ત ન થાય ?

"Any book written, any analytic essay by any author or writer is in ultimate analysis his own autobiography."

Talent alone cannot make a writing, there must be a man behind it...

— *Emerson.*

આના પરથી એ બોધ લેવાનો છે કે કોઈપણ શાસ્ત્રોની વાંચનાદિ માટે પસંદગી કરતા પહેલાં તેના લેખક સંબંધી ખુબજ વિચાર કરવો જરૂરી છે.

काचित्तेषां वचन रचना येन या ध्वस्तदोषा।
यां श्रृण्वन्त : शमितकलुषा निर्वृतिं यान्ति सत्त्व॥ १५ ॥

સત્પુરુષોના વચનની કડીબદ્ધ રચનાનું શ્રવણ કરતાં કલુષતાનો નાશ થઈ વિશુદ્ધિનો પ્રાદુર્ભાવ થતાં જીવ કલ્યાણ-સુખને પામે છે.

'Everything changes with change in values of life.'

જીવનનું તેમજ સાચા સુખનું રહસ્ય-મૂલ્યાંકન (attributes of real happiness) બદલાતાં આખું જીવન બદલાઈ જાય છે. અને એ મૂલ્યાંકનમાં ફેરફાર થવો સત્સંગને આભારી છે. સાક્ષાત જોવાથી ચીજનું

મૂલ્યાંકન જે થાય છે તે સાંભળવાથી કે કોઈના કહેવાથી થઈ શકતું નથી.

दृष्ट्वा श्रुत्वा यमी योगी पुण्यानुष्ठामूर्जितम्।
आक्रामार्ति निरातङ्क पदवीं तैरुपासिताम्॥

સંયમી મુનિ-યોગીશ્વરોના મહાપવિત્ર આચરણ, અનુષ્ઠાનને જોઈ, સાંભળી આ જીવ તે યોગીશ્વરોની પદવીને નિરૂપદ્રવપણે પ્રાપ્ત કરે છે. સત્સંગનો આવો અપૂર્વ મહિમા છે. કહે છે કે પારસમણી લોખંડને સ્પર્શતાં લોખંડ સોનું બની જાય છે જ્યારે સત્સંગનું પ્રાસુ અડતાં જીવ તેરૂપ બની જાય છે.

"તસુ શુદ્ધ દર્શન-જ્ઞાનરૂપ પવિત્ર આશ્રમ પામીને
પ્રાપ્તિ કરૂં હું સામ્યની, જેનાથી શિવપ્રાપ્તિ બને"

— *પ્રવચનસાર ગાથા-૫*

આશ્રમ, આશ્રમવાસીની સાધના અને તેના ફળની આવી અલૌકિક વ્યાખ્યા જૈનદર્શન સિવાય બીજે ક્યાં જોવા મળે!

જૈનશાસ્ત્રોના પાને પાને સમભાવ, સામ્યભાવ, સમતાભાવ સામાયિકનું વર્ણન બારીકાઈથી જોનારને દેખાય છે. સત્પુરુષનું યોગબળ, હૃદયની પવિત્રતા, બાળક જેવી સરળતા, નિર્દોષ મુખાકૃતિ, સૌમ્ય પ્રકૃતિ, ચારિત્રબળ, ગંભીરવાણી, આગમ અનુસારીણિ બુદ્ધિ વિ.થી તેમના સહવાસમાં રહેનાર જીવ પ્રભાવિત થતાં સુખ અને તેનું કારણ એકમાત્ર વીતરાગતા-સામાયિકની પૂર્ણતા તેનું બોધિબીજ તેના અંતરંગના ઉંડાણમાં મૂળ નાખે છે. તેમાં જ્ઞાનજળના સિંચનથી, પ્રાસંગિક સુચનારૂપ સમારકામ-નીંદણથી અને તેમની નિકટતારૂપ વાડથી સુરક્ષિત મોક્ષમાર્ગરૂપ છોડ ઉગીને વૃદ્ધિ પ્રામતાં મોક્ષરૂપી ફળને આપે છે.

"બાલજીવોના સંગથી દૂર રહેવું, ગુરૂજન અને વૃદ્ધ અનુભવી મહાપુરુષોની સેવા કરવી તથા એકાંતમાં રહી ધૈર્યપૂર્વક સ્વાધ્યાય-સૂત્ર અને તેના ગંભીર અર્થનું ચિંતવન કરવું એજ મોક્ષમાર્ગનો ઉપાય છે."

વળી સમાધિની ઈચ્છાવાળા તપસ્વી સાધુએ પરિમિત અને શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવો. નિપુણાર્થ બુદ્ધિવાળા (મુમુક્ષુ) સાથીદારને શોધવો અને સ્થાનપણ એકાંત (ધ્યાન કરવાલાયક) કોલાહલથી રહિત, નિરૂપદ્રવવાળું ઈચ્છવું જોઈએ.

નં.-૯

—: માતાપિતાની સેવા :—

कृतज्ञतामात्मनि संविधातुं मनस्विना धर्ममहत्वहेतो :।
पुजाविधौ यत्नपरेण मातापित्रो: सदा भाव्यमिहोत्तमेन ॥

કૃતજ્ઞતાના આવિશ્કારરૂપ અને ધર્મના મુખ્ય કારણ સ્વરૂપ માતાપિતાની સેવા ઉત્તમ જનોએ સદાય કરવી જોઈએ.

निएहं दुप्पडिआरं समणाउ सो तंजहा अंमापिउणो
भट्टिदायगस्य धम्मायरियस्स ॥

હે આયુષ્યમાન! માતાપિતા-સ્વામી અને ધર્માચાર્ય એ ત્રણજનોના ઉપકારનો બદલો વાળવો અતિ મુશ્કેલ છે.

मातृपित्रादिवृद्धानां नमस्कारं करोति य :।
तीर्थयात्राफलं तस्य, तत्कार्योऽसौ दिनेदिने ॥

જે માણસ માતાપિતાને નમસ્કાર કરે છે (નમસ્કાર શબ્દનો અર્થ વિનય અને તેમના અભિપ્રાય અનુસાર વર્તન) તેણે તીર્થયાત્રા કર્યા બરાબર છે તેથી તે દિન પ્રતિદિન કરવા યોગ્ય છે.

ન્યાય અને નીતિપૂર્વક ધનાદિનું સંપાદન જે ગૃહસ્થના જીવનમાં નથી તેનાં બધાં ધાર્મિક અનુષ્ઠાનો કેળના થાંભલા સમાન નિ:સાર છે, તેમ માતાપિતાની સેવા પ્રત્યે જેણે દુર્લક્ષ કર્યું તેને અરિહંતાદિક પંચપરમેષ્ટિ પ્રત્યે ઉપકાર બુદ્ધિ જાગી શકતી નથી તેમજ તેમની ભક્તિ, નમસ્કારાદિ, વિડંબના તેમજ આત્મવંચનારૂપ છે.

આ ભવમાં માતાપિતાનો આ જીવ પર જે ઉપકાર વર્તે છે તેનો બદલો તેમના દરરોજ પગ ધોઈને પીવે તો પણ વળી શકે તેમ નથી. જેમ અરિહંતભક્તિ અને સમ્યગ્દર્શનમાં નામભેદ છે, અર્થભેદ નથી તેમ માતાપિતાની સેવા અને મનુષ્ય જન્મની સફળતામાં નામભેદ છે, અર્થભેદ નથી. માતાપિતાની સેવા એ ગુણાનુરાગ દ્રષ્ટિ અગર ગુણના આરાધક જીવનો માપદંડ છે.

માતાપિતાની સેવાનો ઉત્કૃષ્ટ દ્રષ્ટાંત તેમજ બોધ ભગવાન મહાવીરના જીવનમાંથી મળી આવે છે. ભગવાન મહાવીરનો જીવ ૧૬મા પ્રાણંત સ્વર્ગમાંથી ચ્યવી ત્રિશલા માતાના ઉદરમાં-ગર્ભાશયમાં ત્રણજ્ઞાન સહિત આવેલ છે. શરીર પર્યાપ્તિના નિર્માણપૂર્વક વૃદ્ધિ પામી રહેલ છે. એક વખત તેમને વિચાર આવે છે કે મારા શરીરના હલનચલનથી કદાચ માતાને પીડા થતી હશે તેથી એ ગર્ભમાં રહેલ બાળક હલન-ચલનની ક્રિયા થંભાવી દે છે. ઉદરમાં રહેલા ગર્ભની હલન-ચલન ક્રિયા બંધ પડી જતાં ત્રિશલા માતાને શંકા પડે છે કે ગર્ભનું શું થઈ ગયું? પોતાના પતિ સિદ્ધાર્થ રાજા જે શયનખંડમાં સૂતા હતા ત્યાં જઈ બધી વાત કરી. (આ પ્રકારના શાસ્ત્રમાં આવતા વર્ણન પરથી એક બોધ મળે છે કે ગર્ભાવસ્થા દરમ્યાન પતિ-પત્ની જુદા જુદા શયનખંડમાં સૂતા અને સંપૂર્ણ બ્રહ્મચર્ય પાળતા. તેના અનેક ફાયદાઓ અને બાળકના શરીરાદિના નિર્માણમાં કેવો ફરક પડતો હશે તે શાસ્ત્રકાર જાણે; પરંતુ પુરાણ પુરુષોના આ પ્રચલિત વ્યવહારમાં ઘણું તથ્ય સમાયેલ છે એમાં ફરક નથી) સર્વત્ર ગભરાટ ફેલાઈ ગયો. વૈદ્યો, હકીમો, જ્યોતિષ્કારોને બોલાવવાની ધમાલમાં આખો મહેલ, રાજમહેલ પડી ગયો. તેવામાં અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગપૂર્વક જોતાં ગર્ભમાં રહેલ બાળકને બધી ખબર પડી ગઈ અને હલન-ચલન શરૂ કરી દીધું. એક ક્ષણમાં વાયુની માફક વાત પ્રસરતાં સર્વત્ર છુટકારાની લાગણી અને હર્ષોલ્લાસથી વાતાવરણ ધમધમી ઉઠ્યું. માતાપિતાનો આવો અનહદ પ્રેમ, રાગ, લાગણી જોઈ ગર્ભસ્થ બાળકે (ભગવાન મહાવીરના જીવે) નીચે મુજબનો અભિગ્રહ કર્યો.

जीवतो गृहवासेऽस्मिन् यावन्मे पितराविमौ।
तावदेवाधिस्यामि गृहानहमपीप्टन :॥

માતાપિતાના જીવન દરમ્યાન હું સ્વેચ્છાપૂર્વક ઘરમાં રહીશ (એટલે કે ધર્મની આરાધના ઘરમાં રહીને કરીશ).

इमौ शुश्रुणमाणस्य गृहानावसतो गुरु।
प्रवज्याप्यानुपूर्व्येण न्यायाऽन्ते भविष्यति॥

ઘરમાં રહી માતાપિતાની સેવા કરી તેમના નિર્વાણ કે દેવલોક બાદ જ મારી દીક્ષા એટલે કે **સર્વસંગ** પરિત્યાગ વાજબી ગણાશે. (તેમને ઉદ્વેગ કરનારી મારી દીક્ષા વાજબી નહિ ગણાય.) આગળ જતાં **શાસ્ત્રકાર** લખે છે :

प्रारंभमंङ्गलं ह्यस्या गुरुशुश्रूषणं परम्।
एतौ धर्मप्रवृत्तानां नृणां पुज्यास्पदं महत्॥

વડીલની-માતાપિતાની સેવા પ્રવજ્યાનું પ્રથમ ઉત્તમ મંગળ છે. ધર્મમાં પ્રવૃત્ત માણસોનું તેઓ મહત્ **પૂજાસ્થાન છે.**

માતાપિતાનો પૂજક આત્માજ દેવ તેમજ ગુરૂનો સાચો પૂજક બની શકે છે. માતાપિતાના **ઉપકારની જેને** કિંમત નથી તેને અરિહંતાદિક પંચ પરમેષ્ટિ પ્રત્યે ઉપકારબુદ્ધિ કદાપિ ઉપજે નહીં અને તથારૂપ **ઉપકારબુદ્ધિ** વગર તેમના પ્રત્યે પૂજ્યભાવ, સાધુની વૈયાવચ્ચ વિ. ભાવશુદ્ધિ ઉપજે નહીં. અને તથા **પ્રકારની ભાવશુદ્ધિ** વગર સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ કદી થાય નહીં.

स कृतज्ञ स पुमान् लोके स धर्मगुरुपूजक :।
स शुद्धधर्मभाक् चैव य ऐतौ प्रतिपद्यते॥

તેજ માણસ આ જગતમાં કૃતજ્ઞ અને પવિત્ર આચરણવાળો છે, તે જ **ધર્મગુરૂનો-પંચપરમેષ્ટિનો પૂજક** છે અને તેજ શુદ્ધધર્મનું ભાજન છે જે માતાપિતાની સેવામાં અનુરક્ત છે.

પોતાના પુત્રને ઉછેરી, પાલણ-પોષણ કરી, ભણાવી-ગણાવી, પરણાવી, ધંધામાં લગાડી-પરોવી **અને તેના** સુખ માટે પોતાનાથી બનતું બધું જ કરી છૂટી માતાપિતા સંતોષ અનુભવે છે. આ સઘળા કાળ **દરમ્યાન** તેમના હૃદયના કોઈ ખૂણામાં એવી આશંકા નથી કે વૃદ્ધાવસ્થામાં ઈન્દ્રિયો અને શરીરના અવયવો નબળા પડતાં પુત્રની સેવાની તેના ટેકાની તેની હૂંફની જરૂર પડશે ત્યારે તે પુત્ર (તેની પોતાની સ્ત્રી તથા બાળકોના ઉછેરમાં ઓતપ્રોત થઈ ભવિષ્યમાં તે બાળક મોટો થઈ પોતે જ્યારે વૃદ્ધાવસ્થામાં આવશે ત્યારે તેની સેવા ચાકરી કરશે એવા ખ્વાબ-મનોરથ સેવતો) જેણે તેના પર આવો જ ઉપકાર કર્યો છે તે માતાપિતા તરફ દુર્લક્ષ કરશે. ઘડપણમાં પોતાના પ્રત્યેની પુત્રોની બેપરવાઈ, પુત્રવધુઓની તોછડાઈ, તિરસ્કાર અને **મર્મભેદી કટાક્ષયુક્ત વચનરૂપી** બાણના પ્રહાર. ભોજન પીરસવાની રીત તેમજ ભેદભાવ આ બધું મૂંગે મોઢે સહન કરનાર **વૃદ્ધાવસ્થાને** લીધે લાચાર માતાપિતાના એકાંતમાં અશ્રુપાતથી ભીનાં થયેલાં ઓશીકાં પોતાની આત્મકથા લખે **તો Tragedy ની** પરાકાષ્ટાવાળુ પુસ્તક ગીનીઝની નોંધબુકમાં સ્થાન પામે **અને ભલભલાનાં લોખંડ જેવા કાળજાં કંપી ઉઠે ?**

Silence is no certain token that no secret grief is there: sorrow which is never spoken is the heaviest load to bear. — ***F. R. Havergal***

વૃધ્ધ માબાપને અસ્વસ્થ તબિયતના કારણે હૉસ્પિટલમાં દાખલ કરી પૈસા ખર્ચનાર ઘણા **જોવા મળશે** પણ હૉસ્પિટલમાં અગર ઘરમાં તેમની આગળ શૈયાપર બેસી પોતાના હાથે સેવા-ચાકરી કરનારા અને તેમનો આત્મા શાંતિપૂર્વક તેમના આ પાર્થિવ દેહને છોડી સદ્ગતિમાં જાય તે હેતુથી અંતિમ સમયે સઘળું કામકાજ છોડી ગમે તેટલા દિવસો ચાકરી કરવામાં થાય તોપણ તલમાત્ર મનમાં અણગમો ઉત્પન્ન ન થવા દઈ તેમના કાનમાં નવકારમંત્રનું અખંડધારાપૂર્વક સ્મરણ કરાવનાર પુત્રો આ કાળમાં કેટલા **જોવા મળશે? જેણે અંતિમ** સમય સુધી માબાપની સેવા કરી તેનું જીવન ધન્ય થયું તેટલુંજ નહીં, આગામી કાળમાં સુગતિમાં જન્મ લઈ આ ધર્મને પામશે.

શ્રવણે પોતાના વયોવૃદ્ધ માતાપિતાને બે બાજુ કાવડમાં બેસાડી ખભે ઉચકી માઈલો સુધી પગપાળા ચાલી તીર્થયાત્રા કરાવ્યાનો દાખલો ઈતિહાસમાં સોનાના અક્ષરે લખવામાં આવે તોપણ ઓછો છે.

—: ૧૦. ઉપદ્રવવાળા સ્થળનો ત્યાગ :—

—: ૧૧. નિષેધ કરેલા દેશકાળમાં ગમન ન કરવું. :—

ગૃહસ્થ જીવનમાં કુટુંબનો નિર્વાહ અને ઉત્તરદાયિત્વ નિભાવવાની જવાબદારી સાર્થકરીતે અદા કરવામાં ઉપદ્રવવાળા સ્થાનોનો ત્યાગ કરવામાં બુદ્ધિમત્તા રહેલી છે. સમયસર પગલું ન ભરવામાં આવે તો સારાયે કુટુંબની પાયમાલી-અકલ્પનીય દુ:ખોની પરંપરા સર્જાય છે.

ઉપદ્રવો મનુષ્યકૃત, તિર્યંચકૃત, રાજકૃત અને કુદરતથી નિર્માણ થાય છે. જેના કારણે ગૃહસ્થ મહદ્અંશે ધર્મ, અર્થ, કામ કોઈપણ પુરૂષાર્થમાં સફળ થતો નથી. અને મનુષ્ય જીવનની અણમોલ ઘડીઓ જાણે-અજાણે બરબાદ થતી જાય છે.

મનુષ્યકૃત ઉપદ્રવો: ધાડ, લૂંટ, અપહરણ, આતંકવાદ, ખૂનની ધમકીઓ જ્યાં આંતરે દિવસે સામાન્ય બની ગયાં હોય ત્યાં વસવાટ કરવો ગૃહસ્થને માટે સલાહભર્યો નથી. આજુબાજુમાં કારખાનાઓ અગર બીજા ઉદ્યોગોથી વાતાવરણમાં પ્રદૂષણ કાયમ રહેતું હોય, તેમાંથી હરરોજ થતા કચરાના નિકાલથી નદીનાળાઓ તેમજ કૂવાઓમાંનુ પાણી દૂષિત થતું હોય. દુર્ગંધ ફેલાતી હોય અને આની ફરીયાદ કરવા જતાં વધુ આફત વહોરવાની દહેશત રહેતી હોય તેમજ સરકારી અધિકારીઓ માસિક હપ્તા લઈ આંખ આડા કાન કરતા હોય એવા સ્થાનોમાં ઘર વસાવવાથી કુટુંબના સ્વાસ્થ્યને હાની પહોંચે અને નિરંતર ભયના વાતાવરણમાં રહેવાથી બરબાદી સિવાય બીજું કોઈ પરિણામ આવતું નથી. માટે એવા સ્થળોનો બનતી શકયતા તેમજ ત્વરાએ ત્યાગ કરી નવી જીંદગી શરૂ કરવામાં બુદ્ધિમતા રહેલી છે.

તિર્યંચકૃત ઉપદ્રવો: નજીકના જંગલોમાંથી તેમજ આજુબાજુના સ્થળોમાંથી હિંસક તેમજ ઘાતક પ્રાણીઓ આવી પશુધનને, મનુષ્યને પણ ઉપાડી જતા હોય, જાનમાલને નુકસાન પહોંચાડતા હોય તેવા સ્થળોનો બુદ્ધિમાન શ્રાવકે ત્યાગ કરવો.

રાજકૃત ઉપદ્રવો : જ્યાંનો રાજા અન્યાયી હોય, રાતદિન સુરા-સુંદરીમાં મશગુલ રહેતો હોય, પોતાના ધાર્મિક સ્થળો પ્રત્યે દ્વેષભાવ રાખતો હોય, ધર્મવિરૂદ્ધ દુરાચારી હોય, બાળક બુદ્ધિવાળો હોય, સ્વાર્થાંધ અને ખુશામતીયાઓથી ઘેરાયેલો હોય, જેનો પ્રધાન બુદ્ધિહીન હોય, રાજાના અધિકારીઓ વાર તહેવારે બરજોરીપૂર્વક ઉઘરાણાં કરતાં હોયં, જેની દાદ-ફરીયાદ ન હોય એવા દેશમાં અગર સ્થળમાં સજ્જન- પુરૂષો પણ સલામતી અનુભવતા નથી. અને જ્યાં સલામતી (Sense of Security) નથી ત્યાં ધર્મ-અર્થ કે કામ કોઈ પુરૂષાર્થ વ્યવસ્થિત પણે થઈ શકતો નથી. આયોજન પણ થઈ શકતું નથી. અને સઢ વગરના વહાણ જેવી ડામાડોળ સ્થિતિનું જીવનમાં નિર્માણ થાય છે.

કુદરતકૃત ઉપદ્રવો: દુષ્કાળ (અતિવૃષ્ટિ અગર અનાવૃષ્ટિના કારણે) વાવાઝોડાં, મરકી, ધરતીકંપ, સાત ઈતિઓ, ત્રણ ઋતુઓમાં ઉનાળામાં અસહ્ય ગરમી, શિયાળામાં કાતીલ ઠંડી અને ચોમાસામાં ઘરની અંદર નદી નાળામાં ભરતીને કારણે પાણીનું ઘરમાં ઘુસી જવું અને સારી રાત અને દિવસ નિ:સહાયપણે જાનમાલની, સ્ત્રીપુત્રો, બાળકોની બરબાદી જોતા રહી જવું. આજુબાજુ ખાબોચિયામાં પાણી ભરાઈ જવું. તેમાંથી દુર્ગંધ અને રોગનો ફેલાવો વિ. દુષણો સામાન્ય થઈ પડ્યાં હોય તેવાં સ્થળોનો પણ બુદ્ધિમાન શ્રાવકે બનતી શક્યતા અને ત્વરાએ ત્યાગ કરવો. વ્યભિચારી સ્ત્રી-પુરૂષોનાં સંકેત સ્થાનો, કેફી દ્રવ્યોની હેરફેરીનાં સ્થાનો, દારૂ ગાળવાની ભઠ્ઠિઓ, અનેક પ્રકારના ગુન્હાહીત કૃત્યો વિના સંકોચે કરવાનો જેનો વ્યવસાય થઈ ગયો હોય એવા અડ્ડાઓ, આજકાલની હોટેલો જેમાં અનેકજાતના અસામાજિક તત્ત્વોનાં નિયમિત આગમન હોય તેની નજીકમાં વસવાટ

કરવાથી પોતાના જાન-માલની હાની તથા બાળકો પર પડતા કુસંસ્કાર વિ. અનેક શક્યતાઓના કારણે તેથી દૂર વસવાટ કરવામાં બુદ્ધિમતા રહેલી છે. આ ગુણના ઉપલક્ષણમાં ઘરમાં ફોટાઓ, જેમાં ઓછા વત્તે અંશે બિભત્સતા, હિંસાનું તાંડવ, ક્રૂરતા અને નિર્દયતાયુક્ત દ્રષ્યો હોય, નટ-નટીઓના અર્ધનગ્ન સ્વેચ્છાચારી દ્રષ્યો હોય તેને ટાળી પોતાના આદર્શને પોષતા, નિત્યપ્રતિ તેના દર્શનથી જીવનના ધ્યેયની યાદ દેવડાવતા ફોટાઓની સજાવટ કરવી જોઈએ.

આજકાલ ટી.વી. જે પ્રજામાં સુસંસ્કાર રેડવામાં અને આદર્શ, પ્રેમ, સ્નેહ, ભાતૃભાવ, સમર્પણ, નિસ્વાર્થ, જનસેવા, વ્યવસાયીક શિક્ષણ, નૈતિક મૂલ્યાંકનનું શિક્ષણ અને તેનો એકધાર્યો, એક પ્રકારે સારાયે દેશમાં અલ્પકાળમાં સિદ્ધ કરવાનું ઉત્તમ માધ્યમ છે તેને હિંસાખોરી અને બેફામ શરમજનક કુચેષ્ટાથી ભરપુર દ્રષ્યો બતાવી પ્રજાની જેટલી પાયમાલી નોતરી છે અને નોતરી રહ્યા છે તેનું મૂલ્યાંકન કરવામાં આવે તો તમારી અબજો રૂપિયાની અનેક પંચવર્ષિય યોજના, ઉદારીકરણની નીતિ વિ. કાંઈ કામ લાગવાનું નથી. દિવસે દિવસે અવનવા બનતા બનાવો, સાત સાંધે ત્યાં તેર તૂટે એવી બેફામ ગુન્હેગારી, શહેરી જીવન જોવામાં આવે તો આ વાત દીવા જેવી દેખાય છે. આ બધું જોઈ જ્ઞાનવૃદ્ધ પુરુષો ભૂતકાળમાં રામ અને કૃષ્ણ જેવાને પણ આવી પડેલી આફતોને યાદ કરી મનોમન કહે છે કે **'दुर्वारा भवितव्यता'** જે કંઈ બની રહ્યું છે તે નિવારી ન શકાય એટલી હદે પહોંચી ગયેલ છે. અને જ્યાં નિરૂપાયતા છે ત્યાં સહનતા સુખદાયક છે. 'What cannot be cured must be endured' એમ જાણી ચૂપ રહે છે. જેનાથી દૂર રહેવા કહ્યું તેને ઘરમાં વસાવ્યું.

—: નં. ૧૨. આવકને અનુસાર ખર્ચ :—

—: નં. ૧૩. આર્થિક સ્થિતિ અનુસાર પહેરવેશ. :—

ધર્મ, અર્થ અને કામનું અવિરોધપણે સેવન એ નં.-૧૯ ગુણમાં આવકને અનુસાર ખર્ચની વાત આવી જતી હોવાથી અહી તેનું વર્ણન કર્યું નથી બીજું આ ગુણમાં ખાસ કરીને 'દેવું કરીને ઘી ન પીવાય' એ કહેવતમાં જે શિખામણ પૂર્વજો આપી ગયા છે તેની વાત છે. આમ પણ અર્થસૂચક ગુણ છે. બહુ વિવેચનની જરૂર નથી.

આર્થિક સ્થિતિના ઉપલક્ષણમાં ધંધો, રોજગાર, નોકરી વિ. અર્થોપાર્જનનાં અંગો અને પહેરવેશના ઉપલક્ષણમાં ઘરની સજાવટ, રાચરચીલું, દર-દાગીના, વિ. સમજવું. પોતાની આવક, આવકનાં સાધનો, ધંધાદિને અર્થે બીજા સ્થાનોમાં જઈ સંપર્ક સાધવો વિ. તેમજ ધંધામાં સહાયભૂત તેમજ સંપર્કમાં આવતા ગ્રાહકો વિ. તેમજ અધિકારીઓ સાથે પડતા પ્રસંગોમાં પોતાનો પહેરવેશ પ્રથમ પરિચય છે. કોઈની ઑફિસમાં જાવ ત્યારે પ્રસંગોચિત તમારો પહેરવેશ સામાપર પ્રથમ છાપ પાડે છે. અને એ છાપ આગળ થતી વાતચીત ઉપર પ્રભાવ પાડે છે અને મુલાકાતની સફળતામાં સારો એવો ભાગ ભજવે છે.

Confucious paid strict attention to his dress and every small detail of his life.

"Costly thy habit as thy purse can buy,
But not expressed in fancy, rich nor gaudy,
For the apparel oft proclaims the man."

— *Shakespere*

आत्मवित्तानुमानेन कालौचित्येन सर्वदा।
कार्यो वस्त्रादिश्रृङ्गारो वयश्चानुसारत : ।।

ગૃહસ્થોએ નિરંતર દ્રવ્ય-પ્રસંગ અને અવસ્થા-ઉંમરને અનુસાર વસ્ત્રાદિનો અલંકાર કરવો જોઈએ.

अर्थादधिक नेपथ्यो वेषहीनोऽधिकंधनी।
अशकतौ वैरकृत् शकतैर्महभिरुपहस्यते।।

આર્થિક સ્થિતિના પ્રમાણમાં અધિક વસ્ત્રાદિ પહેરવેશ તેમજ બીજા સામાજિક વિ. વ્યવહારોમાં અધિક ખર્ચ કરનાર અને આર્થિક સ્થિતિ સારી અને પોષાય તેવી હોવા છતાં હીનવસ્ત્રાદિ તેમજ બીજા સામાજિક વ્યવહારોમાં કૃપણતા કરનાર અને નિર્બળ છતાં બળવાનની સાથે શત્રુતા-વેર બાંધનાર સમાજમાં હાંસીને પાત્ર થાય છે.

न धार्यमुत्तमैर्जीर्णं, वस्त्रं च न मलीसमम्।।

ઉત્તમ પુરુષોએ જીર્ણ તેમજ મલીન કપડાં પહેરવા ન જોઈએ.

आकांक्षान्नात्मनो लक्ष्मी, वस्त्राणि कुसुमानि च।
पादत्राणानि वान्येन विधृतानि न धारयेत्।।

જે પુરુષ લક્ષ્મીના ઉપાર્જનની ઈચ્છા રાખતો હોય તેણે બીજાનાં ઉતારેલાં કપડાં, ફુલ તેમજ પગરખાં ન વાપરવાં જોઈએ. આમ કરવાથી જે લઘુત્વ ગ્રંથિ બંધાતાં ધંધાદિમાં આગળ વધવા જે માનસિક તૈયારી (Preparedness) જોઈએ તેમાં ક્ષતિ આવે છે અને તેનું લક્ષકુંડળુ (Horizon) ટૂંકું થઈ જાય છે. નોકરી-ધંધામાં સફળ થયેલા તેમજ નિષ્ફળ ગયેલા માણસોનો બારીકાઈથી અભ્યાસ કરવામાં આવે તો ઔચિત્ય ગુણનો

સદ્ભાવ કે અભાવ તેનાં મુખ્ય કારણ હોય છે. ધંધા વિ. માં યોગ્ય-ઉચિત પહેરવેશ, યોગ્ય રીતભાત, યોગ્ય-ઉચિત સત્કાર-સમારંભ, ધંધાના સહાયક નોકર વિ. ને પ્રસંગોપાત યોગ્ય બક્ષિસ-ધનની સહાયતા, અનુગ્રહ વિ. ધંધાના મંગળકાર્યો છે. જેનાથી ધનાદિ સુખપૂર્વક ઉપાર્જન થાય છે. અને તેની પાછળ રહેલ બુદ્ધિ-નિપુણતા અને સમતુલાથી તે વૃદ્ધિ પામે છે અને સ્થિર થાય છે. જીવનના આ પાસામાં સફળ પુરૂષ એજ રીતે આગળ ધાર્મિક જીવનમાં પણ સફળ થાય છે.

'આવકને અનુસાર ખર્ચ કરવો' એ ગુણમાં આવકથી અધિક ખર્ચ ન કરવો તેના પર ભાર છે જ્યારે 'આર્થિક સ્થિતિને યોગ્ય પહેરવેશમાં' ઉચિત ખર્ચ કરવા પર ખોટી કરકસર ન કરવાપર ભાર છે. આ બંને ગુણો 'Broad Based' છે અને ઉપલક્ષણથી જીવનના બધા પાસાઓમાં લાગુ પડે છે.

નં. ૧૪

—: બુદ્ધિના આઠ ગુણોથી યુક્ત :—

शुश्रुणा श्रवण चैव गृहणं धारणं तथा।
ऊहो अपोहो अर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणा : ।।

૧. શુશ્રુણા, ૨. શ્રવણ, ૩. ગ્રહણ, ૪. ધારણા, ૫. ઉહા, ૬. અપોહ, ૭. અર્થવિજ્ઞાન અને તત્વજ્ઞાન આ બુદ્ધિના આઠ અંગ અગર ગુણકહ્યા છે. તેમાં :

૧. શુશ્રુણા: સાંભળવાની ઈચ્છા, કોઈપણ વિષય પર તેના જાણકાર (Expert) પાસેથી સાંભળવાની ઈચ્છાને બુદ્ધિનો એક ગુણ કહ્યો છે. બુદ્ધિશાળીનું લક્ષણ કહ્યું છે,એ જિનશાસનની ગહનતાનું સૂચક છે.

૨. શ્રવણ: જાણકાર (Expert) પાસેથી તેનું શ્રવણ. જાતે વાંચવાથી શાસ્ત્રોનો પછી તે ધર્મનાં હોય કે બીજા કોઈ વ્યવસાયનાં હોય તેનો મર્મ સ્પષ્ટ જણાવો સામાન્ય માણસને માટે મુશ્કેલ છે. અનુભવી-જાણકાર માણસ ખુબજ સાદી અને સમજી શકાય તેવી ભાષામાં દાખલા-દ્રષ્ટાંત સહિત સમજાવી શકે છે. ભગવાને **'श्रुणोति इति श्रावक :'** શ્રાવકની વ્યાખ્યા ભગવાને આવી કરી કે : જે સાંભળે છે તે શ્રાવક છે'.

૩. ગ્રહણ : સાંભળીને તેના અર્થનું-મર્મનું ગ્રહણ કરવું, સાંભળવાનું તે સિવાય બીજુ કયું પ્રયોજન છે ?

૪. ધારણા: ગ્રહણ કરેલા-સમજમાં આવેલા અર્થની ધારણા. સ્મરણપટ પર તેનું અંકિત થવું. કોમ્પ્યુટરમાં જેમ Feed કરેલા વિષયો ધારણ કરી રખાય છે અને કૉમ્પ્યુટર જડ હોવાથી તે જેમનું તેમ પડી રહે છે જ્યારે આત્મામાં તેની ધારણાથી સ્પષ્ટ વિચારધારા અને તેની પરંપરાનું ચોક્કસ દિશાયુક્ત નિર્માણ થાય છે. (Clear direction).

૫. ઉહા: ધારણામાં લીધા બાદ તેનાં Pros and cons તેની ગુણવત્તા, application વિ. માટે તેમજ વધુ સ્પષ્ટતા માટે પ્રશ્નો ઉઠવા, આમ્નાય મેળવવી, તુલના કરવી વિ.

૬. અપોહ: વિશેષ પ્રકારે-વિસ્તારપૂર્વક ઉપરનાજ ગુણનું આગળનું અંગ છે. બંને સાથે હોતાં 'ઉહાપોહ' તરીકે આપણે એને ઓળખીયે છીએ.

૭. અર્થવિજ્ઞાન: ઉહાપોહની કસોટીમાંથી પાર ઉતરેલ જ્ઞાનને અર્થ-જ્ઞાન કહેલ છે. દ્રવ્ય-ગુણ તેમજ પર્યાયને શાસ્ત્રમાં અર્થ તરીકે ઓળખાવેલ છે.

''દ્રવ્યો ગુણો ને પર્યયો સૌ 'અર્થ' સંજ્ઞાથી કહ્યાં;
ગુણ-પર્યયોનો આત્મા છે દ્રવ્ય જિન ઉપદેશમાં''

— *પ્રાત:સ્મરણીય કુંદકુંદાચાર્ય રચિત પ્રવચનસાર ગાથા-૮૭*

૮. તત્ત્વજ્ઞાન: સંશય-વિપરીતતા અને અનવધ્યવસાય રહિત સ્પષ્ટ દ્રવ્યસ્વભાવ અને પર્યાય સ્વભાવનું જ્ઞાન તે તત્ત્વજ્ઞાન. તત્ત્વની વ્યાખ્યા **'तस्यभाव: तत्त्वम्'** તેનો ભાવ-સ્વભાવ તે તત્ત્વ... દ્રવ્ય સ્વભાવમાં જીવ અને અજીવ જ્યારે પર્યાય સ્વભાવમાં પુણ્ય-પાપ. આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષ આવે. અને તેનેજ **'तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्'** કહ્યું. તત્ત્વજ્ઞાન થતાં. Result conciousness, and end result અને તે પૂર્વક Motivating force નું નિર્માણ થાય છે અને જીવ પોતાના ધ્યેય તરફ વિના રૂકાવટ સહજરીતે આગળ વધતો જાય છે. બુદ્ધિ એ જ્ઞાનની પર્યાય-અવસ્થા છે. વિચાર કહો કે વિકલ્પ કહો તે પણ જ્ઞાનનીજ પર્યાય-અવસ્થા છે. જ્ઞાન-વિચાર પૂર્વકજ સંકલ્પનું નિર્માણ થતું હોવા છતાં સંકલ્પ માત્ર ધારણામાં રહે છે. સંકલ્પરૂપી ધરીની આસપાસ વિકલ્પોની હારમાળા સર્જાય છે. તે હારમાળા સંકલ્પ પૂર્વકની હોવા છતાં વિકલ્પના સમયે સંકલ્પનો વિચાર હોતો નથી. સંકલ્પ સંકલ્પ તરીકે નિર્વિચાર રૂપ અંતરંગમાં

રહે છે. જ્ઞાનપૂર્વક શ્રદ્ધાન થતું હોવા છતાં સમ્યગ્દર્શનને આગળ મૂક્યું તેનું કારણ એ છે કે કોઈપણ વિષયનું જ્ઞાન, સંશય, વિપરીતતા અને અનવધ્યવસાય રહિત શ્રદ્ધાનરૂપે પરિણમે છે ત્યારેજ જ્ઞાન કાર્યકારી થાય છે. શ્રદ્ધાનગુણ નિર્વિકલ્પ છે જ્યારે જ્ઞાન વિકલ્પાત્મક છે છતાં શ્રદ્ધાનગુણ Motivating force છે કેમકે શ્રદ્ધાન વગર જ્ઞાન કાર્યકારી થતું નથી.

आगमेनानुमानेन ध्यानाभ्यास रसेन च।
त्रेधा विशोधयन् बुद्धि ध्यानमाप्नोति पावनम्॥

આગમ, અનુમાન અને એકાગ્રપણે વિચાર એમ ત્રણ પ્રકારે નિર્મળતા પામેલ બુદ્ધિ પવિત્ર વિચારધારાને પામે છે. — *યોગસાર પ્રાભૃત પાન-૨૨૯*

બુદ્ધિના આઠગુણના આ પ્રકરણમાં ભગવાનના ઉપદેશની જિનધર્મની વિશેષતા-અપૂર્વતાની સિદ્ધિ બાબત :

—: જિનવચનની પ્રમાણતા :—

આગમ-યુક્તિ અને અનુભવ:- કોઈપણ વચનની પ્રમાણતા (authenticity) આ ત્રણે અંગ પૂર્વકની હોવી જોઈએ. આગમમાં તેનો ઉલ્લેખ હોવો જોઈએ. યુક્તિથી સિદ્ધ અબાધિત હોવી જોઈએ અને અનુભવમાં પણ આવવી જોઈએ. આ ત્રણમાંથી એક અંગ પણ ખૂટતું હોય તો તે વચનને પ્રમાણ વચન કહેવામાં આવેલ નથી. કાયદાની કોર્ટમાં પણ દલીલથી કોઈપણ વાત સિદ્ધ કરવામાં આવે અને સ્પષ્ટ સમજમાં (અનુભવમાં) આવે છતાં ન્યાયાધીશ કોઈ હાઈકોર્ટ કે સુપ્રીમકોર્ટના decision નો આધાર માગે છે.

—: શાસ્ત્રાર્થ કરવામાં પાંચ આધાર :—

'व्याकरण प्रत्यमानकोषाप्तवचन व्यवहारतश्च'

૧. વ્યાકરણ	:	grammatical meaning
૨. પ્રત્યમાન	:	Establishing presence of one object by presence of another
૩. કોષ	:	Dictionary meaning
૪. આપ્તવચન	:	Authority
૫. વ્યવહારથી	:	Common parlance test.

ભગવાન મહાવીરે શાસ્ત્રાર્થ કરવામાં (Interpretation of religious scriptures) - આગમાર્થ કરવામાં ઉપર જણાવેલ પાંચ આધારો કહ્યા.

કાયદાની અદાલતોમાં કોઈપણ કાયદાનું અર્થઘટન કરવામાં અગાઉ જણાવ્યા મુજબના ચાર આધારો લેવાતા ૧) વ્યાકરણ, ૨) શબ્દકોષ, ૩) અનુમેય એક વસ્તુ હોવામાં બીજાની ઉપસ્થિતિ અબાધિતપણે હોય અને ૪) અગાઉ ન્યાયાધીશોએ સર્વોચ્ચ અદાલતમાં અગર તેના અભાવમાં અબાધિત હાઈકોર્ટના ચુકાદા (જેને સુપ્રીમકોર્ટમાં ચેલેન્જ-પડકાર કરવામાં ન આવ્યા હોય) નો આધાર માગતા. આજથી લગભગ ૨૫ વર્ષ ઉપર Gannon Dunkerly ના કેસમાં મદ્રાસ હાઈકોર્ટને ઉપરના ચારે આધારોનું અવલંબન લેતાં બે પરસ્પર વિરૂદ્ધ અર્થઘટન થતા માલુમ પડેલા ત્યારે ન્યાયની કોર્ટના ઇતિહાસમાં પહેલી જ વાર Common Parlance test ના આધારે અર્થઘટન કર્યું જેને ત્યારબાદ સુપ્રીમ કોર્ટે બહાલી આપી અને ત્યારથી અત્યારસુધીમાં સેંકડો કેસોમાં આ Common Parlance test નિર્ણાયક નીવડ્યો છે અને તેના આધારપર ચુકાદાઓ આવેલ છે. આ વાત ભગવાન મહાવીરે શાસ્ત્રોના અર્થઘટનમાં આજથી ૨૫૨૦ વર્ષ અગાઉ કહેલ છે. જિનશાસનની અપૂર્વતા ગહનતા અને સર્વાંગતા આનાથી સિદ્ધ થાય છે.

—: ધર્મ અને ધર્મની વિધિને સાંભળનાર :—

આ ગુણમાં ત્રણ શબ્દો છે ૧) ધર્મ, ૨) (તેની) વિધિ અને ૩) (તેને) સાંભળનાર.

धृ धारयति इति धर्मः આત્માને દુર્ગતિમાં પડતો બચાવે તેને ધર્મ કહેવામાં આવેલ છે. બહુ સાદા શબ્દોમાં કહીયે તો, આત્મા જે પ્રકારના વિચાર અને વર્તનથી સુખી થાય તેને ધર્મ કહયો છે.

श्रुयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा च अवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकुलानि परेषां न समाचरेत्॥

ધર્મનો સમગ્ર સાર સાંભળો અને સાંભળીને જીવનમાં ઉતારો-અમલમાં મૂકો. 'પોતાને પ્રતિકુળ એવું આચરણ બીજા પ્રત્યે ન કરો.'

"Do not do unto others what you wish others not do unto you."

जह ते ण पियं दुःकखं तहेव तेसंपि जाण सव्व जीवाणं
एवं णच्चा अप्पोवमिओ जीवेसु होदि सदा॥

જેમ દુઃખ તમને ગમતું નથી તેમ બીજા જીવોને પણ તે ગમતું નથી. એમ જાણી બીજા જીવોને પોતાની સમાન સમજી તેમના પ્રત્યે પોતાના આત્માની જેમ પ્રવર્તો.

— *ભગવતી આરાધના - ૭૭૬*

येषां जिनोपदेशेन कारुण्यामृतपूरिते।
चित्ते जीवदया नास्ति तेषां धर्मो कुतो भवेत्॥

કરુણામૃતથી છલોછલ ભરેલો જિનેન્દ્ર ભગવાનનો ઉપદેશ સાંભળીને જેના ચિત્તમાં દયાએ વાસ ન કર્યો તેણે ધર્મ શું જાણ્યો ?

एयं खु णाणिणो सारं जं न हिंसति कंचण।
अहिंसा समयं चेव, एतावंतं वियाणि या॥

હે આર્ય! જ્ઞાનીજનોના હૃદયનું સારભૂત તત્વ એ છે તેઓ કોઈ જીવની હિંસા કરતા નથી. અહિંસા એજ શાસ્ત્ર છે એમ તે બરાબર સમજે છે.

सव्वेसिमासमाणं ह्रिदयं गब्भो व सव्व सत्थाणं।
सव्वेसिं वदगुणाणं पिंडो सारो अहिंसा हु॥ ७८९ ॥

— *ભગવતી આરાધના*

સર્વ આશ્રમનું હૃદય, સર્વ શાસ્ત્રોને મર્મ તથા સર્વ વ્રત-ગુણોનો સારભૂત પિંડ અહિંસા જ છે.

हिंसैव विषमा वृत्तिर्दुष्पवृत्ति तथोच्यते।
अहिंसा साम्यमेतेद्धि चारित्रं बहुभूमिकम्॥

હિંસા એજ વિષમવૃત્તિ છે જેને દુષ્પ્રવૃત્તિ-કુચારિત્ર કહેલ છે. અને અહિંસા એજ સામાયિક, સામ્યભાવ તેમજ ચારિત્ર છે જેની અનેક ભૂમિકાઓ છે. શ્રાવકનાં બાર વ્રત, અગીયાર પડિમા, ગુણસ્થાન અને યથાખ્યાત ચારિત્ર એ અહિંસક ભાવની પરાકાષ્ટા, સમભાવ-સામાયિકની પૂર્ણતા અને ચારિત્રની પરાકાષ્ટા છે.

मूलं धर्मतरोराद्या व्रतानां धाम संपदाम्।
गुणानां निधिरित्यङिगदया कार्या विवेकिमि :॥

ધર્મરૂપી વૃક્ષનું મૂળ, વ્રતરૂપી સંપત્તિનું ધામ અને ગુણોના ભંડારસમી જીવદયા બુદ્ધિમાન, વિવેકી જીવોએ હંમેશ કાર્યકારી છે.

सर्वेजीवदयाऽऽधारा गुणास्तिष्ठन्ति मानुषे।
सुत्रधारा : प्रसूतानां हाराणां च सरा इव ॥

મનુષ્યોમાં તમામ ગુણોનો આધાર જીવદયા છે. ફૂલના હારમાં દોરીની માફક સર્વ સૂત્રો-આગમ જીવદયારૂપી દોરીથી એકમેકથી ગુંથાયેલ છે.

यतिनां श्रावकानां च व्रतानि सकलान्यपि।
एकाऽहिंसाप्रसिध्यर्थं कथितानि जिनेश्वरै : ॥

મુનિ અને શ્રાવકનાં બધાં વ્રતો એક માત્ર અહિંસાનીજ આવૃત્તિ સર્વ તીર્થંકરોએ કહેલ છે.

कुरुणार्दं च विज्ञानवासितं यस्य मानसम्।
इन्द्रियार्थेषु नि:सङगं तस्य सिद्धं समीहितम् ॥

જેનું મન કરુણાથી આર્દ્ર છે. વિશિષ્ટ જ્ઞાન સહિત છે, અને ઇન્દ્રિયોના વિષયોથી વિરક્ત છે તેણે પોતાના હિતને સિદ્ધ કર્યું.

तत: सागराधर्मोवाऽनगारो वा यथोदितम्।
प्राणिसंरक्षणं मूलं उभयत्राविशेषत: ॥

યથારૂપ કહેલો જે સાગારધર્મ કે અણગાર ધર્મ છે તે બંનેમાં સામાન્યરૂપથી અહિંસાધર્મ મૂળમાં છે.

उकतमस्ति क्रियारूपं व्यासादव्रतकदम्बकम्।
सर्वसावद्ययोगस्य तदेकस्य निवृत्तये ॥

જે વિસ્તારપૂર્વક વ્રતસમુદાય કહેવામાં આવેલ છે તે બધો માત્ર એક સર્વસાવદ્યયોગ (હિંસાદિ પાંચ પાપ)ની નિવૃત્તિ માટે છે.

अर्थाज्जैनोपदेशोऽयमस्त्यादेश : स एव च।
सर्व सावद्ययोगस्य निवृत्तिर्व्रतमुच्यते ॥

વાસ્તવમાં આજ જૈનાચાર્યોનો ઉપદેશ છે અને આજ આદેશ છે કે કેવળ સર્વસાવદ્યયોગની નિવૃત્તિ જ વ્રત કહેવાય છે.

सर्वत : सिद्धमेवैतद्व्रतं बाह्यं दयांगिषु।
व्रतमन्त: कषायाणां त्याग सैषात्मनिकृपा ॥

સર્વ પ્રકારે એ સિદ્ધ છે કે સર્વ પ્રાણિઓ ઉપર દયા કરવી એ બહિરંગ વ્રત છે અને કષાયોનો ત્યાગ કરવો એ અંતરંગ વ્રત છે અને તેજ આત્માનું કલ્યાણ છે.

ભગવાન ઋષભદેવ પોતાના એકસો પુત્રોને સંબોધિને કહે છે :

तिविहेण वि पाण मा हणे
आयहिते अणियाणं संवुडे।
एवं सिद्धा अणंतसो
संपइ जे अणागयावरे ॥

હે પુત્રો! તમો આત્મહિતની ખાતર, એકેન્દ્રિયથી માંડી પંચેન્દ્રિય સુધીના પ્રાણી એટલે કે જીવમાત્રની મન-વચન અને કાયાથી હિંસા કરશો નહીં, કરાવશો નહીં અને કરતા થકાને અનુમોદશો નહીં, અને પોતાની

ઇન્દ્રિયોને વિષય-વાસના તરફ ઘૂમવા દેશો નહીં. બસ આ પ્રમાણે વ્રતના પાલન કરતા થકા ભૂતકાળમાં અનંતા જીવો મોક્ષે ગયા છે. વર્તમાનમાં જઈ રહ્યા છે અને ભવિષ્યમાં પણ આની માફક જશે...

— *નિર્ગંથ પ્રવચન પાન-૧૯૫*

પિતાની શિખામણ માથે ચઢાવી, વ્રત અંગીકાર કરી ભગવાનના સોએ પુત્રો ભગવાનની પહેલાં મોક્ષે ગયા.

ભગવાન મહાવીરની દેશનામાં પ્રથમ વાક્ય કયું આવ્યું તે વિષે બે મત પ્રવર્તે છે. એક મત મુજબ :

सर्वे जीवा न हन्तव्या कार्या पिडापि नाल्पिका।
उपद्रवो न कर्तव्यो, नाज्ञापि बलपूर्वकम्॥
न वा परिगृहीतव्या, दासकर्म नियुक्तये।
एष धर्म ध्रुवो नित्य : शाश्वतो जिनशासने॥

ભૂત-ભવિષ્ય અને વર્તમાનમાં વિરાજમાન સર્વ તીર્થંકરો એમ કહે છે (અગર તો એમ પ્રરૂપણા કરતા રહ્યા છે) કે સર્વ પ્રાણી, સર્વ ભૂત, સર્વ જીવ અને સર્વ સત્વોને ન તો મારવા જોઈએ, ન તો તેમની પર હકુમત ચલાવવી જોઈએ. ન તો તેમને પરાધીન કરવા એટલે કે બાંધવા જોઈએ અને ન તો તેમને ઉપદ્રવ કરવો જોઈએ. આજ ધર્મ શુદ્ધ, નિત્ય તેમજ શાશ્વત છે.

લોકોને તેમજ જીવસમુહને તેમજ તેમના સંતાપ-દુખને સારી રીતે સમજીને જ્ઞાની પુરુષોએ સર્વને માટે એટલે કે ઉત્થિત અગર અનુત્થિત, ઉપસ્થિત અગર અનુપસ્થિત, હિંસાથી વિરત અગર અવિરત, ઉપાધિ સહિત અગર ઉપાધિ રહિત, સંયોગી અગર અસંયોગી, સર્વને માટે આજ ધર્મ કહ્યો છે અને આજ ધર્મ તથ્ય છે તેમજ યથાર્થ છે. જિનપ્રવચનમાં પણ આજ વાત કહેવામાં આવેલ છે.

બીજા મત મુજબ :

उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं सत्

દરેક વસ્તુ પોતે પોતાનાપણે સદાયન્ટકી રહે છે, છતાં પોતાની અવસ્થા બદલાયા કરે છે.

બેમાંથી કોઈ હો પહેલીમાં ધર્મનું મૂળ અહિંસા છે એ વાત આવી જ્યારે બીજીમાં એક શાશ્વત સિદ્ધાંતની વાત આવી જેના પર સમગ્ર શાસ્ત્રોની રચના થયેલ છે. સત્‌નો કદી નાશ નથી અને અસત્‌નો કદી ઉત્પાદ નથી.

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्

— *તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અધ્યાય-૫, સૂત્ર-૨૯*

सत् लक्षणं द्रव्यं   गुणपर्यवत् द्रव्यं

— *તત્વાર્થાભિગમ સૂત્ર અધ્યાય-૫ સૂત્ર-૩૭*

सहवर्तिन : निर्गुणा : गुणा :   क्रमवर्तिन : पर्याया :

દ્રવ્ય-ચીજ, વસ્તુ પોતાપણે ટકી રહીને અવસ્થા બદલાવ્યા કરે તેનાથી યુક્ત સત્ કહ્યું. ગુણ અને તેની વર્તમાન એક પર્યાય (અવસ્થા) સહિત દ્રવ્ય હોય છે. ગુણો બધા દ્રવ્યમાં એકસાથ રહે છે. પર્યાય-અવસ્થા એક પછી બીજી એમ પલટાયા કરે છે.

આના પરથી સાર એ નીકળે છે કે આ જીવ પોતે ભૂતકાળમાં અનંતકાળથી બાહ્યમાં અનંત શરીરો અને સમયે સમયે તેની પલટાતી અવસ્થા અને અંતરંગમાં સમયે સમયે પલટાતા આત્માના પરિણામોમાંથી પસાર થતો આ મનુષ્યભવમાં આવેલ છે. તેમાં પણ બાલ અવસ્થા, યુવાન અવસ્થા અને ઘડપણમાં પોતે જ જાતજાતના ભાવો ધારણ કરતો, અવસ્થા બદલતો, સુખદુઃખને ભોગવતો વર્તમાન સ્થિતિમાં મોજુદ છે. આ રહસ્ય સમજતાં જીવ પોતાનું જીવન, રહન-સહન વ્યવસ્થિત કરી શાશ્વત સુખનો પ્રયત્ન કરશે જે ભગવાને પ્રરૂપણ કરેલ મોક્ષમાર્ગ છે બીજો કોઈ માર્ગ શાશ્વતસુખને માટે નથી.

दंसणमूलो धम्मो

ધર્મનું મૂળ સમ્યગ્દર્શન છે. અને તેજ માટે તત્વાર્થાભિગમ સૂત્રની શરૂઆતમાં જ :

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥ २ ॥

કોઈપણ શ્રદ્ધાન જ્ઞાનપૂર્વક થતું હોવા છતાં જ્ઞાનની આગળ શ્રદ્ધાન કેમ મૂક્યું તેનો ખુલાસો એ છે કે સંપુર્ણશ્રદ્ધાન થયા વગર જ્ઞાન કાર્યકારી થતું નથી.

Knowledge enlightens, conviction motivates into action and that action is character.

જ્ઞાન પ્રકાશક છે, રસ્તો બતાવે છે પણ જ્યાં સુધી એ જ્ઞાન સંશય-વિપરીતતા અને અનવધ્યવસાય રહિતપણે શ્રદ્ધાનરૂપ પરિણમતું નથી ત્યાંસુધી તે કાર્યકારી થતું નથી માટે **સમ્યગ્દર્શન** પહેલાં કહયું અને સમ્યગ્જ્ઞાન અને સમ્યક્ચારિત્ર ત્યારબાદ કહ્યાં અને એ ત્રણે મળીને મોક્ષમાર્ગ કહ્યો અને તેની પૂર્ણતાને મોક્ષ કહ્યો. શ્રદ્ધાનગુણ નિર્વિકલ્પ છે. જ્ઞાન એક માત્ર આત્માનો વિકલ્પાત્મક (વિચાર સહિત) ગુણ છે. બાકી આત્માના બધા ગુણ નિર્વિકલ્પ છે. જ્ઞાન પોતાને પણ જાણે છે. અને આત્માના અનંતગુણને પણ જાણે છે. જ્ઞાન સ્વપર પ્રકાશક છે એટલે પોતાને જાણે છે તેમજ પરને પણ જાણે છે. પરમાં સારી દુનિયા, તેમાં અવસ્થિત અનંતા પદાર્થો અને તેના ભાવો આવી જાય. પરને જાણવું એ એક વ્યવહાર કથન છે. સાચા અર્થમાં તદાકાર પરિણમેલ પોતાની જ્ઞાનની પર્યાયને જ જાણે છે. સંસારકાળ દરમ્યાન કર્મોદયજનિત પોતાના ભાવનેજ ભોગવે છે.

શ્રદ્ધાનગુણ નિર્વિકલ્પ હોવા છતાં તે કેવી રીતે કાર્યગત થવામાં કારણ છે તેનો એક દ્રષ્ટાંત :-

કોઈપણ પ્રવૃત્તિની પાછળ એક પરિબળ કામ કરી રહ્યું હોય છે. અને તે પરિબળ એટલે કે 'હું આ રીતે સુખી થઈશ' એવી અંતરંગમાં માન્યતા-શ્રદ્ધાન. આ શ્રદ્ધાન પણ આત્માનો એક ગુણજ છે. હરેક ગુણની અવસ્થા જેમ પલટાયા કરે છે તેમ શ્રદ્ધાનગુણની પણ. અને એમ ન થતું હોય તો અનાદિ મિથ્યાદ્રષ્ટિ જીવ કદી સમ્યગ્દ્રષ્ટિ થાય જ નહીં. શ્રદ્ધાનગુણ પણ હરસમયે કાંતો હીનતા પામે છે, પુષ્ટીને પામે છે કે ઘરમૂળથી ફેરફારને પામે છે.

સવારમાં ઉઠીને આપણે પ્રથમ કાર્ય બ્રશથી દાંત સાફ કરી મોં સાફ કરી લઈએ છીએ. ભૂતકાળથી આજદિન સુધીમાં દાંત સાફ કરવાના ગુણદોષ સંબંધી જે કંઈ સાંભળવામાં આવ્યું, વાંચવામાં આવ્યું, નાનપણમાં માબાપની શિખામણમાં આવ્યું અને કાળાંતરે અનુભવમાં આવ્યું કે દિવસમાં સર્વપ્રથમ આ કાર્ય કરવા યોગ્ય છે બીજો કોઈ સમય તેને માટે યોગ્ય નથી. હવે જ્યારે દાંત સાફ કરીએ છીએ ત્યારે તેના ગુણદોષની વાત યાદ આવતી નથી તેમજ કરવાની જરૂર પણ નથી. અંતરંગમાં રહેલ જે શ્રદ્ધાન નિર્વિકલ્પ-વિચાર રહિત હોવા છતાં કાર્યમાં પરિણત થવાનું મૂળ કારણ છે. આજ પદ્ધતિ સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્રમાં જે મોક્ષમાર્ગ છે અને મિથ્યાદર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્રમાં જે સંસારમાર્ગ છે તેમાં કામ કરી રહી છે.

Heart has got reasons of which reason has no knowledge.

॥ वत्थु सहावो धम्मो ॥

ધર્મ એટલે વસ્તુનો સ્વભાવ. તેની અંતરંગ (ઉપાદાન) શક્તિ અને વિધિ એટલે અંતરંગમાં શક્તિ રૂપે રહેલ ઇચ્છિત ફળ તેને બહાર લાવવા (તેનો આવિર્ભાવ કરવા) માટેની પદ્ધતિ-ક્રમ.

"છે માર્ગનું ને માર્ગફળનું કથન જિનવર શાસને;
ત્યાં માર્ગ મોક્ષોપાય છે ને માર્ગફળ નિર્વાણ છે." — *નિયમસાર ગાથા-૨*

મોક્ષનો ઉપાય એટલે વિધિ-પદ્ધતિ-ક્રમ. आणाए धम्मो અને आणाए तवो એમાં પણ ધર્મ અને ધર્મની વિધિની વાત છે. ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણે ચાલવાની વાત છે. તેમાં આજ્ઞા શબ્દ આ + જ્ઞા. આ એટલે **મર્યાદા** અને જ્ઞા એટલે જાણવું. ભગવાને (પોતાના અનુભવપૂર્વક) બતાવેલ માર્ગને તેની મર્યાદામાં રહી જાણવું, **પોતાના સ્વચ્છંદે નહીં.** અને તપ એટલે સંવરનિર્જરા તે પણ તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે. જે પ્રમાણે જે વિધિ-ક્રમપૂર્વક **બતાવેલ છે તે પ્રમાણે.**

ભગવાનના શાસ્ત્રોમાં આને ઉપાદાન-નિમિત્ત સંબંધ તરીકે જણાવેલ છે. ઉપાદાન એટલે નિજશક્તિ અને **તેના** આવિર્ભાવમાં બાહ્ય સહકારી કારણ તે નિમિત્ત. ઉપાદાન કારણ તેમજ નિમિત્ત કારણ બંને કારણો **મળીને કાર્ય ઉપજે.** નિમિત્ત-ઉપાદાન સંબંધ બંને વસ્તુની વર્તમાન પર્યાય સાથે છે. બે વસ્તુ વચ્ચે નિમિત્ત-ઉપાદાન **સંબંધ નથી.** વળી નિમિત્ત કારણ છે. નિમિત્ત કર્તા નથી. લૌકિક કે પરમાર્થિક સુખના પ્રયત્નમાં આ નિમિત્ત-ઉપાદાન **સંબંધના** જ્ઞાન પરજ પ્રવૃત્તિ થતી જોવામાં આવે છે. એ પ્રત્યક્ષ છે. પ્રત્યક્ષજ્ઞાનને પણ ભગવાને પ્રમાણ **જ્ઞાન કહેલ છે.** (પ્રત્યક્ષપ્રમાણ).

Let all things be done decently and in order... *Corinthons XIV 40*

કાર્યની ઉત્પત્તિ માટે જે કાંઈ નિમિત્ત-ઉપાદાન કારણો હોય તેમાં બીજી ભેળસેળ કર્યા વગર યથાર્થ માપમાં **અને તે પણ જે તે કાર્યની સિદ્ધિનો જે ક્રમ છે તે ક્રમ પ્રમાણે.**

Think of a dictionary and its utility wherein all the words are written but without alphabetical order.

॥ **चरित्तो खलु धम्मो** ॥ 'ચારિત્ર એજ ખરેખર ધર્મ છે.'

णाणं पयासओ सोधओ तवो संजमो च गुत्तियरो

तिण्हंपि समाओगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो ॥ ७६८ ॥

જ્ઞાન પ્રકાશક છે, તપ શોધક છે અને સંયમ ગુપ્તિકર (સંવર કરનાર) છે. આ ત્રણેના સમાયોગથી મોક્ષ **છે એમ જિનશાસનમાં દર્શાવેલ છે.**

णाणं करणविहुणं लिंगग्गहणं च दंसणविहूणं।

संजमहीणो य तवो जो कुणदि णिरत्थिय कुणदि॥ ७६९ ॥

ચારિત્ર વગરનું **જ્ઞાન,** દર્શન વગરનું દીક્ષાગ્રહણ અને સંયમ (ઈન્દ્રિયસંયમ અને પ્રાણસંયમ) વગરનું તપ **જે કોઈ કરે છે તે બધું નિરર્થક છે.** — *ભગવતી આરાધના ગુજરાતી અનુવાદ પાન.*

ज्ञानस्य फलं विरति :

જ્ઞાનનું ફળ વિરતિ છે અને વિરતિ એટલે હિંસાદિ પાંચ પાપોથી નિવૃત્તિ. જે વિચારના ફળસ્વરૂપ જીવને **વૈરાગ્ય ન ઉપજે તેમજ વીતરાગતાના ધ્યેય તરફ એક કદમ આગળ ન વધાય તે વિચાર નિષ્ફળ છે.**

જ્ઞાન તો પ્રકાશક છે. પ્રકાશના આધારે જેમ રસ્તો દેખાય છે અને તે રસ્તા પર ચાલી ધ્યેય તરફ **પહોંચી** શકાય છે તેમ જ્ઞાન મોક્ષમાર્ગને દેખાડે છે. (પ્રકાશે છે) અને તે મોક્ષમાર્ગમાં એક એક કદમ ક્રમપૂર્વક **આગળ** વધી અંતીમ લક્ષ્ય જે મોક્ષ તેને વરે છે, પ્રાપ્ત કરે છે. આ રીતે જ્ઞાન પ્રકાશક છે. દર્શન ધર્મનું **મૂળ છે અને ચારિત્ર ખરો ધર્મ છે.**

'There is no way to reach a destination but to walk out the distance.'

કોઈ માણસ હરડેના ગુણ સાંભળી તેની સોનાની પ્રતિમા બનાવી ઘરમાં નાનું મંદિર બનાવી તેની પ્રતિષ્ઠા **કરી દરરોજ** તેનું પૂજન-સ્તવન કરે. હરડે સંબંધીનાં બધાં વૈદક ગ્રથોનો અભ્યાસ કરે અને વૈદ્યોનું બહુમાન

તેમજ સેવા ચાકરી કરે પણ સવારમાં હરડે લે નહીં તો તેની કબજિઆત કદી ટળે નહીં. તેજ પ્રમાણે દરરોજ દેવપુજા-ગુરુપાસ્તિ અને શાસ્ત્રશ્રવણ કરે પણ ભગવાનના કે સદ્ગુરૂના બતાવેલ માર્ગને જાણીને તે માર્ગપર ચાલે નહિ તો દુ:ખનો આત્યંતિક ક્ષય જે મોક્ષ તેને પામે નહીં.

—: ભગવાનની આજ્ઞા, અહિંસા, વ્રત, સામાયિક અને ચારિત્ર બધા એકાર્થવાચક શબ્દો છે. :—

सावद्य योगस्य विरते : अभ्यासो जायते यत : ।
समभाव : विकासस्यात् तद्धि सामायिकं व्रतम् ।।

હિંસાદિ પાંચ પાપોની વિરતિનો અભ્યાસ જેમ જેમ આગળ વધે છે તેમ તેમ સમભાવની વૃદ્ધિ અને તેજ સામાયિક (ચારિત્રરૂપ) વ્રત છે.

हिंसैव विषमा वृत्तिर्दुष्प्रवृत्तितथोच्यते।
अहिंसा साम्यमेतेद्धि चारित्रं बहुभूमिकम्।।

હિંસા એજ વિષમવૃત્તિ છે જેને દુષ્પ્રવૃત્તિ, દુરાચરણ કહેલ છે અને અહિંસા એજ સામ્યભાવરૂપ ચારિત્ર છે જેની અનેક ભૂમિકાઓ છે. શ્રાવકની એક પછી એક અગીઆર પડિમાઓ અને આગળના ગુણસ્થાન જેની અનેક ભૂમિકાઓ છે અને તે અહિંસક ભાવ-સમભાવ કે સામાયિકની પૂર્ણતા કે ચારિત્રની પરાકાષ્ટા કે યથાખ્યાત ચારિત્ર તેજ મોક્ષ છે.

—: ધર્મની વિધિ :—

આગળ કહ્યું તેમ **आणाए धम्मो आणाए तवो** એમાં ધર્મ અને તેની વિધિનીજ વાત છે.

કોઈપણ પ્રકારની લૌકિક કે પરમાર્થિક સિદ્ધિમાં વિધિ-ક્રમ હોય છે. શિક્ષણ પદ્ધતિ, અભ્યાસક્રમ આ વાતના સૂચક છે. રસોઈ બનાવવામાં, ખેતી કરવામાં, ધંધામાં વિકાસ અને નોકરીમાં બઢતી વિ. માં પણ ક્રમ હોય છે. પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વ થવા પૂર્વે પાંચ લબ્ધિઓ:- ક્ષયોપશમ લબ્ધિ, વિશુદ્ધિલબ્ધિ, દેશના લબ્ધિ, પ્રાયોગ્ય લબ્ધિ અને કરણલબ્ધિ અને કરણલબ્ધિમાં પણ ૧. અધ:કરણ ૨. અપૂર્વકરણ અને અનિવૃતિકરણ એ ઉત્તરોત્તર અસંખ્યાત ગુણી વિશુદ્ધિના પરિણામો છે અને તે ઉપર જણાવેલ ક્રમ અનુસારજ હોય છે. શ્રાવકની અગીઆર પડિમાઓ પણ ઉત્તરોત્તર વીતરાગભાવની વૃદ્ધિનાં સ્થાનકો છે. અને તે શાસ્ત્રમાં જણાવેલ ક્રમ પ્રમાણેજ વીતરાગતાની વૃદ્ધિ ભગવાને જોઈને પ્રરૂપેલ છે. કોઈપણ પડિમા ધારીને તેની આગળની બધી પડિમાઓ પૂર્વકજ તે પડિમા હોય. ક્ષપક શ્રેણીમાં ક્રોધ-માન-માયા અને લોભનો તે ક્રમપૂર્વકજ ક્ષય થાય છે. લોભનો ક્ષય કોઈને પહેલા થાય અને ત્યારબાદ ક્રોધાદિનો એમ કદી બને નહીં. અનંતાનુબંધી- અપ્રત્યાખ્યાનાવરણ, પ્રત્યાખાનાવરણ અને સંજ્વલન કષાયોનો અભાવ ઉપર જણાવેલ ક્રમપૂર્વકજ થાય. આનું નામ ક્રમબદ્ધ પર્યાય ભગવાને કહેલ છે. તે સિવાય બધી વાતો જિનાગમની આમ્નાયથી વિરૂદ્ધ વાણી વિલાસ છે.

"કારજ ધીરે હોત હૈ, કાહે હોત અધીર;
સમય પાય તરૂવર ફલે, કેતિક સીંચો નીર"

ભાઈ તું અધીરો થા મા! તારૂં કાર્ય થઈ રહ્યું છે સમય પાકતાં આંબાપર કેરી (ફળ) જરૂર બેસશે. **ત્યાંસુધી તું પાણી** પાયે જ (અને તેના ઉપલક્ષણમાં) સારસંભાળ રાખ્યા કર.

"A mango tree gives fruit in a particular season which is the result of unnoticed **work (process)** of all the out seasons."

આંબાપર **કેરી તેની ઋતુ-ઉનાળાની શરૂઆતમાં** બેસે છે પણ તેની બનવાની પ્રક્રિયા આખાયે વર્ષ ચાલુ રહે છે.

આંબાપર મોર ફૂટવાની શરૂઆતથી કેરી પાકીને ગળી થાય ત્યાંસુધીની ઉત્તરોત્તર પર્યાયને ક્રમબદ્ધ પર્યાય કહેવામાં આવેલ છે.

Evolution is not a force but a process, not a cause but a law...

— *Lord Hordey.*

Any accident, calamity in the nature of earthquake, volcano, draft, excess rain are all in perfect obeyance of laws of nature.

કોઈપણ અસ્કમાત, ધરતીકંપ, જ્વાલામુખીનું ફાટવું, અનાવૃષ્ટિ, અતિવૃષ્ટિ સઘળું કુદરતના નિયમો અનુસાર જ થતું હોય છે.

Seeing that the law of Karma (Principle of cause and effect) governs all things (in material as well as spiritual world) the disciple who aims at performing miracles does not understand the doctrine and that the desire to perform miracle arises either from covetousness or vanity...

— *light on life's principle page-53.*

'कर्मस्य गहनो गति :' "Inscrutable are the laws of nature."

"There is action and reaction, deed and consequence, cause and effect and within and above all the supreme. inscrutable laws of nature balancing cause and effect with the finest precision."

"In nature there are neither rewards nor punishments, there are only consequences... — *Ingersoll.*

આ બધા સિદ્ધાંતો પરથી સાર એ નીકળે છે કે :

To see order in disorder is the begining of wisdom; and to remain calm and contended is the height of wisdom (culmination of wisdom)

કુદરતનો કાનુન કહો, કર્મનો સિદ્ધાંત કહો, આત્મવિકાસનો ક્રમ કહો કે મોક્ષમાર્ગ કહો દરેક સીડીપર એક પછી બીજું એમ પગથીયા ચઢવાનો ક્રમ તે ધર્મ અને ધર્મની વિધિનું જ પ્રતિપાદન કરે છે.

(ધર્મ અને ધર્મની વિધિને) સાંભળનાર :

શ્રુતજ્ઞાન મતિજ્ઞાનપૂર્વક થતું હોવા છતાં તેમાં લાભ-નુકસાન, હેય-ઉપાદેય, કાર્ય-અકાર્ય, હિત-અહિતનો બોધ એ બધો શ્રુતજ્ઞાનનો વિષય છે. શ્રુતકેવળી શબ્દ પણ તેજ અર્થનું પ્રતિપાદન કરે છે તીર્થંકર પ્રભુના સમવસરણ, ધર્મસભામાં બેસી કલાકો સુધી ગણધર ભગવાન અને બીજા અનેક ઋદ્ધિધારી મુનિ મહારાજો, આર્જિકાઓ, શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ અને ગૃહસ્થો તેમજ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચો પણ એકચિત્તથી ભગવાનની દેશના સાંભળે છે. તેમાં ગણધરપ્રભુ જેમની યાદશક્તિ અચિંતનીય છે તે બધું યાદ રાખી શાસ્ત્રોમાં ઉતારે છે. તે શ્રુતજ્ઞાન છે. આ શાસ્ત્રો જાતે વાંચવા કરતાં ગુરૂગમથી તેમનો ઉપદેશ શ્રવણ કરવાથી વધારે અને સ્પષ્ટપણે બુદ્ધિગમ્ય થાય છે.

श्रुणोति इति श्रावक: જે સાંભળે તેને શ્રાવક કહ્યો. સાંભળવામાં ધીરજ, કદાગ્રહનો અભાવ, સુધારાનો અવકાશ. ખુલ્લુ અને ગ્રહણબુદ્ધિયુક્ત મન (receptive mind)

It is combination of patience, absence of bias, scope for improvement, open and receptive mind.

કોઈને આપણે કહીએ કે ભાઈ જરા સાંભળતો ખરો? તો સાંભળવા કોણ ઉભો રહેશે? જેનામાં ઉપરના ગુણો હશે તે.

આજ કારણથી ધર્મ અને ધર્મની વિધિને 'સાંભળનાર' શબ્દ વાપર્યો છે. 'વાંચનાર' શબ્દ નથી વાપર્યો. કોઈપણ આચાર્ય-સાધુસંતની વાણી તેમની સામે બેસી સાંભળવાથી જેટલી સચોટપણે સમજાય છે તેવી તેજ શબ્દોમાં લખાણ વાંચવાથી સમજાતી નથી. રેડીયો અને ટી.વી. તેનાં જ્વલંત ઉદાહરણો છે. આખી દુનિયા આજે ભૌતિકસુખ અને તેના સાધનોની ખોજમાં દિનરાત પડેલી છે.

Science and technology માં પણ એજ વાત આવે છે તેમાં Science શબ્દ પદાર્થની અંતરંગ શક્તિનું જ્ઞાન અને technology તેને આવિર્ભાવ કરવાની બહાર લાવવાની પ્રક્રિયા Technic-method. Applied Science નો એક અભ્યાસક્રમ છે. તેમાં પણ Science માં વસ્તુની શક્તિ તેમજ તેનો આવિર્ભાવ એજ છે. Research and Development માં પણ એજ વાત છે. Research એટલે પદાર્થની અંતરંગ શક્તિની શોધ અને Development એટલે તેને પ્રગટ કરવા-બહાર લાવવાની પ્રક્રિયા. સહકારી-કારણોસહ.

આ રીતે ધર્મ અને ધર્મની વિધિને 'સાંભળનાર' નામના ગુણમાં મુમુક્ષુના એક અત્યંત આવશ્યક ગુણની વાત છે જેના વગર જીવનો વીતરાગ માર્ગમાં કદી પ્રવેશ નથી.

—: ૧૬. અજીર્ણે ભોજનનો ત્યાગ અને ૧૭. નિયતસમયે શાંતચિત્તથી ભોજન કરવું. :—

આ ગુણને બીજે ઠેકાણે 'યુક્ત આહાર-વિહાર' નામથી ઓળખાવેલ છે. યુક્ત એટલે યોગ્ય રીતે, યોગ્ય કાળે, યોગ્ય સ્થળે અને યોગ્ય પ્રમાણમાં.

પ્રાચીન કાળમાં શ્રાવકો એક જ વખત દિવસમાં આહાર લેતા. બે વખત આહાર લેવો અપવાદરૂપ ગણાતો અને તે પણ દિવસે જ ભૂખથી ઓછો ઉણોદર, પ્રાસુક. શ્રાવકો કદાપિ અભક્ષ્ય ભક્ષણ કરે નહીં. રાત્રીભોજન તો બાળકો પણ જવલ્લેજ કરતા. રાત્રીભોજનત્યાગના ઉપલક્ષણમાં ધંધો-રોજગાર પણ દિવસ દરમ્યાન પતાવી સૂર્યાસ્ત પહેલાં ઘેર આવી જતા. આયોજન પણ એજ લક્ષપૂર્વક કરવામાં આવતું હોવાથી તેમનાં તે કાર્યો સહજ હતાં. આહારાદિની ખોજમાં રાત્રે ફરવાનું નિશાચર પશુઓને હોય માણસને નહીં. સવારે પણ બે ઘડી વીત્યા બાદ સૂર્યના પ્રકાશમાં (માર્ગ બરાબર દેખાય) અને સુક્ષ્મજીવોની વિરાધના ટાળીને વિહાર કરતા. આહાર પણ પાસુક અને વિહાર પણ પ્રાસુક જમીન પર. આહાર જેમ જોઈ તપાસીને, વીણીને, સાફ કરીને શાસ્ત્રોક્ત તેમજ વૈદકરીતે તૈયાર કરેલ, સુપાચ્ય, ઋતુને અનુસાર, ઉતાવળ રહિત, માન-મર્યાદા યુક્ત, વિધિપૂર્વક (table manners) કરતા અને તેપણ આયુષ્ય તેમજ બળને હાનિકારક નહિ એવો અને પ્રયોજન વિચારીને કરતા. વિહાર પણ એજ રીતે માર્ગ ને જોઈ, ત્રસ તેમજ સ્થાવરજીવોની વિરાધના ટાળીને, પ્રયોજન વિચારીને, કામ પુરતો તેમજ આરોગ્ય અને બળને બાધા પહોંચાડ્યા વગર યોગ્ય પ્રમાણમાં કરતા.

''જો દેશકાળ તથા ક્ષમા-શ્રમ-ઉપધિને મુનિ જાણીને
વર્તે આહાર-વિહારમાં તો અલ્પલેપી શ્રમણ તે''

— *પ્રવચનસાર ગાથા-૨૩૧*

''આ લોકમાં નિરપેક્ષ ને પરલોક અણપ્રતિબદ્ધ છે,
સાધુ કષાય રહિત તેથી યુક્ત આહાર-વિહારી છે.''

— *પ્રવચનસાર ગાથા-૨૨૬*

પ્રવચનસારમાં સાધુના આહાર-વિહારનું વર્ણન છે. જે ધર્મ સાધુનો છે તેજ ધર્મ ગૃહસ્થ-શ્રાવકનો છે. ધર્મમાં ફરક નથી. ફરક તેની માત્રામાં છે. **'यद्धर्मोहि साधुनां स एव गृहमेधिनाम्'**.

यत्र सर्वशुभकर्मवर्जनं यत्र नास्ति गमनागमन क्रिया।
तत्र दोषनिलये दिनात्यये धर्मकर्म कुशला न भुज्यते।।

ધર્મ-અર્થ અને કામનું અવિરોધપણે સેવન કરનાર કુશળ અને બુદ્ધિમાન શ્રાવકો અનેક દોષોનું નિવાસસ્થાન પ્રકાશના અભાવમાં રાત્રી દરમ્યાન સઘળી અવર-જવરની ક્રિયા, તેમજ શુભકાર્યો (જિનપૂજા-વ્યાખ્યાન શ્રવણ વિ.)ની પ્રવૃત્તિનો પણ ત્યાગ કરે છે. અને ભોજન પણ કરતા નથી.

आमनन्ति दिवसेषु भोजनं, यामिनीषुशयनं मनीषिणा।
ज्ञानीनामवरेषु जल्पनं शान्त्यर्थं गुरुषु पूजनं कृतम्।। ४५ ।।

બુદ્ધિમાન પુરુષે દિવસ દરમ્યાન ભોજન, રાત્રીએ શયન, જ્ઞાની પુરુષો સાથે ધર્મચર્ચા અને ગુણીજનોનું બહુમાન-આગતા-સ્વાગતા સઘળું સુખદાયક કહેલ છે.

રાત્રી ભોજનના ત્યાગના ઉપલક્ષણમાં ચાર મહાવિગય - માંસ, મદિરા, મધ અને માખણ જેમાં ભયંકર ત્રસહિંસા સુધ-બુધનો નાશ અને પ્રમાદની વૃદ્ધિ બીજરૂપે રહેલ છે તેનો પણ ત્યાગ કરવો જોઈએ. ઘોર હિંસા અને દુર્ગતિના કારણરૂપ ૧૫ કર્માધામી ધંધાનો જીવનપર્યંત અને ૨૨ અભક્ષ્યનો પણ ત્યાગ કરવોજોઈએ.

—: ૧૫ કર્માધામી ધંધાઓ :—

(૧) અંગાર કર્મ, (૨) વનકર્મ, (૩) શકટ કર્મ, (૪) ભાટક કર્મ, (૫) સ્ફોટક કર્મ, (૬) દંત વાણિજ્ય, (૭) લખ વાણિજ્ય, (૮) રસ વાણિજ્ય, (૯) વિષ વાણિજ્ય, (૧૦) કેશ વાણિજ્ય, (૧૧) યંત્ર વાણિજ્ય, (૧૨) નિલંછન કર્મ, (૧૩) દવાગ્નિદાયક કર્મ, (૧૪) સરદ્રાહ તલાવ શોષણ કર્મ અને (૧૫) અસતી પોષણ કર્મ.

આ પંદર કર્માધામી ધંધાઓમાં ખાસ કરીને પ્રત્યક્ષ તેમજ અપ્રત્યક્ષ ત્રસ જીવોની હિંસાની સંભાવના ભગવાને જોઈ છે. તેથી ભગવાને આ ધંધાઓ નહિ કરવા ગૃહસ્થોને જણાવેલ છે. રાત્રીભોજનના ત્યાગમાં મુખ્ય કારણ એ છે કે રાતના સમયમાં સુક્ષ્મ જીવોનો સંચાર ઘણોજ હોય છે અને ખોરાકમાં પડે તો પણ દિવસના પ્રકાશ સમાન રાત્રે જોઈ શકાતા નથી અને આ રીતે સુક્ષ્મ જીવોની હિંસા તેમાં અનિવાર્ય હોવાથી પાપાર્જન થયાજ કરે છે. એજ પ્રકારે આમાંના કેટલાક ધંધાઓમાં ત્રસ જીવોની હિંસા ગર્ભિત છે. કેટલાક ધંધાઓમાં કોઈપણ જાતનો ઉપયોગ કે સાવધાની હોવી અસંભવ હોવાથી અનેક નાના મોટા જીવોની હિંસા થયાજ કરે છે.

જેના હૃદયમાં અહિંસક ભાવ (જગતના સમગ્ર ત્રસ-સ્થાવર જીવો પ્રત્યે કરૂણાભાવ) નિરંતર વિદ્યમાન છે એવા ગૃહસ્થોએ અહિંસક ધંધા જેવા કે સોના-ચાંદી-કાપડ-તૈયાર કપડાં વિ. જેવા બીજા ધંધાઓ જેમાં ત્રસ જીવની હિંસા નહિવત હોય તે પસંદ કરવા જોઈએ. ભગવાન મહાવીરના અનુયાયીનો લક્ષ સર્વસંગ પરિત્યાગનો હોય છે. પરંતુ જ્યાં સુધી તે પ્રકારનું આત્મબળ તેમજ બીજા સહકારી કારણોનો સદ્ભાવ આ પંચમકાળમાં ન બને ત્યાંસુધી ગૃહસ્થાવાસમાં રહી પોતાનું રહન-સહન એવી રીતે નિર્માણ કરે કે આખા દિવસના વ્યવસાયમાં ત્રસજીવોની હિંસા ન થાય અને અનિવાર્ય સ્થાવર જીવોની હિંસામાં ખેદ રહ્યા કરે.

પરિગ્રહમાં પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોની લોલુપતા મુખ્ય છે. તેનાથી ચાર કષાય: ક્રોધ, માન, માયા અને લોભની ઉત્પત્તિ અને તેના ફળ સ્વરૂપ હિંસાદિ પાંચ પાપો (હિંસા, જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહ) માં પ્રવૃત્તિ હોય છે.

આરંભ-પરિગ્રહથી જેનું મન વિરામ પામેલ છે અને સંસારનું સાચુ સ્વરૂપ જેને સમજાયું છે તેવા ગ્રહસ્થ-શ્રાવકો બીજા પણ એવા ધંધા જે પ્રત્યક્ષ અનીતિના ધામો છે અને હિંસાના ઉપકરણો તેમજ માદક દ્રવ્યોનો વેપાર મન-વચન અને કાયાથી કરતા નથી, કરાવતા નથી અને કરતાને અનુમોદતા નથી. આ જીવનનુ ૮૦ વર્ષનું આયુષ્ય અનંત ભૂતકાળ અને આગામિ અનંત ભવિષ્યકાળ જોતાં સાગરનાં એક બિંદુ જેટલું કહેવું તે પણ અતિશયોક્તિ છે. એવા મનુષ્ય ભવના કાળમાં ભગવાન મહાવીરના બતાવેલ અહિંસક માર્ગને પોતાના જીવનમાં અપનાવે છે.

—: ૨૨ અભક્ષ્ય :—

૧) વડના ટેટા, ૨) પીપળના ટેટા, ૩) પીપરના ટેટા, ૪) ઉદંબર ફળ અને ૫) અંજીર (આ પાંચ ઉદંબર ફળ તરીકે શાસ્ત્રોમાં વર્ણવેલ છે. ૬) મદિરા, ૭) માંસ, ૮) મધ, ૯) માખણ, ૧૦) બરફ, ૧૧) વિષ, ૧૨) કરા, ૧૩) માટી, ૧૪) દ્વિદળ, ૧૫) પંચોટ ફળ, ૧૬) અનંતકાય, ૧૭) અથાણાં, ૧૮) રાત્રીભોજન, ૧૯) રીંગણ, ૨૦) અજાણ્યાં ફળ, ૨૧) તુચ્છ ફળ અને ૨૨) ચલિત રસ. શાકભાજીમાં બધી જાતની ભાજીઓ તેમજ ફુલાવરમાં બારીક ત્રસ જીવોની સંભાવના હોવાથી ગૃહસ્થ શ્રાવકે તેનો સર્વ પ્રકારે ત્યાગ કરવો.

આ ૨૨ અભક્ષ્યમાં ત્રસજીવોની ઉત્પત્તિ ભગવાને જોયેલ છે. તેના ભક્ષણમાં ત્રસજીવોની હિંસા ઉપરાંત જિવ્હા ઈન્દ્રિયની લોલુપતા પણ છે. આવી સમજપૂર્વક જેણે આ ૨૨ અભક્ષ્યનો જીવનભર ત્યાગ કર્યો તે કરૂણામૂર્તિ ઉત્તમ શ્રાવકનું મનુષ્ય જીવન સફળ જાણવું.

રાવણસાથેના યુદ્ધને પતાવી વિજયમાળા ગ્રહણ કરી, પરસ્ત્રીની કામનાથી મોહાંધ રાવણને હરાવી તેના સકંજામાંથી માતાતુલ્ય સિતાજીને છોડાવી દેશમાં પાછા ફરતી વખતે વનમાળાને પોતાની સાથે લઈ જવાના સોગંદ લેતાં લક્ષ્મણે કહ્યું હતું કે હે પ્રિયે! આ પ્રમાણે પાછા ફરતી વખતે તને હું અયોધ્યા મારી સાથે ન લઈ જાઉં તો મને રાત્રીભોજનનું પાપ લાગે.

અત્રિ નામના ઋષિએ આયુર્વેદ ઉપર એક મહત્ત્વપૂર્ણ ગ્રંથ લખ્યો હતો જેમાં એક લાખ શ્લોક હતા. રાજાને તેનો ટુંકમાં સાર જણાવતાં કહ્યું કે :

॥ जीर्णे भोजन मात्रेय ॥

એક વખતનું લીધેલું ભોજન બરાબર પચી ગયા બાદ, યોગ્ય પ્રમાણમાં બીજો આહાર લેવો. **'अजीर्णे संभवा रोगाः'** અજીર્ણ રોગોની ઉત્પત્તિનું કારણ છે. તે અજીર્ણને મટાડવાનો એક માત્ર સચોટ ઉપાય એક અગર વધારે ટંક ભોજનનો ત્યાગ છે.

''अजीर्णे भेषजं वारी, जीर्णे तु बलप्रदम्''

અજીર્ણમાં પાણી પીવું તે ઔષધની ગરજ સારે છે. જ્યારે ભોજન પચી ગયા બાદ પીધેલું પાણી બળ આપનાર નીવડે છે. તાંબાના લોટામાં પાણી રાખી સવારે નયણે કોઠે પીવાની ટેવ હજુ પણ જોવામાં આવે છે. તેમાં ઉપર લખેલ સૂત્રનીજ વાત છે.

''हितभूक्, ऋतुभूक्, मितभूक्''

પોતાના સ્વાસ્થ્યને અનુકુળ, સાત્વિક, નિર્દોષ પોતાની માન-મર્યાદાને, કાળ તેમજ પવિત્ર આચરણને અનુકુળ પરિમિત માત્રામાં આહાર કરવો.

'મિતાહારી અકબર સર્વોત્તમ બાદશાહ થયો'

"Be moderate, moderate in eating, moderate in drinking (not Liqour) moderate in speaking and moderate in everything."

"The future of a nation very much depends upon the digestion of her prime minister."

A regular temprate sobre living and eating habits are not only necessary for good health but even prosperity. A bad and notiating stomach can never make a successful businessman or an executive.

The Safest way to maintain health and live a full span of life is at least after forty to embrace sobriety. This sobriety is reduced to two things 1) Quantity of food and 2) Quality of food.

આહારમાં યોગ્ય ફેરફારથી તેમજ તેની માત્રા ઘટાડવાથી અસાધ્ય જેવા લાગતા રોગો પણ અલ્પકાળમાં કાબુમાં આવી જાય છે. ગુજરાતીમાં કહેવત છે 'અન્ન સમાન ઔષધ નથી.' નિયમિત, પરિમિત અને યોગ્ય આહાર-વિહારથી રોગો નાશ પામે છે અને સ્વાસ્થ્ય ટકી રહે છે.

Nature Cure માં ઉપવાસ અને અલ્પાહારથી અસાધ્ય રોગ મટાડવામાં આવે છે. જે અલ્પાહારથી

અસાધ્ય રોગ મટી જાય તે અલ્પાહાર યોગ્ય ફેરફાર સહિત ચાલુ રાખવામાં આવે તો માંદગીના વારંવાર હુમલાથી બચી જવાય એમાં શું નવાઈ છે ?

One must make a life long habbit to rise from the table with a disposition to eat still more.

'અન્ન તેવા ઓડકાર'માં ચારિત્રનું વર્ણન છે. 'કમખાના અને ગમખાના'માં શારિરીક સ્વાસ્થ્ય અને માનસિક શાંતિ-સુખનો ઉપાય બતાવ્યો છે.

'After dinner rest a while, after supper walk a mile.' આમાં સાંજના વાડ઼ કર્યા પછી એક માઈલ ચાલવાનું કહ્યું તેનો સાચો અર્થ એ છે કે સાંજના એટલી અલ્પમાત્રામાં ભોજન કરવું કે ત્યારબાદ એક માઈલ સુધી ચાલી શકાય.

कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरं च उत्तमं दिंतु॥

આમાં આરોગ્ય, બોધિલાભ અને બોધિબીજને આવતા ભવમાં સાથે લઈ જવાપૂર્વકનું સમાધિમરણ આ ત્રણની ઈચ્છા દર્શાવી. સ્ત્રી, પુત્ર, ધનાદિ કોઈની નહીં.

'સમ્યક્ત્વવંત અને પરાક્રમી પુરુષો હંમેશા લૂખું અને હલકું ભોજન કરે છે.'

''પેટ નરમ, પગ ગરમ ઓર શીર ઠંડા
ઉસકે ઘેર વૈદ્ય જાવે તો ઉસકો મારો દંડા.''

अल्पवारंश्च मुञ्जानो वस्तुन्यल्पानि संखया:।
मात्रामलपाश्च मुञ्जानो मिताहारो भवेत् यति:॥

જે સાધક દિવસમાં એક અગર બે વખત ભોજન કરે, ભોજનની વસ્તુઓ અલ્પસંખ્યામાં તેમજ અલ્પ માત્રામાં લે છે તેને મિતાહારી કહેવામાં આવેલ છે. ખોરાક નિયમિતપણે લેવા બાબતમાં લખ્યું છે :

'સો કામ મૂકીને નાવું, હજાર કામ મૂકીને ખાવુ'

आहारमग्निः पचति, दोषानाहारवर्जित:।
धातु क्षीणेषु दोशेषु, जीवितं धातुसंक्षये॥

જઠરાગ્નિ હોજરીમાં ખોરાક હોય તો તેને પચાવે છે. ખોરાક ન હોય તો રોગને પચાવે છે. રોગ પણ ન હોય તો શરીરની ધાતુઓને પચાવે છે એટલે કે ક્ષીણ કરે છે અને તેથી આગળ ઉપવાસ ચાલુ રાખવામાં આવે તો આયુષ્યને પચાવે છે એટલે કે ક્ષીણ કરે છે.

कण्ठनाडीमतिक्रान्तं सर्व तदशनं समम्।
क्षणमात्रसुखमर्थे लोल्यं कुर्वीन्त नो बुधा:॥

ગળેથી નીચે ઉતર્યા બાદ બધાંય ભોજન એક સરખાં છે. તેથી ક્ષણમાત્ર સ્વાદને માટે, બુદ્ધિમાન પુરુષો લોલુપતા કરતા નથી.

जिव्हेप्रमाणं जानीहि भोजने वचने तथा।
अतिभोकतमतिचोकतं प्राणिनां मरणप्रदम्॥

હે જીવ! તું જીભની મર્યાદા ખાવામાં તેમજ બોલવામાં બરાબર જાણ! માત્રાથી અધિક કરેલું ભોજન **તેમજ મર્યાદા** બહાર બોલેલું વચન ઘણીવાર મરણાંત કષ્ટનું કારણ થઈ પડે છે.

''જેમ જેમ અનુભવ વિષે આવે ઉત્તમ તત્ત્વ;
સુલભ મળે વિષયો છતાં, જરીયે કરે ન મમત્વ'' — **ઈષ્ટોપદેશ**

अप्रमाणं न भुञ्जीत न भुञ्जीताप्यकारणम्।
श्लाघां कुर्वन्न भुञ्जीत, निंदन्नापि न चाहरेत्।।

માત્રાથી અધિક ભોજન ન કરવું, કારણ વિના ભોજન ન કરવું. ખોરાકના વખાણ કરતાં કે તેની નિંદા કરતાં ભોજન ન કરવું.

—: જમતી વખતે મૌન :—

શ્રાવકે ભોજન કરતી વખતે ભ્રમર, આંખ, આંગળી, હુંકાર અને મસ્તકથી સંકેત વિ. કરવાનું છોડીને ઉત્તમ મૌન ધારણ કરવું જોઈએ. મૌન ધારણ કરનાર મનુષ્યની શરદ ઋતુના ચંદ્રમાની માફક ઉજ્જવલ કીર્તિ ફેલાય છે. સઘળા જનસમુદાયથી મિત્રતા થાય છે, કોઈ તેનો દ્વેષ કરતું નથી, કામદેવની માફક સુંદરરૂપ વધે છે. તે ધૈર્યવાન થાય છે. વિદ્વાનોથી પણ પ્રશંસા પામે છે. કાંતિવાન અને નિરોગી થાય છે. ધન-ધાન્ય, જમીન-જાયગા તેમજ ઘર વિ.થી યુક્ત થાય છે. તેની વાણી ગંભીર, મધુર અને સાંભળનારના મનને હરી લેનારી થાય છે. અને તેની નિર્મળ બુદ્ધિ સઘળા શાસ્ત્રોના અર્થઘટનમાં પ્રવિણ એટલે કુશાગ્ર થાય છે.

— સુભાષિત સંદોહગાથા ૮૬૫ થી ૮૬૯, પ્રકરણ ૩૧
શ્રાવકધર્મકથનની ગાથા ૧૦૪ થી ૧૦૭

નં.-૧૮-૧૯

—: ૧૮. ધર્મ-અર્થ અને કામનું અવિરોધપણે સેવન :—

—: ૧૯. ઉત્તરદાયિત્વનો નિભાવ :—

ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એમ ચાર પ્રકારે પુરુષાર્થ ભગવાને કહ્યા છે. મોક્ષનો પુરુષાર્થ મુખ્યપણે મુનિ-નિર્ગ્રંથ સાધુઓને હોય છે. તેથી તેની વાત ન લેતાં અહીં ધર્મ, અર્થ, અને કામના પુરુષાર્થની વાત છે. પુરુષાર્થ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ આ પ્રમાણે છે પુરુષ + અર્થ તેમાં પુરુષ એટલે આત્મા અને અર્થ એટલે પ્રયોજન. એ ત્રણ પ્રયોજનો ધર્મ, અર્થ અને કામ છે. તેનું અવિરોધપણે એટલે કે કોઈપણ એકનો પુરુષાર્થ બાકીના બીજા બે પુરુષાર્થને બાધા પહોંચાડ્યા વગર કરવો તે તેનો ભાવાર્થ છે.

त्रिवर्गसार : सुखरत्नखानि धर्मप्रधानं भवतीरे येन।
सम्यक्त्वशुद्धाविह मुकितलाभ : प्रधानता येन मताऽस्य सद्भि : ॥

આ ત્રણ પુરુષાર્થમાં સારરૂપ અને સુખના રત્નોની ખાણ સમાન ધર્મનો પુરુષાર્થ મુખ્ય છે. જેનાથી સંસારરૂપી સાગર તરી જવાય છે. અને તેમાં પણ સમ્યક્ત્વથી નિર્મળ એવો ધર્મનો પુરુષાર્થ મોક્ષની પ્રાપ્તિ કરાવનાર જ્ઞાનીજનોએ કહેલ છે.

'There is no effect without a cause.' and secondly 'Nothing can be achieved without diligence and proper application of mind.

कारणमन्तरेण कार्यं न सिध्यति — *तत्वसार पान-३१*
सावधानमन्तरेण किमपि न लभ्यते — *तत्वसार पान-३८*
सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं।
कडाण कम्माणं ण मोकख अत्थि॥

જીવનાં કરેલાં સર્વ કૃત્યોનું ફળ અવશ્ય હોય છે. અને કરેલા કર્મને ભોગવ્યા વગર છૂટકારો નથી.

There is no other way to reach a destination but to walk out the distance. Again there is no other way from childhood to manhood but by growth. What we are today is nothing but a cumulative effect or result of our past action in thought, word and deed (મન, વચન અને કાય) and our future is in the mould (making) by what we do every moment of our life.

"તે તે ભોગ્યવિશેષનાં, સ્થાનક દ્રવ્ય સ્વભાવ
ગહનવાત છે શિષ્ય આ કહી સંક્ષેપે સાવ."

— *શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર*

આ જીવ જે જે ભાવ કરે છે તેને ભોગવવા યોગ્ય અનુકૂળ ગતિ અને સ્થાનો જગતમાં પડેલ છે. આ બહુ ગહન વાત (કર્મ અને કર્મફળનો અબાધિત સિદ્ધાંત) નો ટુંકમાં અણસાર (ચેતવણીના રૂપમાં) અહીં કરેલ છે. એકબાજુ પાંચ અનુત્તર વિમાનમાં દેવો અને તેમાંય ઉત્કૃષ્ટ સર્વાર્થસિદ્ધિના દેવો (બધાય એકાવતારી) જેમનું ૩૩ સાગરોપમ આયુષ્ય, આજીવન બ્રહ્મચર્ય, પરમ શુકલ લેશ્યા, નિર્મળ વિચારધારા, અત્યંત મંદ કષાય સહિત સર્વોત્તમ ક્ષેત્રજન્ય, ભોગજન્ય સુખ, અને આયુષ્ય પૂર્ણ થતાં ત્યાંથી ચ્યવી ઉચ્ચ આર્યકુળ અને ક્ષેત્ર જ્યાં તીર્થંકરો સાક્ષાત્ વિચરતા હોય ત્યાં જન્મ લઈ, થોડોક કાળ સંસારના સુખ ભોગવી અંતમાં નિર્ગ્રંથમુનિ દીક્ષા લઈ અંતિમ પરમ પુરુષાર્થપૂર્વક કર્મનો આત્યંતિક ક્ષય કરી મોક્ષે જાય છે. અહીં

કોઈ દેવીનો એટલે કે સ્ત્રી પર્યાયનો જન્મ નથી તેમજ બીજા કોઈ દેવલોકમાંથી કોઈ દેવીનો આ પાંચ અનુત્તર વિમાનમાં પ્રવેશ નથી.

જ્યારે બીજી બાજુ સાતમી નરકના જીવો: તેમનું પણ ૩૩ સાગરોપમ આયુષ્ય, બધા નપુંસક, કૃષ્ણ લેશ્યાયુક્ત, તીવ્ર કષાયયુક્ત, પ્રતિકુળ સંયોગો જેને સાંભળતાં હાંજા ગગડી જાય એવાં દુ:ખો ભોગવી આયુષ્ય પુરૂં થતાં ત્યાંથી બહાર નીકળી નિયમથી ક્રૂર માંસાહારી સિંહ જેવી તિર્યંચગતિમાં અવતરી ત્યાંથી પાછા મરણ કરી છઠ્ઠી અગર પાંચમી નરકમાં પ્રવેશ કરે છે એટલે જન્મ ધારણ કરે છે. આ બધું જીવના ભાવનું પરિણામ છે. માટે ભગવાન કહે છે કે:

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा जं सेयं तं समाचरे॥

— *દશવૈશાલિક - ૪/૧૧*

હે જીવ તારૂં કલ્યાણ શેમાં છે અને અકલ્યાણ શેમાં છે તેનો વિચાર કરી તેને બરાબર જાણ અને પછી તને ઠીક લાગે તેમ કર!

तदेव यदिह जगति शरीर विशेषसमवेतं
किमपि सामर्थ्यमुपलभामहे तत्सकलात्मान एवेति विनिश्चय:।
आत्मप्रवृत्ति परंपरोत्पादि तत्वाद्विग्रहग्रहणस्येति॥

— *જ્ઞાનાર્ણવ પાન - ૨૨૯*

આ જગતમાં ભિન્ન ભિન્ન પ્રકારનું (શરીરની સાથે મીલીઝુલી એકરૂપ ભાસ્યમાન) જે કાંઈ સામર્થ્ય જોવામાં આવે છે તે આત્માનું જ છે કારણકે શરીરના પણ ગ્રહણ તેમજ નિર્માણમાં આત્માની પ્રવૃત્તિની પંરપરા (પરિપાટી)જ કારણરૂપ હોય છે એટલે કે આ આત્મા શુભ કે અશુભ જે કાંઈ પણ એકાગ્રપણે ચિંતા-વિચાર-ચિંતવનાદિ કરે છે તેનાથી પ્રકૃતિ બંધમાં નામકર્મની પ્રકૃતિના ઉદયને અનુરૂપ શરીર ધારણ કરે છે અને તે પ્રમાણે પોતાના સામર્થ્યરૂપ અનેક પ્રકારની ચેષ્ટાઓ કરવી તે તેનું પરિણામ છે.

धर्मार्थकामसध्रीचो यथौचित्यमुपाचरन्।
सुधी: त्रिवर्गसम्पत्त्या प्रेत्य चेह च मोदते॥

ધર્મ-અર્થ અને કામના પુરુષાર્થમાં એટલેકે તેની સાધનામાં સહાયક વ્યક્તિઓનો **યથાયોગ્ય** ઉપકાર કરવાવાળા **બુદ્ધિમાન શ્રાવક ધર્મ,** અર્થ તેમજ કામની સંપત્તિથી આ લોક તેમજ પરલોકમાં સુખી થાય છે.

પોતાની ભૂમિકા (દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવ)ને બરાબર જાણી-સમજી કોઈ **એક** (ધર્મ, અર્થ અને **કામમાંથી)નો અતિરેક** બાકીના બેના ભોગે કરવાથી સરવાળે ત્રણે પુરુષાર્થ બગડે **છે.** માર્ગાનુસારીના ૩૫ **ગુણોમાં આ (ધર્મ,** અર્થ અને કામનું અવિરોધપણે સેવનનામના) ગુણમાં સમતુલના (Sense of proportion) **જાગૃતિ** (Sense of awarness) પરિપક્વ બુદ્ધિ (Maturity-horse sense) સાવધાની (alertness) **બુદ્ધિમત્તા (wisdom)** અને આવા બીજા અનેક ગુણોનો સુમેળ છે.

સમ્યગ્દર્શન થતાં ઔચિત્યગુણ, લબ્ધલક્ષિતા અને જાગૃતિ વિ. અનેકગુણ પ્રગટ **થાય છે. અહીં સમ્યક્ત્વની સન્મુખ અગર તેને માટે** જોઈતી યોગ્યતા એટલે કે વિશુદ્ધિની વાત છે. 'ધર્મ-અર્થ' **અને કામનું અવિરોધપણે સેવન' એ ઔચિત્ય ગુણનોજ** પર્યાય વાચક શબ્દ સમુહ છે. એટલે કે ઔચિત્યસેવન ગુણનો જ **વિસ્તાર છે.**

औचित्यमेकमेकत्र, गुणानां कोटिरेकम:।
विषायते गुणग्राम, औचित्य परिवर्जित:॥

એક તરફ ઔચિત્યસેવનનો ગુણ અને બીજી તરફ કરોડ ગુણોનો સમુહ રાખો. શાસ્ત્રકાર કહે છે કે ઔચિત્યગુણ વગરના બાકીના બધા ગુણોનો સમુહ વિષરૂપે પરિણમે છે.

''જ્યાં જ્યાં જે જે યોગ્ય છે તહાં સમજવું તેહ;
ત્યાં ત્યાં તે તે આચરે, આત્માર્થી જન તેહ.''

— શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર.

दुःखीषु दयात्यन्तमद्वेषो गुणवत्सु च।
औचित्यात्सेवन चैव सर्वत्रैवाविशेषत:॥

દુ:ખીયાજીવો પ્રત્યે અત્યંત કરૂણાબુદ્ધિ, ગુણીજનો ઉપર પ્રેમ તેમજ સર્વકાર્યોમાં અચૂક ઉચિત પ્રકારની પ્રવૃત્તિ

चरमे पुद्गलावर्ते क्षयश्चास्योपपद्यते।
जीवानां लक्षणं तत्र यत एतदुदाहृतम्॥

ચરમ એટલે કે છેલ્લા પુદ્ગલ પરાવર્તમાં સ્થિત જીવોના ઘણા દોષોનો ક્ષય થતાં ઉપર જણાવેલ લક્ષણો હોય છે.

આ એક પુદ્ગલ પરાવર્ત સંસારભ્રમણની વાત છે જ્યારે અર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત જેટલો ઉત્કૃષ્ટકાળ સંસાર પરિભ્રમણનો બાકી હોય તેને પ્રથમ ઉપશમ સમકિતની પ્રાપ્તિ હોય છે.

આ ઔચિત્યસેવન નામનો ગુણ તીર્થંકરોમાં તેની પરાકાષ્ટારૂપ પ્રગટ હોય છે અને તીર્થંકર પ્રકૃતિના બંધનું એક મુખ્ય કારણ હોય છે. (સોળ કારણ ભાવનાઓમાં છવાયેલો રહે છે.)

કુટુંબનું ભરણપોષણ તેમજ ઉત્તરદાયિત્વ નિભાવવું એ ગૃહસ્થ જીવનનું અનિવાર્ય અંગ છે. તેની અવગણના કરનાર ગૃહસ્થ સુખી થઈ શકતો નથી એ વાત બાજુએ રહી, તેનું ધર્મમાં પ્રવર્તન પોતાના મનમનામણાં તેમજ આત્મવંચનારૂપ છે. (Wishful thinking and self deception) ગૃહસ્થને ધન ઉપાર્જન કરવા નોકરી-ધંધો કરવો જરૂરી છે છતાં તે ધર્મના બાંધા પર પગ મૂકીને નહીં એટલે કે ન્યાય તેમજ નીતિપૂર્વક. 'આજીવિકાદિ ઈચ્છતાં પણ ન્યાયનીતિ ના તજે' અને તેનો ભોગવટો પણ પોતાના સ્થાન-માન અને મર્યાદામાં રહીને.

૧) ધર્મની અવગણના કરનારને ધનોપાર્જનમાં પણ બાધા પહોંચે છે તે ઉપરાંત તેમના કામભોગ પશુવત્ હોય છે. ૨) ધનની અવગણના કરનારને કામ ભોગમાં બાધા પહોંચે છે એ તો સીધી સાદી વાત છે. પરંતુ કુટુંબના ભરણપોષણ અને ઉત્તરદાયિત્વ નિભાવી ન શકવાથી ધર્મના પુરુષાર્થમાં કુટુંબનો અસહકાર તેમજ બીજાં અનેક પ્રકારનાં વિઘ્નો આવી પડવાથી ધર્મના પુરુષાર્થને પણ બાધા પહોંચે છે. ૩) કામની અવગણના કરનારને અનેક પ્રકારની માનસિક તેમજ શારીરિક વિકૃતિના કારણે ધર્મ તેમજ ધન બંને પુરુષાર્થને બાધા પહોંચે છે. આ બધાનું સંતુલન વ્યક્તિ દીઠ અલગ-અલગ પ્રકારે દરેકના દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવ પર આધારિત છે. વિષયેચ્છાથી ઉદ્ભવેલ અંતરંગ આકુળતા-બળતરાને સમાવવા અને શારીરિક તેમજ માનસિક સ્વાસ્થ્યને માટે પણ અમુક અવસ્થામાં ભોગોપભોગ મર્યાદાપૂર્વક હોવાં અનિવાર્ય છે. છતાં પણ તેનો અતિરેક શારીરિક તેમજ માનસિક સ્વાસ્થ્યને બગાડી તેમજ બીજી અનેક વિકૃતિઓ (Side effects) ના કારણે ધર્મ તેમજ ધનના પુરુષાર્થને બગાડે છે.

રોગીને રોગની વેદના સહી ન જતી હોય તો સૌ પ્રથમ તેને મોરફીન, એનાસીન જેવી દવાઓ આપી સમય પૂરતું વેદનાનું શમન કરી રોગની નાબુદી માટે ઈલાજ કરવામાં આવે છે. તેમ ન કરવામાં આવે તો

દરદીનો સહકાર મલતો નથી, તેમજ દરદી Violent થઈ જાય છે અને તેથી રોગ મટાડવાનો ઈલાજ થઈ શકતો નથી. ભવરોગ મટાડવા માટે પ્રથમ કુટુંબનો નિર્વાહ અને ઉત્તરદાયિત્વ નિભાવવાની ચિંતારૂપી અંતરંગ બળતરાને મટાડવા ધનની અને ભૂખ-તરસાદિ જનિત આકુળતા મટાડવા કામ-ભોગનું મર્યાદાપૂર્વક સેવન બાદ ભવરોગ મટાડવાનો ઈલાજ 'ધર્મનું સેવન' નિર્વિઘ્નપણે થઈ શકે છે.

ધનના ઉપાર્જન કરતાં, ઉપાર્જન કરેલા ધનનો વ્યય-ખર્ચ વધારે મહત્વનો છે. ધર્મપાત્રોમાં ધનાદિનું ખર્ચ તેમજ કાર્યપાત્રોમાં એટલે કે ધનના ઉપાર્જનમાં સહકારી-ધંધાના નોકર-ચાકર તેમજ ધંધાના બીજા પાસાઓમાં મદદગાર વ્યક્તિઓને પ્રસંગોપાત ભેટ-સન્માનાદિ તથા કુટુંબના સભ્યોના નિર્વાહ માટે ઉચિત ખર્ચ વિ. ધર્મ, અર્થ અને કામ ત્રણેને મદદગાર નીવડે છે.

धर्मपात्राण्यनुग्राह्याण्यमुत्र स्वार्थ सिद्धये।
कार्यपात्राणि चात्रैव कीर्त्यै त्वौचित्यमाचरेत्॥

પરલોકના પ્રયોજનની સિદ્ધિ અર્થે ધર્મપાત્રોનો અનુગ્રહ કરવો જોઈએ અને આલોકના પ્રયોજનની સિદ્ધિને અર્થે કાર્યપાત્રો (ધંધામાં નોકરાદિ તેમજ ધંધાના સાથીઓ) અને કુટુંબના (સ્ત્રીપુત્રાદિ કુટુંબીજનો) સાથે ઉચિત વ્યવહાર કરવો જોઈએ એટલે કે દાન, સન્માન, સંભાષણ વિ. દ્વારા તેમને અનુગ્રહીત કરવા જોઈએ.

— *શ્રાવકાચાર સંગ્રહમાં સાગારધર્મામૃત પાન-૧૪.*

'You give and thou shalt be given'

ઉદાર હાથે આપવામાં ધંધાની સફળતા તેમજ સારાયે જીવનની સફળતાની ચાવી રહેલ છે. સફળ ધંધાધારી તેમજ જીવન સાફલ્યવાળા જીવોની સાથે ધંધામાં નિષ્ફળ અને જીવન હારી ગયેલા જીવોની કાર્યપદ્ધતિની સરખામણી કરવાથી માલુમ પડશે કે ઉદારતા અને સરળતા એ જીવનના દરેક અંગોમાં સફળતાની ચાવીરૂપ છે અને આ બંને ગુણો કોઈ ભાગ્યશાળી જીવોમાં આજકાલ આ પાંચમા આરામાં જોવા મળશે. ઉદારતા અને સરળતા અનેક ભવોની આરાધનાનું ફળ છે.

—: અનાગ્રહ (सदा अनभिनिविष्ठ) :—

સંસ્કૃત ભાષામાં **(अन् + अभिनिविष्ठ) अभिनिविष्ठ** નો અર્થ આગ્રહ અને **अन्** મુકતાં અનાગ્રહ અર્થ થાય છે. અનાગ્રહ શબ્દ બહુલક્ષી છે તેમાં દુરાગ્રહ, કદાગ્રહ, હઠાગ્રહ અને પૂર્વગ્રહ બધાનો અભાવ વર્તે છે.

સર્વાંગસુંદર તેમજ પરિપૂર્ણ એવી કોઈ ચીજ ભૌતિક જગતમાં જોવા મળવી મુશ્કેલ છે. દરેક જગ્યાએ કાંઈને કાંઈ સુધારા-વધારાનો અવકાશ અવશ્ય હોય છે. આત્માના ચારિત્રગુણની સ્વાભાવિક પર્યાય-દશા વીતરાગતા પ્રગટે નહિ ત્યાંસુધી સુધારાનો અને પગલે પગલે (એક એક ડગલે) આગળ વધવાનો અવકાશ છે અને તે જ મોક્ષમાર્ગ છે. ભૌતિક જગતમાં આને વ્યવહારકુશળતા કહે છે. કોઈપણ પ્રકારનો મતાગ્રહ તેમાં રૂકાવટ કરનારો છે, તેમજ ઘાતક છે. જ્ઞાનની અઘાદતાનું વર્ણન કરતાં એક અંગ્રેજ લેખકે કહ્યું છે :

How much we have to know before we know 'How little we know.'

આપણે લગભગ 'કંઈજ જાણતા નથી' એમ જાણવા માટે આપણે કેટલું બધું જાણવું જરૂરી છે. શ્રીમદ્ રાજચંદ્રનું કહેવું 'મારૂં જ્ઞાન સમુદ્રમાં એક બીંદુ જેટલું પણ નથી' તે તેમની નિરાભિમાનતા દર્શાવવા કરતાં હકીકતરૂપ હતું.

One has to keep an open and receptive mind in the material as well as spiritual world, in order to make progress.

ભૌતિક તેમજ આધ્યાત્મિક વિકાસમાં વધુને વધુ જ્ઞાન તેમજ સુધારાનો અવકાશ છે અને તેને માટે જેનાં બારણાં ખુલ્લાં છે તેજ પ્રગતિ સાધી શકે છે.

જૈન ધર્મમાં અનેકાન્તધર્મ અને સ્યાદ્‌વાદ શૈલીથી બધાજ પ્રશ્નોનું નિરાકરણ તેમજ સંપુર્ણ સમાધાન કરેલ છે. કઈ અપેક્ષાએ કયું કથન છે તે બરાબર સમજે તો કયાંય વિરોધાભાસ રહેતો નથી. નય એટલે કે એક દ્રષ્ટિકોણ (Angle). આમ હકીકત હોવા છતાં જૈન ધર્મમાં જેટલા ફીરકાઓ અને વાડાઓ હાલમાં દેખાય છે તેટલા કદાચ બીજા ધર્મમાં દેખાતા નથી. તેના અનેક કારણોમાં એક મૂખ્ય કારણ જૈનાગમના અભ્યાસનો અને તેના અર્થઘટન માટે જરૂરી કુશાગ્ર બુદ્ધિનો પંચમકાળના હાલના સમયમાં પ્રાય: અભાવ અગર તેની અલ્પતા છે. જુદા જુદા વકતાઓ પોતાના મનમાન્યા અર્થઘટન કરે છે અને તેને પ્રમાણ માનનાર તેમના અનુયાયીનું એક જૂથ બને છે. અને તે રીતે એક એક વક્તાની પાછળ એક એક વાડો હાલમાં જોવામાં આવે છે. જૈન ધર્મમાં પ્રયોજનભૂત તત્ત્વોનો નિર્ણય આગમ, યુક્તિ અને અનુભવની કસોટીએ ચઢાવીને બુદ્ધિપૂર્વકના અબાધિત જ્ઞાનને પ્રમાણજ્ઞાન કહે છે. જેને માટે અંગ્રેજીમાં 'Authenticity' શબ્દ છે. કાયદાની કોર્ટમાં પણ યુક્તિથી સાબિત કરવામાં આવે, સમજમાં આવે અને હાઈકોર્ટ કે સુપ્રીમકોર્ટનો આધાર મળે એમ ત્રણે રીતે અબાધિત ચુકાદો આપવામાં આવે છે.

રામાયણમાં રાવણના અને મહાભારતમાં દુર્યોધનના હઠાગ્રહને કારણે બે તુમુલ યુધ્ધો સર્જાયાં. જૈન ધર્મમાં પદ્મપુરાણ અને જૈન મહાભારત બે પ્રથમાનુયોગનાં શાસ્ત્રો વાંચવા ખાસ ભલામણ છે. રામના બે નામ હતાં રામ તેમજ પદ્મ એ નામ પરથી 'રામાયણ' અને 'પદ્મ પુરાણં' શાસ્ત્રોનાં નામ છે.

In recent past, obstinaney was more responsible for provocation and prolongation of wars or strifes than ambition. Little departure from obsitaney could have averted loss of thousands of innocent lives, broken houses and limbs, destitutes and orphans all combined in one sentence 'living tragedy-man made.'

નં.-૨૧-૨૨-૨૩

—: ૨૧. ગુણીજનોના ગુણમાં પક્ષપાત :—

—: ૨૨. અતિથિ, સાધુજન, દીનજનોની યોગ્યતાનુસાર સેવા :—

—: ૨૩. વ્રતી - જ્ઞાનવૃદ્ધ પુરુષોની સેવા સુશ્રુષા :—

लोकद्वयविशुध्यर्थं भावशुद्ध्यर्थमञ्जसा।
विद्याविनयवृद्ध्यर्थं वृद्धसेवैव शस्यते॥ १ ॥

— *જ્ઞાનાર્ણવ - ૨૫૪*

અનાયાસ (unconciously) આ લોક તેમજ પરલોકના હિતને માટે, પોતાના ભાવો તેમજ કષાયની મંદતા રૂપ વિશુદ્ધિને માટે તેમજ જ્ઞાનવિનયની વૃદ્ધિને માટે વૃદ્ધ જ્ઞાની પુરુષોની સેવા કરવાનો બોધ કરવામાં આવેલ છે. સ્વપરના વિવેકપૂર્વક જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુ જેનાં ખુલી ગયાં છે અને આત્મહિત જે મોક્ષ તેમજ સ્વપરના હિતમાં રાતદિન જેની એકમાત્ર પ્રવૃત્તિ છે તેને વૃદ્ધ કહેલા છે. કેવળ અવસ્થા-ઉંમરથી જિનમાર્ગમાં કોઈને વૃદ્ધ કહેલા નથી.

''વિષયોંકી આશા નહિ જિનકે, સામ્યભાવ ધન રખતે હૈ.
નિજપરકે હિત સાધનમેં જો નિશદિન તત્પર રહતે હૈ;
સ્વાર્થત્યાગકી કઠીન તપસ્યા બિના ખેદ જો કરતે હૈ;
ઐસે જ્ઞાની સાધુ જગતકે દુ:ખસમુહકો હરતે હૈ.''

''રહે સદા સત્સંગ ઉન્હીકા, ધ્યાન ઉન્હીકા નિત્ય રહે,
ઉનહી જૈસી ચર્યા મેં, યહ ચિત્ત સદા અનુરક્ત રહે;
નહી સતાઉં કિસી જીવકો, જૂઠ કભી નહિ કહ્યા કરૂં,
પરધન વનિતા પર ન લુભાઉં, સંતોષામૃત પિયા કરૂં.

— *મેરી ભાવનામાંથી*

साक्षाद्वृद्धानुसेवेयं मातेव हितकारिणी।
विनेत्री वागिवाप्तानां दीपिकैवार्थदर्शिनी॥ ११ ॥

આ વૃદ્ધસેવા સાક્ષાત્ માતાની માફક હિત કરવાવાળી છે અને આપ્તવાણી (જિન પ્રવચન)ની સમાન સમીચીન-યથાર્થ શિક્ષા પ્રદાન કરવાવાળી છે અને દિપકની સમાન પદાર્થોના સ્વરૂપને દેખાડનારી છે (પદાર્થોનું સ્વરૂપ એટલે જીવ, અજીવ, પુણ્ય, પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષનું સ્વરૂપ)

''જે મનુષ્યના હૃદયમાં સત્પુરુષોના વચનરૂપી દિપકની પરિપાટી પ્રકાશમાન છે તેને તત્ત્વમાં, તપમાં તેમજ વૈરાગ્યમાં ઉત્કૃષ્ટ પ્રીતિ થઈ જાય છે.''

वृद्धानुयायिनां च स्याद्विश्वतत्त्वैक निश्चय:॥ २५ ॥

વૃદ્ધ જ્ઞાની પુરુષોના અનુયાયીને જગતમાં રહેલા સમસ્ત પદાર્થો અને તેના ભાવો (ગુણદોષ)નો નિશ્ચય સહજમાં થઈ જાય છે અને અજ્ઞાનનો લેશ માત્ર સદ્ભાવ રહેતો નથી.

दृष्ट्वा श्रुत्वा यमी योगिपुण्यानुष्ठानमूर्जितम्।
आक्रमति निरातङ्कं पदवीं तैरुपासिताम्॥ २८ ॥

સંયમી મુનિ યોગીશ્વરોના મહાપવિત્ર આચરણના અનુષ્ઠાનોને સાંભળી તેમજ પ્રત્યક્ષ જોઈને યોગીશ્વરોએ

સેવન કરેલી પદવીને આ જીવ નિરૂપદ્રવપણે પ્રાપ્ત કરે છે એવો કોઈ અપૂર્વ મહિમા જિનશાસનમાં વૃદ્ધજ્ઞાની જનોની સેવાનો ઠેર ઠેર ગાયો છે.

भयलज्जाभिमानेन धैर्यमेवावलम्बते।
साहचर्यं समासाद्य संयमी पुण्यकर्मणाम्॥ ३१ ॥

વૃદ્ધ-જ્ઞાની પવિત્ર પુરુષોના સાહચર્યથી આ જીવ ભય-લજ્જા તેમજ અભિમાનના કારણથી પણ વિકટ પ્રસંગમાં ધૈર્ય રાખી શકે છે અને પોતાના માર્ગથી ચ્યૂત થતો નથી. અને પ્રસંગ ટળી જતાં પોતાના વ્રતાદિની દઢતાને કારણે અપૂર્વ અદમ્ય ઉત્સાહને વરે છે.

मुक्तिबीजं तदेकं स्यादुपदेशाक्षरं सताम्॥ ३८ ॥

સત્પુરુષના ઉપદેશનો એક શબ્દ માત્ર પણ કોઈક વખત મુક્તિના બીજસ્વરૂપ કામ કરે છે.

નિર્ગ્રંથ મુનિનું એક જ ટૂંકુ વાકય **'युवयोर्धर्मवृद्धिरस्तु'** શ્રેણિક રાજાના જીવનમાં પરિવર્તનનું કારણ બની ગયું. તેમણે જૈનધર્મ અંગીકાર કર્યો અને ભગવાન મહાવીરના અનુપમ અનુયાયી થયા અને તે પણ કેવા? જે આવતી ચોવિશીમાં 'પદ્મનાભ' નામધારી પ્રથમ તીર્થંકર થશે.

આ જીવને સાનિધ્યથી જોવાનું-નિહાળવાનું અને અવલોકન કરવાનું જે બને છે તેનાથી જેટલી સચોટ અસર તેમજ તેની વાસ્તવિકતાનો જેવો ખ્યાલ આવે છે તેવો સાંભળવાથી કે જેનું તેનું જીવનચારિત્ર વાંચવાથી આવી શકતો નથી. કોઈપણ વસ્તુનું ગમે તેટલા વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન કરવામાં આવે તો પણ તેને જોવાથી જે સર્વાંગ ખ્યાલ આવે છે તેવો આવતો નથી. 'It is to be seen to be believed' કોઈ વ્યાખ્યાનહૉલમાં કોઈ વિષય પર કોઈનું પ્રવચન સાંભળવા જઈએ ત્યારે આપણે એવી જગ્યાપર બેસવાનું પસંદ કરીએ છીએ કે જ્યાંથી કમ સે કમ વક્તાનું મુખ દેખી શકાય. મુખમાં પણ સૌથી અગત્યનો ભાગ વક્તાની આંખ છે. શાસ્ત્રમાં પણ કથન છે કે જ્ઞાનની ઝલક આંખમાં જોઈ શકાય છે. પ્રવચનકારના હાવભાવ, જે તે પ્રસંગે તેમની મુખમુદ્રા પરથી પસાર થતી રેષાઓ અને તેમની આંખમાં પ્રતિભાસતી જ્ઞાનની ઝલક તેનાથી શ્રોતાઓમાં ઉપદેશની સચોટ તેમજ વેધક અસર (Impact) થાય છે. કોઈના ત્યાં આપણે જઈએ ત્યારે યજમાન આપણને ચાપાણી વિ. માટે પૂછે છે ત્યારે આપણે યજમાનની આંખપરથી તેના આમંત્રણ વિ.માં હૃદયપૂર્વકનો આવકાર છે કે કેમ તે જોઈ હા અગર ના પાડવાનો નિર્ણય કરી લઈએ છીએ.

'The tounge can lie, the eyes cannot' જીભ જૂઠું બોલી શકે છે. આંખ નહી.

'Eyes speak in all languages and also understand all languages.' આંખ બધી ભાષાઓ બોલી શકે છે તેમજ બધી ભાષાઓ સમજી શકે છે.

કાયદાની કોર્ટમાં સાક્ષીની જુબાની લેવામાં આવે છે. સાક્ષી શબ્દની વ્યુત્પત્તિ **स + अक्ष** તેમાં અક્ષનો **અર્થ આંખ છે. જેણે આંખથી જાતે જોયેલ હોય તેને અંગ્રેજીમાં** 'Eye witness' **(નજરે જોયેલ) કહેવામાં આવેલ છે તેની** 'Evidentiary Value' ઘણી હોય છે. જ્યારે કોઈએ સાંભળેલી વાત કહેનાર ને 'heresay evidence' ગણી 'Law of Jurisprudence માં તેની કિંમત નહિવત્ છે.

—: ભિખારીનો દષ્ટાંત :—

એક ભિખારી રસ્તા ઉપરની કચરાપેટીમાંથી સડેલો રોટલો લઈને ખાતો હતો. ભૂખના દુ:ખથી બહાવરો જેવો લાગતો હતો. આ જોઈ રસ્તા પર ચાલતા માણસો ભેગા થઈ ગયા. ઘણાએ પોતપોતાની રીતે તેને સડેલો રોટલો ન ખાવા જણાવ્યું છતાં તેણે ખાધે જ રાખ્યું. એક સમાજ સેવકે ઘણો સમજાવ્યો. એક વૈદ્યે કહ્યું તને પેટમાં ચૂંક આવશે અને ભંયકર રોગથી પીડાઈશ. એક પોલીસ-સિપાહી ત્યાંથી પસાર થતો

હતો. ટોળાને જોઈ ત્યાં આવ્યો. તેણે ભિખારીને જેલમાં પૂરી દેવાની ધમકી આપી. કોઈ અસર ભિખારી પર થઈ નહી. આ ટોળામાં એક વૃદ્ધ અનુભવી પુરુષ બધું જોઈ રહ્યા હતા. તેમણે બાજુની દુકાનમાં જઈ તાજો રોટલો લાવી આ ભિખારીને આપ્યો. ભિખારીએ બાકી રહેલો સડેલો રોટલો ફેંકી દીધો અને દોડતો ભાગવા લાગ્યો રખેને! તેનો રોટલો કોઈ પડાવી લે. વૃદ્ધ અનુભવી પુરુષ શિખામણનો એક શબ્દ પણ બોલ્યા ન હોતા.

''अवाग् विसर्ग वपुषा मोक्षमार्गं निरुपयन्''

વચનથી કંઈપણ નહિ બોલવા છતાં પોતાના દેહથી (દેહનાં સમગ્ર અંગોની ચેષ્ટાથી) સત્પુરુષો મોક્ષમાર્ગનું નિરૂપણ કરતા હોય છે. સત્પુરુષોના સાનિધ્યમાં હિંસક પશુઓ પણ જન્મજાત વૈર-વૈમનસ્યને ભૂલી એકબીજા સાથે ક્રીડા કરવા લાગી જાય છે.

'अहिंसा तत्प्रतिष्ठायां तन्संनिधौ वैरत्याग :'

જ્ઞાનવૃદ્ધ પુરુષોની સેવાથી તેમના સાનિધ્યમાં રહેવાનો અપૂર્વ લાભ મળે છે. તેમના આચાર-વિચાર, રહન-સહન, સુખદુ:ખમાં તેમજ બધા દ્વંદોમાં સમભાવ. ત્રસ-સ્થાવર જીવો પ્રત્યે અસીમ કરૂણાબુદ્ધિ. પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોથી નિરપેક્ષતા, કષાયોનો નિગ્રહ, ભગવાન મહાવીરના પ્રરૂપેલા મોક્ષમાર્ગના પ્રવાસી, પરમ નિર્ગ્રંથદશાના ધારક, (૧૩) તેર પ્રકારના ચારિત્ર, (૨૮) અઠ્ઠાવીસ મૂળગુણના અને ચોરાસી લાખ ઉત્તર ગુણના ધારી, દશલક્ષણ ધર્મના આરાધક, નિરંતર અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓના ભાવનારા, ક્ષુધાદિ ૨૨ પરિસહોને સમભાવપૂર્વક જીતનારા, જીવ-અજીવ કૃત ઉપસર્ગોમાં અડોલ, અકંપ-નિશ્ચલ. દર્શનાચાર, જ્ઞાનાચાર, ચારિત્રાચાર, તપાચાર અને વીર્યાચાર એમ પાંચ આચારના ઉપાસક, એવા જ્ઞાની ભગવંતો પ્રત્યેક જીવની યોગ્યતા, દઢતા, ઉંમર વિ. અનેક પાસાંઓને ધ્યાનમાં લઈ જે સુચનો આપે છે તેનાથી જીવમાં અનાયાસ અગર તો અલ્પપ્રયાસે ધરમૂળ પરિવર્તન આવે છે. દરેક જીવો જુદા જુદા છે, તેમના કર્મો જુદાં જુદાં છે અને તેમની લબ્ધિ પણ જુદી જુદી છે. જ્ઞાની પુરુષની વેધક દ્રષ્ટિ આંખના પલકારામાં આ બધું જાણી પ્રસંગને ઉચિત સલાહ સૂચના કરે છે. આ બધું અનિર્વચનીય છે. જેનાથી ક્રમે કરીને અનાદિકાળથી અનુપલબ્ધ સમ્યગ્દર્શન જ્ઞાન-ચારિત્રની પ્રાપ્તિ થતાં, સંસાર અને સંસારના ભાવોથી મુખ ફેરવી નાખી અણુમાત્ર પણ આ જગતમાં મારૂં નથી એવો અકિંચન્ય ભાવ તેમજ મારૂં સુખ મારા વીતરાગભાવમાં રહેલું છે, મારા આત્માથી અન્ય જગતના કોઈ બીજા પદાર્થમાં રહેલ નથી એવો નિરાલંબનભાવ હૃદયંગમ થતાં ભવભ્રમણનો થાક ઉતરતાં અનુપમ શાંતિનો અનુભવ કરે છે.

''ભેદ વિજ્ઞાન જગ્યો જીનકે ઘટ, શીતલ ચિત્ત ભયો જીમ ચંદન;
કેલી કરે શિવમારગમેં જગમાંહી જિનેશ્વર કે લઘુનંદન.''

'ભગવાનનો નાનો બાળક' કહયો. આનાથી ચઢિયાતી કઈ ચીજ અગર સન્માન ત્રણ જગતમાં રહેલ છે ?

वैयावच्चं नियंयं करेह उत्तमगुण धरंताणं।
सव्व किर पडिवाइ, वैयावच्चं अप्पडिवाइ।।

ઉત્તમગુણ ધારણ કરનારાઓની નિરંતર વૈયાવચ્ચ કરવી. બધા ગુણો પ્રતિપાતિ છે જ્યારે વૈયાવચ્ચ ગુણ અપ્રતિપાતિ છે. એટલે કે એકવાર જીવનમાં ઉતર્યા પછી વિલય પામતો નથી. પરંપરાએ સ્વર્ગ-મોક્ષનો દાયક છે.

Great things are not accomplished by physical strength and agility, but through consultation, authority and mature wisdom, which old age, far from lacking, is endowed with abundantly... — *Cicero*

નં.-૨૪

—: બલાબલનો વિચાર :—

सगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या यत्नत: पंडितेन।
अतिरसभकृतानां कर्मणामाविपत्ते:
भवतिहृदयदाहि शल्यतुल्यो विपाक:॥

સારૂં અગર ખોટું કાર્ય કરતા પહેલાં બુદ્ધિમાન પુરુષે તેના પરિણામનો વિચાર કરવો જોઈએ. ઘણી ઉતાવળથી પૂર્વાપર વિચાર કર્યા સિવાય કરેલા કાર્યથી કોઈ વખત એવી વિપદા આવી પડે છે કે તેના વિપાકો (Side effects) હૃદયમાં શલ્ય-કાંટાની માફક ચુમ્યા કરે છે. દાહકારક નીવડે છે.

તીર્થંકર ગોત્ર નામ પ્રકૃતિના બંધની કારણ ૧૬ કારણ ભાવનાઓમાં '**शक्तितस्त्यागतपश्च**' શક્તિ પ્રમાણે તપ તેમજ ત્યાગ-દાન કરવા કહ્યું છે.

શાસ્ત્રોમાં એકબાજુ પોતાની શક્તિને છુપાવ્યા વગર તપ-દાન કરવાનું કહ્યું સાથેસાથે પોતાની શક્તિ અનુસાર (અધિક માત્રામાં નહિ) કરવાનું પણ કહ્યું.

ભવભ્રમણનો ભય નિકટભવ્ય જીવનું મુખ્ય લક્ષણ કહેલ છે. ભવભ્રમણનો ભય જેને નથી તેનો મોક્ષમાર્ગમાં કોઈ અધિકાર નથી એમ પણ કહેલ છે. જેની પાસે પૂરતું ધન તેમજ આવક છે છતાં સુપાત્રે દાનમાં વાપરતો નથી તેને શાસ્ત્રમાં હાલતા-ચાલતા મડદા સમાન કહ્યો અને જેના ઘરમાં અતિથિનું સન્માન, પાત્રદાન વિ. નથી તે ઘરને શ્મશાનની ઉપમા જ્ઞાનીઓએ આપેલ છે.

દાન તથા તપ વર્તમાન સુખ અને ભાવિ સ્વર્ગ તેમજ પરંપરાએ મોક્ષ સુખનાં કારણ છે અને તેનો વિવેક 'બલાબલનો વિચાર' ગુણના ઉપલક્ષણમાં લબ્ધલક્ષી નામનો ગુણ છે.

Our generosity should not exceed our means... — *Cicero.*

इदं फलमिदं क्रिया करणमेदेषक्रमो
व्ययायमनुषंगजं फलमिदं दशेयं मम।
अयं सुहृदयं द्विषन् प्रयतदेशकालाविमाविति
प्रतिवितर्कयन् प्रयतते बुधो नेतर:॥

આ ફલ છે, આ ક્રિયા છે, આ કરણ છે, આ ક્રમ છે, આ વ્યય-ખર્ચ છે, આ આવક છે, આ મારી દશા છે, આ મિત્ર છે, આ શત્રુ છે. આ દેશ-કાળ છે એ સર્વ બાબતોનો પૂરો ખ્યાલ રાખી બુદ્ધિમાન પુરુષ પ્રયત્ન કરે છે. બીજો તેમ કરી શકતો નથી. આમાં 'બલાબલનો વિચાર' નામનો ગુણ તેના ઉપલક્ષણમાં આબેહુબ રીતે વર્ણવેલ છે.

'Know thy Limitations'
'Tread the middle road, whose course
Bright reason traces, and soft quiet soothes'

આઠ પ્રકારના બળ:

મનોબળ, વાગ્બળ, શારીરિક બળ, ચારિત્રબળ, બુદ્ધિબળ, ધનાદિસામગ્રીબળ, સંઘબળ, અંગરક્ષક.

'Beware of entrance to a quarrel, but being in;
Bear it that the opposed may beware of thee' — *Shakespeare*

बलं वीर्यं च संप्रेक्ष्य, श्रद्धामारोग्यमात्मन : ।
क्षेत्रं कालं च विज्ञाय, तथात्मानं नियोजयेत् ॥

બળ (શારીરિક સામર્થ્ય વિ.) વીર્ય (આત્મિક સામર્થ્ય) શ્રદ્ધા તેમજ આરોગ્ય જોઈને તેમજ ક્ષેત્ર અને કાળનો પૂરેપૂરો વિચાર કરીને મનુષ્યે પોતાના આત્મકાર્યનું નિયોજન-નિયંત્રણ કરવું.

तपस्तथा विधातव्यं चित्तं नार्त्तं भजेद् यथा।
विवेक : प्रमुखो धर्मो, नाविवेको हि शुध्यति ॥

તપનું આયોજન એ રીતે કરવું જેથી આર્તધ્યાન થાય નહી. વિવેક એ ધર્મનું મુખ્ય અંગ છે. અવિવેકીની કદી પણ શુદ્ધિ નથી.

ધંધામાં, લેવડ-દેવડમાં, આવક પ્રમાણે ખર્ચ, યોગ્ય માત્રામાં ભોજન વિ. 'આ બલાબલનો વિચાર' ગુણના ઉપલક્ષણો છે કોઈપણ કાર્ય કરતા પહેલાં, અનુષ્ઠાન કરતાં પહેલાં તેનો સુખપૂર્વક નિર્વાહ થાય, વચ્ચેથી પડતું મુકવાનો પ્રસંગ ન આવે, લીધેલ પ્રતિજ્ઞા કે આપેલા વચનનો ભંગ કરવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત ન થાય અને ઉત્તરોત્તર ચઢતા પરિણામ-ભાવ રહે એ આ ગુણનો ઉદ્દેશ છે.

'રઘુકુલ રીતિ ઐસી ચલી આઈ પ્રાણ જાય પણ વચન ના જાઈ'

गृहीतं व्रतं येन पुंसा च भग्नम्।
वृथा तस्य जन्म स्वकीयं च जातम् ॥

ગૃહણ કરેલ વ્રત-પ્રતિજ્ઞા (કે આપેલ વચન) નો જેણે ભંગ કર્યો તેનો જન્મ વૃથા છે.

નં.-૨૬

—: દીર્ઘદર્શી :—

''કારજ ધીરે હોત હૈ કાહે હોત અધીર;
સમય પાય તરૂવર ફલે, કેતીક સીંચો નીર.''

A mango tree gives fruit in a particular season, which is the result of unnoticed labour (process) of all the out seasons.

એક તત્વચિંતકને કોઈ તેમના મિત્રે પૂછ્યું કે આપના જ્ઞાનનો ઓછામાં ઓછા અક્ષરમાં સાર કહો? તેના ઉત્તરમાં તેમણે કહ્યું :-

૨ + ૨ = ૪

If you add 2 to 2, three is no power on earth to prevent it from being 4. Similarly without adding 2 to 2 there is no power on earth which can make it 4. This shows the depth and maturity of that philosopher and his practical wisdom.

To see the trouble long before it becomes an emergency is the true quality of foresightedness.

"A statesman thinks of the next generation, A politician of the next election."

નાનોપણ ઘા, વૈર, અગ્નિ અને દુશ્મનને ઉગતાંજ દાબી દેવા.

'A Stich in time saves nine'

'દેવું કરીને છોકરાને પરણાવી શકાય પણ દેવું કરીને ઘર ન બંધાવાય. ઘરડાઓની આ કહેવતમાં દુરંદેશીપણું સમાયેલું છે.' 'કોઈ સ્ત્રીને તેની ઉંમર પૂછવી નહીં અને પોતાની આવક કોઈને કહેવી નહીં.'

આજનું ખાવાનું પણ ત્યારે ગળે ઉતરે અને સંતોષ આપે જો આવતી કાલે મલશે તેની ખાત્રી હોય તો.

"For every evil in the world;
There is a remedy or there is none;
If there be one, try to find it;
If there be none, never mind it."

દુર્જનની સાથે મૈત્રિ કે પ્રીતિ કરવી નહીં. કોલસો ગરમ હોય ત્યારે દઝાડે છે અને ઠંડો હોય તો હાથ કાળા કરે છે.

**''दुर्जनने सह सौख्यं न प्रीति च कारयेत्।
उष्णो दहति अंगार शीतो कृष्णायते करं।।**

There is no way to strength and wisdom but to act strongly and wisely at the present moment, and each present moment reveals it own task."

There is no way from childhood to manhood but by growth.

The prime minister of a nation should speak less and hear more.'

'દીર્ઘદશીતા' નામના આ ગુણમાં બુદ્ધિની પરિપક્વતા (Maturity) ધૈર્ય, સજાગતા, વર્તમાન તેમજ ભવિષ્યનાં પરિણામો, Short term and long term benefits, temporary and long lasting effects, સમયસૂચકતા, જોયું ન જોયું કરવું, અપમાન ગળી જવું, મૌન રહેવું વિ. અનેક ગુણોનો સમન્વય રહેલો છે. તાત્કાલિક તેમજ ક્ષણિક લાગણીવેડાને બાજુએ રાખી દીર્ઘકાલીન અને સ્થાયી લાભ જોઈ નિર્ણય લેવામાં

દીર્ઘદર્શીતાનો ગુણ સમાયેલો છે. આ ગુણ વગર ક્ષણિક વિષયસુખોને અને વર્તમાન સ્ત્રી, પુત્ર, ધનાદિ સંપત્તિ છોડી સ્થાયી સુખદાતા એવા મોક્ષમાર્ગમાં કોણ પ્રવેશ કરી શકે ?

It is better to put a strong fence round the top of the hill than an ambulance down the valley.... *J. Montaine*

તળેટી ઉપર એમ્બ્યુલન્સ તૈયાર રાખવા કરતાં ડુંગરની ટોચની ચારે બાજુ વાડ કરી લેવી વધારે સારી છે.

'It you want peace, be prepared for the war'

કીડીઓ પણ ચોમાસુ બેસતા પહેલાં તેના દરમાં અનાજના કણનો-જથ્થાનો સંગ્રહ કરી લે છે.

દિવસે એવું કામ કરવું કે રાત્રે નિરાંતે ઉંઘ આવે, વર્ષની બીજી ઋતુઓમાં એવું કામ કરવું કે ચોમાસુ નિર્વિઘ્ને પસાર થઈ જાય. અને જીવન દરમ્યાન એવું કામ કરવું કે સમાધિ મરણપૂર્વક આ દેહ છોડી પરભવમાં ધર્મસાધનાનું અનુસંધાન કાયમ રહે.

'Better late than never' - 'જાગ્યા ત્યાંથી સવાર'

ઘરમાં પગ મૂકતાં કુટુંબના સભ્યોમાં તકરાર કે બોલાચાલી થતી જોઈ સીધા શયનખંડમાં જઈ કાંઈપણ બોલ્યા વગર સૂઈ જવું એના જેવો કોઈ ઠપકો નથી.

'Highest reprimands are those which are never spoken'

'The Surest way to make it hard for your sons is to make easy for them."

છોકરાઓને અઢળક મિલ્કત અને તૈયાર ધંધો સીધોજ હાથમાં મુકવામાં કેટલું જોખમ રહેલું છે તે આજકાલના શ્રીમંત કુટુંબોમાં લગભગ ઘર દીઠ ચાલતા ઝઘડા તેમજ કુસંપ ઉપરથી માલમ પડી આવશે. આમ કરવામાં તેમની કુસેવા રહેલી છે એવું સફળ ધંધાધારીઓ સમજતા હોવા છતાં કોણે તેનો અમલ કર્યો ?

છોકરો રાતના કલબોમાં જઈ એક રાતમાં એક બે હજાર રૂપિયાનું પાણી કરી આવે તેનો ખાસ વાંધો કદાચ કરોડપતિના ઘરમાં ન હોય પણ તેનાથી તેના જીવનમાં નાની કુમળી વયમાં જે કુસંસ્કાર અને વાસના ઘર કરે છે તેનાથી તેના જીવનની બરબાદી સિવાય બીજું શું પરિણામ આવે ?

It is very important for an elderly man in a family to teach the boy from his childhood, responsible attitude to money.'

In nature there are neither rewards nor punishments; there are only consequences... *— R. G. Ingersoll.*

દીર્ઘદર્શીતાનો અભાવ અને ટુંકીદ્રષ્ટિ પૂર્વક લીધેલા નિર્ણયોથી કેટલાયે કુટુંબોની, સમાજની, રાષ્ટ્રની પાયમાલી થયેલી છે તેના દાખલાઓ ગોતવા જવું પડે તેમ નથી.

"The wheels of nature grind slowly but surely"

"To plough is to pray, to plant is to prophesy and the harvest answers and fulfils."

"You cannot get what you wish or pray for but what you richly deserve or justly earn."

'એક અર્થશાસ્ત્રીએ કહ્યું છે કે તમારી પાસે છોકરાઓને આપી જવા ખાસ મિલ્કત ન હોય તો કોઈ આગળ વધતા શહેરથી થોડીક દૂર સસ્તી જગ્યા લઈ વારસામાં મૂકતા જાવ'

આ દીર્ઘદર્શીતાનો ગુણ (તત્ત્વજ્ઞાનનો અભ્યાસ થતાં) આગળ વધી વર્તમાન ક્ષણિક ઈન્દ્રિયસુખોમાં હિત-બુદ્ધિનો અભાવ જોઈ સ્થાયી-અતીન્દ્રિય સુખની પ્રાપ્તિ માટે ભગવાને બતાવેલ મોક્ષમાર્ગમાં જીવને પ્રેરે છે. જનતા સરકારના પતનમાં તેના નેતાઓનાં રોજબરોજનાં વિરોધાભાસી ભાષણો, પરિપક્વતા અને દીર્ઘદર્શીપણાનો અભાવ મુખ્યપણે હતાં. ખોરાક ખાવો અને પચવો જેમ જુદી વાત છે તેમ સત્તા મળવી અને પચવી જુદી વાત છે.

નં.-૨૭

—: વિશેષજ્ઞ :—

ભગવાન મહાવીરને જીજ્ઞાસુએ પ્રશ્ન કર્યો ભગવન્! જિનશાસનનો સાર શું છે ? પ્રભુએ જવાબ આપ્યો.

જેવી ઈચ્છા તું તારા માટે રાખે છે, એવું વર્તન તું બીજાઓ પ્રત્યે કર. તું તારા માટે જે નથી ઈચ્છતો તેવું વર્તન બીજાઓ પ્રત્યે પણ ન કર. સહુ જીવોને આત્મતુલ્ય (પોતાની માફક) સમજીને જીવવું એજ જિનશાસનનો સાર છે.

संसार विषमदुर्गे भवग्रहणे कथमपि मया भ्रमता।
दृष्टो जिनवरदृष्टो ज्येष्टो धर्मो इति चिंतयेत्॥

સંસારરૂપી વિકટ વનમાં ભ્રમણ કરતાં કરતાં મને જિનવરદ્વારા ઉપદેશવામાં આવેલ ઉત્કૃષ્ટ ધર્મની પ્રાપ્તિ થઈ છે એવું ચિંતવન કરવું. — *મુલાચાર પાન-૪૨૩*

હે પ્રભુ જ્યાંસુધી મારો મોક્ષ ન થાય ત્યાંસુધી બાકીના ભવોમાં મને ૧) શાસ્ત્ર પઠન, ૨) જિનભક્તિ, ૩) સત્પુરુષોની ભક્તિ, ૪) સુચારિત્રવાન જીવોના ગુણોની કથા, ૫) પરનિંદાનો ત્યાગ, ૬) પ્રિય વચન અને ૭) આત્મતત્ત્વનો વિચાર કાયમ રહો.

હે ભગવંત! માનસ્તંભની રચના એજ પાષાણ (આરસપાણ) અને એજ રત્નોથી નિર્માણ થયેલ છે, છતાં કોઈ રાજમહલ યા નિવાસમાં તેમજ સ્ત્રીના ગળાના હારમાં બંને મમત્વ અને અભિમાન-મદ વધારવાનાં કારણ-નિમિત્ત બને છે. જ્યારે માનસ્તંભ કોઈના પણ માનને ઓગળી જવાનું નિમિત્ત બને છે. એ આપની વીતરાગતાનો કોઈ અચિંત્ય પ્રભાવ છે.

હે પ્રભો! પરમભાવથી આપના ચરણમાં પ્રણમીને મારી એકજ પ્રાર્થના છે કે આપના વચનરૂપી રત્નોને ગ્રહણ કરવામાં મને સદાને માટે આલ્હાદ પ્રસન્નતા-ઉલ્લાસ વર્તો!

આ પ્રમાણે ભૂમિકા બાંધી પ્રાજ્ઞ પુરુષના હૃદયમાં ભગવાનનાં કયાં વચનો ઉલ્લસી રહ્યાં છે તેની વાત :

'હે ગૌતમ સર્વ ગીતો વિલાપ સમાન છે. સર્વ નૃત્યો વિડંબના સમાન છે. સર્વ રત્નજડીત આભરણો ભારરૂપ છે અને સર્વ કામભોગો (જન્મજન્માંતરોમાં) દુ:ખના વહનારા છે એમ જાણ.'

सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा॥

आयतुले पयासु : પ્રાણીઓને પોતાની સમાન દેખ!

शीवमस्तु सर्वजगत: परहित निरता भवन्तु भूतगणा:।
दोषा प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीनो: भवन्तु लोक:॥

સારાયે જગતનું કલ્યાણ થાઓ. બીજા જીવોના હિતમાં સર્વજીવો રચ્યા પચ્યા રહો. દોષોનો સર્વથા નાશ થાઓ અને સર્વ ઠેકાણે જીવો સુખી રહો.

सर्वेऽपि सुखीन: सन्तु, सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्॥

સર્વ જીવો સુખી થાઓ. સર્વ જીવો નિરામય-નિરોગી રહો. સર્વ જીવો સાચા-કલ્યાણના માર્ગને-મોક્ષમાર્ગને દેખતા થાઓ અને કોઈ જીવને દુ:ખ ન થાઓ.

दुकखकरवय कम्मकरवय समाधिमरणं च बोहिलाभो य।
एयं पत्थेयव्वं ण पत्थणीयं तओ अण्णं॥ १२१२॥ — *ભગવતી આરાધના*

મારા દુ:ખનો ક્ષય થાઓ. મારા કર્મનો ક્ષય થાઓ. મને બોધિબીજની પ્રાપ્તિ થાઓ અને મને સમાધિ મરણની પ્રાપ્તિ હો! આજ પ્રાર્થનીય છે બીજું કંઈ (જગતમાં) પ્રાર્થનીય નથી.

सम्यग्दर्शनविज्ञानचारित्रमप्राप्त प्रापणं बोधि : ।
तेषामेव निर्विघ्नेन भवांतरे प्रापणं समाधि : ॥

દુર્લભ સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન અને ચારિત્રની પ્રાપ્તિ તે બોધિ અને ભવાંતરમાં એટલે કે બીજા ભવમાં તેને નિર્વિઘ્નપણે સાથે લઈને જવું તેનું નામ સમાધિમરણ (એ બે લક્ષણો યથાસંભવ સર્વ જગ્યાએ ઘટાવવાં).

— પરમાત્મપ્રકાશ પાન-૧૬.

श्रीवीरेण मम प्रसन्न मनसा तत्किंचिदुच्चै : पद ।
प्राप्त्यर्थं परमोपदेशवचनं चित्ते समारोपितम् ॥
येनास्तामिदमेकभूतलगतं राज्यं क्षणध्वंसितम् ।
त्रैलोकस्य मे प्रियमिह श्रीमज्जिनेश प्रभो ॥

શ્રી વીરપ્રભુએ મને પ્રસન્ન ચિત્તથી મારા ચિત્તમાં ઉચ્ચપદની પ્રાપ્તિ અર્થે પરમોપદેશરૂપી વચનોનું સમારોપણ કરેલ છે. જેથી આ ભૂતલપરનું ક્ષણનશ્વર રાજ્ય તો દૂર રહો! પરંતુ હે જિનેશ્વર પ્રભુ! ત્રણ લોકનું રાજ્ય પણ હવે મને ખપતું નથી. *પદ્મનંદી પંચવિંશતિકા (શ્રી વીરનંદી આશ્ચર્યકૃત)*

— આલોચના અધિકાર શ્લોક-૩૨

जिनधर्मो विनिर्मुकत्वा मा भवेत् चक्रवर्त्यपि ।
स्याश्चेत् दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितो ॥

"જિનધર્મ વગરનું ચક્રવર્તીપણું પણ મને ખપતું થી. હે પ્રભુ! આપના પ્રરૂપેલ જિનધર્મના અંતરંગમાં સંસ્કાર સહિતની દરિદ્રતા પણ મને કબુલ-મંજુર છે."

ભૂતકાળમાં થઈ ગયેલા અનંત જ્ઞાની ભગવંતો જેમણે વાસ્તવિક સુખ અને તેનાં કારણો જાણ્યાં તેમજ અનુભવમાં લીધેલ છે તેમના હૃદયના આ ઉદ્ગારો મુમુક્ષુજીવે હરરોજ યાદ કરવા યોગ્ય છે.

"All worldly possessions are vitality sappers. Their presence is the indication of weakness and not strength"

'In all worldly possessions, self possession is the best'

'આલંબન સાધન જે ત્યાગે પર પરિણતિને ભાગે રે.'
અક્ષય દર્શન, જ્ઞાન, વૈરાગે, આનંદઘન પ્રભુ જાગેરે." — *આનંદઘનજી*

असंतोषवत : सौख्यं न शक्रस्य न चक्रिण : ।
जन्तो : संतोषभाजो यदभयस्येव जायते ॥

અસંતોષવાળા ઈન્દ્રિને કે ચક્રવર્તીને પણ તે સુખ મળી શકતું નથી જે સુખ સંતોષવૃત્તિવાળા અભયકુમારને પ્રાપ્ત હતું.

મગધદેશના પાટનગર રાજગ્રહી નગરીમાં પરમ અર્હંતભકત શ્રેણિકરાજા રાજ્ય કરતા હતા. તેમને અભયકુમાર નામે પુત્ર હતો. બુદ્ધિના વૈભવથી તે પાંચસો પ્રધાનોનો આગેવાન હતો અને રાજતંત્રમાં ધુરંધર અગ્રણી હતો. તેના બુદ્ધિબળથી આશ્ચર્યચકિત તેમજ ભયગ્રસ્ત બીજાં રાજ્યો તેનાથી સાવધ રહેતા તેમજ આપદકાળે અભયકુમારની સલાહ લેતા. પ્રજા તેમજ અન્યદેશના રાજાઓએ અનુકરણ કરવા જેવાં પ્રજાહિતનાં-રાજ્યહિતનાં તેમજ ધર્મહિતનાં અનેક કાર્યો તેણે જીવન દરમ્યાન કર્યાં હતાં. પુત્રના આવા બુદ્ધિના વૈભવથી તેમજ અદ્વિતીય પ્રજાહિતનાં

કાર્યોથી આકર્ષાઈ શ્રેણિક રાજાએ (પોતાના બીજા પુત્રો હોવા છતાં) અભયકુમારને રાજ્ય સોંપવાનો નિર્ણય કર્યો અને અભયકુમારને તેનો સ્વીકાર કરવા જણાવ્યું. અભયકુમારે ઉત્તર આપ્યો કે હે પિતાજી! મારી મનોવૃત્તિ હવે પરલોક સંબંધી પરમાર્થ સાધવા તરફ ઉત્સુક છે, મને આ રાજ્યની બીલકુલ ઈચ્છા નથી. આગળ કહે છે કે પિતાજી! આપ સારી રીતે જાણો છો કે મનુષ્યે પોતાનું સમગ્ર જીવન અને સર્વસ્વ અક્ષય એવા મોક્ષસુખની પ્રાપ્તિ અર્થે વાપરવાં તેમાં તેની બુદ્ધિમતા રહેલી છે. છેવટની અવસ્થામાં પણ રાજ્યાદિકનો લોભ અને વિષયાસક્તિથી છૂટી પરમાર્થને ન સાધે તો તેણે અણમોલ અને અત્યંત દુર્લભ એવા મનુષ્યજન્મને પામી શું સાધ્યું? આત્મસાધના સિવાય કોઈ ઈચ્છા મારા મનમાં રહી નથી. હું આપને અત્યંત નમ્રતાપૂર્વક અને બે હાથ જોડીને વિનંતી કરૂં છું કે આપ આ રાજ્ય બીજા ભાઈઓને સોંપો. શ્રેણિક રાજાએ અનેક પ્રકારે સમજાવ્યા છતાં સંતોષવૃત્તિના ધારક અને આત્મજાગૃતિવાળા અભયકુમાર મક્કમ રહ્યા, અને રાજ્યનો સ્વીકાર ન કર્યો અને પિતાની આજ્ઞા મેળવી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ પાસે ચારિત્ર અંગીકાર કર્યું; અને બાકીનું આયુષ્ય ધર્મધ્યાનમાં વ્યતીત કરી અંતીમ સંલેખનાપૂર્વક પંચપરમેષ્ઠિના સ્મરણ સહિત આ નશ્વર દેહનો ત્યાગ કરી સર્વાર્થસિદ્ધિ વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા. ત્યાંથી ચ્યવી મનુષ્યભવ ધારણ કરી તેજ ભવે મોક્ષ પામશે.

भयाशास्नेहलोभाच्च कुदेवागमलिङ्गिनाम्।
प्रणामं विनयं चैव न कूर्यु: शुद्धदृष्टय: ॥

સમ્યગ્દ્રષ્ટી જીવોએ ભય, આશા, સ્નેહ અગર તો લોભ (લોકલજ્જા આમાં ગર્ભિત છે)ના કારણે કુદેવ, કુશાસ્ત્ર કે કુલિંડિગઓને નમસ્કાર કે તેમનો વિનય ન કરવો જોઈએ.

—: પદ્મપુરાણ :—

રામાયણના યુદ્ધમાં શ્રીરામ અને રાવણ એક બીજા સામે બાણનો વરસાદ વર્ષાવતા હતા. તે વખતે યુદ્ધભુમિપર રામ પુણ્યબંધ કરતા હતા તેમજ પોતાના પદયોગ્ય નિર્જરા પણ થતી હતી. જ્યારે રાવણ તીવ્ર પાપબંધ કરતો હતો. પોતાની ધર્મપત્ની સીતાને દુશ્મનના હાથમાંથી છોડાવવા (ઉત્તરદાયિત્વ નિભાવવા) તેમજ પ્રજાપર વીરત્વનો સુંદર દાખલો બેસાડવા અને ન્યાય-પ્રાપ્ત પરિગ્રહનું રક્ષણ કરવારૂપ જેતે સ્થાનને યોગ્ય વિશુદ્ધતાના કારણે રામ પુણ્યબંધ કરતા હતા જ્યારે રાવણ પરસ્ત્રીલંપટતા અને અન્યાયવિષયભોગની પ્રાપ્તિના પ્રયોજન યુક્ત સંકેલેશ ભાવથી પાપબંધ કરતો હતો. તેના પરિણામ સ્વરૂપ (યુદ્ધનો અંત આવતાં) રાવણ રણભૂમીપર દેહનો ત્યાગ કરી નરકમાં ઉત્પન્ન થયો અને શ્રીરામ પાછલી અવસ્થામાં રાજ્યનો ત્યાગ કરી જિનદીક્ષા ગ્રહણ કરી ધ્યાન અને અધ્યયનથી સર્વકર્મનો ક્ષય કરી મોક્ષ પામ્યા. સિતાનો જીવ બારમાં સ્વર્ગમાં ઉત્પન્ન થયેલ છે. એજ રાવણનો જીવ ભવિષ્યમાં જૈનધર્મમાં તીર્થંકર થશે. અને સિતાનો જીવ તેમના પટશિષ્ય ગણધર થશે. **સંસારમાં આવી વિચિત્રતા જોઈ મનુષ્યે વૈરાગ્યપૂર્વક જીવન વિતાવી જિનમાર્ગમાં રત રહી મોક્ષમાર્ગ તરફ ડગલે ડગલે આગળ વધી આ મનુષ્ય જીવન સફળ કરવું તેના જેવું બુદ્ધિમતાનું કામ બીજું કોઈ નથી.** સર્વ અવસર આવી ચૂકયો છે.

जल्लेसे मरइ तल्लेसे उवज्जइ

જીવ જે લેશ્યા સહિત મરણ પામે છે તેવી જ લેશ્યા સહિત અન્યગતિમાં ઉપજે છે.

પીત, પદ્મ અને શુકલ એ ત્રણ શુભ લેશ્યાઓ છે. જ્યારે કૃષ્ણ, નીલ અને કાપોત એ ત્રણ અશુભ **લેશ્યાઓ છે.** મનુષ્ય તેમજ તિર્યંચ ગતિમાં સંજ્ઞી, પર્યાપ્ત, જાગૃત દશામાં પીત, પદ્મ અગર શુકલ લેશ્યા સહિત **જીવનેજ પ્રથમો**પશમ સમક્તિ થાય છે. નરકમાં અશુભલેશ્યામાં પણ પ્રથમોપશમ સમક્તિ થાય.

—: ગોમટ્ટસારમાં લેશ્યાનું સ્વરૂપ દ્રષ્ટાંતપૂર્વક :—

पहिया जे छ पुरिसा, परिभट्ठारणमज्झदेसम्हि।
फलभरियरुकरवमेगं, पेक्खिवता ते विचिंतति॥
णिमूलखंधसाहुवसाहं, छित्तुं चिणितुं पडिदाइ।
खाउ फलाइ इदि जं, मणेण वयणं हवे कम्मे॥

કૃષ્ણાદિ પ્રત્યેક છ લેશ્યાવાળા પુરુષો માર્ગથી ભ્રષ્ટ થતાં વનમાં ફળોથી ભરેલા એક જાંબુના ઝાડને દેખીને વિચાર કરે છે :

કૃષ્ણ લેશ્યાવાળો ઝાડને મૂળથી ઉખેડી ફળ ખાવાનો, નીલ લેશ્યાવાળો મોટી ડાળને કાપીને ફળ ખાવાનો, કાપોત લેશ્યાવાળો ફળોના ઝુમખાઓથી ભરેલ નાની ડાળને કાપીને ફળ ખાવાનો, પીત લેશ્યાવાળો ફળોનાં એક બે ઝુમખાં જેમાં કાચાપાકા ફળો બેઠેલા છે તેને જ તોડીને તેમાંથી ફળ ખાવાનો, પદ્મલેશ્યાવાળો જે તે ઝુમખામાંથી પાકાં પાકાં જોઈતાં ફળો ચૂંટીને ખાવાનો. જયારે શુકલલેશ્યાવાળો પાકીને સ્વયં ભૂમિપર પડેલાં ફળોને સાફ કરીને ખાવાનો મનસુબો મન-વચન અને કાયાથી કરે છે.

જીવની જે પ્રકારે ગતિ થવાની હોય તે પ્રકારની ચેષ્ટા જીવને હોય છે.

જીવને લેશ્યાની વિશુદ્ધિ અધ્યવસાન-ધર્મચિંતનથી થાય છે. મંદકષાયવાળા જીવોને વિશુદ્ધિ હોય છે. કષાયોની મંદતા સમસ્ત બાહ્ય પરિગ્રહનો ત્યાગ કરનારને થાય છે. કષાયની તીવ્રતાવાળો જીવ જ સર્વ પાપરૂપ પરિગ્રહને ગ્રહણ કરે છે. જેમ અગ્નિ ઈંધન વડે વધે છે અને ઈંધન વગર બુઝાઈ જાય છે તેમ કષાયો પરિગ્રહવડે વધે છે અને તેના વગર શાંત થાય છે. — *ભગવતી આરાધના ગાથા ૧૯૧૭-૨૦*

ઉપર ઉપરના દેવોમાં પરિગ્રહ ઓછો હોય છે. અને પુણ્યાતિશય વધુ વધુ હોય છે. તેથી માલુમ પડે છે કે બાહ્ય પરિગ્રહનો સંચય પુણ્યનું ફળ નથી પણ મુર્ચ્છાનું ફળ છે. (એટલે કે મુર્ચ્છા સહિત જીવ વધુને વધુ પરિગ્રહમાં પ્રયત્નશીલ રહે છે અને તેને માટે આરંભ-સમારંભમાં પાછું વાળી જોતો નથી). ઉપર ઉપરના દેવોમાં મુર્ચ્છા ઓછી હોય છે જે તેમના પૂર્વભવના સંસ્કારનું ફળ છે અને તેથી પરિગ્રહ પણ ઓછો હોય છે. — *સર્વાર્થસિદ્ધિ પાન-૨૫૨.*

સર્વાર્થસિદ્ધિના દેવોને લગભગ કંઈજ પરિગ્રહ નથી. બધા બાળ બ્રહ્મચારી હોય છે. ત્યાં કોઈ દેવી નથી તેમજ બીજા દેવલોકમાંથી પણ કોઈ દેવી ત્યાં જઈ શકતી નથી. કોઈ નોકર-ચાકર નથી. છતાં ઉત્કૃષ્ટ સુખને ભોગવે છે તેનું કારણ સમ્યગ્દર્શન અને શુકલલેશ્યા. સમ્યગ્દર્શન સહિત શુકલલેશ્યાવાળો જીવ જ સમાધિમરણ કરી સર્વાર્થસિદ્ધિનામના સર્વશ્રેષ્ઠ વિમાનમાં ઉપજે છે. તે વિમાનનું સ્થાન પણ સિદ્ધશીલાથી નીચે પ્રથમ છે.

ચક્રવર્તીની બે જ ગતિ હોય છે. સર્વ પરિગ્રહનો ત્યાગ કરી જિનદીક્ષા ગ્રહણ કરે તો ક્ષપકશ્રેણી માંડી મોક્ષ જાય અગર તો કંઈક કર્મો રહી જાય તો બનતાસુધી સર્વાર્થસિદ્ધિ અગર પાંચ અનુત્તર વિમાનમાંથી **કોઈ એક**માં ઉપજે અને ત્યાંથી ચ્યવી મનુષ્યભવ ધારણ કરી ફરી જિનદીક્ષા ધારણ કરી નિયમથી મોક્ષે **જાય.**

જ્યારે આરંભ પરિગ્રહમાં જીવનના અંતસુધી રચ્યાપચ્યા રહે તો મરીને સાતમી નરકે જાય. આ ઉદાહરણ ઉત્કૃષ્ટ **ઉત્તર-દક્ષિણ દિશાની જેમ છે. દરેક** લેશ્યાની તારતમ્યતા અસંખ્ય પ્રકારની છે. તેને યોગ્ય આવતા **ભવની ગતિમાં પણ** (ચોરાશી લાખ હોવા છતાં) તારતમ્યતાની અપેક્ષાએ દરેકના **અસંખ્ય** પ્રકાર છે. જેને પોતાનું **હિત હૈયે વસ્યું છે** તેણે પોતાની લેશ્યા સુધારવાનો રાતદિન પ્રયાસ કરવો.

—: છ લેશ્યાવાળા જીવના લક્ષણો (ગોમટ્ટસારગાથા-૫૦૯ થી ૫૧૮) :—

—: કૃષ્ણ લેશ્યા :—

चण्डो न मुञ्चति वैरं भण्डलशीलश्च धर्मदयारहित:।
दुष्टो न चैति वशं लक्षणमेतत्तु कृष्णस्य॥

તીવ્ર ક્રોધ કરવાવાળો, વેરભાવને છોડે નહીં. લકડણા સ્વભાવવાળો, ધર્મ અને દયાથી રહિત, અવશ એટલે સ્વચ્છંદી આ સૌ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા જીવનાં લક્ષણ જાણવાં.

—: નીલલેશ્યા :—

मन्दो बुद्धिविहीनो निर्विज्ञानी च विषयलोलश्च।
मानी मायी च तथा आलस्यश्चैव भेद्यश्च।
निंद्रा वञ्चन बहुलो धनधान्ये भवति तीव्रसंज्ञश्च।
लक्षणमतेद् भणितं समासतो नीललेश्यश्च॥

મંદ, (not smart) બુદ્ધિહીન, ઉંડી સમજ વગરનો, વિષય લંપટ (ગૃદ્ધિવાળો) અભિમાની, માયાવી, આળસુ, મેઢો, નિદ્રાળુ (ઉંઘણસી) બીજાને ઢગવાના સ્વભાવવાળો, ધન-ધાન્યાદિ પરિગ્રહમાં તીવ્ર આસક્તિવાળો. આ બધાં સંક્ષેપમાં નીલ લેશ્યાવાળા જીવનાં લક્ષણ જાણવાં.

—: કાપોત લેશ્યા :—

रुष्यति निन्दति अन्यं दुष्यति बहुशश्च शोकभय बहुल:।
असूयति पराभवति परं प्रशंसति आत्मानं बहुष:॥
नच प्रत्येति परं स आत्मानमिव परमपि मन्यमान:।
तुष्यति अभिष्टुवतो न च जानाति हानिवृद्धिर्वा॥
मरणं प्रार्थयति रणे ददाति सुबहुकमपि स्तुयमानस्तु।
न गणयति कार्याकार्यं लक्षणमेतत्तु कापोतस्य॥

બીજા તરફ રોષ કરનાર, તેમની નિંદા કરનાર, બીજાના ઉપર દોષનું આરોપણ કરનાર, અધિકતર શોકાતુર અને ભયગ્રસ્ત રહેનાર, બીજાના ઐશ્વર્યને સહન ન કરી શકે એવા (અદેખસકા) સ્વભાવવાળો, બીજાનો પરાભવ કરનાર, તેને ઉતારી પાડનાર, પોતાના ખુબ વખાણ કરનાર, કોઈના પર વિશ્વાસ ન કરનાર, પોતાની માફક બધા જીવોને દૂષણવાળા માનનાર, પોતાના વખાણ કરનાર પર ખુશ થઈ પોતાની હાની-વૃદ્ધિ (લાભ-નુકસાન) જોયા વગર કામ કરી બેસનાર, સંગ્રામમાં પોતાનું મરણ (માનાદિના કારણે) પણ ઈચ્છનાર, પોતાના વખાણ કરનારને બહુ ધનાદિ આપી દેનાર અને શું કાર્ય કરવા જોગ છે અને શું કરવા જોગ નથી તેનો જેને વિવેક નથી એવાં લક્ષણવાળો જીવ કાપોત લેશ્યાવાળો જાણવો.

—: પીત (તેજો) લેશ્યા :—

जाणइ कज्जाकज्जं सेयमसेयं च सव्वसमपासी।
दयदाणरदो य मिदु लकखणमेयं तु तेउस्स॥

કાર્ય-અકાર્ય, સેવ્ય-અસેવ્યને સમજવાવાળો સર્વઠેકાણે સમભાવપૂર્વક રહેવાવાળો, દયા-દાનમાં રત, કોમળ **સ્વભાવવાળો** આ લક્ષણો તેજો (પીત) લેશ્યાવાળા જીવનાં જાણવાં.

—: પદ્મલેશ્યા :—

त्यागी भद्र: सुकर: उद्युक्तकर्मा च क्षमेत बहुकमपि।
साधुगुरुपूजनरतो लक्षणमेतत्तु पद्मस्य॥

ત્યાગી, ભદ્રપરિણામી, નિર્મળ તેમજ સરળ હૃદયવાળો, પોતાનું શ્રેય સાધવામાં ઉધમી, સર્વપ્રકારે સહનશીલ, **ક્ષમાવાન** સ્વભાવવાળો, સાધુ તેમજ ગુરૂજનની સેવામાં અનુરક્ત આ લક્ષણો પદ્મલેશ્યાવાળા જીવનાં જાણવા.

—: શુકલ લેશ્યા :—

न च करोति पक्षपातं नापि च निदानं समश्च सर्वेषाम्।
न रतः च रागद्वेषौ स्नेहीऽपि शुकललेश्यश्च॥

કોઈનો પક્ષપાત ન કરનાર, નિદાન ન કરનાર, સમભાવી, રાગદ્વેષ વિનાનો, સ્નેહ રહિત, આ લક્ષણો શુકલ લેશ્યાવાળા જીવનાં જાણવા. *— ગોમટ્ટસાર ગાથા-૫૦૯ થી ૫૧૮*

સમસ્ત ધર્મનું મૂળ ભાવના છે. તેનાથી પરિણામોની ઉજ્જવળતા થાય છે. પરિણામોની ઉજ્જવળતા એ વિશુદ્ધિ અંગ છે. વિશુદ્ધિ અને કષાયની મંદતામાં કારણ કાર્ય સંબંધ છે. લક્ષ્ય-લક્ષણ સંબંધ નથી. એટલે કે વિશુદ્ધિ કારણ છે અને તેનાથી સત્તામાં રહેલ કર્મની ઉત્કર્ષણ, અપકર્ષણ, સંક્રમણ, નિર્જરા આદિથી કષાયોની મંદતા થાય છે. ક્ષયોપશમાદિ પાંચ લબ્ધિઓ ઉત્તરોત્તર અસંખ્યાતવૃદ્ધિપૂર્વકના વિશુદ્ધિના પરિણામો છે જે પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વનું કારણ છે.

—: ધર્મધ્યાન :—

અરિહંત ભગવાન દ્વારા પ્રરૂપેલ દ્રષ્ટિને અવલંબીને પદાર્થનું (દ્રવ્ય સ્વભાવ અને પર્યાય સ્વભાવનું) જે ચિંતવન કરવામાં આવે છે તેને આજ્ઞાવિચય ધર્મધ્યાન કહેવામાં આવેલ છે.

રાગ અને દ્વેષનો અનુબંધ સર્વદુ:ખોનું મૂળ છે એમ જે ચિંતવન કરવામાં આવે છે. એટલે કે એ દુ:ખ દૂર કરવાના ઉપાયો-સાચા માર્ગનું જે ચિંતવન કરવામાં આવે છે તેને અપાય વિચય ધર્મધ્યાન કહેવામાં આવેલ છે.

સુખ-દુ:ખ એ કરેલા કર્મનો વિપાક-ફળ છે. અને કયા કર્મનું શું ફળ છે એ ચિંતવન કરવું તેને વિપાક વિચય ધર્મધ્યાન કહેવામાં આવેલ છે.

ત્રણલોકની આકૃતિ-ક્ષેત્રાદિ વિશેષતાપૂર્વક અને તેમાં રહેલા જીવાદિ પદાર્થો અને તેના સ્વભાવો તેમજ તેની વિચિત્રતાનું જે ચિંતવન કરવું તેને સંસ્થાન વિચય ધર્મધ્યાન કહેવામાં આવેલ છે.

उन्मादो न भवेद् बुद्धेरर्हद् वचन चिंतनात्।
अपाय चिंतनं कृत्वा जनो दोषाद् विमुच्यते॥
अशुभे न रतिं याति, विपाकं परिचिंतयन्।
वैविध्यं जगतो दृष्ट्वा नासक्तिं भजते पुमान्॥

અરિહંત ભગવાનની આજ્ઞાનુસાર પદાર્થનું (દ્રવ્ય-સ્વભાવ અને પર્યાય સ્વભાવનું) ચિંતવન કરવાથી બુદ્ધિનો ઉન્માદ થતો નથી. અપાય વિચય ધર્મધ્યાનથી દોષોનું નિવારણ થાય છે. વિપાક વિચય ધર્મધ્યાનથી અશુભ કાર્યોમાં રતિનો અભાવ થાય છે અને સંસ્થાન વિચય ધર્મધ્યાનથી જગતની વિવિધતા-વિચિત્રતા જોવામાં આવતાં ક્યાંય આસક્તિ થતી નથી.

વિશેષ જાણવાની ઉત્કંઠાવાળા પાત્ર જીવે તત્ત્વાર્થસૂત્ર-ગોમટ્ટસારાદિ શાસ્ત્રોનો બારીકાઈપૂર્વક અભ્યાસ કરવો.

'सामान्यतो नूनं विशेषो बलवान् भवेत्'

સામાન્ય કરતાં વિશેષજ્ઞાન બળવત્તર હોય છે તેમજ જેતે જ્ઞાનને દઢ કરે છે.

विशुद्धं जायते चित्तं, लेश्यापि विशुध्यते।
अतीन्द्रियं भवेत्सौख्यं, धर्मध्यानेन देहिनाम्॥

ધર્મધ્યાનથી જીવોના મન (ચિત્ત)ની વિશુદ્ધિ થાય છે. લેશ્યાની પણ વિશુદ્ધિ થાય છે. અતીન્દ્રિય

(નિરપેક્ષ-નિરાલંબન) સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. જેને સહજ અગર તો સ્વાભાવિક સુખ કહેવામાં આવેલ છે (સહજ = **सह** + **ज**) **सह** એટલે સાથે **ज** એટલે જન્મેલું. સ્વાભાવિક = **स्वभाव** + **इक** = વાળુ

विजहाति शरीरं यो धर्मचिंतनपूर्वकम्।
अनासक्तः स प्राप्नोति स्वर्गगतिमनुत्तराम्॥

જે પોતાના શરીરનો ધર્મધ્યાનપૂર્વક ત્યાગ કરે છે તે અનાસક્ત જીવ સ્વર્ગ તેમજ (પરંપરાએ) મોક્ષગતિને પામે છે. *— સંબોધિ પાન-૨૫૧-૨૫૬*

—: ધર્મધ્યાનનાં લક્ષણ :—

આર્જવ એટલે સરળતા, લઘુતા એટલે હળવાપણું, માર્દવ એટલે નમ્રતા, ઉપશમભાવ, જિનસૂત્રમાં આત્મહિતની બુદ્ધિ અને અસંગતાની રૂચિ એ ધર્મધ્યાનનાં લક્ષણ છે.

—: ધર્મધ્યાનનાં આલંબન :—

વાંચન, પૂછવું, પરિવર્તન (ફરી ફરી યાદ કરી જવું) અનુપ્રેક્ષણ (અર્થોના ઉંડાણ, રહસ્યનો એકાગ્રતાપૂર્વક વિચાર કરવો) અને તેને પોષણરૂપ અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓ. તેમજ મૈત્રી, પ્રમોદ, કરૂણા અને માધ્યસ્થતા આ ચાર ભાવનાઓ એ ધર્મધ્યાનનાં આલંબન છે.

—: ધર્મધ્યાનની ૪ અનુપ્રેક્ષાઓ :—

૧) એકત્વાનુપ્રેક્ષા, ૨) અનિત્યાનુપ્રેક્ષા, ૩) અશરણાનુપ્રેક્ષા અને ૪) સંસારાનુપ્રેક્ષા.

—: શુકલધ્યાનની ૪ અનુપ્રેક્ષાઓ :—

૧. **अनंतवर्तितानुप्रेक्षा** : અનંતપદાર્થ, ભવભ્રમણ, કાળ, લોકાદિનું ચિંતવન.
૨. **विपरिणामानुप्रेक्षा** : સમયે સમયે પદાર્થોની પરિણમનશીલતા પર ચિંતવન.
૩. **अशुभानुप्रेक्षा** : બાહ્ય સંજોગોમાં અશુભ અકલ્યાણ સ્વરૂપનું ચિંતવન.
૪. **अपायानुप्रेक्षा** : બંધના હેતુ આશ્રવાદિના કટુવિપાક પર ચિંતવન.

न धम्मकज्जा परमत्थि कज्जं, न पाणिहिंसा परम अकज्जं।
न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो॥

ધર્મ કાર્યથી સારૂં ચઢિયાતું કોઈ કામ નથી. પ્રાણીની હિંસાથી ખરાબ બીજું કોઈ દુષ્કાર્ય નથી. પ્રેમ-રાગ સમાન કોઈ બંધન નથી અને બોધિલાભ, સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિ સમાન દુનિયામાં બીજો કોઈ લાભ નથી.

—: સમ્યગ્દર્શન :—

૧. તત્વાર્થ શ્રદ્ધાનં સમ્યગ્દર્શનમ્.
૨. આત્માનું શ્રદ્ધાન તે સમ્યગ્દર્શન છે.
૩. સ્વપરનું ભેદવિજ્ઞાન તે સમ્યગ્દર્શન.
૪. સદેવ, સદ્ગુરૂ, સત્શાસ્ત્રનું શ્રદ્ધાન તે સમ્યગ્દર્શન.
૫. અરિહંતભક્તિ અને સમ્યગ્દર્શનમાં નામભેદ છે અર્થભેદ નથી :
'જે જાણતો અર્હંતને, ગુણ દ્રવ્ય ને પર્યયપણે;
તે જાણતો નિજ આત્મને તસુ મોહ પામે લય ખરે.' *— પ્રવચનસાર ગાથા - ૮૦*
૬. ભાવનમસ્કાર : સમ્યગદર્શનમ્
૭. સમતાને પ્રાપ્ત જેનું દર્શન છે તેને સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જાણવો.
૮. સમ્યક્ત્વ ને સમત્વ જોવાનો જેનો સ્વભાવ છે તેને સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જાણવો.
૯. આત્મીય ભાવોમાં જે પોતાના આત્માને જોતો નથી તે તીવ્રમોહથી વિમૂઢ મિથ્યાદ્રષ્ટિ જાણવો.

૧૦. 'જે અરિહંત દેવ અને નિર્ગ્રંથ મુનિને છોડીને બીજા કોઈ આગળ શીર નમાવતો નથી તેને જ નિર્વાણ સુખના નિધાનરૂપ સમ્યગ્દર્શન હોય છે.'

૧૧. नास्ति अर्हत् परो देवो नास्ति धर्मो दया पर: ।

तप: परं न नैर्ग्रंथ्यं, एतद् सम्यकृत्व लक्षणम् ॥

અરિહંત સમાન કોઈ દેવ નથી બીજી રીતે કહીયે તો અરિહંતથી ચઢિયાતો બીજો કોઈ દેવ નથી. દયા સમાન કોઈ ધર્મ નથી અને નૈર્ગ્રંથ્ય સમાન કોઈ તપ નથી એ સમજ સમ્યક્ત્વનું લક્ષણ છે.

(**तप : परं न नैर्ग्रंथ्यं** - 'વિચરે ઉદય પ્રયોગ')

૧૨. "જે જ્ઞાનરૂપ નિજઆત્માને પરને વળી નિશ્ચય વડે;
દ્રવ્યત્વથી સંબદ્ધ જાણે, મોહનો ક્ષય તે કરે"

— *પ્રવચનસાર ગાથા - ૮૯*

દર્શનવિશુદ્ધિ ભાવના (સમ્યક્ત્વના ૨૫ દોષોનો ત્યાગ) ૮ મદ ૮ શંકાદિ દોષ ૬ અનાયતન અને ૩ મૂઢતા.

—: દર્શન મોહનીય બંધના હેતુઓ :—

केवलीश्रुतसङ्घधर्मदेवार्णवादो दर्शनमोहस्य ॥ १४ ॥

કેવળજ્ઞાની, શ્રુત, ચતુર્વિધ સંઘ, (મુનિ, આર્જિકા, શ્રાવક, શ્રાવિકા) ધર્મ તેમજ દેવના અવર્ણવાદ દર્શનમોહનીય કર્મના બંધના હેતુઓ છે.

આગળ જણાવેલ ૧૨ પ્રકારે સમ્યક્ત્વનાં બધાં લક્ષણોમાં 'તત્ત્વાર્થ શ્રદ્ધાનં સમ્યગ્દર્શનમ્' અંતર્ભૂત છે.

—: સમ્યક્ત્વનાં ૫ લક્ષણો :—

— *(પંચાધ્યાયી ઉત્તરાર્ધ પાન-૪૨૬ થી ૪૭૬)*

૧) પ્રથમ, ૨) સંવેગ, ૩) નિર્વેદ, ૪) અનુકંપા, ૫) આસ્તિકયતા.

—: સમ્યક્ત્વનાં ૫ ભૂષણો :—

૧) ધર્મમાં સ્થિરતા, ૨) પ્રભાવના, ૩) ભક્તિ, ૪) જિનશાસનમાં કૌશલ્ય-સર્વાર્પણભાવ) અને ૫) તીર્થસેવા (મુનિ, આર્જિકા, શ્રાવક, શ્રાવિકા) ની સેવા સુશ્રૂષા

—: સમ્યક્ત્વનાં ૫ દૂષણો (અતિચાર) :—

૧) શંકા, ૨) કાંક્ષા, ૩) વિચિકિત્સા, ૪) અન્યદ્રષ્ટિ-સંસ્તવ અને ૫) અન્ય દ્રષ્ટિ પ્રશંસા.

— *તત્ત્વાર્થાભિગમ સૂત્ર અધ્યાય ૦૭ ગાથા-૧૮.*

"અનેક ભવોની આરાધનાના ફળસ્વરૂપ જીવમાં ઉદારતા અને સરળતા પ્રાપ્ત હોય છે."

"જ્યાં અનાગ્રહ, નમ્રતા અને સરળતા છે ત્યાં શિક્ષા તેમજ સદ્‌બુદ્ધિના અંકુરો ચિત્તમાં રહે છે."

"સરળ વ્યક્તિને માટે સ્વિકૃતિ તેમજ સાધના બંને સરળ છે."

—: પરિગ્રહ :—

'પરિગ્રહથી જે પોતાને મોટો માને છે તેના જેવો બીજો કોઈ મૂર્ખ અને અક્કલહીન નથી. ખરેખર તો પરિગ્રહધારી સમાન જગતમાં કોઈ દીન નથી.'

'All worldly possessions are vitality sappers. Their presence is the indication of weakness and not strength'

— *Anonymous*

જે પરિગ્રહને ભગવાને પાંચ પાપોમાં એક પાપ કહ્યું છે, જે જીવના પતનમાં અધોગતિમાં આ લોકમાં હીનતા તેમજ દીનતાનું જનક છે તેને ઓછું કરવાની વાત તો દૂર રહી તેને વધારવામાં આનંદ માને છે, જીવનની સાર્થકતા સમજે છે, તેનું અભિમાન કરે છે અને 'ostentation of wealth.' ઘરમાં લાખો રૂપિયા ખર્ચી સજાવટ કરે છે અને લગ્નાદિ પ્રસંગોમાં બેફામ ખર્ચ કરી તેનું પ્રદર્શન કરી આનંદ માને છે. તેને ભગવાનની કૃપાનું ફળ સમજે છે તેણે જૈન ધર્મને જાણ્યો નથી.

संसारमूलारंभा तेषां हेतु परिग्रह : ।
तस्मादुपासक : कूर्यादल्पमल्पं परिग्रह : ॥

—: સ્વાધ્યાય :—

"શાસ્ત્રો વડે પ્રત્યક્ષઆદિથી જાણતો જે અર્થને,
તસુ મોહ પામે નાશ નિશ્ચય, શાસ્ત્ર સમધ્યયનીય છે"

— પ્રવચનસાર ગાથા - ૮૬

શ્રામણ્ય જ્યાં ઐકાગ્ર્ય, ને ઐકાગ્ર્ય વસ્તુનિશ્ચયયે,
નિશ્ચય બને આગમ વડે, આગમપ્રવર્તન મુખ્ય છે.

— પ્રવચનસાર ગાથા - ૨૩૨

॥ स्वाध्याय : परमोतप : ॥

"સ્વાધ્યાયથી બુદ્ધિ અતિશયવાન થાય છે. અભિપ્રાય ઉજ્જવળ થાય છે. જિનધર્મમાં સ્થિતિ દૃઢ થાય છે સંશયનો અભાવ થાય છે. આચારની ઉજ્જવળતા થાય છે. પાપક્રિયાનો પરિહાર, કુધર્મમાં રાગભાવનો અભાવ, પંચપરમેષ્ટિમાં અતિશયરૂપ ભક્તિ, સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ, સંસાર, દેહ, ભોગોથી વિરક્તતા, કષાયોની મંદતા, દયાભાવની વૃદ્ધિ, શુભધ્યાન, આર્તરૌદ્ર-ધ્યાનનો અભાવ, જગતમાન્ય, યશની ઉજ્જવળતા, દુર્ગતિનો અભાવ, અતીન્દ્રિય સુખની પ્રાપ્તિ સાથે કર્મની વિપુલ નિર્જરા થાય એવું ઉત્તમ તપ સ્વાધ્યાય છે. આગમના અભ્યાસ વગર મનુષ્યભવ એળે ન જવા દો."

— રત્નકરંડશ્રાવકાચાર પાન-૨૧૧

—: સમભાવ :—

"સમભાવરૂપી કોટ પર આરૂઢ થઈને જે આંખના પલકારા માત્રમાં કર્મનો ક્ષય કરે છે તેવો કર્મનો ક્ષય સમભાવ રહિત કરોડો વર્ષો સુધી તપ કરનાર કરી શકતો નથી" ॥ ૧૨ ॥

"સર્વજ્ઞ ભગવાને સમભાવને જ ઉત્કૃષ્ટ ધ્યાન કહેલ છે. હું માનું છું કે એકમાત્ર સમભાવને પ્રગટ કરવા માટે સર્વ શાસ્ત્રોનો વિસ્તાર છે." ॥ ૧૩ ॥

" જે યોગી મુનિને સમભાવ છે તેને અવિચળ સુખ, અવિનાશી પદ અને કર્મની નિર્જરા છે. ॥ ૧૮ ॥

એકબાજુ કોઈ પારિજાત ફૂલોનો હાર ગળામાં પહેરાવી પૂજા કરે છે અને બીજો કોઈ મારી નાખવાની બુદ્ધિથી ગળામાં સાપને નાખે છે ત્યાં બંને પ્રત્યે સમભાવથી જોનાર યોગી કેવળજ્ઞાનરૂપ ક્રીડાવનમાં પ્રવેશ કરે છે.

—: સામાયિક :—

'ભાવોતણી શ્રદ્ધા સુદર્શન, બોધ તેનો જ્ઞાન છે;
વધુ રૂઢ માર્ગ થતાં વિષયમાં સામ્ય તે ચારિત્ર છે'.

વાંસલા પ્રત્યે સુગંધ છોડનાર ચંદનવૃક્ષ સમાન મહાત્મા પુરુષોનું સામાયિક નામનું ચારિત્રજ મોક્ષનું પરમ અંગ છે. *— સામાયિક (મુલાચાર પાન ૩૦ થી ૩૨)*

સૌ ભૂતમાં સમતા મને, કો સાથ વેર મને નહી;
આશા ખરેખર છોડીને પ્રાપ્તિ કરૂં છું સમાધિની ॥ ૭ ॥

ક્ષમાવું છું સર્વજીવોને, તમો પણ મુજને ક્ષમા કરો;
મૈત્રી ભાવ સર્વજીવોથી, કોઈથી વેર મને નથી ॥ ૮ ॥

રાગ-બંધન દ્વેષને, હર્ષભાવ દીનત્વને;
છોડું હું ઉત્સુકભાવ, ભયને, રતિ-અરતિ તેમજ શોકને ॥ ૯ ॥

પરિવર્જુ છું હું મમત્વ, નિર્મમ ભાવમાં સ્થિત હું રહું;
અવલંબુ છું મુજ આત્માને, અવશેષ સર્વ હું પરિહરૂં. ॥ ૧૦ ॥

મુજજ્ઞાનમાં આત્મા ખરે, દર્શન ચરિતમાં આતમા;
પચખાણમાં આત્માજ, સંવર યોગમાં પણ આતમા ॥ ૧૧ ॥

જીવ એકલોજ મરે, સ્વયં જીવ એકલો જન્મે અરે!
જીવ એકનું નિપજે મરણ, જીવ એકલો સિદ્ધિ લહે. ॥ ૧૨ ॥

મારો સુશાશ્વત એક દર્શન-જ્ઞાન લક્ષણ જીવ છે;
બાકી બધા સંયોગ લક્ષણ ભાવ મુજથી બાહ્ય છે. ॥ ૧૩ ॥

સંયોગમૂળ આ જીવ પામ્યો, દુ:ખોની સૌ પરંપરા;
તેથી સર્વસંબંધોને છોડું હું મન, વચન, કાયથી

योगेसु मूलयोगो भिक्षाचर्या च वर्णिता सूत्रे।
अन्ये च पुनर्योगा विज्ञानविहीनैः कृता ॥ ४९ ॥

યોગમાં મૂળયોગ ભિક્ષાચર્યાને સૂત્રમાં વર્ણવેલ છે. બાકીના બધા યોગ્ય જ્ઞાનશૂન્ય જીવોએ કરેલા છે.

मरणभय भीरुकानां अभयं यो ददाति सर्वजीवेभ्य :।
तद्दानानां दानं, तन्पुनर्योगेषु मूलयोगोऽपि ॥ ५२ ॥

મરણથી ભયભીત સર્વ જીવોને જે અભયદાન આપે છે તે સર્વદાનોમાં ઉત્કૃષ્ટ દાન છે અને તેજ વળી યોગોમાં મૂળયોગ છે.
— *મુલાચાર પાન - ૪૫૦*

અને આવું અભદાન દેનાર એક માત્ર નિર્ગ્રંથ મુનિ છે. અને તેથી થોડેક ઓછે અંશે આર્જિકા છે.

—: Verses full of wisdom :—

"In nature there are neither rewards nor punishments, there are only consequences" — ***R.G. Ingersoll***

"You are not what you think you are, but 'what you think' you are."

"You cannot change the weather but you can definitely change your attitude to weather."

"A mango tree gives fruit in a particular season which is the result of silent unnoticed toil (process) of all the out seasons."

"A man does not get what he wishes or prays for; he only gets what he deserves or has justly earned."

"He who comes out of prayer a better man, his prayer is heard (answered)"

"Bad legislators are elected by intelligent people who do not go to Polling station to cast their vote,

"To plough is to pray, to plant is to prophesy, and the harvest answers and fulfils."

"Strange how much we have to know before we know 'how little we know."

— *Best Quotation.*

"Our knowledge is the amassed thought and experience of innumerable minds."

— *Ralph walds Emerson.*

"Knowledge is proud that he has learnt so much; wisdom is humble that he knows no more"

"Heart has got reasons of which, reason has no knowledge."

"The crest and crowning of all goods;
Life's final star is brotherhood."

"The end of all strifes and discord. A heaven on earth which all advance of science and technology cannot bring. A dream? Yes, yet to the aspirer it will undoubtedly bring peace and tranquility of mind"

— *Anonymous*

"Calmness of mind is one of the beutiful jewels of wisdom. It is the result of long and patient effort in self control. It's presence is an indication of ripened experience and of a more than an ordinary knowledge of the laws and operation of thought"

— *Anonymous*

"Cause and effect, means and ends, seed and fruit cannot be severed; for the effect already blooms in the cause, the end pre-exists in the means, the fruit in the seed."

— *Emerson*

"That exquisite poise of character which we call serenity is the last lesson of culture. It is the flower of life, the fruitage of the soul. It is precious as wisdom, more to the desired than gold, yea: than even fine gold"

"Education is what remains, when we have forgotten all that we have been taught"

— *George Samile-Marquis of Halifax.*

"All those simple operations of human life in wordly things which men never question, but follow and obey implicitly because of their obvious (apparent) plainness and exactness, obtain in spiritual things with the same unerring accuracy, and when these laws are obeyed in spiritual matters as implicitly as they are obeyed in worldly matters, then has a man reached the firm

standing ground of the exact knowledge; his sorrows are at an ebb and he can doubt no more."

"There is no way to strength and wisdom but acting strongly and wisely in the present moment and each present moment reveals it own task."

God! grant me the serenity to accept the things I cannot change, courage to change the things I can and wisdom to know the difference.

— Jesus Christ.

"Miss not the discourses of elders"

'Our generosity should not exceed our means' *— Cicero*

"To praise one's self and to denounce others is a sign of inferiority complex."

"Envy and jealously are cancers of the soul with innumerable side effects"

'Jealousy is an awkward homage which inferiority renders to virtue...

— MMC-De-Puisienx.

"Fondly we hope we honour merit then,
When we but praise ourselves in other men"

— Alexander Pope

"He never lived for selfish end,
But only lived to help;
He required no calmpose to sleep
And morning tea to liven up"

— Anonymous

"Manner is all in all, whatever is writ;
The substitute for genious, sense and wit"

— cowper

"It is more unbearable to conecive of a certain untoward event to happen than the actual happening of that event. Once it becomes a reality, immense forces of compromise (which every rational human being possesses in inexhaustible supply) are released. Negative thoughts cease to occupay the mind and positive and creative thoughts start ruling the mind and life again becomes normal by passage of time."

— Anonymous

"Great ideas must have landing gears as well as wings" *— Pascal*

"It will never rain roses when we want;
To have more roses, we must plant more trees.

"To command nature, you must obey it."

"Never elated when one is oppressed;
Never dejected when another is blessed"

— Pope 'Eassay on Man'

Jesus wept... (Shortest verse in the Bible) *John XI-35*

Better to put a strong fence round the top of the hill than an ambulance down the valley.

— J. Malliness

—: HUMILITY :—

"Humility that low sweet root from which all heavenly virtues shoot"

— T. Moore

I believe the first test of a truly great man is his humility.

'In humility immitate Jesus and Socrates'

Humility is serenity, understanding, knowledge, capacity, integrity, contentment, yearning and maturity all combined.

Self possession of Jesus is not a miracle. It is the flower of culture, the diadem of wisdom. when we read of Lord Jesus that he answered not a word and that of Buddha that 'he remained silent' we get the glimpse of vast power of silence. of the silent majesty of true greatness.

— James Allen - Byways of Blessedness.

—: કૃતજ્ઞતા :—

Gratitude is a fruit of great cultivation, you cannot find it amongst gross people.

— *S. Johnson*

કૃતજ્ઞતા એ મહાન આરાધનાનું ફળ છે. સામાન્ય માણસમાં એ જોવા નહીં મળે.

Ingratitude is natural like weeds. gratitude is like a rose. It has to be fed and watered and cultivated and loved and possessed. — *Anonymous*

Gratitude is the heart's memory — *French proverb*

આ લોકમાં પ્રથમ તો હજાર મનુષ્યોને વિષે પણ ઉપકાર કરનાર મળી આવવો દુર્લભ છે. પરંતુ પોતાના ઉપર થયેલા ઉપકારને માનનાર તો લાખોમાં પણ મળવો દુર્લભ છે.

હે પંડિતો! તમે ઉત્તમ અને અધમના વિચાર કરવા શામાટે તર્ક-વિતર્ક કરો છો? કૃતજ્ઞ જેવો કોઈ ઉત્તમ નથી અને કૃતઘ્ન કરતાં બીજો કોઈ અધમ નથી.

નેપોલીયનને પણ કૃતઘ્નતાનો કડવો અનુભવ થયેલો અને તેનું પત્થર જેવું હૃદય કાંપી ઉઠેલું ત્યારે તેના હૃદયમાંથી નીકળેલા ઉદ્‌ગારો :

"Do you know what is more hard to bear than reverses of fortune? It is the baseness, the hideous ingratitude of man"

નેપોલીયન કહે છે કે તમે જાણો છો કે દુનિયામાં બધી કમનસીબીઓમાં અસહ્યમાં અસહ્ય વસ્તુ કઈ છે? પોતે જ જવાબ આપે છે કે માણસની નીચ અને ભયંકર કૃતઘ્નતા.

પંચેન્દ્રિય જીવોમાં જેમ મનુષ્ય ભવ દુલર્ભ છે તેમ ગુણોમાં કૃતજ્ઞતાનો ગુણ અતિદુર્લભ છે.

— *પુરુષાર્થસિદ્ધપુપાય પાન-૧૦.*

'This is the most unkindest cut of all. For when the noble Ceaser saw him stabbed. Ingratitude, more strong than traitor's arm, quite vanquished him and then burnt his mighty heart.'

The house (Braborne Stadium) was full and the audiance heard the brilliant and masterly analysis of the Union Budget and Income-tax Amendment Bill by Sarvashri N. A. Palkhiwala with rapt attention for hour and a half. How many of them, do you think waited for a minute and a half to partake in thanks giving ceremony?

Gentlemen of the Jury! the one absolute unselfish friend that man can have in this selfish world, the one that never deserts him, the one that never proves ungrateful or treacherous is his dog.

— *Senator George, Greham Vest in "Enology on the dog"*

ભારતના ભૂતપૂર્વ વડાપ્રધાન ઈન્દિરાજીએ સેંકડો અંગરક્ષકોની સાથે સાથે એક કુતરો રાખ્યો હોત તો માલિકની રક્ષા માટે ઉંઘમાં પણ સદાયે જાગૃત રહેનાર તેની સમયસૂચકતા, અગમચેતી અને વફાદારી (કૃતજ્ઞતા)થી જાનના જોખમે પણ પિસ્તોલધારીના હાથ પર છલંગ મારી નિશાન ચૂકાવી દીધું હોત અને દેશને, ભારતવાસીઓને કદાચ છુટકારાની અણમોલ ઘડીનો શ્વાસ લેવાની તક સાંપડી હોત!

કૃતજ્ઞતાનો ગુણ આવો અણમોલ છે અને તે પૂર્વ સંસ્કારનું જ ફળ છે. કુતરાએ ક્યાં નીતિશાસ્ત્રો વાંચ્યાં છે કે મંદિરમાં જઈ ભગવાનની પૂજા કરી છે?

માણસ ઘણા પશુઓને પાળે પોષે છે. ગાય, ભેંસ, બકરી, હાથી, ઘોડા, ઊંટ, ગધેડો, કુતરો વિ. આમાં કુતરા સિવાય બધાં પશુઓને ભૌતિક ઉપલબ્ધિના કારણે પાળે છે. ગાય, ભેંસ, બકરી દૂધ આપે છે. બળદ ખેતીમાં તેમજ ભારવાહનમાં, ગધેડો ભારવાહનમાં, હાથી, ઘોડા, ઊંટ ભારવાહનમાં તેમજ સવારી માટે ઉપયોગી છે. કુતરો આમાંનુ કંઈ આપતો નથી. એક માત્ર તેનામાં કૃતજ્ઞતા-વફાદારીનો ગુણ છે અને બાકીના ગુણો વફાદારીના કારણે હોય છે. કુટુંબનો કોઈપણ સભ્ય બહારથી ઘેર આવે ત્યારે સૌ પ્રથમ ઉષ્માભર્યો આવકાર આપનાર અને તેના પ્રતીકરૂપે પૂછડી પટપટાવનાર ઘરનો પાળેલો કુતરો હોય છે. આના બદલામાં કુતરો જેટલું સન્માન પામે છે, તેટલું બીજું કોઈ પાળેલ પશુ પામતો નથી. કરોડપતિ, સરસેનાપતિ કે વરિષ્ટ કોર્ટના ન્યાયાધીશ કુતરાને સવારે પોતાની સાથે ફરવા લઈ જઈ ટટ્ટી-પેશાબ કરાવે છે. ઘરના કોઈ બાળકને આમાંના કદાચ કોઈએ ટટ્ટી-પેશાબ જોડે ઉભા રહી નહિ કરાવ્યાં હોય.કુતરો આ રીતે તેની કૃતજ્ઞતાના ગુણને કારણે આવું સન્માન-સુખ પામે છે, તો કુટુંબમાં એક બીજા પ્રત્યે આ પ્રમાણે વફાદારી-કૃતજ્ઞતા હોય તો ઘરમાં કેવું ઉષ્માભર્યું અને સ્વર્ગસમાન વાતાવરણ સર્જાય તેનું વર્ણન કરવું મુશ્કેલ છે, અને આને માટે પૈસાની કોઈ જરૂર નથી.

'न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरंति' સજ્જન પુરુષો કરેલા ઉપકારને કદાપિ ભૂલતા નથી.

I agree with Agasse that dogs possess something very like a conscience.

— *Darvin-'The Decent of Man'*

'હું અગાસીની સાથે સંમત થાઉં છું કે કુતરાઓ સહૃદયતા જેવી કોઈ લાયકતા ધરાવે છે.'

न हि मे पर्वता भारा न मे भाराश्च सागरा:।
कृतघ्नाश्च महाभारा भारा विश्वासघातका:॥

પૃથ્વી કહે છે કે મને ન તો પર્વતોનો બોજો-ભાર છે કે ન સમુદ્રોનો, મને કૃતઘ્ની અને વિશ્વાસઘાતીઓ ભારરૂપ છે.

આ દુનિયામાં સેંકડો વિદ્વાનો, રાજાઓ, વિનયવાન અને પ્રિયભાષી માણસો છે. પુણ્યક્રિયામાં કુશળ અને કલ્પવૃક્ષની જેમ દાતાઓ પણ ઘણા છે. પણ પ્રાયે કરીને કૃતજ્ઞ મનુષ્ય મળવો મુશ્કેલ છે જેનામાં કૃતજ્ઞતા નથી તેને દેવ, ગુરૂ, શાસ્ત્રની ભક્તિમાંથી એકપણ નથી.

* સજ્જન પુરુષો બને ત્યાંસુધી કોઈના સહેજ પણ ઉપકારની અપેક્ષા રાખતા નથી છતાં સંજોગવશાત્ કોઈ તેમના પર ઉપકાર કરે તો તેનો પ્રસંગ આવ્યે અનેક ઘણો બદલો આપવાનું ચૂકતા નથી.

"Noble thoughts and noble speach,
Translated nobly into noble deeds;
Noble, Nobler, nobler more,
gratitude is the noblest of all."

— *Anonymous*

નં.-૨૯

—: લોકપ્રિયતા :—

वरबोधित आरभ्य परार्थोद्यत एव हि।
तथाविधं समादत्ते कर्म स्फीताशयः पुमान्॥

ઉત્તમ સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિ થઈ ત્યારથીજ પરોપકારમાં તત્પર ઉદાર આશયવાળા મહાનુભાવ જ તીર્થંકરગોત્ર નામકર્મને બાંધે છે.

અનેક ભવોની આરાધનાના ફળસ્વરૂપ સરળતા અને ઉદારભાવ આ જીવને ઉપલબ્ધ હોય છે. અનેક જીવોના આધારસ્તંભ, સૌમ્ય પ્રકૃતિવાન અને **'परार्थ व्यसनी सदा'** બીજા જીવોનો ઉપકાર કરવો એ જેને વ્યસન થઈ પડ્યું છે, જેની સમીપમાં જન્મજાત વેર રાખનાર જીવો (ઉંદર-બિલાડી) એક બીજા સાથે પ્રેમથી ક્રીડા કરવા લાગી જાય છે. અને હિત-મિત અને મધુર-સર્વજનોને પ્રિય એવું જેનું વચન, તેમજ વાણી હોય તેવા જીવો જગતમાં લોકપ્રિય હોય છે.

ભગવાનના દસ અતિશયોમાં 'હિત-મિત અને પ્રિય વચન' એ એક જન્મની સાથે આવેલો અતિશય હોય છે અને તે અનેક જન્મોમાં જગતના કલ્યાણના માટે ભાવેલ ભાવોનું ફળ છે.

ત્રણેકાળમાં તીર્થંકર જેવી લોકપ્રિયતા બીજા કોઈની હોતી નથી. આ વાત જેને ગળે ઉતરતી નથી તે જૈન નામ કહેવા માટે પણ લાયક નથી. બાહ્ય સમૃદ્ધિ, ઋદ્ધિ વિ.માં સર્વશ્રેષ્ઠ દેવોના અધિપતિ ઈન્દ્ર અને ચતુર્વિધ સંઘ (નિર્ગ્રંથ મુનિ, આર્જિકા, શ્રાવક, શ્રાવિકા)ના નાયક ગણધરદેવ જેમની આગળ નત મસ્તક ઉભા રહી પોતાને ધન્ય માને છે.

આ રીતે બીજાના ઉપકારમાં તત્પરતા અને મધુરવાણી એ બંને લોકપ્રિયતાનાં મુખ્ય કારણો છે.

બીજું પરનિંદા અને આત્મપ્રશંસા પોતાની જાતને હલકી પાડે છે અને તેજ લોકપ્રિયતાથી વિરૂદ્ધ લોકમાં ધૃણાને પાત્ર બનવાનાં મુખ્ય કારણો છે.

'To praise one's self and to denounce others is a sign of inferiority complex.'

न हीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।
दया मैत्री च भूतेषु, दानं च मधुरा च वाक्॥

પ્રાણીમાત્ર પર દયા, મિત્રતા, દાન અને મધુરવાણી જેવું આ ત્રણલોકમાં બીજું એકપણ વશીકરણ નથી.

यदीच्छसि वशीकर्तुम् जगदेकेन कर्मणा।
परापवाद शस्येभ्यो गां चरंति निवारय॥

જો તું આખા જગતને એક જ કાર્યથી વશ કરવા માગતો હોય તો પરપરિવાદ-પારકી પંચાત, તેમનો અપવાદ, નિંદા અને ચુગલીરૂપ ઘાસને ચરતી તારી મનરૂપી ગાયને રોક.

એક વખતની લોકપ્રિય (લોકસભામાં ૭૦% બહુમતિથી ચુંટાઈ આવેલ) જનતા સરકારના પતનના અનેક કારણોમાં મહત્વનું કારણ તેના કેટલાક ટુંકી દ્રષ્ટિવાળા નેતાઓનાં રોજબરોજ એકબીજાથી વિરૂદ્ધ, અસંગત, વિરોધાભાસ ઉત્પન્ન કરનારાં, સામાને ઉતારી પાડનારાં અને પોતાની મહત્તા આગળ વધારવા માટેનાં (Projecting one's self image) ભાષણો હતાં.

Do you wish men to speak well of you?
Then never speak well of yourself — *Pascal*

ખુશામત કરનાર તેમજ સાંભળનાર બંને લોકમાં જતે દિવસે તિરસ્કારપાત્ર બને છે એટલુંજ નહિ એક **બીજાની નજરમાંથી પણ ઉતરી જાય છે. ખુશામતથી માણસ સામાની નજરમાં કેવો હલકો દેખાય છે તે** સંબંધમાં એક આબેહુબ કહેવત છે :

I would have praised you more, had you praised me less.

— Louis XII.

ઉચ્ચગોત્ર તેમજ નીચગોત્ર એ બંને અઘાતિકર્મની જીવવિપાકી (જીવમાં અસર કરતી) પ્રકૃતિઓ છે. ઉત્તમકુળમાં અગર નીચ કુળમાં જન્મ એ બાહ્ય નિમિત્ત અપેક્ષાએ કથન છે. ઉચ્ચગોત્ર એટલે સામાન્ય ભાષામાં પોતાને પોતા માટે માન, ઉંચો (વાજબી) અભિપ્રાય. નીચ ગોત્ર એટલે પોતે પોતાને હલકો, આદરને માટે અપાત્ર ને.

परनिंदा आत्मप्रशंसे सद्गुणाच्छादने असद्गुण
उद्भावने च नीचै: गोत्रस्य ॥ २४ ॥
तद्विपर्यो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेको चोत्तरस्य ॥ २५ ॥

— તત્ત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય - ૬.

પરનિંદા, આત્મપ્રશંસા, બીજાના છતાં ગુણને ઢાંકવા, પ્રસંગ આવ્યે પ્રગટ ન કરવા, અને પોતાના અછતા ગુણને પ્રગટ કરવા, અતિશયોક્તિપૂર્વક કહેવા તે નીચગોત્રના બંધનુ કારણ છે. તેથી ઉલટું પરનિંદા તેમજ આત્મપ્રશંસાનો અભાવ, પોતાના ગુણને જ્યાં ત્યાં કહેતા ન ફરવું, પ્રગટ ન કરવા, છુપાવવા અને બીજાના છતા-અછતા દોષને ઢાંકવા તેમજ બીજાના અલ્પગુણની પણ પ્રશંસા કરવી, પ્રગટ કરવા, અત્યંત નમ્રતા અને અનુત્સુકભાવ (પારકી પંચાતનો અભાવ) ઉચ્ચગોત્રના બંધનું કારણ છે. નીચગોત્ર જ્યાંત્યાંથી અવગણના, અસત્કારને પામે છે. ઉચ્ચગોત્ર સર્વ ઠેકાણે આવકાર અને સન્માન પામે છે.

નામકર્મની ૯૩ પ્રકૃતિઓમાં ઉત્કૃષ્ટ તીર્થંકરગોત્ર નામકર્મની પ્રકૃતિ છે. તે જીવવિપાકી પ્રકૃતિ છે (બાહ્ય સમવસરણાદિની રચના વિ. નિમિત્તનાં કથન છે) અને તેજ સર્વોત્કૃષ્ટ લોકપ્રિયતાનું અભિવ્યંજક છે. લોકપ્રિયતા આ ભવ તેમજ પરભવમાં જીવના કલ્યાણની - ઉર્ધ્વગતિની સૂચક છે. અને ધર્મસાધનામાં મદદરૂપ અને વિઘ્નો આવતા પહેલાં અટકી જાય એવો અચિંત્ય તેનો પ્રભાવ છે. લોકપ્રિય થવાના પ્રયાસથી લોકપ્રિય થવાતું નથી કદાચ તેનાથી તદ્દન ઉલટું-વિપરીત પરિણામ આવે છે, અને વખત જતાં લોકની નજરમાં એ ઉતરી પડે છે. લોકપ્રિયતાનાં અંગભૂત કારણો જીવનમાં ઓત-પ્રોત થતાં લોકપ્રિયતા આપોઆપ અનાયાસે સાંપડે છે.

"He never sought greatness. He simply preached by living a well ordered life, performed his smallest duties with same precision and care, extended his helping hand to all who came into his contact and spoke in a still soft voice and unconciously ascended to greatness"

—: Genious :—

With invisible hands of the spirit, she had built up with the precious stones of faith, hope, joy, devotion and love, a fair temple of light whose glorifying radiance was ever round about her. It beamed in her eyes, it vibrated in her voice and all who came into her presence felt its captivating spell'

— Anonymous

Genious ની વ્યાખ્યામાં જાણે કે મધર ટેરેસા (Mother Teresa) ના જીવનનું રેખાચિત્ર દોર્યું હોય એમ લાગે છે.

લોકપ્રિયતાના ઉપર જણાવેલ ગુણો જેના જીવનમાં રગેરગમાં વ્યાપેલા છે એવા સૌમ્યમુર્તિ મધર ટેરેસા આજે જગતમાં કદાચ સર્વોત્કૃષ્ટ લોકપ્રિયતા ધરાવે છે એમાં કંઈ નવાઈ જેવું નથી. મધર ટેરેસા માટે એક વિચાર આવે છે :

'One would wish to have put the board of 'Universal Brotherhood' on the entrance gate of 'UNESCO' and the following verse namely:

"Nationalism is a narrow creed;
Humanism is what nations need"

at some conspicuous part of its Conference Hall and inaugurated by 'Mothe Teresa' which name has now become synonymous with love, compassion, humility and selfless service all four combined in one i.e. 'Universal Brotherhood.'

"The crest and crowning of all goods, life's final star is Brotherhood"

— *Edvin Markham 'Brotherhood'*

'Universal Brotherhood'

'The end of all strife and discord. A heaven on earth which all advance of science and technology cannot bring. A dream? Yes, Yet to the aspirer it will undoubtedly bring peace and tranquility of mind' — *Anonymous*

અબ્રાહમ લિંકન જે અમેરિકાના કદાચ સર્વશ્રેષ્ઠ લોકપ્રિય પ્રેસીડન્ટ થઈ ગયા તેમને માટે કહેવામાં આવેલ છે :

'His heart was as great as the world, yet there was no room in it to hold the memory of any wrong'

અબ્રાહામ લિંકનનું હૃદય સમગ્ર દુનિયા જેટલું વિશાળ હતું છતાં તેમાં કોઈને માટે વિરોધભાવ, વેરભાવ માટે જગ્યા નહોતી.

''છાયા તો વડલા જેવી, ભાવ તો નંદના સમ
દેવોના ધામના જેવું, હૈયું જાણે હિમાલય''

"Let your heart grow large, loving and unselfish, the great and lasting will be your influence (લોકપ્રિયતા) and Success (જીવન સાફલ્ય), even though you make little money. Conversely confine it (your heart) within the narrow limit of self interest (સ્વાર્થપરાયણ તેમજ મતલબી) and even though you become a billionaire, your influence (લોકપ્રિયતા) and success (જીવન સાફલ્ય) at the final reckoning will be found utterly lacking."

"He who purifies his heart is the world's greatest benefactor."

— *James Allen*

સોક્રેટીસને કોઈએ તેમની 'Nationality' સંબંધી પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે તેમણે જવાબ આપ્યો :

'I am not an Athenian nor a Greek but I am a citizen of the world.'

લોકપ્રિયતામાં નિ:સ્વાર્થ સેવા અને મધુરભાષા કારણરૂપ છે. ભાષા કેવી બોલવી :

महुरं निउणं थोवं कज्जावडिअं अगव्विय अतुच्छं।
पुव्विमइसंकलियं भणंति जं धम्मसंजुत्तम्।।

१.	**महुरं**	**मधुरम्**	મધુર	Sweet
२.	**निउणं**	**निपुणम्**	નિપુણ	Intelligent
३.	**थोवं**	**स्तोकम्**	થોડું	Precise
४.	**कज्जावडियं**	**कार्यपुरितम्**	કામપૂરતું	To the point
५.	**अगव्वियं**	**गर्वरहितं**	ગર્વરહિત	Modest
६.	**अतुच्छं**	**अतुच्छं**	શોભાસ્પદ	Dignified
७.	**पुव्वमइ संकलियं**	**पुर्वसंकलितं**	બરાબર વિચારીને	Well thought of
८.	**धम्मसंजुतं**	**धर्मसंयुकतं**	ધર્મયુક્ત	Principled

पियं अदुट्ठं अणूवीइ भासए
सयाण मज्झे लहइ पसंसणं — *દશવૈશાલિક - ૭/૫૫*

જે વિચારપૂર્વક સુંદર અને પરિમિત ભાષા બોલે છે તે સજ્જનોમાં પ્રશંસા પામે છે.

वइज्ज बुद्धं हियमाणुलोमियं ७ / ५६

બુદ્ધિમાન પુરુષ એવી ભાષા બોલે જે હિતકારી તેમજ અનુલોમ કહેતાં સર્વને પ્રિય લાગે.

મહાવીર ભગવાનની દેશના તત્ત્વ વિષય પર સચોટ, સર્વજન હિતકારી અને વેધક હતી. તેમાં ક્યાંય હું કે મેં શબ્દ જોવા મલશે નહીં.

"A great man has become such by the scrupulous and unselfish attention which he has given to small duties. He has become wise and powerful by sacrifying ambition and pride in the doing of those necessary things which evoke no applause and promise no reward. He never sought greatness. He saw faithfulness, integrity, truth and in finding these in common round of small tasks and duties, he unconciously ascended to the level of greatness."

નં.-૩૦

—: લજ્જા :—

લજ્જા દયા પ્રશાંતતા જિનમારગ પરતીતિ;
પર અવગુણકો ઢાંકિવો, પર ઉપગાર સુપ્રીતિ ॥ ૧ ॥

સોમદષ્ટિ ગુણગ્રહણતા, અર ગરિષ્ટતા જાની;
સબસો મિત્રાઈ સદા, વૈર ભાવ નહિ માનિ. ॥ ૨ ॥

પક્ષ પુનિત-પુમાનકી, દીરઘ દરસી હોય;
મિષ્ટ વચન બોલે સદા, અર બહુજ્ઞાતા હોય. ॥ ૩ ॥

અતિ રસજ્ઞ ધર્મજ્ઞે જો, હૈ કૃતજ્ઞ પુનિ તજ્ઞ;
કહે તજ્ઞ તાસુ બુધા, જો હોવે તત્ત્વજ્ઞ. ॥ ૪ ॥

નહિ દીનતા ભાવ કછું, નહિ અભિમાન ધરેય;
સબસો સમતાભાવ હૈ, ગુણકો વિનય કરેય. ॥ ૫ ॥

પાપક્રિયા સબ પરિહરો, એ ગુણ હોય એકીસ;
ઈનકો ધારે જે સુધી, લહે ધર્મ જગદીશ. ॥ ૬ ॥

ઉપર જણાવેલ શ્રાવકના ૨૧ ગુણો (જેમાં માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણોનો લગભગ સમાવેશ થઈ જાય છે)માં **લજ્જાને પ્રથમ સ્થાન આપ્યું છે.**

— શ્રાવકના ૨૧ ગુણો (બીજી રીતે) જુઓ પાન-૫૧-૫૨

સ્ત્રીઓ માટે લજ્જા ગુણને તેમના આભુષણ તરીકે શાસ્ત્રમાં વર્ણવેલ છે. કોઈના વિવાહ માટે કન્યા **'નમણી'** છે એમ જે કહેવામાં આવે છે તેમાં લજ્જાગુણનીજ વાત છે. સ્ત્રીઓના અનેક ગુણોની ફુલમાળા ગુંથવામાં આવે તો લજ્જાગુણ બધા ગુણરૂપી ફુલોમાંથી પસાર થતી દોરીની ગરજ સારે

"Modesty that low sweet root
from which all heavenly virtues shoot."

अर्थातुराणां न गुरुर्न बंधु, कामातुराणां न भयं न लज्जा।
विद्याराणां न सुखं न निद्रा क्षुधातुराणां न रुचिर्न वेला॥

પૈસાના ભૂખ્યાને કોઈ ગુરુ, વડીલ કે ભાઈ **નથી** એટલે કે તે તેમને ગણતો **નથી** કામાતૂર માણસને ભય કે લજ્જા નથી એટલે કે ભયને ગણકારતો નથી અને લાજશરમને નેવે મૂકે છે. વિદ્યાની પ્રાપ્તિ કરવા જે આતુર છે તે સુખ એટલે કે આરામ અને રાતના ઉજાગરાને પણ ગણતો નથી અને ભુખ્યા માણસને **સ્વાદ-બેસ્વાદ** કે જરાક રાહ જોવાની ધીરજ નથી.

સ્વામિવાત્સલ્યમાં પહેલી પંગતમાં નંબર લગાડવા ભર ઉનાળામાં તડકામાં લાઈન લગાવી ઉભેલા શ્રાવકો (જેમાં કરોડપતિઓ પણ હોય છે) અને **અન્નક્ષેત્રમાં** મફત ખાવાનું મેળવવા કતારમાં ઉભેલા ગરીબ, ભૂખ્યા, બેહાલ માણસોની લાંબી કતારો જોવાથી **'क्षुधातुराणां न रुचिर्न वेला'** ના મર્મનો ખ્યાલ આવી જાય છે.

'कामातुराणां न भयं न लज्जा' એમાં સ્પર્શેન્દ્રિય અને રસના ઈન્દ્રિયને કામ સંજ્ઞા છે જ્યારે બાકીની ચક્ષુ-ઘ્રાણ અને કર્ણ ઇન્દ્રિયને ભોગ સંજ્ઞાથી શાસ્ત્રમાં ઓળખાવેલ છે.

ભોજનમાં અતિ લંપટતા સહિત તેમજ વિષયલંપટને નિર્મળ શૌચધર્મ હોતો નથી. ભોજનનો લંપટી ધર્મરહિત

હોય છે. ન ખાવા જેવી વસ્તુ પણ ખાય છે. ખાતાં ખાતાં નીચે પડી ગયેલ વસ્તુ ધોઈ સાફ કરી કે સાફ કર્યા વગર પણ ખાઈ જાય છે. થાળીમાં આજુબાજુ ચોટી ગયેલી વસ્તુ ખાસ કરીને ચટણી વિ. ચાટી ચાટીને ખાઈ જાય છે. ભોજનનો લંપટી હલકા આચારવાળો હોય છે. ભોજનના લંપટીની લજ્જા નાશ પામે છે. કારણકે સંસારમાં જિહવા ઈન્દ્રિય અને કામ વાસનાને વશ થઈ પોતાની માન-મર્યાદા, સ્થાન-માન, કુટુંબનો મોભો વિ. બધું ભૂલી નરક તિર્યંચમાં અસંખ્ય ભવોમાં ભ્રમણ કરાવનાર મહાનિંદ્ય કાર્યો કરે છે. સંસારમાં પરધનની વાંછા, પરસ્ત્રીની અભિલાષા અને ભોજનની લંપટતા લાજ-શરમને નેવે મૂકાવે છે. ભોજનના લંપટીને ભક્ષ્ય અભક્ષ્યનું ભાન રહેતું નથી. નીચ ઘરમાં જઈને પણ પોતાની માન-મર્યાદાને નેવે મૂકી ભોજન કરવા બેસી જાય છે. બીડી પીવાના વ્યસનવાળો સામે બેઠેલા મુરબ્બીઓને જોતો નથી. તેમની માન-મર્યાદા સાચવતો નથી. બીડી પીવાની તલપ લાગી હોય તો ભિખારી પાસેથી પણ બીડી માંગીને પીવે છે. દિવાસળીની પેટી માગે છે. લજ્જાગુણ હોય તો આ બધાં કાર્યોથી શરમના માર્યા પણ બચી જવાય છે, અને કુસંસ્કારો ઘર કરી શકતા નથી.

ભરબજારમાં ઉભા ઉભા અગર ચાલતાં ચાલતાં ખાવું, બિભત્સ નાટક-સિનેમા તથા જાહેરખબરો જોવી, અયોગ્ય સ્થળોમાં ભટકવું, પરસ્ત્રી અગર પર પુરુષ સાથે રસ્તા વચ્ચે ઉભા રહી નિર્લજ્જ પણે વાતો કરવી, કુચેષ્ટા કરવી. દારૂના અડ્ડા આગળ કે પાનના ગલ્લા આગળ ભેગા થઈ બિભત્સ વાતો, ગામ ગપાટા, કુચેષ્ટાઓ કરવી અને ખડખડ હસવુ વિ. તથા રાતના બાર વાગે પાઉં ભાજી ખાઈને ઘેર જવું આ બધાં નિર્લજ્જતાનાં લક્ષણો છે. લેણદાર મુદત પૂરી થયે ઉઘરાણી કરવા આવે તેને 'તમારાથી થાય તે કરી લો' એમ કહેવું એમાં નિર્લજ્જતા સિવાય બીજું શું છે ? ગુજરાતીમાં એક કહેવત છે :

'જેને મૂકી લાજ તેનું નાનુ સરખું રાજ'

અમુક જાતિના સમાજમાં સ્ત્રીઓ તેમના પતિને (એ લોકો 'ધણી' કહે છે) એટલે કે ધણીને તૂં કહીને બોલાવવાની જુગજુગ જૂની પ્રચલિત પ્રથા છે. આજકાલ તો બધાં સમાજમાં પણ સ્ત્રીઓ તેમના પતિને 'તૂં' કહીને બોલાવતી થઈ ગઈ છે. ઘરમાં ઉષ્માભર્યું પવિત્ર વાતાવરણ નિર્માણ થવામાં જુગજુગથી પતિને તમે કહીને બોલાવવાની પ્રથામાં સભ્યતા તેમજ બુદ્ધિમતા રહેલી છે.

હાઈકોર્ટના ન્યાયાધીશને તેની અંગ્રેજી ચાર ચોપડી ભણેલી સ્ત્રી 'તૂં' કરીને બોલાવતી સાંભળીએ તો તેની આપણા પર કેવી છાપ પડે છે તે ખુબજ વિચાર માગી લે છે. ઘરમાં સ્ત્રીએ પતિને 'તમે' કહીને બોલાવવાનો રિવાજ શરૂ કરવામાં આવે તો એ ઘરની શોભા તેમજ સુખશાંતિની આધારશીલા રૂપ આદર્શ ઘરનું નિર્માણ કરવામાં કારણભૂત થશે. 'તૂં' એ તુચ્છકારવાચક શબ્દ છે જ્યારે 'તમે' માનવાચક શબ્દ છે. પતિને માનવાચક 'તમે' શબ્દથી બોલવવામાં સ્ત્રીઓએ કંઈ ગુમાવવાનું નથી અને લાભ ઘણા છે જેનું શબ્દોમાં વર્ણન કરવું શક્ય નથી. અંગ્રેજી ભાષામાં You શબ્દ જેવો કોઈ શબ્દ ગુજરાતી ભાષામાં હોત તો આ તું અને તમેનો વિવાદ જ ન રહેત. શાસ્ત્રોમાં અનેક પતિવ્રતા-શીલયુક્ત સ્ત્રીઓની કથાઓ આવે છે તેમાં ક્યાંય પતિને તેમની સ્ત્રીએ 'તૂં' કહીને બોલાવતી કદી વાંચવામાં આવેલ નથી.

લગ્ન સમારંભ પતી ગયા પછી સિતાજી પોતાના પતિ રામચંદ્રજીની સાથે તેમના ઘેર જવા તૈયાર થઈ રથમાં બેસવાની તૈયારી કરે છે ત્યાં જનક રાજાએ આવી પોતાની વહાલસોયી પુત્રીને છાતી સરસી ચાંપી નીચે પ્રમાણે ઉપદેશ આપી વિદાય કરી.

"**હે પુત્રી!** પતિના ઘેર આવવા પર તેમનો સત્કાર કરવા ઉભા થઈ તૈયાર રહેવું. જે કંઈ કહે તે અત્યંત નમ્રતાપૂર્વક સાંભળવું. અત્યંત મૃદુસ્વરે વિનયપૂર્વક તેમની સાથે વાતચીત કરવી. તેમની સાથે બેસવા ઉઠવામાં તેમના ચરણકમળ પર દ્રષ્ટિ રાખવી. તેમનાં બધાં કાર્યો બનતા સુધી નોકર પાસે ન કરાવતાં જાતે કરવાં.

તેમના સૂઈ ગયા બાદ સૂવું અને તેમના પહેલાં પથારીમાંથી ઉઠી જવું. અહીં બધે ઠેકાણે માનવાચક 'તમે' શબ્દ વાપર્યો છે. તેમની-તેમના વિ. શબ્દો વાપર્યા છે. તેની-તેના શબ્દો વાપર્યા નથી. ચોથા આરાની આ સંસ્કૃતિ હતી.

'Shame! where is thy blush!

— Shakespeare 'Hamlet' Act III Sec. 4

ઘણીવાર આવેશમાં આવી જઈ વગર વિચાર્યું બોલી જવામાંથી તેમજ કલહની ઉત્પત્તિમાંથી બચાવનાર આ લજ્જા નામનો ગુણ, સુખી કુટુંબ અને તેની માન-મર્યાદાની ચાવીરૂપ છે. ઉપાડેલ કાર્યનો સાંગોપાંગ નિર્વાહ, યુદ્ધમાં રણભૂમિ પરથી કાયરતાપૂર્વક ભાગી ન જવું અને મરણપર્યંત વીરતાપૂર્વક લડવું તેમજ લૌકિક વ્યવહારમાં નીતિમાર્ગમાં ટકાવી રાખનાર 'લજ્જા' નામનો ગુણ છે. આજકાલ જુવાનીયાઓ નિર્લજરીતે વર્તતા હોય ત્યારે સાંભળ્યું ન સાંભળ્યું કરીને, જોયું ન જોયું કરીને વડીલોને માટે શરમથી માથું ઝુકાવવાનો જમાનો આવ્યો છે. ટી.વી. ઉપર બિભત્સ દૃશ્યો બાપ-દિકરી, શ્વસુર તેમજ પુત્રવધુ સાથે બેસીને જોઈ પણ ન શકે અને જોવાથી કુટુંબની માન-મર્યાદા કેટલી સચવાશે અને આવા કુસંસ્કારો કુમળા બાળકો પર પડતાં મોટા થઈ કયાં જઈને અટકશે એ જોવાની નથી સરકારને ફુરસદ કે સેન્સર બોર્ડના અધિકારીઓને. ટી.વી.ના બધા કહેવાતા મનોરંજન પ્રોગ્રામની આચારસંહિતા બનાવવાની ખાસ જરૂર છે. સરકારની Liberlisation તેમજ economic reforms ની બધી યોજનાઓ સફળ થશે તો પણ પ્રજા કદી આ વાતાવરણમાં સુખી થવાની નથી. ભારતની પુરાણી સંસ્કૃતિ તેમજ પ્રણાલિકા સાચવી રાખવા એક ખાસ પ્રધાનની નિમણૂક કરવાનો સમય પાકી ચૂક્યો છે. થોડોક પણ વિલંબ વિનાશને નોંતરશે.

સ્ત્રીઓના રોજબરોજ પહેરવેશની બદલાતી fashion માટે, એક લેખકે કહ્યું છે કે :

"All. fashions are attributable to adjustments of womens' outward desire to dress and inward desire to undress."

ગુજરાતીમાં કહેવત છે 'પુત્રનાં લક્ષણ પારણામાં અને વહુના લક્ષણ બારણામાં.' આમાં લજ્જાગુણનીજ વાત છે. લજ્જાનામના આ ગુણમાં ધીરજ, માન, મર્યાદા, વિનય (respect for others) સ્વમાન (self-respect) સભ્યતા, સંયમ (self control) વિવેક અને સૌથી વધુ બુદ્ધિમતાનો સાર રહેલો છે. લજ્જા માતાની પેઠે અનેક ગુણોની જનની છે અને તેમનું જતન કરનારી છે.

લજ્જાના શેરડા જેના મુખ પર છવાઈ ગયેલ છે અને જેનો પહેરવેશ મર્યાદાયુકકત છે એવી એક નમણી સ્ત્રી અને બીજી બાજુ નિર્લજ્જ અને પોતાના શરીરના અવયવોનું પ્રદર્શન કરતી હોય તેવી અર્ધનગ્ન પહેરવેશયુક્ત સ્ત્રી અને તે બંનેની મુખાકૃતિના નમુના માનસશાસ્ત્રીઓના અભ્યાસની પ્રયોગશાળામાં પૃથ્થકરણ (analysis) માટે મોકલી તેનો રીપોર્ટ તૈયાર કરવામાં આવે તો 'સૌંદર્યનું સાચુ સ્વરૂપ' એ વિષય પર અમૂલ્ય નિબંધની ગરજ સારે.

"Beauty is skin deep somebody said. The other said no. 'It is stainless soul within, that outshines the fairest skin."

"All the beauty treatments in chris'tendom won't improve their looks half so much as would a heartful of forgiveness, tenderness and love"

— Dale Carnagic

'How to stop worrying and start living' page-144.

નં.-૩૧

—: દયાવાન :—

ભગવાન ઋષભદેવે પોતાના સો પુત્રોને સંબોધીને નીચે પ્રમાણે કહ્યું :

तिविहेण वि पाण मा हणे आयहिते अणियाणं संवुडे।
एवं सिद्धा अणंतसो, संपइ जे अणागयावरे।।

હે પુત્રો! તમે આત્મહિતની ખાતર એકેન્દ્રિયથી માંડી પંચેન્દ્રિયસુધીના પ્રાણી, જીવ માત્રની મન, વચન અને કાયાથી હિંસા કરશો નહીં અને પોતાની ઈન્દ્રિયોને વાસના તરફ ઘૂમવા દેશો નહીં. બસ આ પ્રમાણે વ્રતના પાલન કરતા રહેતાં ભુતકાળમાં અનંત જીવો મોક્ષે ગયા છે વર્તમાનમાં જઈ રહ્યા છે અને ભવિષ્યકાળમાં પણ જશે.

— *નિર્ગંથ પ્રવચન પાન-૧૯૫*

अतीतै : भाविभिश्चापि वर्तमानै : सर्वैर्जिनै :।
सर्व जीवा न हंतव्या एष धर्मो निरुपित :।।

ભુત-ભવિષ્ય અને વર્તમાનમાં વિચરતા સર્વ જિનેશ્વરોએ 'કોઈ જીવની હિંસા કરશો નહીં' એ ધર્મ નિરૂપણ કરેલ છે.

दमोदेवगुरुपास्तिर्दानमध्ययनंतप :।
सर्वमप्येतदफलं हिंसा चेन्न परित्यजेत्।।

દેવપૂજા, ગુરૂની વૈયાવચ્ચ, દાન, સ્વાધ્યાય, સંયમ અને તપ એ છ ગૃહસ્થનાં નિત્યકર્મો હિંસાના ત્યાગપૂર્વક ન કરવામાં આવે તો સઘળાં નિષ્ફળ છે.

गृहकार्याणि सर्वाणि दृष्टिपुतानि कारयेत्

ઘરનાં સર્વકાર્યો દેખભાલ કરીને (કોઈજીવની હિંસા ન થાય તે જોઈને) કરવાં જોઈએ.

आसनं शयनं यानं मार्गगमन्यश्च वस्तुयन्।
अदृष्टं तन्न सेवेत यथाकालं भजन्नपि।।

સમયે સમયે ખપ પડતા આસન એટલે ખુરશી, ચટાઈ વિ. શયન કહેતાં પથારી, વાહન કહેતાં મોટર, સાયકલ, ઘોડાગાડી વિ. વાપરતાં તેમજ રસ્તે ચાલતાં, જતાં પસાર થતાં તેમજ બીજી વસ્તુઓનો ઉપયોગ કરતાં, વાપરતાં, દેખ્યા, શોધ્યા વગર ન કરવાં.

— *સાગાર ધર્મામૃત સટીક પાન-૧૨૦*

''દયા ધર્મકો મૂલ હૈ, પાપ મૂલ અભિમાન
તુલસી દયા ન છાંડીએ, જબ લગ ઘટ મેં પ્રાણ.''

દયા ધર્મનું મૂળ છે અને પાપનું મૂળ અભિમાન (અભિમાન = પરવસ્તુમાં પોતાપણાની બુદ્ધિપૂર્વક તેનો મદ) છે.

संसारे मानुष्यं सारं, मानुष्ये च कौलिन्यम्।
कौलिन्ये च धर्मित्वं, धर्मित्वे चापि सदयत्वम्।।

સંસારમાં મનુષ્યભવ સારરૂપ છે. મનુષ્ય ભવમાં કુલિનપણું સારરૂપ છે. કુલિનતામાં ધર્મનું સેવન સારરૂપ છે અને ધર્મપાલનમાં દયાળુપણું સારરૂપ છે.

मत्तो माभूदसौख्यं कथमपि भविनः कस्यचित्पुत्करोमि

હું પોકારીને કહું છું કે મારાથી કોઈ જીવને કોઈ પ્રકારે દુઃખ ન થાઓ!

— *પદ્મનંદિ પંચવિંશતિ પાન-૫૧*

પોતાનું રહન-સહન એ પ્રમાણે આયોજનપૂર્વક નિર્માણ કરવું કે જેથી પોતાનાથી કોઈને કોઈપણ પ્રકારે **દુઃખ, વિડંબના કે** અગવડ ન થાય.

येषां जिनोपदेशेन कारुण्यामृतपूरिते।
चित्ते जीवदया नास्ति, तेषां धर्मो कुतो भवेत्॥

કરૂણારૂપી અમૃતથી છલોછલ્લ ભરેલા જિનેન્દ્ર ભગવાનના ઉપદેશને સાંભળીને જેના ચિત્તમાં દયાભાવ ન પરિણમ્યો **તેણે ધર્મ ને શું જાણ્યો?**

सर्वे जीवा न हन्तव्या कार्या पीडापि नाल्पिका।
उपद्रवो न कर्तव्यो, नाज्ञाप्या बलपूर्वकम्॥
न वा परिगृहीतव्या, दासकर्म नियुक्तये।
एष धर्म ध्रुवो नित्य: शाश्वतो जिनशासने॥

કોઈપણ જીવની હત્યા ન કરવી, તેને અલ્પ પણ પીડા ન કરવી, તેને ઉપદ્રવ ન કરવો, બળપૂર્વક **તેની પાસે** કામ ન કરાવવું, તેના ઉપર કબજો જમાવવો નહીં એટલે કે તેને બંધનમાં મૂકવો નહીં અને **દાસકર્મ-વેઠમાં જોડવો નહીં.** આવો ધર્મ શાશ્વતો જિનશાસનમાં કહેલો છે.

मूलं धर्मतरोराद्या व्रतानां धाम संपदाम्।
गुणानां निधिरित्यङ्गिदया कार्या विवेकिभि:॥

ધર્મરૂપી વૃક્ષનું મૂળ, વ્રતરૂપી સંપત્તિનું ધામ, અને ગુણોના ભંડારસમી જીવદયા બુદ્ધિમાન વિવેકી જીવોએ **હંમેશ કાર્યકારી છે.**

अहिंसा लक्षणं धर्म, कुरु त्वमङ्गिनां दयाम् ધર્મનું લક્ષણ અહિંસા છે. હે ભાઈ તું! જીવો પર દયા **ભાવ રાખ!**

सर्वजीवदयाऽऽधारा गुणास्तिष्ठन्ति मानुषे।
सूत्राधारा प्रसूनानां हाराणां च सराइव॥
यतिनां श्रावकानां च व्रतानि सकल्यान्यपि।
एकाहिंसाप्रसिध्यर्थं कथितानि जिनेश्वरै:॥

ગુણરૂપી ફૂલોની હારમાળામાં દોરીની માફક અહિંસા સર્વત્ર અંતર્ગત છે. મુનિ અને શ્રાવકનાં બધાંજ વ્રતો **એક** માત્ર અહિંસાની જ આવૃત્તિ જિનેન્દ્ર ભગવાને કહેલ છે.

करुणार्द्रं च विज्ञानवासितं यस्यं मानसम्।
इन्द्रियार्थेषु नि:सङ्गं तस्य सिद्धं समीहितम्॥

જેનું મન કરૂણાથી આર્દ્ર-ભીનું છે, વિશિષ્ટજ્ઞાન સહિત છે અને ઈન્દ્રિયોના વિષયોથી વિરકત છે તેણે **પોતાનું હિત સાધ્યું (એમ જાણવું).**

शकतौ सत्यामुपेक्षा च युज्यते न महात्मन:

વિનાશ રોકવાની શક્તિ હોવા છતાં મહાન પુરુષોની ઉપેક્ષા વાજબી નથી.

श्रुयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा च अवधार्यताम्।
आत्मन: प्रतिकुलानि परेषां न समाचरेत्॥

હે જીવો ધર્મનો સાર સાંભળો અને સાંભળીને જીવનમાં ઉતારો, આચરણમાં ઉતારો. 'પોતાને પ્રતિકુળ એવું આચરણ બીજા પ્રત્યે ન કરો.

Do not do unto others what you wish others not do unto you.

— *Jesus wept...* *Shortest sentence in Bible.*

છાતીમાં ખીલા ઠોકનાર-હત્યારાઓ પ્રત્યે દયા આવતાં જિસસ ક્રાઈસ્ટના આંખમાં આંસુ આવ્યાં.

સંગમદેવે એક રાતમાં ભગવાન મહાવીર પર ૨૦ ઉપસર્ગ (એકથી બીજો ચઢિયાતો) કર્યા. ભગવાન પોતાના જ્ઞાન-ધ્યાનથી તેમજ સમભાવથી જરીયે ચલાયમાન ન થતા જોઈ આખરે છ માસ પછી (દરરોજ અનેક ઉપસર્ગ કરતાં છ માસ વીત્યા બાદ) સંગમ પોતાના સ્થાને પાછો ચાલ્યો ગયો. શાસ્ત્રકાર કહે છે :

कृतापराधोऽपि जने कृपामन्थनतारयो : ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं श्री वीर जिननेत्रयो : ॥

પોતાને આવો ભયંકર ઉપસર્ગ-અપરાધ કરનાર પર પણ કૃપાદૃષ્ટિથી જોનાર ભગવાન મહાવીરની આંખમાં (દયાદ્રતાથી આંખ ભીની થતાં) આંસુ આવ્યાં. (અરે! આ સંગમની શું દશા થશે ?)

हिंसादिषु इह अमुत्र अपाय अवद्य दर्शनम् ॥ ४ ॥
दु:खमेव वा ॥ ५ ॥ — *તત્ત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય - ૭*

હિંસાદિ પાંચ પાપોમાં આ લોક તેમજ પરલોકમાં આપત્તિ અને અનિષ્ટ રહેલું છે એમ જાણવું. તેમાં માત્ર દુ:ખ જ દુ:ખ છે.

સર્વ આશ્રમનું હૃદય, સર્વ શાસ્ત્રોનો મર્મ અને સર્વ વ્રત-ગુણોનો સારભૂત પિંડ અહિંસા (દયા) જ છે.

— *ભગવતી આરાધના ॥ ૭૮૨ ॥*

"સર્વ પાપોનું મૂળ હિંસા છે, કર્મોનું મૂળ મિથ્યાત્વ છે; રોગોનું મૂળ ધાતુક્ષય છે અને સર્વ અપરાધોનું મૂળ લોભ છે."

"હે મુનિ! આત્મામાં ઉપયુકત થઈને અથવા ઉપયોગની સાવધાનીપૂર્વક મન-વચન અને કાયાના જોગથી તેમજ કૃત-કારિત અને અનુમોદના એમ નવ પ્રકારે છ કાય જીવોની હિંસા જાવજીવ પરિહરો"

— *ભગવતી આરાધના ॥ ૭૭૫ ॥*

જેમ તમને દુ:ખ ગમતું નથી તેમ બીજા જીવોને પણ તે ગમતું નથી, એમ જાણીને સદાય બીજા સર્વ જીવોને પોતાના સમાન સમજીને તેમના પ્રત્યે પોતાના આત્માની જેમ પ્રવર્તો.

— *ભગવતી આરાધના ॥ ૭૭૬ ॥*

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दु:खं स योगि परमोमत : ॥

હે અર્જુન! પોતાના આત્માની માફક સર્વ જીવોને સુખ તેમજ દુ:ખ થાય છે એમ જે સારી રીતે સમજે છે જાણે છે તેને પરમયોગી માનવામાં આવેલ છે.

"રે આત્મ તારો આત્મ તારો શીઘ્ર એને ઓળખો
સર્વાત્મમાં સમદૃષ્ટિ દ્યો, આ વચનને હૃદયે લખો." *શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર*

'આ વચનને હૃદયે લખો' એવો વાકય પ્રયોગ બીજે કોઈ ઠેકાણે શ્રીમદ્જીએ કરેલ જોવામાં આવતો નથી.

प्राणायथाऽऽत्मनोऽमीष्टा भूतानामपि ते तथा।
आत्मौपम्येन भूतानां दयां कुर्वति मानव : ॥

પોતાને જેમ પોતાના પ્રાણ (ઉપલક્ષણથી સ્ત્રી, પુત્ર, ધનાદિ સંપત્તિ) પ્રિય છે, એજ રીતે બીજા જીવોને પણ પોતાના પ્રાણ પ્રિય છે. તેથી હે મનુષ્ય! તું પોતાની માફક સર્વ જીવો પ્રત્યે રહમભાવ, દયાભાવ રાખ!

—: સૌમ્ય :—

अपकारिण्यपि प्राया सौम्या : स्यु : उपकारिण : ।
मारकेभ्योऽपि कल्याणं रसराज : प्रयच्छति ॥

એવી એક લોકોક્તિ છે કે પારાનું મારણ કરી તેમાંથી એક પ્રકારનો રસ ઉત્પન્ન કરવામાં આવે છે જેનાથી લોહ પણ સોનારૂપે પરિણમી જાય છે. અહીં શાસ્ત્રકાર એમ કહેવા માગે છે કે પારો પોતાના મારનારને પણ સુવર્ણ આપે છે તેમ સૌમ્ય સ્વભાવ અને આકૃતિવાળા પુરુષો પોતાના પર અપકાર કરનારને પણ ઉપકાર કરે છે એવો જ કોઈ તેમનો સ્વભાવ છે.

सादृष्टं चेष्टते स्वस्या: प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहो किं करिष्यति ॥

''જેવી પ્રકૃતિ પોતાની, જ્ઞાનીએ તેમ વર્તતો;
સ્વભાવે જાય પ્રાણીઓ, કરે નિગ્રહ કેટલું ?''

— ભગવદ્‌ગીતાનો ગુજરાતી પદ્યાનુવાદ સ્વ. કિશોરલાલ મશરૂવાલા.

ચંદનવૃક્ષ તેને કાપનાર કુહાડીની ધારને પણ સુંગંધીત કરે છે તેમ સૌમ્ય પ્રકૃતિધારી મુનીશ્વરો પોતાના પર અપકાર કરવાવાળા પર પણ ઉપકારજ કરે છે.

શ્રેણિકરાજાના જીવનના એક ચિરસ્મરણીય પ્રસંગની વાત છે કે તેમણે એક વખત કુતૂહલ બુદ્ધિથી ગંભર મુનિના ગળામાં મરેલા સર્પને મૂક્યો હતો. ત્રણ દિવસ બાદ ચેલણા રાણી જે ચતુર્વિધ સંઘની ભક્તિ સહિત જૈનધર્મની ચુસ્ત અનુયાયી હતી તેને આ વાતની જાણ થતાં રાતોરાત (સુશ્રાવકો સંધ્યાકાળ બાદ બીજે દિવસે સૂર્ય ઉગ્યાબાદ અમુક ટાઈમ સુધી ઘરમાંથી બહાર પગ મૂકતા નથી એવો તેમનો આચાર હોવા છતાં) ગુરૂભક્તિથી પ્રેરાઈ અને આ ઉપસર્ગથી અત્યંત વિહવળ બની જઈ શ્રેણિક રાજા સાથે જ્યાં મુનિ બિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચી જઈ મુનિના ગળામાંથી (જે સ્થિતિમાં મૂક્યો હતો તેવી જ સ્થિતિમાં રહેલો જોઈ) પોતે ઉપાડી લીધો. મુનિરાજે બંનેને સંબોધી **'युवयोर्धर्म वृद्धिरस्तु'** 'તમારા બંનેને ધર્મની વૃદ્ધિ થાઓ' એ પ્રમાણે આશીર્વચન કહ્યું. આ પ્રકારની મુનિની સૌમ્ય પ્રકૃતિથી પ્રભાવિત થઈ શ્રેણિક રાજાએ જૈનધર્મ અંગીકાર કર્યો. અને તે પણ કેવો! જે આવતી ચોવીસીમાં 'પદ્મનાભ' નામ ધારી પ્રથમ તીર્થંકર થશે. આ બધો સૌમ્ય પ્રકૃતિનો અને આંખમાં પ્રતિભાસતી નિષ્કારણ કરૂણાનો પ્રભાવ જાણવો.

कामठे धर्मेन्द्रे च स्वोचितं कर्म कुर्वति ।
प्रभुस्तुल्य मनोवृत्ति तस्मै श्री पार्श्वनाथै : नम : ॥

એક બાજુ કામઠ પાર્શ્વ પ્રભુને ઉપસર્ગ કરતો જાય છે અને બીજી બાજુ ધર્મેન્દ્રદેવ તેમાંથી ભગવાનને ઉગારતો અને ઉપસર્ગ નિષ્ફળ કરતો જાય છે. બંને પ્રત્યે સમભાવથી જોતાં સૌમ્યમૂર્તિ પાર્શ્વનાથ ભગવાન મનમાં વિચારે છે કે બંને જણ પોતપોતાની પ્રકૃતિ પ્રમાણે કામ કરી રહ્યા છે. ભગવાન પોતે તો પોતાના વીતરાગભાવની સાધનામાં અડોલ અને અકંપ સ્થિત છે.

સંગમદેવે એક રાત્રિમાં મહાવીર પ્રભુને ૨૦ ઉપસર્ગો (એકથી બીજો વધુ ભયંકર) કર્યા. છ મહિનાસુધી ઉપસર્ગો કર્યા જ કર્યા. છેવટે ભગવાન મહાવીરને પોતાના જ્ઞાન-ધ્યાનથી બીલકુલ ચલાયમાન ન થતા જોઈને પોતાને સ્થાને પાછો ચાલ્યો ગયો. પ્રસંગનું વર્ણન કરતાં શાસ્ત્રકાર કહે છે :

कृतापराधेऽपि जने कृपामन्थनतारयो : ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं श्री 'वीर' जिननेत्रयो : ॥

પોતાના પર અપરાધ કરનાર પર પણ કૃપા દૃષ્ટિથી જોનાર સૌમ્ય પ્રકૃતિવાન ભગવાનની આંખ (દયાર્દ્રતાથી ભીની થતાં)માં આંસુ આવ્યાં (અરે આ સંગમદેવની શી ગતિ થશે ?)

एक : पुजा रचयति नर : पारिजात प्रसूनै : ।
क्रुद्ध : कण्ठे क्षिपति भुजंग हन्तुकामस्ततोऽन्य : ।
तुल्या वृत्तिर्भवति च तयोर्यस्य नित्यं स योगी ।
साम्यारामं विशति परमज्ञानदत्तावकाशम् ॥

— *જ્ઞાનાર્ણવ પાન-૨૩૯ / અધ્યાત્મ તરંગિણી પાન-૧૯*

એક ભાઈ પારિજાત પુષ્પોથી મુનિની પૂજા કરે છે જ્યારે બીજો ક્રોધપૂર્વક તેમને મારી નાખવાની બુદ્ધિપૂર્વક ગળામાં સાપ પહેરાવે છે. બંને તરફ સમભાવથી જોનાર મુનિ સામ્યભાવપૂર્વક આનંદજ અનુભવે છે.

ओत्वारवषोऽहिगरुडा : पुनरेणसिंहा
अन्येऽङिगनोऽपि च मिथो जनिवैरबन्धा : ॥
तिष्ठन्ति ते समवसृत्यविरोधनं त्वां
दृष्टवा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥

હે પ્રભુ! સમવસરણમાં બિરાજમાન સૌમ્ય-દૃષ્ટિવાળા આપને જોઈને બિલાડીઓ ઉંદરની વચ્ચે, સર્પ ગરૂડોની વચ્ચે, હરણો સિંહોની વચ્ચે તેમજ જન્મથી જ એકબીજા પ્રત્યે વૈરભાવ રાખવા વાળા અન્ય પ્રાણિઓ પણ અરસપરસ પ્રેમપૂર્વક રહે છે. આપનો આશ્રય જેણે લીધો છે તેને કોઈ પ્રકારનો ભય ઉપજતો નથી.

જે માણિક રત્નો સ્ત્રીના ગળામાં હારરૂપે આશ્રય કરતાં અને જે આરસના પત્થરો શ્રીમંતોના મહેલમાં બેસાડવામાં આવતાં જેના તેના અભિમાનની પુષ્ટિ કરવાનું નિમિત્ત બને છે તેજ માણિક રત્નો અને આરસના પત્થરો માનસ્તંભમાં બેસાડતાં જોનારના અભિમાનને ગાળી નાખવાનું નિમિત્ત બને છે તે હે પ્રભુ! આપની નિષ્કારણ કરૂણા તેમજ સૌમ્ય મુખદર્શનનો જ પ્રભાવ છે.

"Calmness of mind is one of the beautiful jewels of wisdom. It is the result of long and patient effort in self control. It's presence is an indication of ripened experience and more than an ordinary knowledge of laws and operation of thought. A man becomes calm and poised in the measure that he understands himself as a thought evolved being, for such knowledge necessiates the understanding of the others as the result of thought, and as he developes a right understanding and sees more and more clearly the internal relation of things by the action of cause and effect, he ceases to fuss and fume and worry and grieve and remains poised, steadfast and serene. The calm man having learnt how to govern himself, knows how to adopt himself to others; and they in turn, revere his spiritual strength and feel that they can learn of him and rely on him. The more tranquil a man becomes, the greater is his success, his influence, his power for good. Even the ordinary trader will find his business prosperity increased. as he developes a greater self-control and equanimity, for people will always prefer to deal with a man whose demeanour is strongly equable. The strong calm man is always loved

and revered. He is like a shade giving tree in thirsty land or a sheltering rock in a strom. Who does not love a tranquil heart, a sweet tempered balanced life? It does not matter whether it rains or shines or what chages come to those possessing these blessings for they are always sweet, serene and calm. That equisite poise of character which we call serenity is the last lesson of cuture, it is the flowering of life, the fruitage of the soul. It is precious as wisdom, more to the desired than gold, yea! even the fine gold. How insignificant mere money seeking looks in comparision with a serene life, a life that dwells in the ocean of truth, beneath the waves and beyond the reach of tempests, in eternal calm!"

चन्द्र : सुधामयत्वादुडुपतिरपि सेव्यते ग्रहग्रामै : ।
ग्रहगणपतिरपि भानुर्भाम्यत्येको दुरालोक : ।।

ચન્દ્રમા નક્ષત્રોનો સ્વામી છે તો પણ અમૃતમય તેની સૌમ્ય પ્રકૃતિને લીધે ગ્રહોના સમુહથી સેવાય છે. અર્થાત્ ગ્રહોનો સમુહ તેનો આશ્રય લે છે. જ્યારે દુ:ખેથી સામે જોઈ શકાય એવો સૂર્ય ગ્રહોના સમુદાયનો સ્વામી છે પણ-તેની ઉગ્ર પ્રકૃતિને કારણે ગ્રહગણથી વિખુટો એકલોજ પરિભ્રમણ કરે છે.

નં.-૩૩

—: પરોપકાર (દાન) :—

પરોપકાર એ દાનનો પર્યાયવાચક શબ્દ છે :

परस्यानुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्॥ ३८ ॥

विधिद्रव्यदातृ पात्र विशेषाद्विशेष:॥ ३९ ॥

— *'સર્વાર્થસિદ્ધિ' (તત્ત્વાર્થ સૂત્રની ટીકા) પાન-૨૮૧*

બીજાના ઉપર ઉપકારને અર્થે પોતાના (ધનાદિનો) ત્યાગ કરવો તેને દાન કહેલ છે અને તે ત્યાગ કરવામાં આવતી એટલે કે આપવામાં આવતી ચીજ-વસ્તુ, વિધિ (Grace), દાતાર અને પાત્ર (જેને દાન કરવામાં આવે છે તે વ્યક્તિ) ની વિશેષતામાં તેની ગુણવત્તા રહેલી છે.

દ્રવ્ય (વસ્તુ) ૧) આહારદાન, ૨) ઔષધદાન, ૩) જ્ઞાનદાન, ૪) અભયદાન આ ચાર પ્રકારના દાન જિન શાસનમાં બતાવેલ છે.

આ ચારે પ્રકારના દાન તદ્દન જીવન આવશ્યક (Bare necessities of life) અને આત્મોન્નતિ (Spiritual uplift) ને અર્થે છે. આ દાનમાં પણ પ્રાસુક આહાર તેમજ ઔષધ પણ પ્રાસુક હોવા જોઈએ. જ્ઞાનદાન અને અભયદાન સ્વભાવથી જ પ્રાસૂક છે.

બંદુક-તલવારાદિ તેમજ હાથી, ઘોડા, વાહનાદિ હિંસાના ઉપકર્ણોના દાનનો જિનશાસનમાં અત્યંત નિષેધ કરેલો છે. આ પ્રકારના દાન આપનાર તેમજ લેનાર બંને અધોગતિમાં જાય છે. એક વિદેશી તત્ત્વચિંતકે કહ્યું છે :

'Who are more criminal and to be denounced of the two? Those who manufacture weapons of mass destruction and sell them or those who buy and use them?'

આજકાલ દુનિયામાં આંતકવાદ અને સામે માનવઅધિકારની દરરોજ વર્તમાન પત્રોમાં ખબરો આવે છે. જ્યાંસુધી 'Live and let live' (including animals) 'Forbear and forgive' અને 'Thou shalt not kill' વિ. અહિંસાના સિદ્ધાંતો તેમજ અહિંસકભાવમાં પોતાનું જ સુખ સમાયેલું છે એ જગતના જીવોને સમજાશે નહિ ત્યાંસુધી આતંકવાદ અને Security નું પુનરાવર્તન થયાજ કરશે.

વિધિ: મુનિને નવધા ભક્તિપૂર્વક આહારદાન કરવું જોઈએ. બાકી આર્જિકા, શ્રાવક, શ્રાવિકાને જેની તેની યોગ્યતાપૂર્વક સન્માન, ઉષ્માભર્યો આવકાર તેમજ મિષ્ટ ભાષણપૂર્વક. ઉત્તમપાત્રને દાનનો લાભ મળતાં ગૃહસ્થ પોતાને ધન્ય સમજે છે. તેને અપૂર્વ લાભ ગણે છે.

દાતાર: જેનામાં નીચે જણાવેલ આઠ લક્ષણો હોય તેને જિનશાસનમાં દાતાર કહેલ છે. (દાતારના ૮ ગુણ) ૧) ભક્તિ, ૨) પ્રસન્નવદન, ૩) શ્રદ્ધા, ૪) વિજ્ઞાન, ૫) સાત્ત્વિકતા, ૬) ક્ષમતાવાન (દાન આપવાની શક્તિવાળો), ૭) ક્ષમાવાન અને ૮) મત્સરતા રહિત (બીજા કોઈ દાતારને પોતાનાથી અધિક દાન કરતો જોઈ તેની અદેખાઈ ન કરતાં તેની અનુમોદના કરે.).

પાત્ર: નિર્ગ્રંથ મુનિ સમાન ઉત્કૃષ્ટ પાત્ર જગતમાં નથી.તેમના પછી આર્જિકાદિ છે.

ધર્મબુદ્ધિપૂર્વક કરવામાં આવતા આહારાદિ પ્રાસૂક દાનમાં ઉત્તમ પાત્ર, મુનિ, આર્જિકા, મધ્યમ પાત્ર પડિમાધારી શ્રાવક, શ્રાવિકા અને જઘન્ય પાત્ર અસંયમી સમ્યગ્દ્રષ્ટિ ગ્રહસ્થ. બાકી બધા અપાત્ર છે અને હિંસાદિથી આજીવિકા કરનાર, વિષયલંપટ તેમજ તીવ્ર કષાયી જીવો બધા કુપાત્ર છે. આ બધાનો બરાબર વિચાર કરી

વિચક્ષણ બુદ્ધિવાન ગૃહસ્થ, શ્રાવક, દાનની પ્રવૃત્તિ કરે છે. જેના જીવનમાં દાન નથી તેને પશુ સમાન અને જેના ઘરમાં દાનની પ્રવૃત્તિ નથી, પાત્ર જીવને આવકાર સન્માનાદિ નથી તે ઘરને શાસ્ત્રોમાં શ્મશાન ગણેલ છે.

શ્રેયાંસ રાજાએ ભગવાન ઋષભદેવને બારમાસના ઉપવાસ પર ઈક્ષુ-શેરડીના રસથી પારણાં કરાવ્યાં અને તેના ફળસ્વરૂપ જૈનધર્મની ઉત્કૃષ્ટ આરાધનાપૂર્વક મુનિવ્રત અંગીકાર કરી તેજ ભવે કર્મોનો ક્ષય કરી ભગવાન ઋષભદેવ પહેલાં મોક્ષગતિને પામ્યા. ચંદનબાળાએ અટપટા અભિગ્રહધારી નિર્ગ્રંથ મુનિદશામાં સ્થિત ભગવાન મહાવીરને અડદના બાકળાનું આહારદાન કર્યું અને તેના ફળસ્વરૂપ ભગવાન મહાવીરના ચતુર્વિધ સંઘમાં આર્જિકાની નાયક બની.

શ્રીષેણરાજા આહારદાનના પ્રતાપે ભવાંતરે આ ચોવીશીમાં શ્રી શાંતિનાથ નામધારી ૧૬મા તીર્થંકર થયા.

"અનેક જન્મોથી આરાધનાનાં ફળસ્વરૂપ સરળતા અને ઉદારતા વિરલ ભાગ્યશાળી જીવોમાં જોવામાં આવે છે."

"જે ઉત્તમ ભાવથી સુપાત્ર જીવ મોક્ષ સુધીની કલ્યાણ પરંપરાને પ્રાપ્ત કરે છે એવો સમર્થ ઉદાર ભાવ તે ધર્મ છે."

— *ભગવતી આરાધના ॥ ૧૮૬૪ ॥*

अयं निज : परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्॥

આ મારૂં છે અને આ બીજાનું છે એવી ગણના સ્વયં પેટુ, મતલબી, તુચ્છ જીવોનું લક્ષણ છે. ઉદાર ચિત, માનસવાળા જીવોને આખું જગત પોતાના કુટુંબ સમાન છે.

વિનોબાજી ભાવે જૈન ન હોવા છતાં તેમનામાં ભગવાન મહાવીર અને તેમણે પ્રરૂપેલ અહિંસાધર્મ પ્રત્યે અત્યંત આદર ભાવ હતો અને તેમણે 'જયહિંદ' ને બદલે 'જય જગત' નો સંદેશ ભારતવાસીઓને આપ્યો. અને જીવનના અંતીમ દિવસોમાં 'આહારનો સંપૂર્ણ ત્યાગ કરી અનશનવ્રત (મરણાંત) અંગીકાર કર્યું. તે વખતના વડાપ્રધાન ઈંદિરાજીએ તેમના આશ્રમમાં જઈ આહાર લેવા વિનંતી કરવા છતાં "મારો જીવનકાળ હવે પૂરો થવા પર છે' એક કહી શાંતિપૂર્વક આ પાર્થિવ દેહનો ત્યાગ કર્યો. જૈન ધર્મમાં 'ભગવતી આરાધના' સમાધિમરણ માટે અણમોલ શાસ્ત્ર છે. પાછલી ઉંમરમાં આ શાસ્ત્રનું વારંવાર અવલોકન કરવા જેવું છે.

—: અભયદાન :—

मरणभय भीरुकानां अभयं यो ददाति सर्वजीवेभ्य :।
तद्दानानां दानं तन्पुनर्योगेषु मूलयोगोऽपि॥ ५१ ॥

મરણના ભયથી સદાય ભયભીત સર્વ જીવોને જે અભયદાન (મુનિવ્રત અંગીકાર કરી) દે છે તે સર્વદાનોમાં ઉત્કૃષ્ટદાન અને તેજ વળી યોગમાં મૂળ યોગ છે.

"करेमि भंते सामाइयं, सव्व सावज्जजोगं पच्चकरवामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए कायेण न करेमि न कारवेमि करंतंऽपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गर्हामि अप्पाणं वोसरामि"

સામાયિક ચારિત્રરૂપ પાંચ મહાવ્રત અંગીકાર કરી અઠ્ઠાવીસ મૂળગુણના ધારક નિર્ગ્રંથ મુનિએ જગતમાં સ્થિત સર્વ ત્રસ, સ્થાવર જીવોને અભયદાન દીધેલ છે.

'मत्तो माभूदसौख्यं कथमपि भविन : कस्यचित्पुत्करोमि'

"હું પોકારી પોકારીને કહું છું કે મારાથી કોઈ જીવને કોઈ પ્રકારે પણ દુઃખ ન થાઓ."

— *પદ્મનંદી પંચવિંશનિકા પાન-૫૧.*

પાંચ સંમિતિ અને ત્રણ ગુપ્તિ. અષ્ટપ્રવચનમાતા જૈન ધર્મની સર્વોપરિતાની સૂચક છે. બીજે ક્યાંય જોવા નહીં મળે.

"અપરાધ કરનાર પ્રત્યે પણ સદ્‌ભાવ એ વિશિષ્ટ અર્થ કહેતાં પ્રયોજન 'મોક્ષ'ની પ્રાપ્તિમાં સાધનભૂત હોવાથી પોતાના જ અભ્યુદયનું કારણ છે.

दाणं पूया मुकरव सावय धम्मे ण सावया तेण विणा।
झाणाज्झयणं मुकरव जइ धम्मे तं विंणा तहा सो वि ।। १२ ।।

સુપાત્રને ચાર પ્રકારના દાન અને સદ્દેવગુરૂશાસ્ત્રની પૂજા-ભક્તિ કરવી તે શ્રાવકોનો મુખ્ય ધર્મ છે. ધ્યાન અને જિનાગમનો સ્વાધ્યાય, અધ્યયન તે મુનીશ્વરોનો મુખ્ય ધર્મ છે. જે શ્રાવકને દાન તેમજ ભક્તિ નથી તે શ્રાવક નથી અને જેને ધ્યાન અને અધ્યયન નથી તે મુનિ નથી.

—: જ્ઞાનદાન :—

धर्मादेशोपदेशाभ्यां नोपकारोऽस्त्यत : ।। ६५६ ।।

— *પંચાધ્યાયી ઉત્તરાર્ધ*

ધર્મના આદેશ અને ઉપદેશથી અધિક આ જગતમાં બીજો કોઈ ઉપકાર નથી. આચાર્યાદિનું જ્ઞાન અને (તેનું ફળ વિરતિ) ચારિત્ર સઘળું જે તે કાળમાં વિહરમાન તીર્થંકરોના ઈન્દ્રરચિત સમવસરણમાં આપેલ ધર્મની દેશનાનુ જ ફળ છે. અરે! આ જગતમાં જ્ઞાનથી મીલીઝુલી જે કંઈ પ્રવૃત્તિ, આચારાદિ જોવામાં આવે છે તે પ્રાત:સ્મરણીય પરમપૂજ્ય શ્રી તીર્થંકરોનોજ ઉપકાર છે.

मोहान्धकार गहने संसारे दु:खिता बत : ।
सत्वा : परिभ्रमन्त्युचै : सत्यस्मिन्धर्मतेजसि ।।
अहमेतानत : कृच्छाद्यथायोगं कथंचन ।
अननोत्तारयामि इति वरबोधिसमन्वित : ।।
करुणादिगुणोपेत : परार्थव्यसनीसदा ।
तथैव चेष्टते धीमान्वर्धमान महोदय : ।।
तत्तत्कल्याण योगेन कुर्वन्सत्वार्थमेव स : ।
तीर्थकृत्वमाप्नोति परं सत्त्वार्थसाधनम् ।।

આ મોહાંધકારથી ગહન સંસારમાં પરિભ્રમણ કરી રહેલા દુ:ખી જીવોને આ ધર્મપ્રકાશ વડે કરીને ગમે તેમ (જે તે ઉપાય વડે) કરી યથાયોગ્ય પાર ઉતારૂં એવો ભાવ બોધિબીજ પામતાં જ એ તીર્થંકરનો જીવ ભાવે છે અને ત્યારબાદ કરૂણાદિ ગુણોથી યુકત પરમકૃપાળુ મહામતિમાન અને સદાય 'પરાર્થ વ્યસની' (એટલેકે બીજાનો ઉપકાર કરવો એજ જેની દિનરાત પ્રવૃત્તિ છે) તેવા જ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ કરે છે આમ તે કલ્યાણયોગ વડે પ્રાણીઓ પ્રત્યે પરોપકાર કરતાં કાળાંતરે તીર્થંકરપદને પામે છે જે જીવોના પરમ અભ્યોદય-કલ્યાણનું ઉત્કૃષ્ટ નિમિત્ત કારણ છે.

वरबोधित आरभ्य परार्थोद्यत एव हि ।
तथाविधं समादत्ते कर्म स्फीताशय : पुमान् ।।

ઉત્તમ સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિ થઈ ત્યારથી જ પરોપકારમાં તત્પર ઉદાર આશયવાળા મહાનુભાવ જ તીર્થંકર નામ કર્મનો બંધ કરે છે.

"અને એ તીર્થંકર નામ કર્મના ઉદયકાળથી માંડીને તેમના ચરમદેહની લગભગ અંતીમ ઘડી સુધી વીતરાગ પ્રભુ ધર્મદેશના કરે છે."

''उच्यते कल्प एवास्य तीर्थकृन्नामकर्मण :।
उदयात्सर्वसत्वानां हित एव प्रवर्तते।।''

તીર્થંકર નામ કર્મના ઉદયથી સકલ જગતના હિતમાંજ પ્રવૃત્તિ થવી એવોજ કોઈ યોગાનુયોગ હોય છે.

वचनं चैकमप्यस्य हितां भिन्नार्थगोचरां।
भूयसामपि सत्वानां प्रतिपत्तिं करोत्यलम्।।

તે જગદ્દગુરુનું માત્ર એક જ વચન પણ ઘણીવાર પાત્ર જીવોને વિવિધવિષયક હિંતકારક પ્રવૃત્તિ ખૂબ (સારી રીતે) કરાવે છે.

આગળ જોઈ ગયા છીએ કે **युवयोर्धर्मवृद्धिरस्तु'** એ એક વાક્ય (ઉપસર્ગકૃત મુનિ મહારાજનું) શ્રેણિક રાજાના જીવનમાં અદ્દભુત જીવન પલટાનું નિમિત્ત બની ગયું.

''વિષયોંકી આશા નહિ જિનકે સામ્ય ભાવ ધન રખતે હૈં;
નિજપર કે હિતસાધન મેં જો નિશદિન તત્પર રહેતે હૈ;
સ્વાર્થત્યાગકી કઠીન તપસ્યા બીના ખેદ જો કરતે હૈ;
ઐસે જ્ઞાની સાધુ જગત કે દુ:ખ સમુહકો હરતે હૈ''

જુગલકિશોર કૃત 'મેરી ભાવના'

'वज्रादपि कठोरानि मृदुनि 'कुसुमादपि' વજ્ર કરતાં પણ અભેદ્ય અને ફુલ કરતાં પણ કોમળ એવું સત્પુરુષોનું હૃદય પારખવા કોણ શક્તિમાન છે ?

परोपकाराय सतां विभूतय :

મહાન પુરુષોનું સમગ્ર જીવન એકમાત્ર જગતના જીવોના કલ્યાણ, ઉપકાર અર્થેજ હોય છે.

'परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्'

બીજાનો ઉપકાર કરવો તે પુણ્ય, પવિત્રતા, ઉન્નતિ તેમજ વિશુદ્ધિનું અંગ છે અને બીજાને પીડા ઉપજાવવી તે પાપ, પતન, અધોગતિ તેમજ સંકલેશનું અંગ છે.

'स्वार्थो यस्य परार्थ एव'

બીજાનો ઉપકાર કરવો, તેમનું પ્રયોજન સાધવું એજ પોતાનો સ્વાર્થ પોતાના પ્રયોજનની સિદ્ધિ છે. 'પરના **હિતમાં તત્પર રહેવું** એવો જ કોઈ મહાપુરુષોનો જાતિસ્વભાવ છે.'

परदु:खप्रतिकारमेव ध्यायन्ति ये हृदि।
लभन्ते निर्विकारं सुखमायति सुन्दरम्।।

જેઓ બીજાના દુ:ખોના નિવારણનું જ હૃદયમાં ચિંતવન કરે છે તે નિર્વિકાર આગામીકાળે વહન કરનારૂં સુખ પામે છે.

(आयति सुन्दरम् - આગામી કાળે કલ્યાણને વહન કરનારૂં)

''धर्माणामन्यजन्तूपकृतिरपि तथा राज्यते ह्युत्तमत्वे''

સર્વ ધર્મોમાં પરોપકાર ધર્મ પણ ખરેખર ઉત્તમપણે શોભે છે.

Where Lord Jesus christ said: "Forgive him seven hundred times seventy seven" Lord Jesus was pleading the cause of the man who was injured and not of the man inflicting injury.

"Forbear and Forgive"

"शकतौ सत्यामुपेक्षा च युज्यते न महात्मन:"

વિનાશ રોકવાની શક્તિ હોવા છતાં મહાન પુરુષોની ઉપેક્ષા વાજબી નથી.

"આ દુનિયા દુર્જનોની દુર્જનતાથી જેટલી પીડાય છે તેથી વધુ સજ્જનોની નિષ્ક્રિયતાથી પીડાય છે."

"Bad legislators are elected by intelligent people who do not go to polling station to cast their vote."

આ જગતમાં રહી સહી જે કંઈ મૌલિકતા દેખાય છે તે સત્પુરુષોના આત્મસમર્પણપૂર્વકના (વર્તમાન તેમજ ભૂતકાલીન) સેવાભાવી જીવનથી છે અને નહિ કે સ્વાર્થપરાયણ ધન તેમજ વિષય સુખમાં રચ્યાપચ્યા શ્રીમંતોના ધનસંગ્રહ કે જાજલ્યમાન મકાનાદિ વૈભવોથી.

—: જગડુશાની માનવતા :—

દુષ્કાળનું વર્ષ આવે અને તેના પરિણામ સ્વરૂપ લોકોની યાતના શરૂ થાય તે અગાઉ જગડુશા ચેતી જતા. જે જે વસ્તુઓની અછતની સંભાવના જણાય તે તે ચીજ-વસ્તુઓ જ્યાં સુકાળ હોય તેવા દેશભાગમાંથી ખરીદી લાવી સંગ્રહ કરતા અને વખત આવ્યે ઘેર ઘેર જઈ ભૂખ્યાંની આંતરડી ઠારવા નમ્રભાવે અનાજ વિ.ની વહેંચણી જાતે કરી પોતાની જાતને લૂંટાવી દેતા ઘસી નાખતા અને માનવતા મહેકી ઉઠતી.

वासीचन्दनतुल्यान्तर्वृत्तिमालंब्य केवलम्।
आरब्धं सिद्धिमानीतं प्राचिनैर्मुनिसत्तमै:॥

ચંદન-સુખડના ઝાડને કાપવા કુહાડાની ધાર તેના પર પડતાં પોતે કપાઈ જઈ કુહાડાની ધારને સુગંધીત કરવાના દ્રષ્ટાંતરૂપે પ્રાચીનકાળમાં સત્પુરુષોએ પોતાની જાતને ઘસી નાખી જગતના જીવોનું હિત કરેલું છે.

—: ભગવાન મહાવીરનું વરસીદાન :—

ભગવાન મહાવીરે દરેક તીર્થંકરોની જેમ વૈરાગ્યની પરાકાષ્ટા પર પહોંચતાં મુનિવ્રત અંગીકાર કરતા પહેલાં તેમની દાનશાળામાં 'વરવારિકા'નો આદેશ કર્યો. તેમની દાનશાળામાં દરરોજ ૩૮૮,૮૦,૦૦,૦૦૦ (ત્રણસો અઠ્ઠાસી કરોડ એંસી લાખ) સોનૈયાનું દાન થતું હતું. આ દાનને અપરિમીત દાન કહેવામાં આવેલ છે. તો પ્રશ્ન થાય છે કે જ્યારે સંખ્યા બતાવી છે તો તેને અપરિમીતદાન કેમ કહી શકાય? તો કહે છે કે ભગવાને તો 'વરવરિકા' નો આદેશ આપ્યો હતો એટલે કે જેને જે જોઈએ અને માગે તેટલું આપો. ભગવાનના ચારિત્ર્ય અને વૈરાગ્ય તેમજ લોકપ્રિયતાનો પ્રભાવ એવો હતો કે માગવા આવનારના મનમાં એમ વિચાર આવતો કે મને જોઈએ તેટલું લઉં જેથી બીજાઓને પણ પુરતા પ્રમાણમાં લાભ મળે. આ રીતે આ દાન અપરિમીત હતું કેમકે ભગવાને કોઈ મર્યાદા મૂકી નહોતી.

येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न परोपकार।
ते मर्त्यलोके भूवि भारभूता मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति॥

જે માણસમાં વિદ્યા, તપ, દાન, શીલ કે પરોપકારવૃત્તિ નથી તે મૃત્યુલોકમાં ભૂમિને ભારરૂપ છે અને તે મનુષ્યના લેબાસમાં હરણ-પશુ જેવાજ છે.

याचमान जनमानसवृत्ते: पूरणाय बत जन्म न यस्य।
तेन भूमिरिह भारवतीय न द्रुमैर्न गिरिभिर्न समुद्रै:॥

નિરાધાર, બેહાલ, યાચક જીવોની (પેટ ભરવા પૂરતી જીવનની અનિવાર્ય જરૂરીયાત) માગ પૂરી કરવા માટે જે જન્મેલ નથી એવા માણસોથી આ પૃથ્વી ભારવાળી છે નહિ કે વૃક્ષો, પર્વતો કે સમુદ્રના ભારથી.

कल्पद्रु: पादपानां हरिरमृतभुजां चक्रवर्ती नराणाम्।
धर्माणामन्यजन्तूपकृतिरपि तथा राजते द्युत्तमत्वे॥

વૃક્ષોમાં કલ્પવૃક્ષ, દેવોમાં ઈન્દ્ર, મનુષ્યોમાં ચક્રવર્તી જેમ ઉત્તમપણે શોભે છે તેમ સમગ્ર ગુણોમાં પરોપકાર ધર્મ પણ ખરેખર ઉત્તમપણે શોભે છે.

પરોપકાર વૃત્તિનો એક હૃદયંગમ દ્રષ્ટાંત :—

John Ruskin inherited a million dollors. With this money he set out doing good "says a writer in the 'Arena' Charitable Trust." By 1877 he had disposed off 3/4th of his inherited wealth with all the income including that from his books. But the calls of the poor and his plans (looking towards educating and enabling working men to live reasonbly good life and giving more sunshine and joy to every possible human life) were such that he decided to dispose off all his wealth except a small sum sufficient to yield him 1500/= (dollars) a year on which to live.

—: Will of Mahatma Gandhiji :—

Any wills that I may have made before this day stand cancelled and this be deemed to be my last Will.

I donot believe that I have any property, nevertheless, anything which by social convention or law is considered mine, anything moveable or immoveable, books, articles etc. that I have written and may write hereafter, whether printed or not printed and all their copyright, I endow as my heirs the Navjivan Institution, whom I hereby declare as my heirs and Declaration of trust for the establishment of which I alongwith Mohanlal Maganlal Bhatia got registered as a deed of trust on 26-11-1929. and of which shri Vallabhbhai Jhaverbhai Patel, Shri Narhari Dwarkadas Parikh are at present trustees. The Navjivan Trust will give to the Harijan Sevak Sangh for harijan service every year after my demise twenty five percent (25%) of the net profit that it earns out of the sale of the exercise of their copy right. In order to exercise my desire as expressed by this Will and to make the necessary arrangement for it, I appoint Bhai Mahadev Haribhai Desai and Narhari Dwarkadas Parikh as executors of my this Will. In the absence of any one of them, by death or any other cause, the other has got the right to make necesary arrangements and to execute this my Will.

Sd / Pyarelal Nayar
20-2-1940

Sd / Mohandas Karamchand Gandhi
Malikand 20-2-1940

Sd / Kishorelal G. Mashruwala
20-2-1940

—: અંતરંગ ષડરિપુઓને જીતનાર :—

काम क्रोधस्तथा लोभो हर्षमानो मदस्तथा।
षड्वर्गमुत्सृजेदेन तस्मिं त्यकते सुखी भवेत्॥

કામ, ક્રોધ, લોભ, હર્ષ, માન તથા મદ આ છ વર્ગનો જે ત્યાગ કરે છે તે સુખી થાય છે.

दिवा पश्यति नो धूक :, काक नकतं न पश्यति।
अपूर्व : कोऽपि कामांधो, दिवा नकतं न पश्यति॥

ઘૂવડ દિવસે જોઈ શકતું નથી, કાગડો રાત્રે જોઈ શકતો નથી. પરંતુ કામાંધ માણસ તો એવો ગજબનો છે કે રાત કે દિવસ કંઈ જોઈ શકતો નથી.

अर्थातुराणां न गुरुर्न बंधु, विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा।
क्षुधातुराणां न ऋचिर्न वेला, कामातुराणां न भयं न लज्जा॥

પૈસાના ભૂખ્યાને કોઈ વડીલ કે ભાઈ જેવું હોતું નથી. વિદ્યા પ્રાપ્ત કરવા આતુર માણસને આરામ કે નિદ્રાની પણ પડી નથી. ભૂખ્યા માણસને સ્વાદ-બેસ્વાદ કે વેળા-કવેળા જોવાની ધીરજ હોતી નથી. અને કામાંધને ભય કે લજ્જા જેવું કંઈ હોતું નથી એટલે કે તેને નેવે મૂકે છે.

બ્રહ્મદત્તની માતા ચુલણી રાણીએ તેના પતિ બ્રહ્મરાજાના અવસાન બાદ તેના પતિના એક મિત્ર સાથેના આડા સંબંધમાં પોતાનો પુત્ર બ્રહ્મદત્ત આડખીલીરૂપ જણાતાં તેને પરણાવી મધુ-રજની માટે લાક્ષાગૃહ બનાવી તેમાં સૂવા મોકલ્યો અને પછી રાતના તેને આગ લગાડી તેનું કાસળ કાઢી નાખવાનો પ્રયત્ન કરેલો.

કામથી અંધ બનેલા રાવણે સીતા કરતાં પણ અત્યંત સ્વરૂપવાન અને શીલવંત પોતાની પટરાણી મંદોદરી તેમજ યોદ્ધાઓમાં અત્યંત પ્રખર અને અજેય ગણાતા પોતાના ભાઈ બિભીષેણ દ્વારા વારંવાર વિનવ્યા છતાં કામથી અંધ બનેલ રાવણ માન્યો નહિ અને પરિણામ સ્વરૂપ શ્રીરામ અને રાવણ વચ્ચે જગતમાં પ્રસિદ્ધ એવું તુમુલ યુદ્ધ ખેલાયું જેમાં લાખોની સંખ્યામાં જાનહાની અને વિનાશ સર્જાયો. અંતમાં લક્ષ્મણ (વાસુદેવ)ના હાથે રાવણ (પ્રતિવાસુદેવ) બાણથી વિંધાઈ મૃત્યુને શરણ થયો.

सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा

સર્વ આભરણો બોજારૂપ છે અને સર્વકામ (વિષયવાસના) દુ:ખને નોંતરનારી છે.

સાપ કરડવાથી મૃત્યુ થતા પહેલાં સાત વેગો થાય છે, જ્યારે કામરૂપી સર્પથી કરડાયેલા મનુષ્યને દસ વેગો થાય છે.

प्रथमे जायति चिंता, द्वितीये द्रष्टुमिच्छति।
तृतीये दीर्घनिश्वासाश्चतुर्थे भजते ज्वरम्॥ २९ ॥
पञ्चमे दह्यते गात्रं, षष्ठे भुकतं न रोचते।
सप्तमे स्यान्महामूर्च्छा, उन्मत्तत्वमथाष्टमं॥ ३० ॥
नवमे प्राणसंदेहो, दशमे मुच्यतेऽसुभि :
एतैर्वेगै : समाक्रान्तो जीवस्तत्त्वं न पश्यति॥ ३१ ॥

— જ્ઞાનાવર્ણવ પાન-૧૨૮

કામનું **ઉદ્દીપન થતાં** પ્રથમવેગમાં ચિંતા થાય છે. બીજા વેગમાં તેને (પ્રતિપક્ષીને) જોવાની ઈચ્છા પ્રબળ પણે થાય છે. ત્રીજા વેગમાં (જોવાનું ન બનતાં) નિશ્વાસ નાખે છે. ચોથા વેગમાં શરીરમાં જ્વર-તાવ ચઢે

છે. પાંચમા વેગમાં શરીર દગ્ધ થવા લાગે છે. દાહ ઉત્પન્ન થાય છે. છઠ્ઠા વેગમાં ભોજનમાં રૂચી થતી નથી. ખાવાનું પણ ગમતું નથી. સાતમા વેગમાં મહામુર્છા ઉત્પન્ન થાય છે. બેહોશ જેવો બની જાય છે. આઠમા વેગમાં ઉન્મત્ત, પાગલ જેવો બની જાય છે. નવમા વેગમાં પોતાને મરણની શંકા ઉપજે છે અને અંતીમ દસમા વેગમાં પ્રાણને તજી દે છે.

—: કામોત્તેજનાનાં ૧૦ બાહ્યકારણો :—

आद्यं शरीर संस्कारो, द्वितीयं वृष्य सेवनम्।
तौर्यत्रीकं तृतीयं, स्यात्संसर्गस्तुर्यमिष्यते॥ ७ ॥
योषिविषय संकल्प: पंचमं परिकीर्तितम्।
तदङ्गवीक्षणं षष्ठं संस्कार: सप्तमं मतम्॥ ८ ॥
पूर्वानुभोगसंभोग स्मरणं स्यात्तदष्टमम्।
नवमं भाविनी चिंता दशमं वस्तिमोक्षणम्॥ ९ ॥

૧) શરીરના સંસ્કાર-શ્રૃંગારાદિ કરવું, ૨) પુષ્ટરસ, ઘી-મલાઈ યુક્ત મેવા મિઠાઈનું સેવન, ૩) ગીતનૃત્યાદિ સાંભળવું તેમજ જોવું ૪) સ્ત્રીનો સંસર્ગ કરવો, ૫) સ્ત્રી સંબંધી કોઈપણ પ્રકારનો અંતરંગમાં સંકલ્પ કરવો, ૬) સ્ત્રીના અંગોને દેખવાં, ૭) દેખેલા અંગોના સંસ્કાર હૃદયમાં સ્થાપિત કરવા, ૮) ભૂતકાળમાં જેની તેની સાથે કરેલા ભોગ-ઉપભોગને યાદ કરવા, ૯) આગામી કાળમાં ભવિષ્યમાં તે ભોગોની મનમાં ઈચ્છા રાખવી અને ૧૦) શુક્રનું શરણ-છૂટી જવું, વિર્યપાત.

नासने शयने याने स्वजने भोजने स्थितिम्।
क्षणमात्रमपि प्राणी प्राप्नोति स्मरशल्यत:॥ ३६ ॥

કામરૂપી શલ્ય કહેતાં કાંટાથી, બાણથી વિંધાયેલ જીવને બેસતાં, સૂતાં, ચાલતાં, સ્વજનમાં કે ભોજનમાં ક્યાંય ક્ષણ માત્ર પણ ચેન પડતું નથી.

वित्तव्रतबलस्यान्तं स्वकुलस्य च लाञ्छनम्।
मरणं वा समीपस्थं न स्मरार्त्त: प्रपश्यति॥ ३७ ॥

કામથી પીડિત પુરુષ પોતાના ધન, ચારિત્ર અને બળના નાશને જોતો નથી. તેમજ પોતાના કુળને કલંક લાગવાને તેમજ મરણસુધીના ભયને પણ ગણતો નથી. કામની પીડા એવી છે કે ઉત્તેજીત થતાં હિતાહિતનો કોઈ વિચારજ રહેતો નથી.

अनासद्य: जन: कामी कामिनी हृदय प्रियाम्।
विषशस्त्रानलोपायै: सद्य: स्वं हन्तुमिच्छति॥ ३९ ॥

કામી પુરુષ જો કદી પોતાની પ્રાણવલ્લભ સ્ત્રીની પ્રાપ્તિ કરવામાં નિષ્ફળ જાય છે તો ઝેર ખાઈને, શસ્ત્રથી પોતાનો ઘાત કરીને, ઉપરથી પડતું મૂકીને, કુવામાં પડીને કે શરીર પર ઘાસતેલ છાંટીને બળી મરીને અપઘાત કરવા તત્પર થઈ જાય છે.

સંસારમાં જિવ્હા ઈન્દ્રિય અને કામને વશ થઈને જીવ પોતાને ભૂલી નરક-તિર્યંચ ગતિમાં લઈ જાય તેવાં મહાનિંદ્ય કાર્યો કરે છે. સંસારમાં પરધનની વાંછા, પરસ્ત્રીની વાંછા અને ભોજનની લંપટતાજ જીવના પરિણામને મલીન કરનાર છે. રણક્ષેત્રમાં દુશ્મનો સામે એકલે હાથે લડનાર સુભટો અને રાજકારણમાં ઉચ્ચ સ્થાન ધરાવતા વિશ્વના રાજકારણીઓ પણ કામથી મહાત થયાના ઘણા દાખલાઓ જોવાંમાં આવે છે.

''क्रोधादिन् मानसान् वेगान्, पुष्टमांसादनं तथा।
परितज्यऽसहिष्णुत्वं, लप्स्यसे मनस: स्थितिम्॥''

ક્રોધાદિક માનસિક વેગો, ચુગલી અને અસહિષ્ણુતાનો તૂં ત્યાગ કર: જેનાથી તને માનસિક સ્વાસ્થ્ય-શાંતિ મળશે.

कोहो पीई पणासेइ, माणो विणय-णासणो।
माया मित्ताणी नासेइ, लोभो सव्व विणासणो॥

ક્રોધ પ્રીતિનો નાશ કરે છે, માન વિનયનો નાશ કરે છે, માયા મિત્રતાનો નાશ કરે છે અને લોભ સર્વનાશને નોંતરે છે.

क्रोधोदयेन भवति कस्य न कार्यहानी! ક્રોધ કરવાથી કોને નુકસાન થયું નથી?

''ક્રૂર ન ક્રોધી સારીખે, નહિ ક્ષમીસે શાંત;
નીચ ન માની સારિખે, નિગરવસે ન મહંત
માયાવીસો મલિન નહિ, વિમલ ન સરલ સમાન,
ચિંતાતુર લોભીન સેં, દુખી ન દીન સમાન.''

—: ક્રોધના પ્રકાર (પર્યાયવાચક શબ્દો) :—

૧. બીજાની પ્રત્યે પ્રીતિનો અભાવ
૨. કલહ (બોલાચાલી)
૩. ખાર (બીજા પ્રત્યે મનમાં દ્વેષ રાખવો)
૪.મત્સર
૫. અનુશય (ક્રોધ કર્યા બાદ મનમાં ઉચાટ રહે)
૬. ચંડત્વ (ભ્રુકુટિ ચઢાવવી)
૭. અનુપશમ (ઉપશમભાવનો, નિર્વેરવૃત્તિનો અભાવ)
૮. સંતાપ
૯. તામસ પ્રકૃતિ
૧૦. નિચ્છોટન (ક્રોધથી આત્મામાં મલીન પરિણામ)
૧૧. નિર્ભર્ત્સન (ક્રોધથી બીજાની ઠેકડી ઉડાવવી)
૧૨. નિરાનુવર્તિત્વ (ક્રોધથી બીજાની ખાસ કરીને વડીલ સ્નેહીસંબંધીની અનુકુળ ન ચાલતાં સ્વચ્છંદપણે વર્તવું.)
૧૩. અસંવાસ (કુટુંબ છોડીને ભાગી જવું, એકલા રહેવું, વટના માર્યા ગાજર ખાવું.)
૧૪. કૃતનાશ (કરેલા ઉપકારનો નાશ કરવો, કોઈએ કોઈ વસ્તુ આપી હોય તે તોડીને ફેંકી દેવી.)
૧૫. અશામ્ય (ઘણા વખત સુધી પરિણામ શાંત ન થવા. અંતરંગમાં બળ્યા કરવું.)

—: માનના પ્રકાર (પર્યાયવાચક શબ્દો) :—

૧) અભિમાન, ૨) મદ, ૩) અહંકાર, ૪) પરપરિવાદ, ૫) આપવડાઈ, ૬) બણગાં ફૂંકવાં, ૭) પરપરિભવ (સામાનો પરાભવ કરવો-હલકો પાડવો), ૮) અસૂયા (બીજાનો ઉત્કર્ષ સહન ન થવો), ૯) હીલના (સામાને ઉતારી પાડવો), ૧૦) નિરૂપકારિત્વ (કોઈનું કામ ન કરવું, સ્વયંપેટુ), ૧૧) અક્કડપણું, ૧૨) અવિનય, ૧૩) પરગુણ આચ્છાદન (બીજાના ગુણનું આચ્છાદન કરવું. ઢાંકી દેવા).

—: માયાના પ્રકાર (પર્યાયવાચક શબ્દો) :—

૧. માયા
૨. કુડંગી (ગાઢ-ભારોભાર માયાવીપણું)

૩. પ્રચ્છન્નમાયા (છાનુમાનું પાપ કરવું, છાનુમાનું ઘરમાં ખાવું)
૪. કુડકપટ
૫. વંચનતા (બીજાને છેતરવું)
૬. અસત્પ્રરૂપણા (દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવપણે સ્થિત પદાર્થનું અન્યરૂપે નિરૂપણ કરવું.)
૭. ન્યાસાપહાર (બીજાની થાપણને ઓળવવી)
૮. સ્વંવ્યતિકર (પોતાનું કાર્ય સાધવા જાણી જોઈને ગાંડા થવું, ગાંડા જેવું વર્તન કરવું.)
૯. ગુઢાચારિત્વ (માયાવડે ગુપ્ત વિચરવું, ધીરે ધીરે કોઈની નજર ન પડે તેમ નીચા નમી ચાલવું)
૧૦. કુટિલમતિ - વક્રતા
૧૧. વિશ્વાસઘાત.

—: લોભના પ્રકાર (પર્યાય વાચક શબ્દો) :—

૧. લોભ (સામાન્ય લોભ)
૨. અતિસંચયશીલતા (લોભના કારણે એક જાતની અગર ઘણી જાતની વસ્તુઓનો અતિ સંચય કરવો)
૩. કિલષ્ટત્વ (લોભ વડે કરીને મનની કલુષતા)
૪. અતિમમત્વ (ચીજવસ્તુઓ પર અત્યંત મમતાભાવ) (ચમડી તુટે પણ દમડી ન છૂટે)
૫. કલ્પાન્નનો અપરિભોગ (ભોગવવા યોગ્ય સુંદર અન્ન વસ્ત્રાદિની સુલભ ઉપલબ્ધિ હોવા છતાં ભોગવવી નહીં અને તેને ઠેકાણે હલકાં, સસ્તાં અન્નાદિ તેમજ જર્જરિત કપડાં પહેરવાં, સડેલાં શાકભાજી, ફળ ફેંકી ન દેતાં સાફ કરીને બાકીનો ભાગ ખાવો.
૬. નષ્ટ-વિનષ્ટાકલ્પ (ભોગવવા યોગ્ય ચીજવસ્તુઓ ન વાપરતાં ખુણામાં, માળીયામાં મૂકી રાખવી, સડી જાય, કાટ ચઢી જાય પણ વાપરે નહીં)
૭. સદા-સર્વદા તદ્ભાવ ભાવના (લોભના કારણે ઘર વિ. તેમજ સગવડતાના સાધનોનો વારંવાર મનમાં વિચાર કરી ગલગલીયાં કરવાં. બીજાને બતાવવાં વિ.)

ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ આ ચાર કષાય જન્મમરણના પ્રવાહરૂપ મહાન સમુદ્રમાં ડુબાડનાર છે. આત્માના સહજ સ્વાભાવિક સુખના ઘાતક છે. કષાયની વ્યુત્પત્તિ (કષ્ = સંસાર અને આય = પ્રાપ્તિ) જેનાથી સંસારની પ્રાપ્તિ-વૃદ્ધિ થાય તેને જિનશાસનમાં કષાય કહેલ છે.

ધર્મનું મૂળ દયા છે અને દયાનું મૂળ કોમળ પરિણામ છે. "સરળ વ્યક્તિને માટે સ્વીકૃતિ અને સાધના બંને સરળ છે" "જ્યાં અનાગ્રહ, નમ્રતા અને સરળતા છે ત્યાં સુસંસ્કાર શિક્ષા અને સદ્બુદ્ધિના અંકુરો ચિત્તમાં રહે છે."

ક્રોદાદિ નિજભાવો તણા ક્ષય આદિની જે ભાવના;
ને આત્મગુણ ની ચિંતના નિશ્ચયથી પ્રાયશ્ચિતમાં ॥ ૧૧૪ ॥
જીતે ક્ષમાથી, ક્રોધને, નિજ માર્દવેથી માનને
આર્જવ થકી માયા ખરે, સંતોષ દ્વારા, લોભને ॥ ૧૧૫ ॥

— *શ્રી નિયમસાર*

ક્રોધાદિ કષાયોને રોકીને, ઉત્તમ ક્ષમાદિ ગુણ ધારણ કરીને આત્માને ઉજ્જવળ કરો. સમસ્ત વ્યવહાર **કપટ રહિત** થઈને કરો. પારકાના ઉજ્જવળ યશ, વૈભવ, ઐશ્વર્ય, ઉત્તમ વિદ્યા આદિ પ્રભાવ દેખીને અદેખાઈરૂપ **મલિનતા છોડી** સંતોષરૂપ શૌચધર્મ અંગીકાર કરો.

—: કામીપુરુષની આઠ ચેષ્ટાઓ :—

૧. ચિંતવન (તે સ્ત્રી સંબંધી વારંવાર વિચાર કર્યા કરવો.)
૨. કિર્તન (તેનાં વખાણ કરવાં)
૩. ભાષણ (તેની સાથે કોઈપણ બહાને વાત કરવાનો પ્રસંગ ઉભો કરવો)
૪. કેલી (તેની સાથે રમત-ગમત, નાટક-સિનેમા જોવામાં લીન થવું)
૫. સ્પર્શન (તેના અંગને સ્પર્શ કરવો, કંઈ નહિ તો પગનો અંગુઠો)
૬. દર્શન (તેને જોવી-તેના અંગને જોવું)
૭. વિભ્રમ (બીજી અક્કલહીન ચેષ્ટાઓ કરવી.)
૮. હાસ્ય (હસી-મજાક કરવી).

પરવસ્તુમાં સુખ આપવાનો કોઈ સ્વભાવ નથી. બાહ્ય સામગ્રીથી સુખી થઈશ એ જીવનો અનાદિકાળનો ભ્રમ છે. (Illusion) મોહ છે. લોખંડના સળીયાઓ, સિમેન્ટ, રેતીમાં સુખ આપવાની શક્તિ હોત તો લોખંડ સિમેન્ટના કારખાનાવાળાઓનો જગતના મહાન ચિંતક Philosopher માં સમાવેશ થાત પણ જગતના સદ્દભાગ્યે હજુ સુધી તેમ બન્યું નથી.

જેમ વ્યક્તિને માટે Individual Character છે. તેમ દેશને માટે National Character છે. કોઈપણ દેશની શાંતિ કાયદો અને વ્યવસ્થાનું પાલન દેશના માણસોના આ ષડ્રિપુ (કામ, ક્રોધ, માન, માયા, લોભ અને હર્ષ) પર ઓછાવત્તા અંકુશ પર રહેલો છે. કેટલા પ્રમાણમાં તે નિયંત્રણમાં છે કે બહાર છે તેના પર.

Law and order situtation and peaceful co-existence of the subject of any nation depends upon the character of a nation and its every citizen and not on abandant supply of wealth and science and technology.

દુનિયાના સમૃદ્ધ દેશોમાં વિપુલ સામગ્રીનો પુરવઠો છે. સાયન્સ અને ટેકનોલોજીમાં પણ મોખરે છે. તેની સાથે crisis of character પણ એટલીજ છે. તે ઉપરાંત ગુન્હાખોરી, ડ્રગ એડીકટસ, અને સામાજિક દૂષણો પણ ક્યાં ઓછા છે ? તેનું કારણ આ ષડ્રિપુને નિયંત્રણમાં રાખવા વર્તમાન શિક્ષણ પદ્ધતિની નિષ્ફળતા છે. અને શિક્ષણનાં માધ્યમ ટી.વી. વિ. માં બિભત્સ અને હિંસાખોરીનાં દ્રષ્યો છે. કુમળા બાળકોની અને તેમના ભાવિની કુસેવા આ ફિલ્મકારો કરી રહ્યા છે. અને સરકારને કે સેન્સર બોર્ડને કંઈ પડી નથી, અગર તો સમજવા જેટલી અંગમબુદ્ધિ નથી.

To see the trouble long before it becomes an emergency
is the true quality of foresightedness
A Statesman thinks of the next generation
A Politician of the next election.

"For all the short falls, ruins, devastations and economic crisis or other calamities, man-made or acts of nature, the world would still have been happy if there was no crisis of character."

—: વશી :—

आसन्नकालभवसिद्धि यस्य जीवस्य लकखण इणमो।
विसयसुहेसु न रज्जइ सव्वत्थामेसु उज्जमइ।।

આસન્નભવ્ય જીવોનું લક્ષણ એ છે કે તેઓ પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસકત થતા નથી અને સર્વ અવસ્થાઓમાં પોતાના આત્માનો ઉદ્ધાર કરવામાં જ પ્રયત્નશીલ રહે છે.

જે પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં ગૃદ્ધ લોલુપ છે તે ક્રોધ, માન, માયા અને લોભથી પ્રેરિત હિંસા, જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહ એ પાંચ પાપોમાં પ્રવર્તે છે. આરંભ અને પરિગ્રહને પાપની ઉત્પત્તિનાં સ્થાન ભગવાને કહેલ છે. આરંભમાં હિંસા અને પરિગ્રહમાં પાંચ ઈન્દ્રિયોની આસક્તિ મૂળ છે. આ જિનશાસનમાંજ એમ કહેવામાં આવેલ છે કે જે વિષયોમાં ગૃદ્ધ છે તે હિંસાદિ પાંચ પાપોમાં પ્રવર્તે છે.

अजिताक्ष : कषायाग्निम् विनेतुम् न प्रभुर्भवेत्।
तत : क्रोधादिकं जेतुम् अक्षरोध : प्रशस्यते।।

જેણે પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયો પર કાબુ મેળવ્યો નથી તે કષાયરૂપી અગ્નિને શાન્ત કરવા સમર્થ થઈ શકતો નથી. તેથી જેને ક્રોધાદિ (ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ)ને જીતવાની ઈચ્છા છે તેણે પ્રથમ પાંચ ઈન્દ્રિયોને જીતવી આવશ્યક છે.''

Till a man is hankering after gratification of Senses (પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયો) and swayed away by anger (ક્રોધ) Ego (માન) Crookedness (માયા) and greed (લોભ) He is in a lower darkned stage of life and for him there is no hope of peace in this life and the life to follow (આભવ તેમજ પરભવમાં)

બીજી બાજુ ઈન્દ્રિય અને કષાયના વિજયી, આરંભ પરિગ્રહથી રહિત, જગતમાં એક પરમાણુ માત્ર પણ મારૂં નથી એવા આકિંચન્યભાવથી યુકત નિર્ગ્રંથ મુનિના સુખનું વર્ણન :

અત્યંત આત્મોપન્ન વિષયાતીત અનુપ અનંત ને;
વિચ્છેદહીન છે સુખ અહો! શુદ્ધોપયોગ પ્રસિદ્ધને ।। ૧૩ ।।

આગળ શુદ્ધપયોગની વ્યાખ્યા કરે છે :

સુવિદિત સૂત્ર પદાર્થ સંયમ તપ સહિત વીતરાગ ને;
સુખદુ:ખમાં સમ શ્રમણને શુદ્ધોપયોગ જિનો કહે ।। ૧૪ ।।

— *શ્રી પ્રવચનસાર..*

સુખી કોણ? અસંયત સમ્યગ્દષ્ટિ કે જેની પાસે સુખ સામગ્રી અને વૈભવના સાધનો વિપુલ પ્રમાણમાં છે તે કે પાંચમા ગુણસ્થાનવતી, અણુવ્રતધારી શ્રાવક કે જેને પરિગ્રહાદિની મર્યાદા નક્કી કરી રાખી છે અને દિવસે દિવસે તે ઓછી કરતા જઈ સર્વ પરિગ્રહત્યાગ કરી નિર્ગ્રંથ મુનિવ્રત અંગીકાર કરવાની ભાવના રાખે છે તે?

ઉપર ઉપરના દેવોમાં સુખની માત્રા અધિક અને પરિગ્રહ અલ્પ-અલ્પ હોય છે. સર્વાર્થસિદ્ધિના દેવોમાં સૌથી અલ્પ પરિગ્રહ છે જ્યારે સુખની માત્રા સર્વથી અધિક છે. તેનું કારણ સમ્યકદર્શન અને શુકલલેશ્યા છે.

હિંસા, જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહ ગર્ભિત મહાન આરંભ-સમારંભથી દ્રવ્યની પ્રાપ્તિ એ પુણ્યનું ફળ છે અગર તો ભગવાનની કૃપાનું ફળ છે-એ માન્યતા એ જગતનું અને તેમાં વર્તતા જીવોનું જેટલું અકલ્યાણ કર્યું

છે અને વીતરાગમાર્ગની અવહેલના કરી છે તેટલા પ્રમાણમાં કદાચ બીજી કોઈ માન્યતાએ કરી નથી.

"Self controll with an ideal of just the kind of person we would like to be, held before the sub-concious all the time, will be returned to us just as we order. We are made in the image of the ideal held before our maker, the sub-concious. We must live it however. If our ideal is for sobriety, getting drunk will not bring our dreams true. If our ideal is for perfect health, we certainly cannot expect a sensual life to build it."

કુદરતનો નિયમ, વસ્તુનો સ્વભાવ, કર્મનો સિદ્ધાંત, Principle of cause and effect એ બધા એક જ અર્થના સૂચક છે.

"ઉપશમ રસભરી સર્વજન શંકરી મૂર્તિ જિનરાજની આજ ભેટી;
કારણે કાર્ય નિષ્પત્તિ શ્રદ્ધાન છે, તેણે ભવભ્રમણની ભીડ મેટી"

— દેવચંદજીકૃત

प्रवर्तते परा शांति धृति संतुलनं क्षमा।
फलानि अमुनि धर्मस्य, फलं तस्यास्ति नो धनम्।।

પરમશાંતિ, ધૃતિ, સંતુલન અને ક્ષમાએ ધર્મનાં ફળ છે. ધનની પ્રાપ્તિ થવી એ ધર્મનું ફળ નથી.

Sometimes virtue starves and vice is fed. what then? Is reward of virtue bread?

— *Pope*

વશી - Self Control

"Those who die of chronic decease have no self control."

"Good health late in life indicates self-control, moderation in all things, equanimity and poise' Extravagent habits, even if there is an inexhaustible supply, build a self destructive morale."

"No man can improve upon nature and what is nature but an established eternal principle of cause and effect, the law of things. But he can learn to understand the law and instead of complaining, grudging and wishing that things were different, adjust himself and compromise, the result of which is peace and tranquility."

"As a man practises self control, he approximates more and more to his inward reality and is less and less swayed by passion and grief, pleasure and pain and lives a steadfast and a virtuous life, manifesting manly strength and fortitude. The restraining of passions is merely the innitial stage in self discipline and is immediately followed by process of purification."

अतिकांक्षा हता येन ततस्तेन भवस्थिति :

જેણે અતિતૃષ્ણાનો ત્યાગ કર્યો તેણે ભવસ્થિતિ પણ ઘટાડી દીધી. આ સાથે માર્ગાનુસારીના ૩૫ ગુણનું વર્ણન પુરૂં થયું.

कंखे गुणे जावशरीरमेवो :- જીવનના અંતીમ શ્વાસ સુધી ગુણની આરાધના કરતા રહેવું.

अवृत्ति-व्याधि-शोकार्तानानुवर्तेत शकितत : ।
आत्मवत्सततं पश्येदपि कीटपिपीलिका : ।।

આજીવિકાના અભાવથી, શોક તેમજ વ્યાધિથી દુ:ખી છે એવા પ્રાણીઓની સદૈવ પોતાની શક્તિ અનુસાર મદદ-સહાયતા કરવી જોઈએ. તેમજ કીડી-મંકોડા વિ. નાના જીવોને પણ પોતાની માફક તે પણ જીવ છે. (સુખ ઈચ્છે છે અને દુ:ખથી ડરે છે) એમ જોવા જોઈએ.

ભૂત-ભવિષ્ય અને વર્તમાનમાં વિહરમાન સર્વ તીર્થંકરો એમ કહે છે અગરતો પ્રરૂપણા કરતા રહ્યા છે કે સર્વપ્રાણી, સર્વ ભૂત, સર્વ જીવ અને સર્વ સત્વોને ન તો મારવા જોઈએ, ન તો તેમની ઉપર હકુમત ચલાવવી જોઈએ, ન તો તેમને પરાધીન કરવા એટલે કે બાંધવા જોઈએ અને ન તો તેમને કોઈ પ્રકારનો ઉપદ્રવ કરવો જોઈએ. આજ ધર્મ શુદ્ધ નિત્ય અને શાશ્વત છે. લોકોને તેમજ સમસ્ત જગતના જીવસમુહને જાણીને તેમજ તેમના સંતાપ દુ:ખને સારી રીતે સમજીને જ્ઞાની પુરુષોએ સર્વને માટે એટલે કે ઉત્થિત તેમજ. અનુત્થિત, ઉપસ્થિત તેમજ અનુપસ્થિત, હિંસાથી વિરત તેમજ અવિરત, ઉપાધિ સહિત તેમજ રહિત, સંયોગી અગર અસંયોગી સર્વને માટે આજ ધર્મ કહ્યો છે. આજ ધર્મ તથ્ય છે તેમજ યથાર્થ છે. જિનપ્રવચનમાં પણ આજ વાત કહેવામાં આવેલ છે.

शीवमस्तु सर्वजगत: परहितनीरता भवन्तु भूतगणा :
दोषा प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखीनो भवन्तु लोक : ।।

સારાયે જગતનું કલ્યાણ થાઓ. બીજાના હિતમાં જીવો રચ્યા પચ્યા રહો. દોષોનો સર્વનાશ થાઓ અને સર્વઠિકાણે જીવો સુખી થાઓ.

''તે પુરુષ જાણ સુમાર્ગશાળી, પાપ ઉપરમ જેહને
સમભાવ જ્યાં સૌ ધાર્મિકે, ગુણ સમુહ સેવન જેહને.''

''છેલ્લા શ્વાસ સુધી નિરંતર રહો આ સંયમી ભાવના,
અધ્યાત્મ સ્થિતિમાં વહો મુજ ઉરે કલ્યાણની સાધના;
આવે કાળ ભલે વિપદ શીર પર પડે ના દુ:ખ કે વાસના,
થાજો પ્રાપ્ત સુધર્મ અંત સમયે, એકે બીજી આશ ના.''

— સંતબાલજી

He who is simply happy towards the achievements of all others, his achievement is far greater than the achievements of all the others combined.

નિમિત્ત - ઉપાદાન (નૈમિત્તિક)

એક કાર્ય બનવામાં બે કારણ કહ્યાં. નિમિત્ત કારણ અને ઉપાદાન કારણ. કાર્યરૂપે પરિણમે તે ઉપાદાન અને તેમાં સહકારી કારણ તે નિમિત્ત.

કારણની વ્યાખ્યા : **"यद्भावाभावाभ्यां यस्योत्पत्यनुत्पत्ति तत् तत्कारणमिति।"**

— *પ્રમેયરત્નમાલા ૧/૧૩*

જેના સદ્ભાવમાં જે કાર્યની ઉત્પત્તિ થાય અને જેના અભાવમાં તે કાર્યની ઉત્પત્તિ ન થાય તે પદાર્થને તે કાર્યનું કારણ કહેવામાં આવેલ છે.

શ્રી વીરસેન સ્વામીએ ધવલ પુસ્તક ૧૨ માં કહયું છે કે :-

"यद्यस्मिन् सत्येव भवति नासति तत्तस्य कारणमिति न्यायात्।"

— *ધવલ પુસ્તક ૧૨ પૃષ્ઠ ૨૮૯*

જે જેની હયાતીમાં થાય છે અને હયાતીના અભાવમાં થતું નથી તેને તેનું કારણ કહેવામાં આવ્યું છે એવો ન્યાય છે. આપ્ત-પરીક્ષામાં કહેલ છે કે :

"यत्र यदन्वयव्यतिरेकानुलम्भस्तत्र न तन्निमित्तकत्वं दृष्टम्।"

જેનો જેની સાથે અન્વય-વ્યતિરેકનો અભાવ છે તે તેનું નિમિત્ત થઈ શકતું નથી.

तत्कारणकत्वस्यतदन्वयव्यतिरेकोपलम्भेन व्याप्तत्वात्
कुलालकारणस्य घटादेः कुलालान्वयव्यतिरेकोपलम्भप्रसिद्धेः

— *આપ્તપરીક્ષા પૃષ્ઠ ૪૦-૪૧*

જે જેનું કારણ છે તેનો તેની સાથે અન્વય-વ્યતિરેક અવશ્ય હોય છે જેમકે કુંભારવડે બનાવવામાં આવતા ઘડામાં કુંભારનો અન્વય-વ્યતિરેક જગત પ્રસિદ્ધ છે.

એક ખુબજ માર્મિક સિદ્ધાંત ધવલપુસ્તક ૧૧ માં પ્રતિપાદન કરેલ છે :-

"ण च कारणे अणवगए कज्जावगमो सम्मत्तं पडिवज्जत्ते।"

— *ધવલ પુસ્તક ૧૧ પૃષ્ઠ ૨૦૫*

જ્યાંસુધી કાર્યોત્પાદક હેતુ (કારણ)નું પરિજ્ઞાન-યથાથ જાણપણું નથી હોતું ત્યાંસુધી કાર્યનું પરિજ્ઞાન પણ **પ્રાપ્ત થતું નથી. કાર્યના** પરિજ્ઞાનથી Result Conciousness (લબ્ધલક્ષીગુણ)ની પ્રાપ્તિ તેમજ ધર્મ-અર્થ-કામ **અને મોક્ષ એ** ચારે પુરુષાર્થની પ્રવૃત્તિ હોય છે. ખેડુતને બીજ, ખાતર, પાણી, જમીન, આબોહવા, મોસમ વિ.ના **પરિજ્ઞાનપૂર્વકજ** પ્રવૃત્તિ કરતો જોવામાં આવે છે. ધંધા-રોજગારનું પણ એમ જ સમજવું. એક બીજી પણ અગત્યની વાત આ વિષયના સંદર્ભમાં ધ્યાનમાં રાખવા જેવી છે :-

"अन्वयव्यतिरेकसमाधिगम्यो हि हेतुफलभावः सर्व एव तावंतरेण हेतुता प्रतिज्ञामाव्रत ऐव कस्यचित्सा वस्तु- चिंतायामनुपयोगिनीति। प्रतिबंधक सद्भावानुमानमागमेऽभिमतं तावदसति न घटते।"

— *મૂલારાધના પૃષ્ઠ-૨૩*

જગતમાં પદાર્થોનો સંપૂર્ણ કારણ-કાર્યભાવ અન્વયવ્યતિરેકથીજ જાણવામાં આવે છે. જેમ સહકારી (નિમિત્ત) **કારણના અભાવમાં** કાર્યની ઉત્પત્તિ (સિદ્ધિ) હોતી નથી તેવી રીતે પ્રતિબંધક કારણના સદ્ભાવમાં પણ કાર્યની **સિદ્ધિ થતી નથી**. સહકારી કારણ હોતાં પ્રતિબંધક કારણના અભાવમાં કાર્યની સિદ્ધિ થાય છે. અન્યથા **નહીં. ભાગ્ય-નસીબ**, કમનસીબ, હોનહાર, ભવિતવ્યતાની સમજ આમાં આવી જાય છે. દરેક શબ્દનું કોઈ વાચ્ય હોવું જોઈએ અને તે પણ અર્થપૂર્ણ.

"अन्वय-व्यतिरेकसमधिगम्यो हि सर्वत्र कार्यकारणभावः।"

— *પ્રમેયરત્નમાલા ૩/૫૯*

સર્વત્ર કાર્ય-કારણભાવ અન્વય-વ્યતિરેકપૂર્વક જ જોવામાં આવે છે.

—: નિમિત્ત :—

"उपादानस्य परिणमनक्रियया सहैव तत्परिणमनानुकूलं परिणमनं यस्य भवति तस्यैव निमित्तत्वं, निमेदति सहकरोतीति निमित्तं इति निमित्तशन्दस्य व्युत्पत्तिः।

ઉપાદાનની પરિણમન ક્રિયાની સાથે ઉપાદાનના પરિણમનને અનુકૂળ જેનું પરિણમન હોય છે તેને નિમિત્તપણું પ્રાપ્ત હોય છે. ઉપાદાનની સાથે સહાયભૂત એટલે કે તેને સહાય કરે છે તે નિમિત્ત છે. આ પ્રમાણે નિમિત્ત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે.

કુંભાર ઘડો બનાવતો હોય ત્યારે તેની સમીપમાં તેની સ્ત્રી તથા એક કુતરો બંને એકીટસે ઘડો બનાવવાની ક્રિયાને જોઈ રહ્યા છે પણ તેમને માટીનું ઘડામાં પરિણમન થઈ રહ્યું છે તેમાં નિમિત્ત કહી શકાય નહીં. કુંભારનો ઉપયોગ (ઘડો બનાવવાના જ્ઞાન સહિતનો ઘડો બનાવવા પ્રત્યે ઉપયોગ) તેમજ કાયાનો યોગ એટલે હાથની ક્રિયા ઘડાની ઉત્પત્તિમાં નિમિત્તો છે. છતાં કુંભારનો ઉપયોગ કે શરીરનો યોગ ઘડાનું જે માટીપણું દ્રવ્ય છે તેનો કર્તા (વ્યાપ્ય વ્યાપક ભાવપણે) નિમિત્તરૂપે પણ નથી.

આજવાત આબેહુબ રીતે શ્રી સમયસારની ગાથા ૧૦૦માં કહેલી છે. આ ગાથાનો સાચો અર્થ કરવાથી અગર સમજવાથી નિમિત્ત ઉપાદાનના આ વિષયનો સચોટ અર્થ ખ્યાલમાં આવશે. આ ગાથાનો સાચો અર્થ સમજવા માટે એક બે વાત કરવી જરૂરી છે.

શ્રી સમયસાર શાસ્ત્રની અપૂર્વતા-વિલક્ષણતા:

૧) શ્રી સમયસાર, તત્ત્વાર્થસૂત્ર, પંચાસ્તિકાય વિ. અધ્યાત્મ ગ્રંથો છે જેમાં જીવ-અજીવ પુણ્ય-પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષની વાત પ્રકરણવાર કરેલી છે. શ્રી સમયસાર મુખ્યત્વે નિર્ગ્રંથ મુનિજનો માટે અને ગૌણપણે સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવોને માટે અધ્યયન કરવાનો ગ્રંથ છે. શ્રી સમયસારની રચના પ્રાત:સ્મરણીય કુંદકુંદાચાર્યદેવે કરી ત્યારબાદ તેમના શિષ્ય ઉમાસ્વાતિએ તત્ત્વાર્થસૂત્રની રચના કરી તેનું પ્રયોજન એ કહેવામાં આવેલ છે અને તત્ત્વાર્થસૂત્રની ટીકાઓ (રાજવાર્તિક, શ્લોકવાર્તિક, ગંધહસ્તિ, ધવલા, સર્વાર્થસિદ્ધિ)માં ખાસ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધિ ટીકા જે અત્યંત પ્રસિદ્ધિ તેમજ માન્યતાને પામેલ છે તેનું વાંચન કરવાથી અનુભવમાં પણ આવે છે કે તત્ત્વાર્થસૂત્રના વાંચન તેમજ તેની સમજ બાદ, શ્રી સમયસારનો અભ્યાસ કરે તો તત્ત્વાર્થના શ્રદ્ધાનમાં ખૂબજ ઉપકારી થઈ શકે છે.

૨) શ્રી સમયસારની વિશેષતા તેમજ અપૂર્વતા એ છે કે પ્રથમ જીવ-અજીવ દ્રવ્યનું પ્રથમ અધ્યાયમાં ૧ થી ૬૮ ગાથાઓમાં વર્ણન કરી, પુણ્ય-પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષ એ બધી પર્યાયો છે, (જે પર્યાયોમાં જીવ-આત્મા અને અજીવ-પુદ્ગલની પર્યાયોનો નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધ છે) તેનું વર્ણન કરવા પહેલાં વચમાં કર્તાકર્મ અધિકાર ગાથા ૬૯ થી ૧૪૪ સુધીમાં લીધો. તેમાંથી એ ફલિતાર્થ થાય છે કે એક દ્રવ્યને બીજા દ્રવ્ય સાથે નિમિત્ત નૈમિત્તિક સંબંધ છે નહિ અને હોઈ શકે નહી. નિમિત્ત નૈમિત્તિક સંબંધ બે પદાર્થોમાં હોય પરંતુ તે બંનેની તે તે સમયની પર્યાયોમાં હોય.

॥ तत्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥

જેમાં અર્થ એટલે કે પદાર્થની સમજ :

"દ્રવ્યો, ગુણો ને પર્યયો સૌ અર્થ સંજ્ઞાથી કહ્યાં
ગુણ પર્યયોનો આતમા છે દ્રવ્ય જિનઉપદેશમાં" ॥ ૮૭ ॥

— *શ્રી પ્રવચનસાર*

એટલે કે અર્થ શબ્દમાં દ્રવ્યસ્વભાવ અને પર્યાય સ્વભાવ એમ બંને લેવાનાં. આટલી પૂર્વભૂમિકાબાદ શ્રી સમયસારની ગાથા-૧૦૦.

जीवो न करोति घटं नैव पटं नैव शेषकानि द्रव्याणि।
योगोपयोगावुत्पादकौ च तयो: भवति कर्ता॥१००॥
જીવ નવ કરે ઘટ, પટ નહીં, જીવ શેષ દ્રવ્યો નવ કરે;
ઉત્પાદકો, ઉપયોગયોગો, તેમનો કર્તા બને. ॥ ૧૦૦ ॥

જીવ (દ્રવ્ય) ઘટ, પટ કે બીજા કોઈ દ્રવ્યને ઉત્પન્ન કરતું નથી. (બધા દ્રવ્યો સ્વત:સિદ્ધ અનાદિ અનંત પોતપોતાના દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવમાં મોજુદ છે) જીવ દ્રવ્યની જે યોગ-ઉપયોગરૂપ (આત્માની તેમજ શરીરની) પર્યાય-હાથની ક્રિયા છે તે માટીના પિંડની ઘટરૂપે પરિણમવામાં નિમિત્તકારણ છે. રાજવાર્તિકમાં પણ આજ વાત બહુ જ સ્પષ્ટપણે કહેલ છે :

''इहलोके कार्यमनेकोपकरण साध्यम् दृष्टम्
यथा मृतपिंडो घटकार्यपरिणामप्राप्तिं प्रति गृहिता-
भ्यंतर सामर्थ्य : बाह्य कुलाल दण्ड चक्र सूत्रोदक
कालाकाशाद्यनकोपकरणापेक्ष : घटपर्यायेणऽऽविर्भवति,
नैक एव मृत्पिंड : कुलादिबाह्यसाधनसन्निधानेन
विना घटात्मनाविर्भवितुं समर्थ : ॥

— *રાજવાર્તિક ૫/૧૯/૩૧ આચાર્યશ્રી અકલંકદેવ*

આ જગતમાં કાર્યની સિદ્ધિ અનેક ઉપકરણ બાહ્ય સાધન પૂર્વક થતી જોવામાં આવે છે. જેમ કે :-

માટીના પિંડમાં ઘડારૂપ પરિણમવાનું સામર્થ્ય (યોગ્યતા) હોવા છતાં ઘડારૂપ પરિણમવામાં કુંભાર, દંડ, ચક્ર, ચીવરાદિની અપેક્ષા રાખે છે. કુંભારાદિ બાહ્ય સાધન વગર માટીનો પિંડ પોતે એકલો ઘડારૂપ પરિણમવાને સમર્થ નથી.

कार्यस्य अनेककारत्त्व सिद्धि : એક કાર્ય થવામાં અનેક કારણો હોય છે.

ઉપર માટીના પિંડના સામર્થ્ય (યોગ્યતા)ની વાત કહી જે તેતે સમયની તેની પર્યાયની યોગ્યતાની વાત છે. એજ માટીનો પિંડ એક દિવસ એમનો એમ પડી રહે તો તેની કુણાશ ઓછી થઈ જતાં બીજે દિવસે તેમાંથી ઘડો બની શકે નહીં. ગમે તેવો કારીગર તેના બધાં સાધનો સહિત હોય તો પણ તેનું નિમિત્ત બની શકતો નથી. એ જ રીતે માટીનો પિંડ જેવો ને તેવો લઈએ અને કુંભાર જે કારીગર છે તેની આવડત તેમજ તે સમયે તેનો ઉપયોગ તેમજ તેના હાથની તંદુરસ્તી તેમજ સાધનોમાં ફેરફાર હોતાં જે ઘડો બનશે તેનો ઘાટ વિ. જુદી જાતનો હશે. કોઈપણ કાર્યની ઉત્પત્તિમાં ઉપાદાન તેમજ નિમિત્ત બંને કારણો છે અને તેમાંથી કોઈ એક કારણમાં ફેરફાર હોતાં કાર્યની ઉત્પત્તિમાં પણ ફેરફાર હશે.

આનો સાદો અને સહેલાઈથી સમજાય તેવો અને પ્રત્યક્ષ પ્રમાણથી અબાધિત અર્થ એ છે કે જે કોઈ નિમિત્ત-નૈમિત્તક સંબંધ જોવામાં આવે છે તે બે દ્રવ્યોમાં હોવા છતાં તે બે દ્રવ્યોની જે તે સમયની પર્યાયો વચ્ચે છે. બીજું જીવ (આત્મા)ને અજીવ (પુદ્‌ગલ દ્રવ્ય) કર્મ (અને અપેક્ષાપૂર્વક નોકર્મ પણ લેવું) સાથે જે પર્યાયોમાં નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધ છે તેનું વર્ણન બીજા કર્તાકર્મ અધિકારમાં કર્યા બાદ ૩થી આગળ ૮મા અધિકાર સુધી (અને ૯મા સર્વવિશુદ્ધિજ્ઞાન અધિકારમાં પણ) કર્યું. ટૂંકમાં પુણ્ય, પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષ એ અધિકારો બે દ્રવ્યો જીવ અને પુદ્‌ગલ વચ્ચે જેની તેની પર્યાયો વચ્ચેના નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધ બતાવતા અધિકારો છે. જેની સાચી સમજ (વસ્તુના સ્વભાવની સમજ) સમ્યગ્જ્ઞાન છે અને તેની

સાચી સમજપૂર્વક એટલે કે હેય-ઉપાદેયના જ્ઞાનપૂર્વક તદનુસાર આચરણમાં મોક્ષમાર્ગ રહેલ છે. નિમિત્ત-ઉપાદાનની સાચી સમજ અધ્યાત્મમાંજ નહિ, વ્યવહાર-સંસારી પ્રયોજનમાં પણ કાર્યકારી છે. અને તે પૂર્વકજ જીવની આખા દિવસની (ચર્યા) જોવામાં આવે છે. અને તેની પ્રવૃત્તિમાં સ્પષ્ટ દેખાય છે. ધર્મ-અર્થ-કામ અને મોક્ષ એ ચારે પુરૂષાર્થ (જીવનાં પ્રયોજન) નિમિત્ત-ઉપાદાનના સિદ્ધાંતની સાચી સમજ પર આધારિત છે.

આના સંદર્ભમાં પ્રવચનસારની ગાથા-૨૫૫:

''ફળ હોય છે વિપરીત વસ્તુ વિશેષથી શુભરાગને;
નિષ્પત્તિ વિપરીત હોય છે ભૂમિ વિશેષથી જેમ બીજને'' ॥ ૨૫૫ ॥

આ ગાથાને બંને બાજુએથી સમજવા માટે જેમ ભૂમિવિશેષથી બીજમાંથી ફળાદિની પ્રાપ્તિમાં ફેરફાર હોય છે તેવી જ રીતે એકજ ભૂમિમાં જુદાં જુદાં બીજ (જેમકે દાડમ, ચીકુ, સફરજન વિ.) વાવતાં ફળની વિશેષતા જોવામાં આવે છે:

એક ખેતરમાં એક સરખા પ્રકારની જમીન (માટી) ખાતર, પાણી, હવા, તડકો વિ. છે. તેમાં દાડમ, ચીકુ, સફરજન, પેરૂ, કેરી વિ.નાં બીજ વાવતાં અગર તેની કલમ રોપતાં દાડમ વિ. બીજના નિમિત્તથી ખેતરનો કાદેવ (માટી) વિ. આબેહુબ દાડમ વિ.ના ઝાડરૂપે પરિણમે છે અને કાળ પાકતાં દાડમ, ચીકુ, સફરજન, પેરૂ, કેરીના ફળની આબેહુબ નિષ્પન્નતા જોવામાં આવે છે. આબેહુબ દાડમ વિ.ની ઉત્પત્તિમાં કાદેવ (માટી)ના જ પરમાણુઓ પરિવર્તન પામ્યા છે કે બીજા કોઈ? અને તેજ ખેતરના કે બીજા કોઈ ખેતરના? (ખેડુતનું કામ તો આ નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધના જ્ઞાનપૂર્વક પાણી વિ. પાવું તેજ બાધાકારક કારણોને રોકવાં તે છે) બીજુ આ પરિણામ બીજની વિવિધતાને કારણે જ થયું છે કે નહીં? આ સાદીવાત સમજવા પ્રત્યક્ષ પ્રમાણથી બીજું કયું પ્રમાણ જોઈએ. પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને પણ જિનાગમમાં પ્રમાણ જ્ઞાન કહેલ છે. આજ પ્રમાણે એકજ બીજને જુદા જુદા ખેતરમાં જ્યાં જમીન (માટી) ખાતર, પાણી, હવા, તડકો વિ. માં ફરક પડતાં તે બીજમાંથી નિષ્પન્ન ફળમાં પણ વિવિધતા જોવામાં આવે છે. ઉસર ભૂમિમાં વાવેલ બીજ ફળદાયી થતું નથી.

માતાના ઉદરમાં (ગર્ભમાં) બહારથી એક જીવ આવે છે. માતાએ ખાધેલ ખોરાક ચાવીને પેટમાં ઉતરતાં થૂંકાદિ સહિતની જે ઉચ્છિષ્ટ છે તે ગર્ભમાં રહેલા જીવનો ખોરાક છે. (માતાનું રજસ, અને તેના પિતાના વીર્યનું મિશ્રણ બહારથી આવેલ જીવનો પ્રથમ ખોરાક છે.) આ પ્રકારની એંઠમાંથી આબેહુબ બાળકનું નિર્માણ થાય છે તેમાં જીવની સાથે બંધાયેલ નામકર્મની પ્રકૃતિનો ઉદય નિમિત્ત છે કે બીજું કંઈ? ઔદારિક શરીરના નિર્માણમાં ખોરાક વિ. પરમાણુઓ ઉપાદાન છે અને નામકર્મની પ્રકૃતિનો ઉદય જે કાર્મણવર્ગણા છે તે શરીરના કોઈ ભાગમાં પરિણમવાને અસમર્થ છે. માત્ર નિમિત્ત છે.

આજ વાત તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૭ સૂત્ર ૩૮-૩૯ માં તેમજ અધ્યાય-૬ માં સૂત્ર ૬-૭ માં કહેલ છે.

परस्यानुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ॥ ३८ ॥
विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र विशेषात्तद्विशेषः ॥ ३९ ॥
तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभाव वीर्याधिकरण विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥ ६ ॥
अधिकरण जीवाजीवा ॥ ७ ॥

— તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૬

બીજાના ઉપકારને અર્થે પોતાના ધનના ત્યાગને દાન કહેલ છે. તેમાં વિધિ-દ્રવ્ય-દાતાર અને પાત્રની વિશેષતાથી તેમાં વિશેષતા આવે છે. તદ્દુપરાંત તીવ્ર-મંદ ભાવ, જાણ-અજાણ, વીર્ય (ઉત્સાહ) અને અધિકરણની વિશેષતાથી તેમાં વિશેષતા આવે છે. અધિકરણ જીવ અને અજીવ (પુદ્ગલ) છે.

આમાંથી સાર એ નિકળે છે કે નિમિત્ત તેમજ ઉપાદાન બંનેની તેન્તે સમયની પર્યાયો ઉપાદાનના કાર્યરૂપ પરિણમવામાં નિમિત્ત સહકારી કારણ છે. ઉપાદાન સ્વયં પોતે પરિણમનાર કાર્ય છે. બંનેમાં વિવિધતાના કારણે કાર્યની ઉત્પત્તિમાં વિવિધતા આવે છે.

''કાર્યની સિદ્ધિ બાહ્ય સહકારી કારણ અને અંતરંગ
ઉપાદાન કારણથી થાય છે''

— *અષ્ટસહસ્ત્રી કારિકા-૨૧ પૃષ્ઠ-૧૪૯*

આગળ જણાવ્યું તેમ કાર્યોત્પાદક હેતુ (કારણ)નું જ્યાંસુધી પરિજ્ઞાન-યથાર્થ જાણપણું નથી હોતું ત્યાંસુધી કાર્યનું પરિજ્ઞાન પણ પ્રાપ્ત થતું નથી.

—: નિમિત્તને અકિંચિતકર માનવામાં આવતા દોષ :—

૧) નિમિત્તને અકિંચિતકર માનવામાં આવતાં શ્રી સમયસારાદિ શાસ્ત્રોની પ્રમાણતા કોના આધારે ?

૨) ભગવાનની દિવ્યધ્વની દ્વારા મોક્ષમાર્ગનું નિરૂપણ જે છે તેનું શાસ્ત્રોમાં (ગણધર પ્રભુ તેમજ પૂ. આચાર્યાદિની પરંપરાપૂર્વક) અવતરણ તે શાસ્ત્રોની પ્રમાણિકતા કોના આધારે ?

૩) મોટરમાં પેટ્રોલ ખૂટતાં મોટરનું બંધ પડી જવું. વીજળીનો પુરવઠો (Electric Supply) બંધ થતાં અંધારપટ.

૪) વિમાનમાં બેસી પરદેશ જઈએ તે હવામાં આપણી મુસાફરી દરમ્યાન સ્થિતિ કોના આધારે - કોઈ કહે છે કે જે તેની ક્રિયાવતી શક્તિના આધારે ? આ વાત યથાર્થ છે ?

૫) કોઈના ગજવામાંથી સો રૂપિયાની નોટ કોઈ ચોર ઉપાડી લે ત્યાં કહે છે કે એકદ્રવ્ય બીજા દ્રવ્યનું કંઈ કરી શકે નહીં. સોની નોટ તેની ક્રિયાવતી શક્તિથી એક ગજવામાંથી બીજાના (ચોરના) ગજવામાં ગઈ.

દ્રષ્ટાંત :

એક માણસે કોઈના ગજવામાંથી એક હજાર રૂપિયાનું બંડલ મારી લીધું અને પકડાઈ ગયો. (Red handed) કોર્ટમાં કેસ ચાલ્યો. ફરિયાદ પક્ષની પ્રાથમિક સુનાવણી બાદ ન્યાયધીશે ચોરી કરનાર આરોપીને પૂછ્યું કે આ બાબતમાં તમારે કંઈ કહેવું છે ? કોઈ વકીલને રોક્યા છે ? આરોપીએ કહ્યું કે હું વકીલની પાસે ગયો હતો પણ તેમના ગળે મારા બચાવની વાત ઉતરી નહીં. તેમણે મને સલાહ આપી કે આપણા ન્યાયધીશ તત્વજ્ઞાનના જાણકાર છે તે તમારી વાત તુરતજ બે મિનિટમાં સમજી જશે. વકીલની તમારે કોઈ જરૂર નથી. ન્યાયાધીશે પૂછ્યું કે તમારો શું બચાવ છે ? તેણે કહ્યું સાહેબ એક દ્રવ્ય બીજા દ્રવ્યનું કંઈ કરી શકે નહીં. આત્મા પોતાના શરીરનું કોઈ કાર્ય કરી શકતો નથી. નોટનું બંડલ તેની ક્રિયાવતી શક્તિથી તેના ગજવામાંથી નિકળી મારા ગજવામાં આવ્યું. ન્યાયાધીશ બધી વાત સમજી ગયા. ત્યાંને ત્યાં ચુકાદો આપ્યો અને છ મહિનાની જેલની સજા કરી. ન્યાયધીશે કહયું કે મેં તમારો બચાવ ધ્યાનમાં લીધો છે અને આ ચુકાદો આપેલ છે. વધુમાં કહ્યું કે મારે અવારનવાર જેલની મુલાકાત (તેની કાર્યપદ્ધતિની તપાસ માટે મારી નિમણૂંક કરી હોવાથી) કરવી પડે છે. હું તમને ત્યાં મલીશ. બે ત્રણ દિવસમાં ન્યાયધીશે આ ભાઈની જેલમાં મુલાકાત લીધી અને કહ્યું કે તમારૂં શરીર તેની ક્રિયાવતી શક્તિથી જેલમાં આવેલ છે તેમાં મારૂં જજમેન્ટ કે પોલીસની હાથકડી એ પરદ્રવ્યોએ તમને જેલમાં આવવામાં કંઈ કર્યું નથી.અને જજમેન્ટ લખવામાં મારૂં કોઈ કાર્ય નથી..કેમકે આત્મા પરદ્રવ્યનું કંઈ કરી શકતો નથી.

૬) જેમ આત્માના વિભાવ પરિણામનું નિમિત્તપામીને કાર્મણવર્ગણાના પરમાણુઓ (જે શરીરની અવગાહના માત્ર આકાશ પ્રદેશમાં સ્થિત છે.) તેનું કર્મરૂપે પરિણમન અને તે પણ યોગથી પ્રદેશ અને પ્રકૃતિબંધ અને

કષાયથી સ્થિતિ તેમજ અનુભાગ સહિત આત્મા સાથે બંધ થવો તેમાં આત્માના વિભાવભાવ શું નિમિત્ત કારણ નથી ?

(થોડુંક વિષયાંતર કરીને ક્રમબદ્ધ પર્યાયનો વિષય લઈએ તો શું તે કાર્મણવર્ગણાનું કર્મરૂપે પરિણમન આત્મપરિણામની અપેક્ષાવગર ક્રમબદ્ધપણે હતું તેમ થયું છે ?)

૭) કોઈ વક્તાના પ્રવચનની કે ભક્તિગીતની recorded tape દરરોજ સાંભળવામાં આવે છે તેની પ્રમાણતાનો આધાર કોણ ? અરે! ટેપ સાંભળીને આપણે કહી શકીયે છીએ કે આ ઈન્દુબેન ધાનક કે બીજા કોઈનો અવાજ છે. કોઈપણ વક્તાએ આપેલ ભાષણનો સાર બીજે દિવસે પેપરમાં છાપવામાં આવે છે ત્યાં વક્તાનું નામ લખવામાં આવે છે અને એ નામ પર ભાષણની કેટલી કિંમત હોઈ શકે અગર તેના પર કેટલો આધાર રાખી શકાય તે વાંચનાર નક્કી કરે છે. તો વક્તાનું નામ આપવું શું અર્થહીન છે ? (કારણ-કાર્ય સંબંધ બે વસ્તુઓમાં હોય, લક્ષ્ય, લક્ષણ સંબંધ એક વસ્તુમાં હોય આ ત્રિકાળી અફર સિદ્ધાંત છે.) જેમ નિશ્ચયનય અને વ્યવહાર નયની એકબીજાની અપેક્ષાપૂર્વકની સમજણને પ્રમાણજ્ઞાન કહ્યું તેમ નિમિત્ત ઉપાદાનની સાચી સમજને પણ પ્રમાણ જ્ઞાન કહ્યું. જેની યથાર્થ સમજ ઉપર જિનશાસનની મોક્ષમાર્ગરૂપ ભવ્ય ઈમારત ઉભી છે. ધર્મ-અર્થ-કામ અને મોક્ષ એ ચારે પુરુષાર્થ આની સાચી સમજણ પર આધારિત છે.

૮) દર્શન મોહનીયની ક્ષપણાની શરૂઆત તેમજ તીર્થંકર પ્રકૃતિનો બંધ કેવળી ભગવાન અગર શ્રુતકેવળીના પાદમૂળમાં જ થાય તેને નિમિત્તને અકિંચિતકર માનનાર કેવી રીતે સમજાવશે ? અરે! એમ માનનારાને કેવળી ભગવંતો પર કેટલો ભક્તિભાવ જાગશે ?

'भावनमस्कार: सम्यग्दर्शनम्'

अर्हन्नमस्कारं भावेन य: करोति प्रयतमति:।

स सर्वदु:खमोक्षं प्राप्नोत्यचिरेण कालेन।।

— મૂલાચાર અ. ૭ શ્લોક-૬; પાન ૨૬૨

એજ પ્રમાણે સિદ્ધ-આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને સાધુને નમસ્કારનું ફળ આગળ બતાવ્યું છે.

''અરિહંતભક્તિ અને સમ્યગ્દર્શનમાં નામભેદ છે, અર્થભેદ નથી''

૯) દરજીને શર્ટ સીવવા આપીએ તેમાં કાપડ તથા દરજીની પસંદગી. ટાઈપીસ્ટની નીમણુંક કરતા પહેલાં test લેવામાં આવે છે.

૧૦) 'ટેનીસની રમતમાં દડો કોર્ટની વચમાં નેટની સામસામે જાય છે તે દડાની માત્ર ક્રિયાવતી શક્તિથી આમતેમ ઘૂમે છે ? રમનાર ખેલાડીના યોગ-ઉપયોગ તેમાં નિમિત્ત કારણ છે કે નહિ ? પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને પણ શાસ્ત્રમાં પ્રમાણ જ્ઞાન કહેલ છે.

નિયતિ અને પુરુષાર્થ

यत्तु यदा येन यथा यस्य च नियमेन भवति तत्तु तदा।

तेन तथा तस्य भवेदिति वादो नियतिवादस्तु।। ८८२ ।।

— પરમશ્રુત પ્રભાવમંડળ-ગોમ્મટસાર કર્મકાંડ પૃષ્ઠ-૨૬૫

જે જે સમયે, જેનાથી, જે પ્રકારે જેનું નિયમથી જે કંઈ થાય છે તે તે સમયે તેનાથી તે પ્રકારે અને તેનું જ થાય છે એ પ્રમાણે નિયમથી જ સર્વ વસ્તુઓને માનવી એને નિયતિવાદ કહેલ છે.

—: ૫ સમવાય :—

૧) કાલ, ૨) સ્વભાવ, ૩) ઉપાદાન, ૪) નિમિત્ત, ૫) પુરુષાર્થ (આમાંથી એકપણના અભાવમાં કાર્યની સિદ્ધિ થતી નથી)

कालो सहाव णियइं पुव्वकय पुरिस कारणे गंता-
मिच्छत्तं ते चेवा समासओ होति सम्मत्तं ॥

કાળ, સ્વભાવ, નિયતિ, પૂર્વકૃત (અદષ્ટ) અને પુરુષાર્થ એ પાંચેથી કાર્યની સિદ્ધિ થાય છે એમ જે માને છે તેની દ્રષ્ટિ સાચી છે.

નિયતિ શબ્દ સાથે મળતા હોનહાર તેમજ ભવિવ્યતાનો ઉલ્લેખ પણ શાસ્ત્રોમાં જોવામાં આવે છે.

દૈવ-ભાગ્ય-નસીબ તથા ભવિતવ્યતા

चतुरंग बलं कालं पुत्रा मित्राणि पौरुष : ।
कार्यकृत्तावदेवार्थं यावत् दैवं बलं परं ॥
दैवेतु विफले काले पौरुषादि निरर्थक : ।
इति यत् कथ्यते विद्भिः तत् तथ्यं इति नान्यथा : ॥
दिव्येन दैयमानायं दहनेन तदापुरि ।
नुनं क्वापि गता देवा ! दुर्वारा भवितव्यता ॥ (તદાપુરી = દ્વારિકાનગરી)

આ છેલ્લી ગાથામાં કહે છે જે દ્વારિકા નગરની રચના દેવોએ કરી હતી તે દ્વારિકા નગરી બળી રહી છે ત્યારે તે દેવો ક્યાં ગયા હતા! (આમ નિસાસો નાખીને ગ્રંથકાર કહે છે કે) ભવિતવ્યતાને કોઈથી નિવારી શકાતી નથી.

ભવિતવ્યતાની વ્યાખ્યા કરતાં સંમતભદ્રાચાર્ય દેવ લખે છે :-

अलंध्यशक्तिर्भवितव्यतेय हेतुद्वयाविकृतं कार्यलिंगा

(અંતરંગ અને બહિરંગ) બંને હેતુઓ વડે ઉત્પત્તિમાન કાર્ય જેનું ચિન્હ-લક્ષણ છે એવી ભવિતવ્યતા **અલંઘનીય છે આમાં** આત્માના યોગદાન વગર બાહ્ય અનેક પ્રકારના બળો કાર્ય કરી રહ્યાં છે તેનો લાભ કોઈને **મળે છે** તેવી જ રીતે તેનો ભોગ કોઈ ઘણીવાર બને છે તે વાત છે. જેને નસીબ કે કમનસીબ કહેવામાં **આવે છે.** આ બધાનો સમન્વય કરતાં સાર-બોધ એ નીકળે છે કે :-

નસીબ-કમનસીબ-ભવિતવ્યતામાં (unforeseen events) બાહ્ય પરિબળોની લાભદાયક તેમજ ઘાતક **અસર કેટલાક કાર્યોની સિદ્ધિમાં** તેની ઉપસ્થિતિ કે તેનો અભાવ હોવો તે છે. ટૂંકમાં સ્વભાવ-ઉપાદાન, **નિમિત્ત અને પુરુષાર્થ** બધાનો સમન્વય કરી નિમિત્ત-ઉપાદાનનું યથાર્થ જ્ઞાન તથા વસ્તુ સ્વભાવ (દ્રવ્ય સ્વભાવ **અને પર્યાય સ્વભાવ)નું** જ્ઞાન તેમજ નય સાપેક્ષ પ્રમાણ જ્ઞાન થતાં પ્રમાણજ્ઞાનનું ફળ હેય-ઉપાદેય બુદ્ધિપૂર્વક **આત્મહિતમાં પ્રવૃત્તિ થઈ શકે છે.**

નિયતિ સંબંધમાં બીજો એક વિવાદ એવો છે કે ભગવાને જેનો મોક્ષ જે કાળે થવાનો જોયો હશે ત્યારે **થવાનો જ છે તો પુરુષાર્થ** ક્યાં રહ્યો ?

તેનો ઉત્તર એવો આપવામાં આવે છે કે તું કેવળજ્ઞાનની આ પ્રમાણેની શ્રદ્ધા તો કર! તેમાં અનંતો **પુરુષાર્થ આવી** ગયો. આ ઉત્તર કલ્પિત છે અને શાસ્ત્રોકત નથી. તેનો જવાબ એ છે કે ભગવાને જેનો **મોક્ષ જોયો છે તે દર્શન** જ્ઞાન અને ચારિત્રની પૂર્ણતા પૂર્વક જોયો છે કે પૂર્ણતા વગર? જો પૂર્ણતા પૂર્વક **જોયો છે તો દર્શન**-જ્ઞાન-ચારિત્રની પૂર્ણતા કરવાનો પુરુષાર્થ કરવો રહ્યો. આ રીતે નિયતિ અને પુરુષાર્થનો **સમન્વય થઈ જાય છે.**

—: ક્રમબદ્ધ પર્યાય :—

ક્રમબદ્ધ પર્યાયનું જે વર્ણન અત્યારે કરવામાં આવે છે તેનો શાસ્ત્રમાં ક્યાંય ઉલ્લેખ નથી.

શાસ્ત્રમાં सहभाविन: गुणा: क्रमभाविन: पर्याया: એમ લખ્યું છે ક્રમબદ્ધપર્યાયનો અર્થ પર્યાયો ક્રમપૂર્વક એકપછી બીજી એટલે કે પૂર્વપર્યાયનો વ્યય-ઉત્તર પર્યાયનો ઉત્પાદ તો તો તેમાં કંઈ નવું નથી જો એમ કહો કે દ્રવ્યમાં ક્રમબદ્ધ પર્યાયો પડેલી છે તે ક્રમપૂર્વક એક પછી એક આવે છે, તો આખા મોક્ષમાર્ગના અભાવનો પ્રસંગ આવશે. કર્મની અવસ્થાઓ: ઉદય-ઉદીરણા, સત્તા-ઉપશમ, સંક્રમણ, અપકર્ષણ, ઉત્કર્ષણ, વિ. નો કોઈ અર્થ જ નહિ રહે અને સંવર-નિર્જરા જે મોક્ષમાર્ગનાં અંગ કહ્યાં છે, જેનું ઉપાદેયપણું કહ્યું છે અને શ્રાવક-મુનિના આચારો વિ. બધા નિરર્થક થઈ જશે.

હવે બીજી વાત: દ્રવ્યમાં એક સમયે એક પર્યાય હોય અને પર્યાયનો જ ભોગવટો હોય છે અને એજ દ્રષ્ટિએ

द्रव्याश्रया: निर्गुणा: गुणा:... क्रमवर्तिन: पर्याया:

— તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૫ સૂત્ર-૪૦

ક્રમબદ્ધ પર્યાયની હાલમાં થતી પ્રરૂપણા પ્રમાણે તો દ્રવ્યમાં અનંત પર્યાયો મોજુદ છે તે ક્રમબદ્ધ પ્રમાણે બીજા કોઈ નિમિત્તની અપેક્ષા વગર આવિર્ભાવ થતી જાય છે.

એક સમયમાં એક ગુણની એકથી વધારે પર્યાયો હોય તો દ્રવ્ય અખંડ એકરૂપ હોવાથી બધાનો મિશ્ર સ્વાદ-અનુભવમાં આવે. લિંબુના સરબતમાં ખાંડ અને લિંબુના ખાટા રસનો મિશ્ર ખટમીઠો સ્વાદ આવે છે. આમાં તો ખાંડના અણુઓ લિંબુના રસના અણુઓમાં ભળ્યા નથી છતાં મિશ્ર સ્વાદ આવે છે તો એક અખંડ દ્રવ્યમાં તો આવવો જ જોઈએ. બીજું સર્વાર્થસિદ્ધિના બધા દેવો એકાવતારી છે અને નિયમથી ત્યાંથી ચ્યવી મનુષ્ય થઈ મોક્ષ જવાના છે અને કેવળજ્ઞાન પામવાના છે. તે કેવળજ્ઞાનની પર્યાય (ભવિષ્યની) યથાર્થરૂપ જો દ્રવ્યમાં મોજુદ છે તો કેવળજ્ઞાન વર્તમાનમાં પણ હોય.

દ્રવ્યની વ્યાખ્યા કરતાં ગુણોના સમુદાયને દ્રવ્ય કહેલ છે. ક્રમબદ્ધ પર્યાય જે રીતે કહેવામાં આવે છે તે રીતે હોય તો પર્યાયોના સમુદાયને દ્રવ્ય કહેવું જોઈતું હતું.

આગળ કહ્યું કે **सहभुवोगुणा: क्रमवर्तिन: पर्याया:** આલાપ પદ્ધતિ

દ્રવ્યમાં એકસાથ અનંતાગુણો રહેલા છે. પર્યાય ક્રમપૂર્વક એકપછી બીજી (તે ગુણોની અવસ્થા) હોય છે.

દ્રવ્યની વ્યાખ્યા : गुण पर्ययवत् द्रव्यम् તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૫ સૂત્ર-૩૭

એક ગુણની એકજ પર્યાય લીધી એક ગુણમાં અનંત પર્યાયો મોજુદ હોય તો ગુણ-પર્યાયો વાળું દ્રવ્ય કહ્યું હોત.

બીજુ उत्पाद्व्ययध्रौव्ययुक्तं सत्॥ २९ ॥ તત્ત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૫.

ત્યાં ઉત્પાદનો અર્થ સર્વાર્થસિદ્ધિમાં નીચે પ્રમાણે કરેલ છે. ચેતન તેમજ અચેતન દ્રવ્ય પોતાની જાતિને કદાપિ છોડતા નથી. છતાં તેમાં અંતરંગ તેમજ બહિરંગ નિમિત્તના વશાથી પ્રતિસમય જે નવીન અવસ્થાની પ્રાપ્તિ થાય છે તેને ઉત્પાદ્ કહે છે. જેમકે માટીના પિંડમાંથી ઘડાની ઉત્પત્તિ. આમાં નવીન અવસ્થાની પ્રાપ્તિ કહી અને આગળની પૂર્વ અવસ્થાનો વ્યય કહ્યો. જો અંતરંગમાં પડેલી અવસ્થા થઈ હોત તો તેનો આવિર્ભાવ અને વ્યય થયેલી પર્યાયને વ્યય ન કહેતાં તિરોહિત કહેત. ઉત્પાદ નવીન પર્યાયનો હોય પડેલી

પર્યાયનો ઉત્પાદ ન કહેવાય, આવિર્ભાવ કહેવાય. આજ વાત સ્વામીકાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષામાં સ્વામીકાર્તિકેયમુનિરાજ લખે છે :

यदि द्रव्ये पर्याया : अपि विद्यमाना: तिरोहिता सन्ति।
तत् उत्पत्ति : विफला पटपिहिते देवदत्ते इव।। २४२ ।।

જો 'દ્રવ્યમાં પર્યાયો છે તેપણ વિદ્યમાન છે અને તિરોહિત એટલે કે ઢંકાયેલી પડી છે' એમ માનીએ તો ઉત્પત્તિ (ઉત્પાદ) કહેવું વ્યર્થ છે. જેમ દેવદત્ત કપડાથી ઢંકાયેલો હતો તેને (કપડું ખસેડતાં) તે ઉઘડ્યો એમ કહેવું બરાબર છે પણ તે ઉપજ્યો એમ કહેવું પ્રત્યક્ષ પ્રમાણથી વિરૂદ્ધ છે. તેમજ વાસ્તવિક નથી, વ્યર્થ છે. ઉત્પાદનો અર્થ અવિદ્યમાન પર્યાયની ઉત્પત્તિ છે.

सर्वेषां पर्यायाणां अविद्यमानानां भवति उत्पत्ति : ।
कालादि लब्ध्या अनादि निधने द्रव्ये।। २४४ ।।

— *સ્વામિકાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા*

અનાદિ નિધન દ્રવ્યમાં કાલાદિ લબ્ધિપૂર્વક અવિદ્યમાન પર્યાયની ઉત્પત્તિ છે. આગળ ૩૨૧ તથા ૩૨૨ ગાથામાં નિયતિનું પ્રતિપાદન છે.

यत् यस्य यस्मिन् देशे येन विधानेनं यस्मिन काले।
ज्ञातं जिनेन नियतं जन्म वा अथवा मरणं वा।। ३२१ ।।
तत् तस्य तस्मिन् देशे, तेन विधानेन तस्मिन् काले।
क: शक्नोति चालयितुं इन्द्र: वा अथ जिनेन्द्र वा।। ३२२ ।।

જે જીવના જન્મ-મરણ જે દેશમાં, જે કાળમાં, જે વિધાનથી સર્વજ્ઞદેવે જાણેલ છે તેને તે પ્રમાણે થતાં નિવારણ કરવા ઈન્દ્ર કે જિનેન્દ્ર ભગવાન પણ સમર્થ નથી. આમાં પણ આગળ નિયતિ અને પુરુષાર્થનો તેમજ ભવિતવ્યતામાં અંતરંગ તેમજ બહિરંગ બે કારણોથી ઉપજતા કાર્યની વાત છે. નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધ કે કારણ-કાર્યના અફર સિદ્ધાંતથી નિરપેક્ષ નથી. આજવિષયમાં આગળ ખુલાસો કરેલ છે.

कालादि युक्ता : नानाशक्तिभि: संयुकता : अर्था : ।
परिणममाना: हि स्वयं न शकयते क: अपि वारयितुम्।। २१९ ।।

અનેક પ્રકારની શક્તિથી સંપન્ન દ્રવ્યો કાલાદિ લબ્ધિ પ્રાપ્ત થતાં (જેમાં એક કાર્ય થવામાં અનેક કારણો હોય છે) કાર્યરૂપે સ્વયં પરિણમે છે તેને અટકાવવા કોઈ સમર્થ નથી. આ બધાનો સાર એજ છે કે કોઈપણ કાર્યની ઉત્પત્તિમાં ઉપાદાનની જે તે સમયની પર્યાય અને તેમાં નિમિત્તકારણ (એક અગર વધારે) નિમિત્તદ્રવ્યની તેજ સમયની પર્યાય મુકરર હોતાં, કાર્ય પણ મુકરર હોય છે. અંશમાત્ર પણ તેમાં ફેરફાર કરવાને ઉપાદાન તેમજ નિમિત્ત દ્રવ્યોની પર્યાયો સિવાય અન્ય કોઈ બહારનું દ્રવ્ય સમર્થ નથી. સારાંશ એ છે કે ઉપાદાનની જે તે પર્યાયમાં અંશમાત્ર ફેરફાર હોતાં કાર્યની નિષ્પત્તિમાં પણ ફેરફાર હોય છે તેવી રીતે નિમિત્તની પર્યાયમાં પણ અંશમાત્ર ફેરફાર હોતાં કાર્યની નિષ્પત્તિમાં ફેરફાર હોય છે. અને તે પણ કાંઈપણ ન્યુનાધિક્તા વગર (with exact precision). છેલ્લે આ બધું જ્ઞાન સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિ માટે અનિવાર્ય છે. સમ્યગ્દર્શનમાં વસ્તુનો સ્વભાવ. **तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्** અર્થ કહેતાં દ્રવ્ય સ્વભાવ અને પર્યાય સ્વભાવ. જીવ-અજીવનું જ્ઞાન, દ્રવ્યસ્વભાવમાં અને પુણ્ય-પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષ પર્યાય સ્વભાવમાં આવી જાય છે. કારણ કાર્ય સંબંધ બે વસ્તુઓમાં હોય. લક્ષ્ય-લક્ષણ સંબંધ એક વસ્તુમાં હોય. આત્માના પરિણામ-વિભાવભાવ કર્મબંધનું નિમિત્ત છે. એ કર્મનો ઉદય આત્માના વિભાવભાવમાં નિમિત્ત છે. વિભાવભાવમાં કર્મના ઉદયનું નિમિત્તપણું ન માનવામાં આવે તો વિભાવ ભાવ સ્વભાવ થઈ જાય. આ બધી વાત સમ્યગ્દર્શનની

પ્રાપ્તિ માટે જે જ્ઞાનની જરૂર છે (જે શાસ્ત્રના સ્વાધ્યાયથી પ્રાપ્ત હોય છે) તેની જ વાત છે. પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વ જેમાં ક્ષયોપશમ, વિશુદ્ધિ, દેશના, પ્રાયોગ્ય અને કરણલબ્ધિનાં ઉત્તરોત્તર વિશુદ્ધિના પરિણામો છે તેમાં દેશના લબ્ધિ (જેમાં જીવ-અજીવાદિ તત્ત્વોનું જ્ઞાન થવું તે છે) બાદ જ વિશુદ્ધિના પરિણામોમાં એવું સામર્થ્ય પ્રગટે છે જેના નિમિત્તે સત્તામાં રહેલા મિથ્યાત્વ કર્મનો સ્થિતિકાંડઘાત - અનુભાગકાંડઘાત - ગુણશ્રેણી નિર્જરા થતાં એક આયામકાળની રચના થાય છે જેના પ્રથમ સમયથી જ મિથ્યાત્વનો ઉદય હોતો નથી અને તે જ સમયે (પ્રતિબંધક કારણનો અભાવ હોતાં) જીવ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ કરે છે. (અનુદય થવામાં પૂર્વે કહ્યા તે પ્રમાણેના આત્માના ઉત્તરોત્તર વિશુદ્ધ પરિણામજ છે).

કર્મની ૧૦ અવસ્થાઓ (૧) બંધ, (૨) સત્વ, (૩) ઉદય, (૪) ઉદીરણા, (૫) ઉત્કર્ષણ, (૬) અપકર્ષણ, (૭) સંક્રમણ, (૮) ઉપશમ, (૯) નિધત્તિ અને (૧૦) નિકાચીત.તેમજ પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિનું બરાબર જ્ઞાન કરવામાં આવે તો આ નિમિત્ત-ઉપાદાનના વિષયમાં ચાલતી ભયંકર ગેરસમજ દૂર થઈ જાય. કર્મની બંધાદિ ૧૦ અવસ્થાઓનો વિષય ખુબજ વિશાળ છે. ગોમટ્ટસાર-લબ્ધિસાર આદિ ગ્રંથોમાં તેમજ ટૂંકમાં વર્ણવેલ 'ભાવ દીપિકા'માં ખૂબજ એકાગ્રતા પૂર્વક અગર કોઈ જાણકારના આશ્રયે અધ્યયન કરવા જોગ છે. પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વનો વિષય આ પુસ્તિકામાં છેલ્લે આ પછી ટૂંકમાં પ્રતિપાદન કરેલ છે. વિષય ગહન છે. બે ચાર વખત વાંચવાથી સમજમાં આવી જશે.

—: પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ :—

ઉપશમ સમ્યકત્વ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય, ગર્ભજ (મનુષ્ય, તિર્યંચની અપેક્ષાએ) અને પર્યાપ્ત જીવોને ચારે ગતિમાં ઉપજે છે. તે પણ ભવ્ય જીવને, જે ક્ષયોપશમાદિ પાંચ લબ્ધિસ્વરૂપ વિશુદ્ધિના ધારક હોય, ગુણદોષના વિચારરૂપ સાકાર જ્ઞાનોપયોગ સહિત હોય, જાગૃત અવસ્થામાં હોય (નિદ્રામાં ન હોય) તેને ઉપજે છે. અનાદિ મિથ્યાદ્રષ્ટિ જીવને પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ થતાં તેનો સંસાર પરિભ્રમણકાળ ઉત્કૃષ્ટ અર્ધ પુદ્‌ગલપરાવર્તન જેટલો રહે છે. ઉપર જણાવ્યા મુજબ જે કંઈ સંસારભ્રમણનો કાળ બાકી રહે તેમાં જીવ અસંખ્યાતવાર પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વ પ્રાપ્ત કરે અને વમી નાખે. અરે! પાંચમું ગુણસ્થાન પણ જીવને અસંખ્યાતવાર આવે અને પાછો પડે. છઠ્ઠું ગુણસ્થાન ઉત્કૃષ્ટ ૩૨ વાર આવે. દ્વિતીયોપશમ સમ્યક્ત્વ એક ભવની અપેક્ષાએ બે વાર અને સમગ્ર સંસાર કાળ દરમ્યાન ઉપશમશ્રેણી ચઢતાં ક્ષયોપશમ સમ્યક્ત્વયુક્ત નિગ્રંથ મુનિને ચાર વાર ઉપજે. ત્યારબાદ નિયમથી ક્ષપકશ્રેણી માંડી મોક્ષે જાય. પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિના કાળમાં મનુષ્ય-તિર્યંચ જીવની અપેક્ષાએ ત્રણ શુભ લેશ્યા - પીત, પદ્મ અને શુક્લ તેમાંથી કોઈ એક લેશ્યા હોય. (નારકીના જીવને કાપોતલેશ્યામાં ઉપજે.) જ્યારે સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવને છ એ લેશ્યાઓ હોવી સંભવે છે. પાંચમા ગુણસ્થાન સ્થિત શ્રાવક તેમજ છઠ્ઠા ગુણસ્થાન સ્થિત નિર્ગ્રંથ મુનિને ત્રણ શુભલેશ્યામાંથી કોઈ પણ લેશ્યા હોય. અશુભ લેશ્યાયુક્ત જીવને પાંચમું તેમજ છઠ્ઠું ગુણસ્થાન સંભવે નહીં.

શ્રેણી ચઢતાં આઠમા ગુણસ્થાન અને તેથી આગળ શુક્લ લેશ્યાજ હોય. પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વનો ઉત્કૃષ્ટ કાળ એક અંતર્મુહૂર્ત હોય. આમાંથી સાર એ નીકળે છે કે જેને સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિની ઈચ્છા હોય તેણે પોતાની લેશ્યા સુધારવી. લેશ્યાનું સ્વરૂપ ગોમટ્ટસારાદિ સિદ્ધાંત ગ્રંથોમાં જોઈ લેવું. આ પુસ્તિકામાં તેનું સંક્ષેપમાં પાન ૮૦ થી ૮૨ પર વિશેષજ્ઞ નામના ૨૭મા ગુણના વર્ણનમાં કરેલ છે ત્યાંથી જોઈ લેવું. આ પ્રકરણમાં વિશુદ્ધિ અંગની મુખ્યતા હોવાથી પુનરોક્તિનો દોષ વહોરીને પણ નીચે આપેલ છે :

—: ગોમટ્ટસારમાં લેશ્યાનું સ્વરૂપ દ્રષ્ટાંતપૂર્વક :—

કૃષ્ણાદિ પ્રત્યેક છ લેશ્યાવાળા પુરૂષો માર્ગથી ભ્રષ્ટ થતાં વનમાં ફળોથી ભરેલા એક **જાંબુના** ઝાડને દેખીને **વિચાર કરે છે :**

કૃષ્ણ **લેશ્યાવાળો** ઝાડને મૂળથી ઉખેડી ફળ ખાવાનો, નીલ લેશ્યાવાળો મોટી ડાળને કાપીને ફળ ખાવાનો, કાપોત **લેશ્યાવાળો** ફળોના ઝુમખાઓથી ભરેલ નાની ડાળને કાપીને ફળ ખાવાનો, પીત લેશ્યાવાળો એક બે **ઝુમખાં (જેમાં** કાચાં તેમજ પાકાં ફળો બેઠેલાં છે) તેનેજ તોડીને તેમાંથી ફળ ખાવાનો, પદ્મ લેશ્યાવાળો જે **તે ઝુમખામાંથી** પાકાં પાકાં જોઈએ તેટલાં ફળો ચૂંટીને ખાવાનો જ્યારે શુક્લ લેશ્યાવાળો પાકીને સ્વયં **ભૂમિ પર પડેલાં** ફળોને સાફ કરીને ખાવાનો મનસૂબો મન, વચન અને કાયથી કરે છે.

જીવની જે પ્રકારે ગતિ થવાની હોય તે પ્રકારની ચેષ્ટા જીવને હોય છે. **'जल्लेसे मरइ तल्लेसे उववज्जइ'**

''જીવને લેશ્યાની વિશુદ્ધિ અધ્યવસાન-ધર્મચિંતનથી થાય છે. મંદ કષાયવાળા જીવોને તે વિશુદ્ધિ હોય **છે. કષાયોની મંદતા** સમસ્ત બાહ્ય પરિગ્રહનો ત્યાગ કરનારને થાય છે. કષાયની તીવ્રતાવાળો જીવજ સર્વ **પાપરૂપ પરિગ્રહને** ગ્રહણ કરે છે. જેમ અગ્નિ ઈંધનવડે વધે છે અને ઈંધન વગર બુઝાઈ જાય છે તેમ કષાયો **પરિગ્રહવડે વધે છે** અને તેના વગર શાંત થાય છે.''

— *'ભગવતી આરાધના' ગાથા ૧૯૧૭ થી ૧૯૨૦*

ચક્રવર્તીની બેજ ગતી હોય છે. સર્વ પરિગ્રહનો ત્યાગ કરી જિનદીક્ષા ગ્રહણ કરે **તો ક્ષપકશ્રેણી** માંડી **મોક્ષે જાય** અગર તો કંઈક કર્મો રહી જાય તો પાંચ અનુત્તર વિમાનમાં અને બનતાસુધી **સર્વાર્થસિદ્ધિના વિમાનમાં**

દેવ તરીકે ઉત્પન્ન થાય અને ત્યાંથી ચ્યવી મનુષ્યભવ ધારણ કરી ફરી જિનદીક્ષા લઈ નિયમથી મોક્ષે જાય. જ્યારે તેજ ચક્રવર્તી આરંભ-પરિગ્રહમાં જીવનના અંત સુધી રચ્યા પચ્યા રહે તો મરીને સાતમી નરકે જાય. આ ઉદાહરણ ઉત્કૃષ્ટ ઉત્તર-દક્ષિણ દિશાની જેમ છે. દરેક લેશ્યાની તારતમ્યતા અસંખ્ય પ્રકારની છે. તેને યોગ્ય આવતા ભવની ગતિ પણ (ચોરાશી લાખ હોવા છતાં) તારતમ્યતાની અપેક્ષાએ અસંખ્ય પ્રકારે છે. જેમ જોવામાં આવતા દરેક મનુષ્યની લેશ્યાની અપેક્ષાએ ભિન્નતા જોવામાં આવે છે. કોઈ બે મનુષ્ય સરખા હોતા નથી. માટે જેને પોતાનું હિત હૈયે વસ્યું છે તેણે પોતાની લેશ્યા સુધારવાનો દિનરાત પ્રયાસ કરવો.

છ લેશ્યાવાળા જીવનાં લક્ષણો (ગોમ્મટસાર ગાથા ૩૦૯ થી ૩૧૮)

—: કૃષ્ણ લેશ્યા :—

તીવ્ર ક્રોધ કરવાવાળો, વેરભાવને છોડે નહીં, લડકણા સ્વાભાવવાળો, ધર્મ અને દયાથી રહિત, અવશ એટલે સ્વચ્છંદી, આ સૌ કૃષ્ણ લેશ્યાવાળા જીવનાં લક્ષણ જાણવાં.

—: નીલ લેશ્યા :—

મંદ, બુદ્ધિહીન, ઉંડી સમજ વગરનો, વિષય લંપટ (ગૃદ્ધિવાળો) અભિમાની, માયાવી, આળસુ, મીંઢો, નિદ્રાળુ (ઉંઘણસી), બીજાને ઠગવાના સ્વભાવવાળો, ધન-ધાન્યાદિ પરિગ્રહમાં તીવ્ર આસક્તિવાળો, આ બધાં સંક્ષેપમાં નીલ લેશ્યાવાળા જીવનાં લક્ષણ જાણવાં.

—: કાપોત લેશ્યા :—

બીજા તરફ રોષ કરનાર, તેમની નિંદા કરનાર, બીજાના ઉપર દોષનું આરોપણ કરનાર, અધિકતર શોકાતુર અને ભયગ્રસ્ત રહેનાર, બીજાના ઐશ્વર્યને સહન ન કરી શકે, એવા (અદેખસકા) સ્વભાવવાળો, બીજાનો પરાભવ કરનાર, તેને ઉતારી પાડનાર, પોતાના ખુબ વખાણ કરનાર, કોઈના પર વિશ્વાસ ન કરનાર, પોતાની માફક બધા જીવોને દૂષણવાળા માનનાર, પોતાના વખાણ કરનાર પર ખુશ થઈ પોતાની હાની-વૃદ્ધિ (લાભ-નુકસાન) જોયા વગર કામ કરી બેસનાર, સંગ્રામમાં પોતાનું મરણ (માનાદિના કારણે) પણ ઈચ્છનાર, પોતાના વખાણ કરનારને બહુ ધનાદિ આપી દેનાર અને શું કાર્ય કરવા જોગ છે અને શું કરવા જોગ નથી તેનો જેને વિવેક નથી એવા લક્ષણવાળો જીવ કાપોતલેશ્યાવાળો જાણવો.

—: પીત (તેજો) લેશ્યા :—

કાર્ય-અકાર્ય, સેવ્ય-અસેવ્યને સમજવાવાળો, સર્વ ઠેકાણે સમભાવપૂર્વક રહેવાવાળો, દયા-દાનમાં રત, કોમળ સ્વભાવવાળો, આ લક્ષણો તેજો લેશ્યાવાળા જીવનાં જાણવાં.

—: પદ્મ લેશ્યા :—

ત્યાગી, ભદ્ર પરિણામી, નિર્મળ તેમજ સરળ હૃદયવાળો, પોતાનું શ્રેય સાધવામાં ઉદ્યમી, સર્વપ્રકારે સહનશીલ, ક્ષમાવાન સ્વભાવવાળો, સાધુ તેમજ ગુરૂજનની સેવામાં અનુરક્ત. આ લક્ષણો પદ્મ લેશ્યાવાળા જીવનાં જાણવાં.

—: શુક્લ લેશ્યા :—

કોઈનો પક્ષપાત ન કરનાર, નિદાન ન કરનાર, સમભાવી, રાગદ્વેષ વિનાનો, સ્નેહ રહિત, આ લક્ષણો શુક્લ લેશ્યાવાળા જીવનાં જાણવાં.

પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ અગાઉ મિથ્યાદ્રષ્ટિ જીવને પાંચ લબ્ધિઓની પ્રાપ્તિ હોય છે :

(૧) ક્ષયોપશમ લબ્ધિ, (૨) વિશુદ્ધિ લબ્ધિ, (૩) દેશના લબ્ધિ, (૪) પ્રાયોગ્ય લબ્ધિ અને (૫) કરણલબ્ધિ.

(૧) —: ક્ષયોપશમ લબ્ધિ :—

જ્ઞાનાવરણાદિક જે અપ્રશસ્ત કર્મ પ્રકૃતિઓ તેની જે શકિતનો અનુભાગ જે કાળમાં સમયે સમયે અનંતગુણા ઘટતા પ્રમાણ પૂર્વક ઉદયમાં આવે તે કાળમાં ક્ષયોપશય લબ્ધિ જાણવી.

(૨) —: વિશુદ્ધિલબ્ધિ :—

ક્ષયોપશમ લબ્ધિ હોતાં શાતાવેદનીયાદિ પ્રશસ્ત કર્મ પ્રકૃતિના બંધનું કારણ ધર્માનુરાગરૂપ શુભ પરિણામની પ્રાપ્તિ તેને વિશુદ્ધિ લબ્ધિ જાણવી.

હવે આના સંદર્ભમાં શાતાવેદનીય પ્રકૃતિનો બંધ કેવા પરિણામથી થાય તે જોઈએ :-

भूतव्रत्यनुकंपा दानं सरागसंयमादियोग: क्षान्ति शौचमिति सद्वेदस्य ॥ १३ ॥

— *તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૬ સૂત્ર-૧૨*

જગતના સમસ્ત જીવો તેમજ વ્રતી જીવો પ્રત્યે અનુકંપાના ભાવ, દાન, સરાગસંયમાદિ યોગ, ક્ષાન્તિ (ક્રોધ અને માનના ઉપશાંતરૂપ ઉપશમ તેમજ કોમળ ભાવ) અને શૌચ (માયા અને લોભના ઉપશાંતરૂપ સરળ અને સંતોષરૂપ ભાવ) થી શાતાવેદનીય કર્મનો બંધ થાય છે.

(૩) —: દેશનાલબ્ધિ :—

છ દ્રવ્ય, (જીવ, પુદ્ગલ, ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય, આકાશ અને કાળ). તેમજ નવ પદાર્થ (જીવ, અજીવ, પુણ્ય, પાપ, આશ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષ) ના સત્યાર્થ ઉપદેશ કરવાવાળા આચાર્યાદિકની અગર તેમના ઉપદેશની પ્રાપ્તિ (જેમાં જિનાગમનો સમાવેશ થાય, જે ગણધર પ્રભુથી માંડી પરંપરા પૂર્વક આચાર્યોએ રચેલ શાસ્ત્રોમાં આજ પણ ભવ્યજીવના ભાગ્યોદયથી મોજુદ છે) અગર તેમણે ઉપદેશેલ તત્ત્વની ધારણા, તેને દેશના લબ્ધિ જાણવી. અહીં તત્ત્વાર્થનો ઉપદેશ કરવાવાળા આચાર્યદિકની પ્રાપ્તિને પણ દેશના લબ્ધિ કહી તેનું કારણ એ છે કે દેશના લબ્ધિ, આગળની બે લબ્ધિઓ ક્ષયોપશમ લબ્ધિ અને વિશુદ્ધિલબ્ધિ પૂર્વક હોતાં જીવમાં તત્ત્વગ્રહણ કરવાની યોગ્યતા માટે અનિવાર્ય ભૂમિકા છે જ. નરકાદિ વિષે જ્યાં ઉપદેશ દેવાવાળા કોઈ મલે નહિ ત્યાં પૂર્વભવમાં આરાધના કરેલ જીવને તત્ત્વાર્થના સંસ્કારના બળથી સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ થાય છે. નરકમાં ક્ષેત્રાદિ જનિત અસહ્ય દુ:ખોથી કોઈ પૂર્વભવના આરાધક જીવને કર્મવશાત્ કોઈ મનુષ્ય વધ અગર ઘોર હિંસાયુકત પાપારંભથી બાંધેલ નરકગતિનો બંધ અને તેના દુ:ખો જેને 'વિપાક વિચય ધર્મધ્યાન' કહેવામાં આવેલ છે તે ધર્મધ્યાન પર ચઢી જતાં પોતે પૂર્વભવમાં કરેલ પાપના અત્યંત પશ્ચાતાપપૂર્વક વિશુદ્ધિ થતાં અને તત્ત્વાર્થના સંસ્કારના બળથી આ પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ થઈ જાય છે. (તે પણ આ પાંચ લબ્ધિપૂર્વક જ જાણવી.)

૪) —: પ્રાયોગ્યલબ્ધિ :—

અગાઉ જણાવેલ ત્રણ લબ્ધિયુકત જીવ અંતરંગ ભાવોની વિશુદ્ધતામાં ઉત્તરોત્તર સમયે સમયે વૃદ્ધિપૂર્વક (આયુષ્ય કર્મને છોડી) બાકીની જ્ઞાનાવરણાદિ સાત પ્રકૃતિની સ્થિતિ (જ્યાં એક કોડાકોડી સાગરોપમથી અધિક જેની સ્થિતિ પડેલી છે) તેનો એક કાંડકઘાત કરી એટલે કે છેદ કરી અવશેષ રહી જે અંત:કોડાકોડી સ્થિતિ સમાન કરી નાખે છે. એટલે કે તે જીવની વિશુદ્ધતાના કારણે કર્મોની સ્થિતિમાં આ પ્રમાણે ફેરફાર થઈ બધાયે સાતે કર્મોની સ્થિતિ અંત:કોડાકોડી પ્રમાણ રહી જાય છે.

તદુપરાંત ચાર ઘાતિયા કર્મની દારૂ-લતારૂપ અને આયુષ્યકર્મ સિવાયની બાકીની ત્રણ અઘાતિ કર્મની નીંબ-કાંજી રસરૂપ દ્વિસ્થાનગત અનુભાગ અવશેષ રહે છે, તે પ્રાયોગ્યલબ્ધિ જાણવી.

આ ચાર લબ્ધિઓ ભવ્ય તેમજ અભવ્ય જીવને અસંખ્યાતવાર પ્રાપ્ત હોય છે. એટલે કે આટલી હદે

સુધી પહોંચી ત્યાંથી પરિણામમાં સંકલેશતા આવી જતાં ત્યાંથી પાછો ફરી જાય છે. પ્રાયોગ્ય લબ્ધિના કાળમાં વિશુદ્ધિની સમયે સમયે એટલી બધી વૃદ્ધિ થતી હોય છે કે જેના ફળસ્વરૂપ (આયુષ્ય વિના) બાકીની સાત જ્ઞાનાવરણાદિ પ્રકૃતિઓનો એક સમયથી બીજા સમયે અગાઉના સમય કરતાં પલ્યના અસંખ્યાતમા ભાગ માત્ર નવો સ્થિતિબંધ કરે છે. આગળ ત્રીજા સમયમાં તેનાથી પણ પલ્યના અસંખ્યાતમા ભાગ માત્ર સ્થિતિબંધ કરે છે. આને સ્થિતિબંધાપસરણ કહે છે. આવાં કેટલાંયે સ્થિતિબંધાપસરણ પ્રાયોગ્ય લબ્ધિના કાળમાં થાય છે. અહી ૪૬ કર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ વિચ્છેદ થાય છે. તેની વિગત માટે ભાવ-દીપિકા (પંડિત ટોડરમલ સ્મારક ટ્રસ્ટ તરફથી પ્રકાશિત) ગ્રંથમાં પાન ૧૮૨ અને ૧૮૩ જોઈ લેવું.

અહીં આટલું વિશેષ જાણવું કે પ્રાયોગ્યલબ્ધિના કાળમાં ચાર ઘાતિયા કર્મપ્રકૃતિના બંધમાં અનુભાગ દારૂ-લતારૂપ દ્વિસ્થાનગત અને તેપણ સમયે સમયે ઘટતા અનુક્રમથી અને ત્રણ અઘાતિ (આયુષ્ય વિના)ની અપ્રશસ્ત પ્રકૃતિઓમાં અનુભાગ નીંબ-કાંજીરૂપ દ્વિસ્થાનગત અનુક્રમે અનંતગુણા ઘટતા ક્રમપૂર્વક બાંધે છે અને અઘાતિ પ્રશસ્ત પ્રકૃતિઓનો અનુભાગ ચતુ:સ્થાનીય સમયે સમયે અનંતગુણા વધતા ક્રમથી બાંધે છે.

—: કરણલબ્ધિ :—

કરણલબ્ધિમાં આવેલ જીવ નિયમથી પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ કરે છે. કરણનો અર્થ જીવના પરિણામ છે. કરણલબ્ધિના ત્રણ પ્રકાર છે. (૧) અધ:પ્રવૃત્તિકરણ, (૨) અપૂર્વકરણ અને (૩) અનિવૃત્તિકરણ. આ ત્રણેનો પ્રત્યેકનો કાળ અંતર્મુહૂર્ત છે અને ત્રણેનો ભેગો મળીને કાળ પણ અતંર્મુહૂર્ત છે. અહી એટલું વિશેષ જાણવું કે અનિવૃત્તિકરણના કાળથી સંખ્યાતગુણો અધિક કાળ અપૂર્વકરણનો છે અને અપૂર્વકરણના કાળથી સંખ્યાતગુણો અધિક કાળ અધ:પ્રવૃત્તિકરણનો છે. ટૂંકમાં અનિવૃત્તિકરણનો કાળ ઘણો જ ઓછો છે. અને તે કાળ પૂરો થતાં અનંતર બીજા જ સમયે જીવ સમ્યગ્દ્રષ્ટિ હોય છે.

—: અધ:પ્રવૃત્તિકરણ :—

અધ:પ્રવૃત્તિકરણના કાળમાં જીવના પરિણામમાં સમયે સમયે અનંતગુણી વિશુદ્ધતા થતી જાય છે. શાતાવેદનીય વિ. પ્રશસ્ત પ્રકૃતિઓનો સમયે સમયે અનંતગુણો ચતુ:સ્થાનીય અનુભાગ બંધ કરે છે, જ્યારે અશાતાવેદનીય વિ. અપ્રશસ્ત પ્રકૃતિઓનો સમયે સમયે અનંતમો ભાગ હીન અનુભાગ બંધ કરે છે. તદ્દુપરાંત સ્થિતિબંધ

(એટલે કે પ્રાયોગ્યલબ્ધિના કાળના અંત સમયમાં) જે અંત:કોડાકોડી પ્રમાણ સ્થિતિ હતી તે અધ:કરણના છેલ્લા સમયમાં તેનાથી સંખ્યાતગણી કમ (ઓછી) થઈ જાય છે.

—: અપૂર્વકરણ :—

અહીં ગુણસંક્રમણ થતું નથી. છતાં અહીં ત્રણ આવશ્યક હોય છે. (૧) ગુણશ્રેણી નિર્જરા (૨) સ્થિતિકાંડઘાત અને (૩) અનુભાગકાંડઘાત.

ગુણશ્રેણી નિર્જરા: સમયે સમયે અનંતગુણી વર્ધમાન કર્મની નિર્જરા થાય છે. અહીં આગળના અનિવૃત્તિકરણના કાળથી પણ અધિકતા સહિત ગલિતાવશેષ એટલે કે અસંખ્યાતગુણી વધતા ક્રમ અનુસાર કર્મની નિર્જરા થાય છે.

સ્થિતિકાંડઘાત: અહીં આ અપૂર્વકરણના અંતર્મુહૂર્તકાળમાં પ્રથમ સમયથીજ સત્તામાં રહેલ કર્મની જે સ્થિતિ નિર્માણ થયેલી પડી છે તે સ્થિતિનો ઘાત કરે છે. એટલે કે તેની સ્થિતિ ઘટી જાય છે. આવો સ્થિતિકાંડઘાત

આગળ થનારા ઉપશમ સમ્યક્ત્વના કાળના અંતિમ સમય સુધી થયાજ કરે છે. આ રીતે આવા અનેક સ્થિતિકાંડઘાત થાય છે.

અનુભાગકાંડઘાત: સત્તામાં રહેલા કર્મના અમુક ભાગ જેના અનંતા સ્પર્ધકો છે. તેમાંથી અનંતા ઉપરના બહુ અનુભાગ સહિતના સ્પર્ધકો છે તેનો અનુભાગ ઘટાડી બાકીના જે સ્પર્ધકો કમ (થોડા) અનુભાગ સહિતના છે તેના પ્રમાણે એક અંતર્મુહૂર્તમાં કરે છે. આ પ્રમાણે અસંખ્યાત અંતર્મુહૂર્તમાં થયા કરે છે. (અસંખ્ય અંતર્મુહૂર્ત જે ઉપર કહ્યું તે બધાનો ભેગો સમય પણ અંતર્મુહૂર્ત છે. ઉપર કહ્યું તેમ કરણલબ્ધિનો પૂરો સમય પણ અતંર્મુહૂર્ત જ હોય છે.

—: અનિવૃત્તિકરણ :—

અહીં પલ્યના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ સ્થિતિકાંડઘાત કરે છે. તદ્દુપરાંત સંખ્યાત હજાર સ્થિતિબંધાપસરણ પણ થાય છે. તદ્દુપરાંત ઉપશમ કરણ કરે છે. સત્તામાં રહેલ મિથ્યાત્વના દ્રવ્યના સ્પર્ધકો તેને સમયે સમયે અસંખ્યાત-અસંખ્યાત પ્રમાણથી ઉપશમાવે છે. આને ઉપશમકરણ કહે છે. ઉપશમકરણ એટલે ઉદીરણા થઈ ઉદયમાં આવવાને અયોગ્ય કરે છે. એટલે કે તેમાં એવી પરિસ્થિતિ નિર્માણ થાય છે કે તે કર્મો ઉદીરણા થઈ ઉદયમાં ન આવે. આ રીતે અનિવૃત્તિકરણના અંતસમય સુધી મિથ્યાત્વ દ્રવ્યના સ્પર્ધકો ઉપશમભાવને પામે છે.

છેલ્લે **અંતરકરણ** કરે છે.

અહીં અનિવૃત્તિકરણના અંતસમયથી તદનંતર આગળના **અંતર્મુહૂર્તકાળ** પ્રમાણમાં સ્થિત મિથ્યાત્વદ્રવ્યના સ્પર્ધકોમાંથી કેટલાકને ઉત્કર્ષણ કરી ઉપરની સ્થિતિમાં એટલે કે અનિવૃતિકરણના કાળમાં ચઢાવી દે છે (જે અનિવૃત્તિકરણના અંતસમયસુધી ભોગવી લે છે, (અહીં આ મિથ્યાત્વ દ્રવ્યના સ્પર્ધકોનો અનુભાગ જીવના ઉત્તરોત્તર વિશુદ્ધિના કારણે અનુભાગકાંડઘાતથી અત્યંત હીનત્વને પામેલ છે) અને બાકીના રહ્યા મિથ્યાત્વદ્રવ્યના સ્પર્ધકોને ઉપર અંડર લાઈન કરેલ અંતર્મુહૂર્ત કાળ બતાવ્યો તેનાથી બહાર કાઢી દે છે. આમ થતાં ઉપર અંડરલાઈન કરેલ અંતર્મુહૂર્ત કાળ જે કહ્યો તે મિથ્યાત્વ દ્રવ્યના સ્પર્ધકોથી રહિત થઈ જાય છે. જેને **અંતરાયામ** કહે છે. આ પ્રમાણેની ક્રિયા અનિવૃત્તિકરણના અંત સમય સુધી થયા કરે છે. આ અંતરાયામ કાળમાં અનંતાનુબંધી ચાર કષાયોનો પણ અભાવ થઈ જાય છે. આમ અનિવૃત્તિકરણનો કાળ પૂરો થતાં તદનંતર બીજે જ સમયે મિથ્યાત્વ એટલે દર્શનમોહનીય તેમજ અનંતાનુબંધી કષાયના સત્વ તેમજ ઉદયનો અભાવ હોતાં જીવ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વને પ્રાપ્ત હોય છે.

—: ગુણસંક્રમણ :—

સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિના પ્રથમ સમયથી જ અંતરાયામ કાળથી ઉપર ઉપરની સ્થિતિમાં રહેલા મિથ્યાત્વકર્મના સ્પર્ધકોનું ગુણ સંક્રમણ કરી અમુક સ્પર્ધકોમાંથી તેના બહુભાગને તો મિથ્યાત્વરૂપ જ (તારતમ્યતામાં ફરક પડે છે) પરિણમાવે છે. તેનાથી અસંખ્યાતમા ભાગના સ્પર્ધકોને સમ્યક્-મિથ્યાત્વ (મિશ્ર મોહનીય) રૂપ પરિણમાવે છે અને તેનાથી પણ અસંખ્યાતમા ભાગ મિથ્યાત્વના સ્પર્ધકોને સમ્યક્-પ્રકૃતિ મિથ્યાત્વરૂપ પરિણમાવે છે. આ ગુણ સંક્રમણના કાળમાં મિથ્યાત્વ સિવાયના બીજા સર્વ કર્મોની ગુણશ્રેણી નિર્જરા, સ્થિતિકાંડઘાત તેમજ અનુભાગકાંડઘાત થયા કરે છે. આ રીતે થોડોક કાળ વીત્યા બાદ જીવના પરિણામની વિશુદ્ધતા (જે અત્યાર સુધી વધતી જતી) હતી તેમાં થોડી ક્ષતિ આવે છે અને તેના ફળસ્વરૂપ બાકીના મિથ્યાત્વના સ્પર્ધકોને ગુણસંક્રમણ પૂર્વક ઘણા ઓછા પ્રમાણમાં સમ્યક્-મિથ્યાત્વરૂપ અને તેનાથી પણ ઓછા પ્રમાણમાં સમ્યક્-પ્રકૃતિ મિથ્યાત્વરૂપ પરિણમાવે છે.

હવે ઉપશમ સમ્યક્ત્વના કાળનો જઘન્ય એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટ છ આવલી સમય બાકી રહે ત્યારે

જો અનંતાનુબંધી ચાર કષાયમાંથી કોઈ એકનો ઉદય આવે ત્યારે જીવ મિથ્યાત્વગુણસ્થાનને તો પ્રાપ્ત થતો નથી (કેમકે મિથ્યાત્વનો ઉદય હજુ નથી) પરંતુ નીચે સાસાદન ગુણસ્થાન (બીજું ગુણસ્થાન)ને પ્રાપ્ત થાય છે. સાસાદનગુણ સ્થાનનો કાળ જઘન્ય એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટ છ આવલી પ્રમાણ છે. ત્યારબાદ ત્યાંથી પડી નીચે મિથ્યાત્વગુણસ્થાનને નિયમથી પ્રાપ્ત થાય છે એટલે કે તેટલા કાળમાં મિથ્યાત્વનો ઉદય નિયમથી થઈ જાય છે અને જીવ મિથ્યાદ્રષ્ટિ થઈ જાય છે. સાસાદન ગુણસ્થાન પડવાનું ગુણસ્થાન છે ત્યાંથી કોઈ જીવ સીધો સમ્યગ્દર્શનને પ્રાપ્ત થતો નથી. (અનંતાનુબંધી કષાયનો ઉદય ન આવે તો શું થાય ?)

હવે ઉપશમ સમ્યક્ત્વને પ્રાપ્ત જીવને થોડોક કાળ સમ્યક્ત્વ પૂર્વક વીત્યા બાદ નિયમથી પરિણામમાં સંકલેશતા આવે છે. (અનાદિ સંસ્કારના બળથી વિશુદ્ધતા અને સંકલેશતા જીવના પરિણામમાં બદલાયાજ કરે છે) આના ફળસ્વરૂપ અંતરાયામ કાળની બહાર સ્થિત જે ત્રણ પ્રકારના (મિથ્યાત્વ, સમ્યક્ મિથ્યાત્વ અને સમ્યક્-પ્રકૃતિ મિથ્યાત્વ) ના સ્પર્ધકો (ગુણસંક્રમણપૂર્વક નિર્માણ થયેલા) સ્થિત છે તેમાંથી (જો સંકલેશભાવ અધિક હોય તો) ઉદયાવલી કાળથી આગળ અંતરાયામના બાકીના કાળના અંતસમયસુધી અંતરાયામને મિથ્યાત્વના સ્પર્ધકોથી પૂરી દે છે એટલે ઉદયાવલીનો કાળ પૂરો થતાં મિથ્યાત્વના ઉદયથી જીવ મિથ્યાત્વી થઈ જાય છે.

સકંલેશ ભાવ તેનાથી ઓછો હોય તો ઉદયાવલી કાળથી આગળ અંતરાયામના બાકીના કાળના અંતસમયસુધી અંતરાયામને સમ્યક્-મિથ્યાત્વના સ્પર્ધકોથી પૂરી દે છે જેના ફળસ્વરૂપ ઉદયાવલીનો કાળ વીત્યા બાદ જીવ ઉપશમ સમ્યક્ત્વથી છૂટી ત્રીજા મિશ્ર ગુણસ્થાનને પ્રાપ્ત થાય છે. મિશ્રગુણસ્થાનથી જીવ સીધો સમ્યક્ત્વને પ્રાપ્ત કરી શકે છે તેમજ મિથ્યાવી પણ થઈ શકે છે. જે તે જીવના વિશુદ્ધિના ભાવની તારતમ્યતા પર નિર્ભર છે.

સંકલેશભાવ તેનાથી પણ ઓછો હોય તો ઉદયાવલી કાળથી આગળ આંતરાયામના બાકીના કાળના અંત સમય સુધી અંતરાયામને સમ્યક્-પ્રકૃતિ મિથ્યાત્વના સ્પર્ધકોથી પૂરી દે છે. જેના ફળસ્વરૂપ ઉદયાવલીનો કાળ વીત્યાબાદ જીવ ઉપશમ સમ્યક્ત્વથી છૂટી ક્ષયોપશમ સમ્યક્ત્વને પામે છે.

ઉપશમ સમ્યકત્વ વર્તમાન સુખનું કારણ છે અને ભવિષ્યમાં સ્વર્ગ અને પરંપરાએ મોક્ષનું કારણ છે.

ભાવોથી થાય છે.

નોંધ: આ પ્રથમોપશમ સમ્યક્ત્વના વિષયમાં જ્યાં જ્યાં આત્મા ઉપશમકરણ કરે છે, સ્થિતિકાંડઘાત કરે છે, અનુભાગકાંડઘાત કરે છે, અંતરકરણ કરે છે વિ. લખેલ છે ત્યાં એમ સમજવાનું કે આત્માના તે તે પ્રકારના વિશુદ્ધિના ભાવો થતાં તેનું નિમિત્ત પામી સત્તામાં રહેલા કર્મોમાં તથા પ્રકારનું પરિવર્તન થાય છે.

જીવના પાંચ ભાવો (૧) પારિણામિક ભાવ (૨) ઉદયિક ભાવ (૩) ક્ષયોપશમભાવ (૪) ઉપશમભાવ અને (૫) ક્ષાયિક ભાવ. આમાંથી ફકત ઉદયિક ભાવ બંધનું કારણ છે. જે દર્શનમોહ અને અગર ચારિત્રમોહના ઉદય જનિત ભાવ છે.

પારિણામિક ભાવ અન્ય કર્માદિકની અપેક્ષા રહિત જીવનો સ્વકીય ભાવ છે તે છ એ દ્રવ્યોમાં સર્વ સામાન્ય છે.

ક્ષયોપશમભાવ-ઉપશમભાવ અને ક્ષાયિક ભાવ ઓછેવત્તે અંશે જીવના સ્વભાવના ઉઘાડના ભાવ છે તેનાથી કદાપિ બંધ થાય નહિ અને થાય તો બંધ જીવનો સ્વભાવ થઈ જાય અને જીવનો કદાપિ મોક્ષ થાય નહીં. દર્શનમોહ અને અગર ચારિત્રમોહ કર્મના ઉદય જનિત ઉદયિક ભાવ બંધનું કારણ છે એટલું જ નહિ, ઉદયિકભાવથી બંધ ન થાય અને બંધ જીવના પોતાના કારણે (મોહકર્મના ઉદય વગર) થતો હોય તો પણ બંધ જીવનો સ્વભાવ થઈ જાય અને તેનો કદી મોક્ષ થાય નહીં. એક માત્ર દસમા સુક્ષ્મસંપરાય ગુણસ્થાનના છેલ્લા સમયે

ઉદયમાન અતિ-અતિ સુક્ષ્મ લોભકર્મના ઉદયથી જીવમાં અબુદ્ધિપૂર્વકનો રાગ **વિદ્યમાન છે જે** વીતરાગ-યથાખ્યાતચારિત્રને પ્રગટ થવામાં બાધારૂપ છે છતાં તેની તારતમ્યતા **એટલી બધી અનંતમા ભાગે** હીન છે કે તેનામાં એટલી શકિત નથી કે જેનું નિમિત્ત પામી જે તે શ્રેણી **આરૂઢ જીવના શરીર પ્રમાણ** આકાશ પ્રદેશમાં સ્થિત કાર્મણ વર્ગણાઓ કર્મરૂપે પરિણમે.

આ આખો પ્રથમોપશમ સમ્યકૃત્વની ઉત્પત્તિનો વિષય જિનાગમમાં વાકયે વાકયે પ્રતિભાસતા **એક માત્ર** અર્થને સૂચવે છે કે વિશુદ્ધિ અને મંદ કષાયને કારણ-કાર્ય સંબંધ છે લક્ષ્ય-લક્ષણ સંબંધ નથી. **અનાદિ** મિથ્યાદ્રષ્ટિ જીવ વિશુદ્ધિના ઉત્તરોત્તર વર્ધમાન પરિણામથી સત્તામાં રહેલ મિથ્યાત્વકર્મ **તેમજ અનંતાનુબંધી** કષાયવિષે સ્થિતિકાંડઘાત, અનુભાગકાંડઘાત, ગુણશ્રેણી નિર્જરા, ઉત્કર્ષણ, અપકર્ષણ, ઉપશમાદિ પૂર્વક **અંતરાયામનું** સર્જન થતાં (તે કાળ દરમ્યાન મિથ્યાત્વની સત્તા તેમજ ઉદયનો અભાવ હોતાં) **પ્રથમોપશમ સમ્યકૃત્વને** પ્રાપ્ત કરે છે, અને ચોથા ગુણસ્થાનથી માંડી આગળ આગળના ગુણસ્થાનોમાં ઉત્તરોત્તર વિશુદ્ધિના પરિણામથીજ સત્તામાં રહેલ મોહ-કર્મની સંવર નિર્જરા સહિત હીનતા કરે છે અને હીનત્વ પામેલ કર્મના ઉદયથી જીવની વિશુદ્ધતામાં પાછો વધારો થાય છે. અને તેનાથી પાછો અધિક-સંવર નિર્જરા સહિત મોહકર્મની હીનતા કરે છે. (વિશુદ્ધતા વધતાં એકદેશ તેમજ સર્વદેશ ચારિત્રની પ્રાપ્તિ અવશ્ય હોય છે).

અહી 'મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક' ગ્રંથ અધિકાર નવમામાં 'મોક્ષસાધનમાં પુરૂષાર્થની મુખ્યતા'ના પ્રકરણમાં પાન-૩૧૪ (શ્રી સોમચંદ અમથાલાલ કૃત ગુજરાતી અનુવાદ)માં આનું આબેહુબ વર્ણન કરેલ છે: -

''બીજું આ અવસરમાં જીવ જો પુરુષાર્થવડે તત્ત્વનિર્ણય કરવામાં ઉપયોગ લગાવવાનો અભ્યાસ રાખે તો તેને વિશુદ્ધતા વધે છે અને તેથી કર્મોની શકિત હીન થાય છે. તથા કેટલાક કાળમાં આપોઆપ **દર્શનમોહનો** ઉપશમ થતાં તેને તત્ત્વોમાં યથાવત્ પ્રતીતિ આવે છે. હવે આનું કર્તવ્ય તો તત્ત્વનિર્ણયનો અભ્યાસ જ છે અને તેનાથી જ દર્શનમોહનો ઉપશમ તો સ્વયમજ થાય છે, એમાં જીવનું કર્તવ્ય કાંઈ નથી. વળી એ (દર્શનમોહનો ઉપશમ) થતાં જીવને સમ્યગ્દર્શન તો સ્વયં થાય છે, અને સમ્યગ્દર્શન થતાં શ્રદ્ધાન તો આવું થયું કે- 'હું આત્મા છું, મારે રાગાદિક ન કરવા' પરંતુ ચારિત્રમોહના ઉદયથી રાગાદિક થાય છે, ત્યાં તીવ્ર ઉદય થાય ત્યારે તો તે વિષયાદિકમાં પ્રવર્તે છે પણ તેનો મંદ ઉદય થાય ત્યારે પોતાના પુરુષાર્થથી ધર્મકાર્યોમાં વા વૈરાગ્યાદિ ભાવનામાં ઉપયોગને લગાવે છે, તેના નિમિત્તથી ચારિત્રમોહ મંદ થતો જાય છે. એ પ્રમાણે થતાં દેશચારિત્ર વા સકલચારિત્ર અંગીકાર કરવાનો પુરુષાર્થ પ્રગટ થાય છે. વળી ચારિત્ર ધારણ કરી પોતાના પુરુષાર્થ વડે ધર્મમાં પરિણતિને વધારે છે, ત્યાં વિશુદ્ધતાવડે કર્મની શક્તિ હીન થવાથી વિશુદ્ધતા વધે છે અને તેથી કર્મની શકિત વધારે હીન થાય છે. એ પ્રમાણે ક્રમથી મોહનો નાશ કરે છે, ત્યાં પરિણામ **સર્વથા વિશુદ્ધ થવાથી** જ્ઞાનાવરણાદિનો નાશ થઈ કેવળજ્ઞાન પ્રગટ થાય છે. ત્યાર પછી ઉપાય વિના અઘાતિકર્મોનો **પણ નાશ કરી શુદ્ધ સિદ્ધપદને** પામે છે. એ પ્રમાણે ઉપદેશનું તો નિમિત્ત બને અને પોતાનો પુરુષાર્થ કરે **તો કર્મનો નાશ થાય.''** વિકલ્પ જ્ઞાનની પર્યાય છે. તેનાથી બંધ થાય નહી. આજ પાના ૩૨ આગળ **લખ્યું છે કે 'નિર્વિચારનું નામ નિર્વિકલ્પ નથી.'** રાગદ્વેષ પૂર્વક એક ઈન્દ્રિયના વિષયથી બીજા વિષયને જાણવા-ભોગવવા **ઉપયોગને વારંવાર** ભમાવવો તેને વિકલ્પ કહ્યો અને તેને છોડવાનો ઉપદેશ આપ્યો. વ્રત-તપના પરિણામને નહીં.

વિશુદ્ધિથી સત્તામાં રહેલા ઘાતિ કર્મની હીનતા અને વિશુદ્ધિના પરિણામ પ્રબળ હોય (અંતરાયકર્મના ક્ષયોપશમપૂર્વક **વિર્ય-ઉત્સાહની ઉત્કૃષ્ટતાપૂર્વક**)તો સંવર નિર્જરાનું કારણ છે. વિશુદ્ધિ સદાકાળ મોક્ષનો માર્ગ છે. **પ્રથમોપશમ સમ્યગ્દર્શન થવા પૂર્વે** મિથ્યાદ્રષ્ટિ જીવને જે પાંચ લબ્ધિઓ કહી તે ઉત્તરોત્તર અનંતગુણા **વિશુદ્ધિના જ પરિણામ છે.** અને તેમાં દેશનાલબ્ધિ પછી જ અને તે પણ કરણલબ્ધિમાં અપૂર્વ **વિશુદ્ધતાના કારણે કર્મના ઉપશમાદિપૂર્વક** પ્રથમોપશમ સમ્યગ્દર્શન ઉપજે છે.

"સમ્યગ્દર્શન થયા બાદ વિશુદ્ધતામાં જે ગર્ભિત શુદ્ધતા હતી તે મોક્ષમાર્ગ તરફ ચાલી પોતાના સ્વભાવ વડે વર્ધમાન થઈ ત્યારે તે પૂર્ણ યથાખ્યાતરૂપ પ્રગટ કહેવાઈ. વિશુદ્ધતાની જે ઉર્ધ્વતા એજ તેની શુદ્ધતા. વિશુદ્ધતામાં યથાખ્યાત ચારિત્રનો અંશ છે તેથી તે અંશ ક્રમશ: પૂર્ણ થયો. હે ભાઈ! તેં વિશુદ્ધતામાં શુદ્ધતા માની કે નહિ? જો તેં માની છે તો કાંઈ અન્ય કહેવાનું પ્રયોજન રહેતું નથી. જો તેં નથી માની તો તારું દ્રવ્ય એ પ્રકારે પરિણમ્યું છે ત્યાં અમે શું કરીએ? જો માને તો તને શાબાશી" (શ્રી મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમાં બનારસીદાસ લિખિત ઉપાદાન-નિમિત્તની ચિઠ્ઠી-હિન્દી ઉપરથી ગુજરાતી અનુવાદ).

સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવને હિંસાની વિરતિરૂપ વ્રતાદિના પરિણામ-ભાવ આવે છે તે વિશુદ્ધિના પરિણામ છે તે હેયરૂપ પણ નથી અને બંધનું કારણ પણ નથી. અને તેજ મોક્ષમાર્ગ ઉર્ધ્વગતિરૂપ માર્ગ છે. અને તે સમયમાં શાતાવેદનીયાદિ અઘાતિકર્મોનો ઉત્કૃષ્ટ અનુભાગબંધ થાય છે. તે સમયે જે બંધ થાય છે તે અપ્રત્યાખ્યાનવરણ (પ્રત્યાખ્યાનાવરણ અને સંજ્વલનપણ) કર્મના ઉદય જનિત જીવમાં વિદ્યમાન રાગાદિભાવથી થાય છે. ઘાતિકર્મની સંવર-નિર્જરાને અને પુણ્યબંધને વિરોધ નથી. ક્ષપકશ્રેણી આરૂઢ મુનિરાજને ઉત્તરોત્તર અનંતગુણી વૃદ્ધિપૂર્વક ઘાતિકર્મની સંવર-નિર્જરા થાય છે તેની સાથે ઉતરોત્તર વર્ધમાન શાતાવેદનીયાદિ પુણ્ય-પ્રકૃતિનો બંધ પણ થાય છે. સંસારકાળ દરમ્યાન ઉત્કૃષ્ટ પુણ્યબંધ ૧૦મા સુક્ષ્મ સંપરાય ગુણસ્થાનના છેલ્લા સમયે થાય છે. તેના બીજા જ સમયે જીવ યથાખ્યાત ચારિત્રયુકત સંપૂર્ણ વીતરાગદશાને પામે છે. જે ઉત્તરોત્તર વર્ધમાન વિશુદ્ધિનું જ પરિણામ છે. સમ્યગ્દ્રષ્ટિ શ્રાવકને પાંચમા ગુણસ્થાનમાં નિરંતર સંવર-નિર્જરા થયાજ કરે છે. અને તે જે તે સમયની વિશુદ્ધતાની તારતમ્યતા પર નિર્ભર છે. જ્યારે તે સમયે બંધ પ્રત્યાખ્યાનવરણના ઉદય જનિત જીવમાં વિદ્યમાન રાગાદિભાવથી થાય છે. તેજ પ્રમાણ છઠ્ઠે-સાતમે ગુણસ્થાનમાં સ્થિત નિર્ગ્રંથ મુનિને ધ્યાન અને અધ્યયન પૂર્વકના વિશુદ્ધિના પરિણામથી ઘાતિકર્મની સંવર-નિર્જરા અને તેજ પરિણામથી શાતાવેદનીયાદિ પુણ્ય પ્રકૃતિનો બંધ અને જે ઘાતિ કર્મનો અલ્પ પણ બંધ થાય છે તે ઉદયમાન સંજ્વલન કષાય જનિત જેતે સમયે વિદ્યમાન રાગાદિ અંશોથી છે.

બંધનું કારણ મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, પ્રમાદ, કષાય અને યોગ કહ્યા. **સમ્યગ્દ્રષ્ટિને વ્રતના ભાવ આવે છે તે વિરતિના પરિણામ છે**, તેને **હેય** માનવા તે હિંસાદિને અને હિંસાદિમાં **પ્રવર્તનનું કારણ, ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ તેના** ત્યાગને હેય માનવા બરાબર છે.

૧) સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવને તો સર્વસંગપરિત્યાગપૂર્વક નિર્ગ્રંથ મુનિદશા ગ્રહણ કરવાના **નિરંતર પરિણામ અંતરંગમાં રહ્યા કરે છે** અને તેમ ન હોય તો **આશ્રવને** હેય અને બંધને અહિતરૂપ **તેમજ સંવર-નિર્જરાને ઉપાદેય અને મોક્ષને પરમહિતરૂપ** શું જાણ્યો? (અહીં બંધને હિતરૂપ અને **મોક્ષને પરમહિતરૂપ કહ્યા તેનું કારણ એ છે કે બંધ અને મોક્ષ** ફળસ્વરૂપ **કાર્ય છે.** અનુક્રમે તેનાં કારણ આશ્રવને **હેય કહ્યો અને સંવર-નિર્જરાને ઉપાદેય કહ્યા.)** એકાંત દુ:ખરૂપ સંસાર અને સુખરૂપ મોક્ષ અને તેનાં કારણોનું **જ્ઞાન ક્યાં રહ્યું? સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવને તો**

"અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે?
ક્યારે થઈશું બાહ્યાંતર નિર્ગ્રંથ જો?
સર્વસંબંધનું બંધન તીક્ષ્ણ છેદીને,
વિચરશું કવ મહત્ પુરુષને પંથ જો?"

— *શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર રચિત અપૂર્વ અવસરમાં સર્વપ્રથમ પદ.*

આવા વિચાર નિરંતર રહ્યા કરે છે. જે શ્રાવકને સર્વસંગપરિત્યાગના ભાવ અંતરંગમાં સતત વિદ્યમાન નથી તે **શ્રાવક** પણ નથી અને તેને સમ્યગ્દર્શન પણ નથી.

૨) સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવ પહેલાં (ચોથે ગુણસ્થાને હોય તે સમયમાં) પડિમાનું ગ્રહણ કરે છે અને અંતરંગ પાંચમું ગુણસ્થાન ત્યારબાદ પ્રગટે છે. પાંચમા ગુણસ્થાનથી જીવ સીધો સાતમે ગુણસ્થાને જાય છે અને પછી કંઈક પ્રમાદ થતાં (જે સંજ્વલન કષાય (કર્મરૂપ) ના તીવ્ર ઉદયથી થાય છે) છઠ્ઠા ગુણસ્થાને આવે છે. અહીં સાતમું ગુણસ્થાન પ્રગટે ત્યારે બાહ્યમાં સર્વસંગપરિત્યાગપૂર્વક ૨૮ મૂલગુણના પાલન સહિત નિર્ગ્રંથ મુનિદશા હોય તે સિવાય સાતમું ગુણસ્થાન પ્રગટે નહીં. આ વાતથી પણ એ સિદ્ધ થાય છે કે સમ્યગ્દ્રષ્ટિ જીવને હિંસાદિના ત્યાગરૂપ વ્રતાદિના ભાવ આવે ત્યારે હેયરૂપ કદાપિ ન જાણે. હેય તો અવિરતિના પરિણામ છે. વ્રતાદિના નહીં.

૩) પરિગ્રહમાં પાંચ ઈન્દ્રિયના વિષયોની ઈચ્છા મૂળ છે. પરિગ્રહત્યાગની પાંચ ભાવનાઓમાં:

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ॥ ८ ॥

— અધ્યાય-૭, તત્વાર્થસૂત્રની સર્વાર્થસિદ્ધિટીકા

પાંચ ઈન્દ્રિયોના મનોજ્ઞ તેમજ અમનોજ્ઞ (ઈષ્ટ-અનિષ્ટ) વિષયોમાં રાગદ્વેષનો ત્યાગ. વિષયોની ઈચ્છાથી તેના ગ્રહણાર્થે અગર રક્ષણાર્થે જીવને ક્રોધ, માન, માયા, લોભ એ ચાર કષાય થાય છે. (પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયોની ઈચ્છાને પણ કષાયભાવ કહેલ છે) અને કષાયથી પ્રેરિત જીવ હિંસા, જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહરૂપ પાંચ પાપોમાં પ્રવૃત્તિ કરે છે. આ રીતે ઉપર કહ્યું તેમ - હિંસાદિના ત્યાગપૂર્વકના વ્રતના ભાવને હેય કહેવા તે કષાયના ત્યાગને હેય કહેવા બરાબર છે. કેમ કે વ્રતાદિના ભાવ કષાયના ત્યાગ વિના બની શકતા નથી.

૪) એક માણસ પાસે ધારો કે એક કરોડ રૂપિયા છે તેમાંથી તે પાંચ લાખ રૂપિયાનું ચતુર્વિધ સંઘની સેવાદિમાં દાન કરે છે, તો તે દાન, લોભ કષાયની હાનીપૂર્વકના ભાવ છે. તેનાથી અઘાતિકર્મમાં પુણ્યના બંધ ઉપરાંત ઘાતિ કર્મોની હાની તેમજ તેની તારતમ્યતાના પ્રમાણે સત્તામાં રહેલા ઘાતિકર્મોની ~~સંવર~~-નિર્જરા પણ થાય છે અને તે વખતે જે ઘાતિ કર્મોનો નવીન બંધ થાય છે તે પંચાણુ લાખ રૂપિયાનો પરિગ્રહ રાખવાનો ભાવ છે તેનાથી થાય છે, દાનથી નહીં. શ્રીષેણ રાજા આહારદાનના પ્રતાપે ભવાંતરે આ ચોવીશીના શ્રી શાંતિનાથ નામધારી સોળમા તીર્થંકર થયા.

—: વિશુદ્ધિના ભાવ :—

आत्मनः प्रसादो विशुद्धि : આત્માનો વીર્યોલ્લાસ (કલુષતા રહિત) ભાવ તે વિશુદ્ધિ.

विसोहिमूलाणि पुण्णाणि-विशुद्धिमूलानि पुण्यानि અને **पुनायति इति पुण्यं.** વિશુદ્ધિ જેના મૂળમાં છે તે પવિત્રતા છે, પ્રશસ્તભાવ છે.

૧ આર્ત-રૌદ્ર ધ્યાનનો અભાવ વિશુદ્ધિનું કારણ.
૨ સમ્યગ્દર્શનાદિ તથા વ્યવહારધર્મ વિશુદ્ધિનું કાર્ય.
૩ ધર્મ-શુક્લધ્યાનનાં પરિણામ વિશુદ્ધિનો સ્વભાવ.
૪ પુણ્યાશ્રવ વિશુદ્ધિનું અંગ-વિશુદ્ધિની જડ છે.

— આપ્તમિમાંસા કારિકા-૯૫
અષ્ટસહસ્ત્રિ —

કષાયોની હીનતાના કારણનું નામ વિશુદ્ધિ છે. સ્થિર, શુભ, સુભગ, શાતા અને સુસ્વર આદિ અઘાતિ શુભ પ્રકૃતિનો બંધ અને સત્તામાં રહેલા ઘાતિકર્મોની હાની, સ્થિતિકાંડઘાત, અનુભાગકાંડઘાતના કારણભૂત જીવોના પરિણામને વિશુદ્ધિ કહે છે.

''અર્હંત સાધુ સિદ્ધ પ્રત્યે ભક્તિ ચેષ્ટા ધર્મમાં;
ગુરૂઓતણું અનુગમન, એ પરિણામ રાગ પ્રશસ્તના'' ॥ ૧૩૬ ॥

— *શ્રી પંચાસ્તિકાય સંગ્રહ*

અરિહંત, નિર્ગ્રંથ મુનિ અને સિદ્ધ ભગવંતો તરફ ભક્તિના ભાવ, ધર્મમાં પ્રવૃત્તિ અને સદ્‌ગુરૂ ભગવંતોની આજ્ઞાનુસાર પ્રવર્તન તે પ્રશસ્ત રાગના પરિણામ છે. જેને 'મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક'માં વિશુદ્ધિના ભાવ તરીકે પાન-૮ પર વર્ણવેલા છે.

જે ભાવથી શાતાવેદનીય કર્મ બંધાય તેને વિશુદ્ધિના ભાવ કહેલ છે. પાંચ લબ્ધિઓમાં બીજી વિશુદ્ધિલબ્ધિમાં એજ વાત આવે છે.

भूतव्रत्यनुकंपा दानं सरागसंयमादि योगः क्षान्ति : शौचमिति सद्वदेस्य ॥ १४ ॥

— *તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય - ૬*

સમસ્ત જીવો તેમજ ખાસ કરીને વ્રતી જીવો પ્રત્યે અનુકંપાના ભાવ, દાન, સરાગસંયમાદિ યોગ, ક્ષાન્તિ (ક્રોધ, માનના ઉપશમરૂપ શાંત અને કોમળ ભાવ) અને શૌચ (માયા અને લોભની હીનતા પૂર્વકના સરળ અને સંતોષરૂપ ભાવ) થી શાતાવેદનીય કર્મનો બંધ થાય છે.

—: સંવર-નિર્જરાના કારણરૂપ ઉત્કૃષ્ટ વિશુદ્ધિના ભાવ :—

आश्रव निरोध : संवर ॥ १ ॥
स गुप्ति समितिधर्मानुप्रेक्षा परिसहजय चारित्रै : ॥ २ ॥
तपसा निर्जरा च ॥ ३ ॥

— *તત્વાર્થસૂત્ર અધ્યાય-૯*

તપથી સંવર અને નિર્જરા કહી કેમકે તપમાં આશ્રવ નિરોધરૂપ સંવરના ભાવ આવી જાય છે.

बंध प्रदेशगालनं निर्जरणमिति जिनैः प्रज्ञप्तम्।
येन भवेत् संवरणं तेन तु निर्जरणमिति जानी हि ॥ ८६ ॥

જે ભાવથી સંવર થાય છે તે ભાવથી નિર્જરા પણ થાય છે (કેમ કે સંવરના ભાવમાં ઈચ્છા નિરોધરૂપ તપના ભાવ આવી જાય છે)

— *પ્રાત:સ્મરણીય કુંદકુંદાચાર્યદેવકૃત* ***बारसाणुवेकरवा*** *(અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓ)*

કોઈ નિર્ગ્રંથ મુનિના શરીરને બાધા પહોંચાડે અગર તેમની માનહાની કરે તેના પર ક્રોધ કરવો તે પાપભાવ. તેને ક્ષમા કરવી તે પુણ્યભાવ. (ક્ષમા કોણ કરે જેને અંતરંગમાં થોડી પણ માનહાની જેવું લાગે કે ઝણઝણાટી થાય તે) અંતરંગમાં માનહાની કે શારીરિક ઈજાથી આકુળતા ઉપજેજ નહિ તેમજ સામા જીવ પ્રત્યે દ્વેષભાવ ઉપજેજ નહિ તે ઉત્તમ ક્ષમારૂપી ધર્મ જેને ભગવાને સંવર-નિર્જરાનું કારણ કહ્યું. આજ રીતે દસ લક્ષણ ધર્મમાં બીજા માર્દવાદિ નવ ધર્મ લેવા.

બીજી વાત : કષાયથી પ્રેરિત પ્રમત્તયોગથી કોઈ જીવની હિંસા અગર બાધા પહોંચાડવાની મન, વચન અને કાયાની ક્રિયાથી (હિંસારૂપ) પાપબંધ. ગમનાદિ કરતાં સાવધાની પૂર્વક ત્રસ-સ્થાવર જીવોની હિંસા ટાળીને તેમને બાધા ન પહોંચે એવી સાવધાની રાખવી તેનાથી પુણ્યબંધ. જ્યારે અંતરંગમાં અહિંસક ભાવ (મારાથી કોઈપણ પ્રકારે કોઈપણ જીવને બાધા ન પહોંચે એવા જીવોને અભયદાન સ્વરૂપ મન, વચન, કાય અને કૃત-કારીત અને અનુમોદના એમ નવ પ્રકારના હિંસાના ત્યાગરૂપ વ્રતના અંતરંગ પરિણામ) તે ધર્મ અને તેનાથી સંવર-નિર્જરા થાય. આ પ્રમાણે બીજા ચાર પાપભાવ : જૂઠ, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહની વાત સમજવી.

બીજી એક વાત : કોઈ આપણને ઉપર પ્રમાણે અપમાનાદિથી બાધા પહોંચાડે તેના પર ક્રોધ કરવો તે તે સમયે પાપબંધ, ક્ષમા કરે તો પુણ્યબંધ. પણ અંતરંગમાં 'ફરી એ પ્રમાણે કરશે તો જોઈ લઈશ' એવા ભાવ રાખે તો દિનરાત ઉંઘતાં ને જાગતાં બીજી કોઈપણ પ્રવૃત્તિ કરતો હોય તેમજ સામોજીવ ફરી કોઈ દિવસ એ પ્રમાણે કરે નહિ તો પણ આ અંતરંગ ભાવથી ચોવીસે કલાક જીવ પાપબંધ કર્યા કરે. આને ક્રોધનો પરિગ્રહ કહે છે.

આપણે કોઈ વાખ્યાનાદિ પ્રસંગે કોઈ સભામાં જઈએ ત્યારે આપણને જોઈ કાર્યકર્તાઓ આપણને બોલાવી આગળ બેસાડે ત્યારે માન થઈ આવે તે પાપબંધ તે સમય પૂરતો. પરંતુ અંતરંગમાં એવો ભાવ રાખીયે કે હું આ સભામાં ક્યારે પણ જાઉં ત્યારે કાર્યકર્તાઓ મને આ પ્રમાણે માન આપી આગળ બેસાડે તેમાં કંઈ મારા ઉપર ઉપકાર કરતા નથી. એ ભાવથી દિનરાત ઉંઘતાં કે જાગતાં પાપબંધ કર્યા જ કરે. આને માનનો પરિગ્રહ કહ્યો. આ પ્રમાણે માયા અને લોભનું જાણવું. આવુંજ અવિરતિના પરિણામનું જાણવું.

અહિંસાદિના પરિણામથી પુણ્યબંધ થાય એમ જે શાસ્ત્રોમાં કહ્યું છે તે અઘાતિકર્મની પુણ્ય પ્રકૃતિઓની વાત છે. ઘાતિકર્મનો અલ્પ પણ બંધ પાપરૂપજ છે.

શાસ્ત્રમાં શુભ-અશુભ અને શુદ્ધભાવની વાત આવે છે તેમાં શુદ્ધભાવની વ્યાખ્યા :

સુવિદિતસૂત્ર પદાર્થ સંયમ-તપ સહિત વીતરાગ ને;
સુખદુ:ખમાં સમ શ્રમણને શુદ્ધોપયોગ જિનો કહે. ।। ૧૪ ।।

— *શ્રી પ્રવચનસાર*

વ્રત-તપના ભાવ સંવર-નિર્જરાનું કારણ માત્ર તત્વાર્થસૂત્રમાં છે એમ નથી. વીતરાગ માર્ગના દ્યોતક આગમોમાં - ચારે અનુયોગમાં પાને પાને જોવામાં આવે છે. સાત તત્ત્વોમાં આશ્રવને હેય અને સંવર-નિર્જરાને ઉપાદેય કહેલ છે અને વ્રત-તપરૂપ ભાવ સંવર-નિર્જરારૂપ મોક્ષમાર્ગ છે. જેનું ફળ મોક્ષ છે.

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्ष : ।। २ ।।

-- *સર્વાર્થસિદ્ધિ ટીકા અધ્યાય-૧૦*

બંધ હેતુઓ (મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, પ્રમાદ, કષાય અને યોગ)ના અભાવ સ્વરૂપ નિર્જરાથી કર્મનો ક્ષય થવો તે મોક્ષ છે.

नास्ति अर्हत् परो देवो नास्ति धर्मो दया पर : ।
तप: परं न नैर्ग्रंथ्यं एतद् सम्यक्त्व लक्षणम् ।।

અરિહંત સમાન કોઈ દેવ નથી, દયા સમાન કોઈ ધર્મ નથી અને નૈર્ગ્રંથ્ય સમાન કોઈ તપ નથી. એમ જાણવું એ સમ્યક્ત્વનું લક્ષણ છે.

तप: परं न नैर्ग्रंथ्यं : જેને ખુબ સાદી અને સામાન્ય જીવને સમજી શકાય તેવી ભાષામાં 'વિચરે ઉદય પ્રયોગ' એ ત્રણ શબ્દોમાં શ્રીમદ્ રાજચંદ્રએ મૂક્યું.

નિર્ગ્રંથ મુનિદશા સમાન કોઈ તપ નથી અને તપની વ્યાખ્યા **इच्छा निरोधस्तप:** ઈચ્છાનો નિરોધ તેને તપ કહ્યું. સર્વસંગ પરિત્યાગ અને અહિંસાદિ પાંચ મહાવ્રત અને ૨૮ મૂળગુણધારી મુનિરાજને સર્વ ઈચ્છાનો ત્યાગ છે એટલુંજ નહિ આ પ્રકારના વ્રતાચાર પ્રતિકૂળ સંયોગોને આમંત્રણરૂપ છે અને બાહ્ય ગમે તેટલી પ્રતિકૂળતા (ઉપસર્ગ-પરિસહ કૃત) આવે તેને સમભાવપૂર્વક સહન કરી, અનુકૂળ, પ્રતિકૂળ સંયોગોમાં એકમાત્ર સમભાવરૂપ સામાયિક ભાવની વૃદ્ધિ કરવાનો અંતિમ પુરુષાર્થ મુનિજનોને હોય છે. અને એ સામાયિક ભાવની પૂર્ણતા એ મોક્ષ છે. સામાયિક ભાવની વૃદ્ધિ અર્થે મુનિરાજ ઉનાળામાં પર્વતની શિલાપર, શિયાળામાં નદીને

કિનારે અને ચોમાસામાં વૃક્ષ નીચે ઉભા રહી આતાપન યોગ કરે છે.

"આવશ્યકાર્થે તું નિજાત્મસ્વભાવમાં સ્થિરતા કરે;
તેનાથી સામાયિક તણો ગુણ પૂર્ણ થાયે જીવને." ॥ ૧૪૭ ॥

— શ્રી નિયમસાર

ભગવાનની આજ્ઞા - અહિંસા-વ્રત-સામાયિક અને ચારિત્ર બધા એકાર્થ વાચક શબ્દો છે. વીતરાગતાના ભાવ-ભાસન અર્થે જિનાગમમાં તેનું જુદી જુદી રીતે વર્ણન કરેલ છે. તેની આરાધના એ ધર્મ છે જે સંવર-નિર્જરારૂપ મોક્ષમાર્ગ છે અને તેનું ફળ આત્યંતિક દુ:ખનો ક્ષય-મોક્ષ છે.

ધ્યાન અને અધ્યયન એ બે મુનિનાં મુખ્ય કર્તવ્ય છે. અને તે શ્રુતજ્ઞાનના અવલંબન પૂર્વક હોય.

પૃથકત્વ વિતર્ક વિચાર નામના શુકલધ્યાનના પહેલા પ્રકારમાં શ્રુતજ્ઞાનના અવલંબન પૂર્વક દ્રવ્યથી પર્યાય અને પર્યાયથી દ્રવ્ય તેમજ શ્રુતના એક વચનથી બીજા વચનનું અને તેને છોડી કોઈ ત્રીજા વચનનું એમ જે પરિવર્તન તેને વિચાર કહેલ છે અને તે શ્રેણી આરૂઢ મુનિરાજને હોય છે.

— સવાર્થસિદ્ધિ ટીકા અધ્યાય-૯ સૂત્ર-૩૯ થી ૪૪ પાન-૩૪૮ થી ૩૫૦

જગતના જીવોની દિનરાતની પ્રવૃત્તિ અગવડતાનો અને તેનાં કારણોનો અભાવ કરી સગવડતા ઉભી કરવાનો અને તેને કાયમ રાખવાનો છે. અગવડતાથી ઉત્પન્ન આકુળતાને મટાડવારૂપ સગવડતા એ શીરદર્દને તાત્કાલિક મટાડવાને બામસ્વરૂપ છે. શીરદર્દને મટાડવાનો ઉપાય (કબજિયાત જનિત હોય તો) કબજિયાતને દૂર કરવી તે છે. દુ:ખ સુખનાં કારણ અંતરંગમાં વિષય-કષાયના ભાવો અગર તેનો અભાવ છે અને દુ:ખને મટાડવાનો સાચો ઉપાય વિષય કષાયના ભાવાને દૂર કરવા એટલે કે મટાડવા તે છે. આખી જીંદગી ભલે સગવડતા કાયમ રહે તોપણ તેનાથી કષાયરૂપી રોગ તો મટતો નથી અને દરરોજ આ પ્રમાણે ઘટચક્ર ચાલ્યા કરે છે અને જીંદગીની અણમોલ ઘડીઓ પૂરી થતી જાય છે.

સુરનેય સૌખ્ય સ્વભાવસિદ્ધ ન, સિદ્ધ છે આગમ વિષે;
તે દેહવેદનથી પીડિત રમણીય વિષયોમાં રમે. ॥ ૭૧ ॥

તિર્યંચ - નારક - સુર - નરો જો દેહગત દુ:ખ અનુભવે,
તો જીવનો ઉપયોગ એ શુભ કે અશુભ કઈ રીત છે? ॥ ૭૨ ॥

ચક્રી અને દેવેન્દ્ર શુભ ઉપયોગમૂલક ભોગથી
પુષ્ટી કરે દેહાદિની, સુખી સમ દીસે અભિરત રહી. ॥ ૭૩ ॥

પરિણામજન્ય અનેકવિધ જો પુણ્યનું અસ્તિત્વ છે,
તો પુણ્ય એ દેવાન્ત જીવને વિષયતૃષ્ણોદ્ભવ કરે ॥ ૭૪ ॥

એ ઉદિતતૃષ્ણ જીવો દુખિત તૃષ્ણાથી વિષયિક સુખને,
ઈચ્છે અને આમરણ દુ:ખ સંતપ્ત તેને ભોગવે. ॥ ૭૫ ॥

પરયુક્ત બાધાસહિત, ખંડિત, બંધકારણ વિષમ છે;
જે ઈન્દ્રિયોથી લબ્ધ તે સુખ એ રીતે દુ:ખજ ખરે. ॥ ૭૬ ॥

નહિ માનતો એ રીત પુણ્યે પાપમાં ન વિશેષ છે,
તે મોહથી આચ્છન્ન ઘોર અપાર સંસારે ભમે. ॥ ૭૭ ॥

— શ્રી પ્રવચનસાર (સોનગઢ નિવાસી મુ. ભાઈશ્રી હિંમતભાઈ રચિત હરિગીતમાંથી)

વ્રત-તપના ભાવ જે સંવર-નિર્જરાના કારણ છે અને અંતરંગમાં જે સંવર-નિર્જરા સ્વરૂપ છે તેને વિકલ્પરૂપ કહી હેય માને છે એટલું જ નહિ પરંતુ અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓને પણ વિકલ્પરૂપ કહી હેય માને છે, તેણે સંવર નિર્જરાનું સ્વરૂપ જાણ્યું નથી. ભગવાને તો અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓને ધર્મનું મૂળ કહેલ છે. સર્વ તીર્થંકરો આ બાર ભાવનાઓ નિર્ગ્રંથ મુનિદશામાં નિરંતર ભાવે છે.

રાગદ્વેષપૂર્વક એક પછી બીજી ઈન્દ્રિયના વિષયને જાણવા - ભોગવવા માટે ઉપયોગને ભમાવવો તેને વિકલ્પ કહ્યો છે. ધ્યાન-અધ્યયન જેમાં અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓ અંતર્ગત છે, ત્યાં ઉપયોગને સ્થિર કરવો તે ધર્મધ્યાન છે અને સંવર-નિર્જરાનું કારણ છે. જે મોક્ષમાર્ગનું મહત્વનું અંગ છે.

સમસ્ત ધર્મનું મૂળ ભાવના છે. તેનાથી પરિણામોની ઉજ્જવળતા થાય છે. અને પરિણામોની ઉજ્જવળતા એ વિશુદ્ધિનું અંગ છે. પરિણામોની ઉજ્જવળતામાં બીજું એક જૈન આમ્નાયમાં ખૂબજ પ્રચલિત ટૂંકું બે શબ્દોનું વાક્ય 'મિચ્છામિ દુક્કડં' **(मा इच्छामि दुष्कृतं)** દરરોજ રાત્રે સૂતા પહેલાં યાદ કરવા જેવું છે :

આ ભવને ભવોભવ મહી કર્યું વેર-વિરોધ
અંધ બની અજ્ઞાનથી, કર્યો અતિશય ક્રોધ
તે સવિ મિચ્છામિ દુક્કડં.

જીવ ખમાવું છું સવિ, ક્ષમા કરજો સદાય
વેર-વિરોધ ટળી જજો, અક્ષયપદ સુખ હોય
સમભાવી આતમ થશે.

ભારેકર્મી જીવડા પીવે વેરનું ઝેર
ભવઅટવીમાં તે ભમે પામે નહિ શિવ લહેર
ધર્મનું મર્મ વિચારજો.

—: અનિત્યાદિ બાર ભાવનાઓ :—

साम्यं स्यात् निर्ममत्वेन तत्कृते भावनाश्रयेत् ॥

નિર્મમભાવથી સામ્યભાવ-સમતા ઉપજે છે અને તેને માટે નિરંતર બારભાવનાઓ તેમજ બીજી ભાવનાઓ ભાવવી જોઈએ.

अनित्यो नाम संसारस्त्राणाय कोऽपि नो मम।
भवे भ्रमति ज़ीवोऽसौ एकोऽहं अन्यतो पर: ॥

अपवित्रमिदं गात्रं कर्मार्षण योम्यता।
निरोध: कर्मणो शकयो विच्छेदस्तपसा भवेत् ॥

धर्मो हि मुक्तिमार्गोऽस्ति सुकृतालोकपद्धति।
दुर्लभा वर्तते बोधिरेता द्वादश भावना ॥

૧) અનિત્ય, ૨) અશરણ, ૩) સંસાર, ૪) એકત્વ, ૫) અન્યત્વ, ૬) અશુચિ, ૭) આશ્રવ, ૮) સંવર, ૯) નિર્જરા, ૧૦) લોકસ્વરૂપ, ૧૧) ધર્મ, ૧૨) બોધિદુર્લભ.

"દેવાધિદેવ ભગવાન તીર્થંકર પણ આ બાર ભાવનાઓના સ્વરૂપનું ચિંતવન કરી સંસાર દેહ અને ભોગોથી વૈરાગ્યભાવને પ્રાપ્ત થયા છે. આ ભાવનાઓ વૈરાગ્યની માતા છે. સર્વ જીવોને હિતકારી છે. અનેક દુ:ખોથી પીડાતા સંસારી જીવોને ઉત્તમ શરણ છે. દુ:ખરૂપ અગ્નિથી બળતા સર્વ જીવોને કમળના વનની વચમાં નિવાસસ્થાન

સમાન શીતળ છે. પરમાર્થના પંથને દેખાડનારી છે. તત્ત્વોનો નિર્ણય કરાવનારી છે. સમ્યગ્દર્શનને ઉપજાવનારી છે. અશુભ ધ્યાનનો નાશ કરનારી છે. આના જેવું આ જીવને બીજું કંઈ હિતકારી નથી. બારેય અંગનો સાર છે. સર્વ તીર્થંકરોએ વારંવાર આ ભાવનાઓજ ભાવેલી છે.''

— *સમાધિ સોપાન પાન-૬૨*

આ બાર ભાવનાઓ પ્રત્યાખ્યાન, પ્રતિક્રમણ, આલોચના અને સમાધિરૂપ છે તેથી બાર ભાવનાઓ નિરંતર ભાવવી જોઈએ. ॥ ૮૭ ॥

પોતાનામાં શક્તિ હોય તો પ્રતિક્રમણ, પ્રત્યાખ્યાન, સમાધિ, આલોચના અને સામાયિક રાત-દિવસ કરવાં જોઈએ ॥ ૮૮ ॥

અનાદિકાળથી જે પુરુષો મોક્ષે ગયા છે તે આ બાર ભાવનાઓને સમ્યક્ પ્રકારે ભાવીને ગયા છે. હું તેમને ફરી ફરી વાર નમસ્કાર કરૂં છું. ॥ ૮૯ ॥

બહુ કહેવાથી શું? જે મહાપુરુષો ભૂતકાળમાં સિદ્ધ થયા છે અને ભવિષ્યમાં થશે તે બધું બાર ભાવનાઓનું માહાત્મ્ય જાણો. ॥ ૯૦ ॥

— *प. पू. कुंदकुंदाचार्य कृत ''बारसाणुपेक्खा''*

અનેક જન્મની આરાધનાના ફળસ્વરૂપ સરળતા અને ઉદારતા કોઈ વિરલ ભાગ્યશાળી જીવોમાં જોવામાં આવે છે. ''જે ઉત્તમભાવથી સુપાત્રજીવ મોક્ષસુધીની કલ્યાણ પરંપરાને પ્રાપ્ત કરે છે એવો સમર્થ ઉદારભાવ તે ધર્મ છે ॥ ૧૮૬૪ ॥

— *ભગવતી આરાધના*

श्रुयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा च अवधार्यताम्।
आत्मन: प्रतिकुलानि परेषां न समाचरेत्॥

સમસ્ત ધર્મનો ટૂંકમાં સાર સાંભળો અને સાંભળીને જીવનમાં ઉતારો. 'પોતાને પ્રતિકુળ એવું આચરણ બીજા પ્રત્યે ન કરો.'

'Do not do unto others what you wish others not do unto you.

सर्वेऽपि सुखीनो सन्तु, सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग् भवेत्॥
સર્વ જીવો સુખી થાઓ, સર્વ જીવો નિરોગી રહો;
સર્વ જીવો સન્માર્ગને જાણો; અને કોઈ જીવ દુ:ખી ન થાઓ.

शीवमस्तु सर्वजगत: परहितनीरता भवन्तु भूतगणा:।
दोषा प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखीनो भवन्तु लोक:॥

સારાયે જગતનું કલ્યાણ થાઓ. બીજાના ઉપકાર કરવામાં જગતના જીવો રચ્યા પચ્યા રહો. દોષોનો નાશ થાઓ. અને સવર્ત્ર સમસ્ત લોકના જીવો સુખી થાઓ.

ભગવાન મહાવીરે પ્રરૂપેલ મોક્ષમાર્ગ અને તેમાં અંતર્ગત અહિંસાધર્મ જગતનું કલ્યાણ કરો.

ॐ